अभिज्ञान महाप्रयाण

[‘महाकविक महाप्रयाण’ ग्रंथक प्रकीर्ण समीक्षा-संकलन]

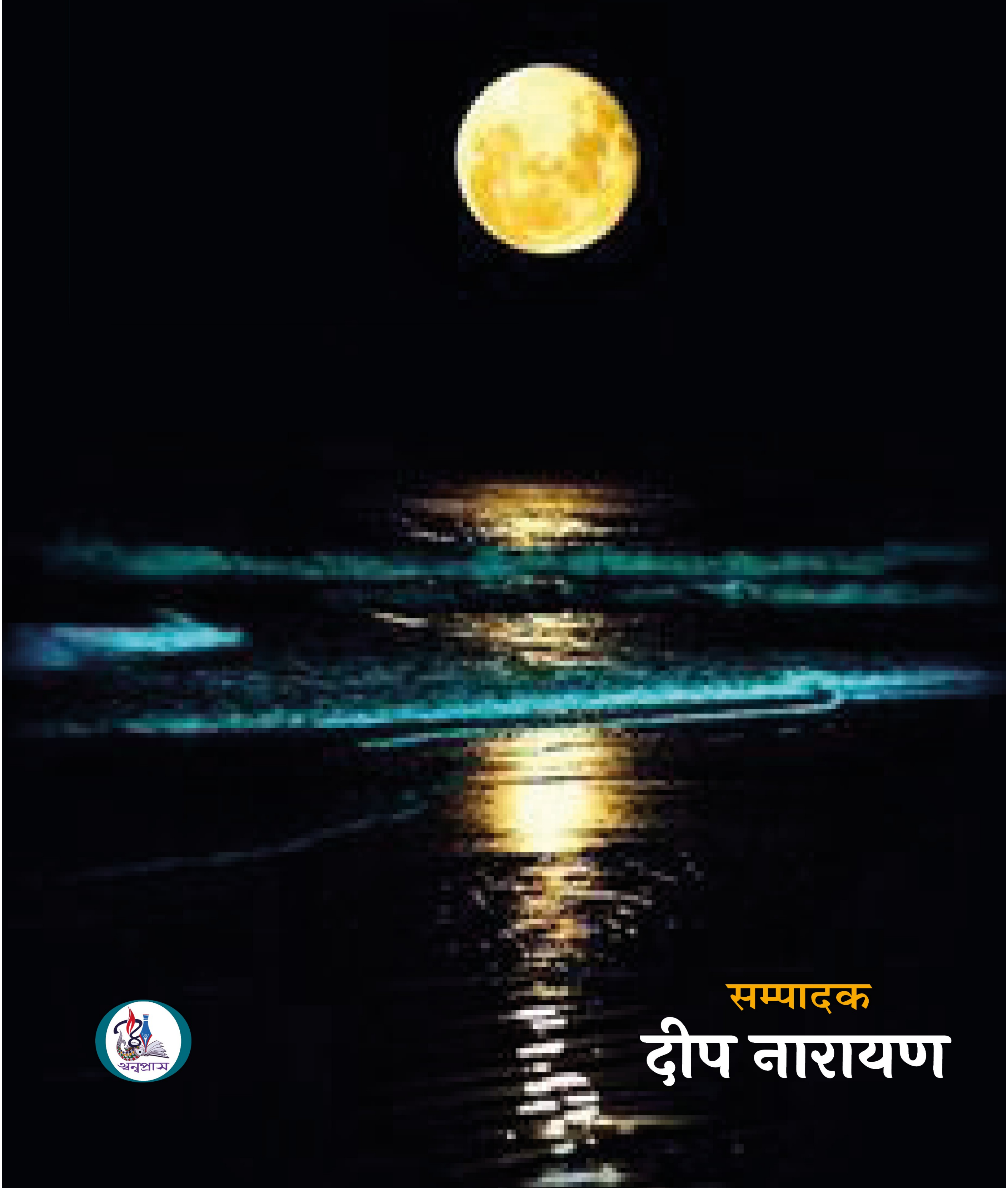

सम्पादक
दीप नारायण

अभिज्ञान महाप्रयाण

[‘महाकविक महाप्रयाण’ ग्रंथक प्रकीर्ण समीक्षा-संकलन]

अभिज्ञान महाप्रयाण

[डॉ. रंगनाथ दिवाकर कृत 'महाकविक महाप्रयाण' ग्रंथक प्रकीर्ण समीक्षा-संकलन]

सम्पादक

दीप नारायण

अनुप्रास पेपरबैक्स

अनुप्रास पेपरबैक्स
ISBN : 978-93-91371-60-9
9 789391 371609

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
कार्यालय : इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : info@anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

अभिज्ञान महाप्रयाण
('महाकविक महाप्रयाण' ग्रंथक प्रकीर्ण समीक्षा-संकलन)

© **दीप नारायण**
पहिल संस्करण : 2024
मूल्य : ₹ 300

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

ABHIGYAN MAHAPRAYAN
Edited by **DEEP NARAYAN**
Published by ANUPRAS PRAKASHAN
First Edition : 2024
Price : ₹ 300

समर्पण

अपन आँचरक छाहरिसँ अक्षय आशीष देनिहारि, सरल सहृदया,
निश्छल स्वभावी, परम परोपकारी आ धर्मानुरागी
धर्ममाता श्रद्धेया...

वहुरी देवीक

पावन स्मृतिमे मैथिलीक हमर ई प्रथम सम्पादित पोथी
अभिज्ञान महाप्रयाण

सादर समर्पित।

(दीप नारायण)

विषयानुक्रम

सम्पादकीय : महाप्रयाणक अभिज्ञान	: दीप नारायण	09
'महाकविक महाप्रयाण' : एक समीक्षा	: डॉ. प्रभाकर पाठक	25
'महाकविक महाप्रयाण' : एकटा बेसोह पाठकक लेखेँ केहन ?	: डॉ. नरेश कुमार विकल	31
'महाकविक महाप्रयाण' एक अद्‌भुत शोधपरक पुस्तक	: सुरेन्द्र शैल	45
मैथिल संस्कृतिक ध्वजवाहक डॉ. रंगनाथ दिवाकरक ग्रंथ 'महाकविक महाप्रयाण'	: पं. विनयानन्द झा	71
'महाकविक महाप्रयाण' : मिथिलाक एक गौरवग्रंथ	: विनोद नारायण झा	77
'महाकविक महाप्रयाण' : एक विलक्षण पोथी	: डॉ. महेन्द्र नारायण राम	83
मिथिला-मैथिलीक अन्यतम कीर्तिमान : 'महाकविक महाप्रयाण'	: प्रो. अवधेश कुमार झा	109
'महाकविक महाप्रयाण': एकटा शोधपरक नव-स्थापना	: रमेश	115
मिथिलाक एकटा जीवंत दस्तावेज : 'महाकविक महाप्रयाण'	: अवधेश कुमार बच्चन	123
'महाकविक महाप्रयाण' : अंतिम सत्य सदृश प्रमाण	: भैरव लाल दास	147
इतिहासक ठोस भूमिपर कालिदासक स्थान आ कालक निर्णय	: भवनाथ झा	153
शोधक महार्णव थिक 'महाकविक महाप्रयाण'	: कपिल कुमार झा	158
कालिदासपर नवीन शोध : 'महाकविक महाप्रयाण'	: डॉ. सुशान्त कुमार	163
प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः	: डॉ. संजीत कुमार झा	175

किछु मन्तव्य

: उदयचंद्र झा विनोद	181
: पं. शशिनाथ झा	182
: महेन्द्र मलंगिया	182
: श्यामानन्द चौधरी	183

सम्पादकीय

महाप्रयाणक अभिज्ञान

साँझ खन जखन सुरुज पछबरिया तखापर खहरि रहल छल, शीतल-मन्द पवन वातावरणमे अपन सिहकीसँ माधुर्य घोरि रहल छल, कनैलक गाछसँ अबैत चिड़ै-चुनमुन्नीक चुहचुहीक स्वर संगीतक सान्निध्यक भान करा रहल छल, एहन एकटा साँझमे चाहक चुस्कीक संग मोबाइलपर साहित्य, संस्कृति, इतिहास आ समाजक गम्भीर विषय सभपर चिंतन भऽ रहल हो तखन ठीके ओहि साँझकेँ तऽ अविस्मरणीय होएबाके छल। हमर गप आदरणीय डॉ. रंगनाथ दिवाकरजीसँ भऽ रहल छल। वर्ष 2019क ओहि साँझक ई विमर्श हमरा डॉ. दिवाकरक विराट् बौद्धिक संसारसँ साक्षात्कार करओने रहए।

फरवरी 2022क अंतिम सप्ताहमे रातिक करीब 10 बजे डॉ. रंगनाथ दिवाकरजी फोन कएलनि— 24 अप्रैलकेँ पिताक सारस्वत तर्पण निमित्त महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर आधारित एकटा पोथीक लोकार्पण करएबाक नेआर अछि। की एतेक कम समयमे पोथीक प्रकाशन संभव भऽ सकत ? हमर सहमतिक बाद तखने पोथीक वर्ड फाइल पठओलाह आ हमसभ 41 रातिक रतजगा करैत 24 अप्रैल 2022केँ सद्गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरीक पुण्य-पर्व समारोहमे सुलतानपुरक पावन भूमिपर मिथिलारत्न डॉ. प्रभाकर पाठक, सुप्रसिद्ध कवि श्री उदयचंद्र झा विनोद, लोककवि डॉ. महेन्द्र

नारायण राम, सरस कवि श्री सुरेन्द्र शैल प्रभृति विद्वान साहित्यकार लोकनिक शुभ हस्तकमलसँ 'महाकविक महाप्रयाण'क लोकार्पण करएबामे सफल भेलहुँ।

पांडुलिपिसँ पोथीक काया निर्माणक क्रममे हमरा महाकवि कालिदास विषयक अनेक अश्रुत प्रसंग सभक विषयमे जानि जिज्ञासाक त्रास बढ़ैत गेल। मैथिली साहित्य जगत् मे 'महाकविक महाप्रयाण' बेस चर्चित भेल आ एकटा उच्च स्तरक शोधग्रंथ मानल जाए लागल। सगरो पोथीक चर्चा तऽ रहबे करए मुदा वर्ष 2022क राजकीय उच्चैठ-कालिदास महोत्सवक विद्वत् गोष्ठीमे ई पोथी केंद्र-विन्दुमे बनल रहल। विदित हो जे राजकीय उच्चैठ-कालिदास महोत्सव वर्ष 2019सँ आरम्भ भेल अछि। तत्कालीन उप विकास आयुक्त श्री अजय कुमार सिंहजी हमरा एहि महोत्सवक विद्वत् गोष्ठीक संयोजकक दायित्व देलनि। संगोष्ठीकेँ सफल बनएबामे तत्कालीन अनुमंडलाधिकारी, बेनीपट्टी श्री मुकेश रंजनजी आ शिक्षक आ कवि श्री ललित कुमार ठाकुरजीक अवदान सराहनीय रहल छल। हम स्वयंकेँ सौभाग्यशाली मानैत छी जे एहि उच्च स्तरीय विद्वत् गोष्ठीक स्तरीयता एखन धरि अक्षुण्ण राखि सकलहुँ। मंचपर मैथिलीक मूर्धन्य विद्वान लोकनिक मुहेँ 'महाकविक महाप्रयाण'क विस्तृत चर्चा देखि-सुनि मोन आह्लादित भेल आ मंचेपर मोनमे एकटा विचार आएल जे एहि पोथीक एकटा समीक्षा संग्रह बहार करी। समय अपन गतिएँ आगू ससरैत रहल। करीब छओ मास बाद एकबेर फेर मोनमे आएल जे हमरा एहिपर काज करबाक चाही। नोकरी, साहित्य, समाज आ बन्धु-बान्धवमे ओझराएल रहबाक कारणेँ एहि काजक श्रीगणेश संभव नहि भऽ सकल। ई विचार मुदा मस्तिष्कक एकटा कोना छेकने रहल। जीवनक जेना एकटा साध सन बानि गेल हो 'महाकविक महाप्रयाण'क समीक्षा-संग्रह। पोथीक चर्चा आओर पसरि रहल छल। ताबत 2023क राजकीय उच्चैठ-कालिदास महोत्सवक सुरि-सारि शुरू भऽ गेल। एहि बेरक विद्वत् गोष्ठीक संचालकक दायित्व निर्वहन करैत कालमे विद्वत् गोष्ठीक अध्यक्ष पं. शशिनाथ झा, श्री विनोद नारायण झा, डॉ. महेन्द्र नारायण राम, डॉ. संजीत कुमार झा आदि विद्वान लोकनि द्वारा एहि पोथीक गंभीर चर्चसँ मोन जेना उद्विग्न भऽ गेल जे 'महाकविक महाप्रयाण'पर समीक्षात्मक पोथीक प्रकाशनक काज शुरू नहि कऽ सकलहुँ।

भले थोड़ेक विलम्बेसँ सही मुदा समय हमरा कान्हपर रखलक हाथ आ हम एहि काजमे जुटि गेलहुँ। मैथिलीक विभिन्न विद्वान/समीक्षक लोकनिककेँ एहि निमित्त अनुप्रास प्रकाशन समूह दिससँ 15 जनवरी 2024केँ एकटा विनम्र स्मार-पत्र देलियनि आ आइ मैथिलीक चौदह गोट मूर्धन्य विद्वान लोकनिक समीक्षा-संकलन अहाँक हाथमे अछि।

हमरा जनैत मैथिली भाषाक ई पहिल समीक्षा-संकलन होएत जाहिमे मात्र कालिदासक मैथिलत्वपर प्रकाशित पोथीपर गम्भीर विचार भेल हो आ ओहि पोथीक समीक्षा संगृहीत भेल हो। एहिसँ पूर्व स्वनामधन्य पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'जीक स्वानुभूत आत्मकथात्मक विलक्षण पोथी 'अतीत मन्थन'क पाठकीय स्पन्दन रूपमे 'इतिहास बाजि रहल अछि' वर्ष 2014मे आएल छल। एकर कार्यकारी सम्पादक यशस्वी कवि श्री फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'जी छथि। एहि आत्मकथात्मक अद्भुत पोथीमे गुरु-कुलश्रेष्ठ अमरजीक जीवनक विशाल अनुभव, कहि सकैत छी जे हुनक सम्पूर्ण जीवनगाथा संकलित अछि। 'इतिहास बाजि रहल अछि'मे एहि 'अतीत मन्थन' ग्रंथक विभिन्न विद्वान् द्वारा कयल समीक्षा, चारिटा पत्र, कन्यादानक नेपथ्य कथाक समीक्षा, मंगलकामना, पाठकीय टिप्पणी आदि संकलित अछि। 'अभिज्ञान महाप्रयाण'मे 'महाकविक महाप्रयाण' ग्रंथपर चारि गोट लघु मन्तव्यक संग अठारहटा मैथिलीक यशस्वी विद्वान लेखक/समीक्षक लोकनिक समीक्षा रूपमे प्राप्त हुनका सभक सारस्वत योगदानकेँ समेटल गेल अछि।

मैथिली साहित्यमे जखन स्तरीय लेखन वा गहन शोध केर बात करैत छी तऽ किछु गानल-गुथल साहित्यकार सभ जे अभरैत छथि ओहिमे अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक अपन लेखनक माध्यमसँ मिथिला-मैथिलीक बहुत रास ओझरीकेँ सोझरा देनिहार, प्रामाणिकताक संग अपन बात सभक सोझाँ रखनिहार... तखन मस्तिष्कमे जे एकटा नाम सहजहि चित्रित भऽ अभरैत अछि ओ छथि— डॉ. रंगनाथ दिवाकर। डॉ. दिवाकर दरभंगा जिलाक गाम सुलतानपुर (कुशेश्वरस्थान)क निवासी छथि। बिहार प्रशासनिक सेवामे अनेक उच्च पदसभकेँ सुशोभित कएलनि। डॉ. दिवाकर 'ब्रह्मभट्ट वैभव', 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृति ग्रंथ', 'मधुबनी दर्पण', 'विरासत मधुबनी', समस्तीपुर जिला गजेटियर 'समेटियर', 'विरासत मुजफ्फरपुर', प्रवासी साहित्यालंकारजीक एकमात्र काव्यसंकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब', 'भामती' आदिक सम्पादन कएने छथि। स्वतंत्र पोथीसभमे शोधग्रंथ 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान', कन्दर्पीघाटमे मैथिल शौर्यक कथा 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी' आओर महाकवि कालिदासक मैथिलत्वक दिग्दर्शन करबैत 'महाकविक महाप्रयाण' प्रमुख अछि। 'सुलतानपुर सौरभ' हिनक गाम सुलतानपुरक ग्राम गजेटियर अछि। आलेखसंग्रह 'मिथिला मन्दार मञ्जरी' आ 'मिथिला पारिजात मञ्जरी'मे डॉ. दिवाकर मिथिलाक इतिहास-संस्कृति विषयक बहुत रास अनसोहाँत बात सभकेँ सहजतापूर्वक फरिछा देलनि। कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग' मैथिली कथा-साहित्यमे अनुपम स्थान सुरक्षित कएलक। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पंजाबी कथासंग्रह 'अमर कथा'(ले. गुलजार सिंह संधू)क हिनक द्वारा कएल मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित

भेल अछि। मेधावादी दिवाकरजी स्नातक विज्ञान प्रतिष्ठाक बाद स्नातक कला परीक्षामे विशिष्टता एवं स्नातकोत्तर हिन्दीमे प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान प्राप्त कएलनि। मिथिला-मैथिली विषयक गम्भीर शोधमे रूचि रखैत छथि। इतिहास-संस्कृति विषयक हिनक गहन अध्ययन, सुहृद व्यक्तित्व आ शोध केर वैज्ञानिक दृष्टि डॉ. दिवाकरजीकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। अवकाशप्राप्तिक बादो मिथिला-मैथिलीक लेल सदिखन समर्पित रहैत छथि। कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भक निर्माण हिनक अमर कृति थिक आ एहि कारणेँ अपर ग्रियर्सन रूपमे समादृत छथि। डॉ. दिवाकर किरण पुरस्कार, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' सम्मान, मिथिला गौरव, कर्णश्री, मिथिला विभूति, मिथिला रत्न सहित अनेक सम्मान-पुरस्कार सभसँ अलंकृत छथि।

हम जखन सारस्वत क्षेत्रमे प्रवेश कएने रही तखनेसँ डॉ. दिवाकर नामसँ परिचित भऽ गेल रही। मुदा, हिनकासँ भेंट-घाँटक प्रारब्ध बहुत समय बाद सुफल भेल। आइ जखन हम दिवाकरजीक विराट् बौद्धिक संसारक गप करैत छी तँ डॉ. रंगनाथ दिवाकर कृत 'महाकविक महाप्रयाण'क गप करए चाहब। एहिसँ पूर्व जँ हम महाकवि कालिदास विषयक किछु चर्च नहि करी से कोना भऽ सकैत अछि! महाकविक विराट व्यक्तित्वेपर तऽ 'महाकविक महाप्रयाण'... आ आब एहिपर 'अभिज्ञान महाप्रयाण'। विश्व वाङ्मयमे एहन कोनो कवि नहि छथि जनिकासँ महाकवि कालिदासक परतर देल जाए। भारतीय साहित्यक विभूति सम्पूर्ण कविकुल सम्राट् महाकवि कालिदास काव्य जगत् केर सर्वाधिक देदीप्यमान रत्न छथि।

वाल्मीकि रामायणमे महर्षि वाल्मीकि कहैत छथि— ***सागरं चाम्बरं प्रख्यम्बर सागरोपम्*** जेना समुद्रक उपमा मात्र समुद्रसँ भऽ सकैत अछि, आकाशक उपमा मात्र आकाशसँ भऽ सकैत अछि तहिना रामक उपमा मात्र रामेसँ भऽ सकैत अछि। तहिना हमरा ई कहबाक अछि जे महाकवि कालिदास केर उपमा मात्र कालिदासेसँ भऽ सकैत अछि।

कालिदासपर विश्व वाङ्मय चकित भेल छल। विलियम जोन्स जखन 1789मे अभिज्ञान शाकुंतलम् केर अनुवाद Shakuntal or Fatal Ring नामसँ कएलनि तखन पाश्चात्य देश चकित आ मुग्ध भेल। विश्वक अनेक भाषामे एकर अनुवाद भेल। जार्ज फास्टल 1791मे जर्मनमे अनुवाद कएलनि। ई अनुवाद जखन जर्मन विद्वान् हर्डर देखलनि तखन विभोर होइत मानव जातिक सर्वश्रेष्ठ रचना कहलनि।

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्याततुल्यकविर्भावात् अनामिका सार्थवती बभूव॥

पुराकवि सभक गणनामे कँगुरिया आँगुरपर कालिदासकेँ राखू आ फेर दोसर स्थानपर कोनो अन्य कविक नाम नहि आबि सकत तेँ ओहि आँगुरक नाम अनामिका सार्थक भेल।

महाकवि अनुपम छथि। हिनक कीर्त्तिकलश केर आसवसँ सम्पूर्ण विश्व विस्मित होइत आप्यायित अछि। विश्व वाङ्मयमे महाकवि सभक मध्य कालिदास अपना सन एसकरे छथि।

मोन फान्चे सम्पूर्ण यूरोप साहित्यमे मेघदूतम् केर परतर योग्य कोनो आन कृति नहि अछि से कहलनि— *देयर इज नथिंग सो परफेक्ट इन द एलेजाइक लिटरेचर ऑफ यूरोप एज द मेघदूतम् ऑफ कालिदास।*

मैकडोनेलकेँ कालिदासक कवितामे भारतीय प्रतिभाक उत्कृष्ट रूप केर दिग्दर्शन भेल छल। सिल्वा लेवी, आर्थर डब्लू राइडर, शिलर, मैक्समूलर, गेटे, फॉस्टर, जोन्स प्रभृति पाश्चात्य विद्वान् महाकवि कालिदासक कविताक पैघ प्रशंसक छलाह।

जा! महाकवि कालिदासक विषयमे हम की कहि सकब? हम अकिंचन! हमरा तऽ किछु गप करबाक छल डॉ. रंगनाथ दिवाकर कृत 'महाकविक महाप्रयाण' पर।

'महाकविक महाप्रयाण' मूलत: एकगोट नाटकक पोथी थिक। एहिमे जे लेखक महाकवि कालिदासक मैथिलत्वकेँ निर्णायक रूपसँ स्थापित करबाक लेल अपन विमर्श प्रस्तुत कएलनि अछि से सूक्ष्म शोधक सर्जना थिक। 52 पृष्ठक नाटक लेल 200 पृष्ठक विमर्शमे महाकवि कालिदासक मैथिलत्वकेँ प्रामाणिकताक संग स्थापित कएलनि। एहि क्रममे उच्चैठ, उज्जैन आ माटरा धरिक रोचक यात्राक वर्णन पाठककेँ चकित करैत अछि।

कालिदास-कुमारदासक सखाभाव, दुनू महाकविक विलक्षण काव्य-सौन्दर्य एवं एकहि चितामे संग-संग दुनूक महाप्रयाणक जीवंत वर्णन श्रीलंकाक इतिहास, शिलालेख, परंपरा, अनुश्रुति इत्यादिसँ समर्थित अछि। एहि लेल श्रीलंकाक इतिहासक उदधिकेँ उपछि प्रामाणिकताक मोती आनएमे डॉ. दिवाकरजीक परिश्रम आ साहसकेँ हमसभ मात्र अंदाजि सकैत छी, ओकर आकलन करबाक ऊहि नहि अछि हमरा।

एतबा मात्र कहल जा सकैत अछि जे दिवाकरजी महाकवि कलिदासक मैथिलत्वपर विस्तृत विमर्श करैत हुनका मैथिल प्रमाणित करबामे पूर्ण सफल भेल छथि।

ई विचारणीय तथ्य अछि जे महाकविक वास्तविक जन्मस्थली उच्चैठ थिक वा बेनीपट्टी प्रक्षेत्रक कोनो आन गाम। हमरा लगैत अछि जे महाकविक वास्तविक गाम दामोदरपुर रहल होएत। पत्नीक हाथसँ अपमानित आ तिरस्कृत भेलाक बाद लोक-लज्जाक कारणेँ ओतहि अपन गामे केर गुरुकुलमे चाकरी करब मनोवैज्ञानिक दृष्टिसँ उपयुक्त नहि लगैत अछि। पत्नीसँ तिरस्कृत भऽ अन्यत्र भागब बेसी उपयुक्त

लगैत अछि। ओना सम्पूर्ण बेनीपट्टी प्रक्षेत्रकेँ महाकविक जन्मस्थान होएबाक गौरव प्राप्त अछि मुदा जँ परिशुद्धताक आग्रह हो तखन ई गौरव वर्तमान दामोदरपुर गामकेँ भेटत। वनकट्टासँ दामोदरपुर गाममे प्रवेशक दूरी 1.5 किलोमीटर अछि। एहि वनकट्टा गामक नाम एहन संकेत अवश्य करैत अछि जे मात्र डेढ़ किलोमीटर दूर रहएवला दामोदरपुरवासी एहि ठामक वनसँ लकड़ी-काठी काटि अनैत होथि। कालिदासक ओ प्रसंग जाहिमे कालिदासक ओही ठारिकेँ काटब जाहिपर बैसल छथि, संभवत: एतहि घटित भेल हो आ कालान्तरमे एहि घटनाक कारणेँ गामक नाम वनकट्टा पड़ि गेल हो। अपमानित भेलाक बाद उच्चैठ भगवती स्थान द्वारा संचालित गुरुकुलमे रसोइयाक चाकरी कएने होथि। दामोदरपुरसँ उच्चैठक वर्तमान कालिदासक डीह केर दूरी 8.8 किलोमीटर अछि जे तर्कसंगत लगैत अछि। दामोदरपुरक 22 बीघाक लगीच महदेइ पोखरि संभव अछि जे अति प्राचीन हो आ भोलेनाथ महादेवक नामपर हो जे आइ महदेइ पोखरि रूपमे बाँचल हो। ई पूर्णतया संभव अछि जे कालिदासकेँ विश्व-विश्रुत भेलाक बाद हुनकासँ जुड़ल एहि गुरूकुलक डीहक नाम कालिदास डीह पड़ल हो। यथार्थ जे हो, ई हमर मात्र एक अनुमान अछि।

जहाँ धरि एहि ग्रंथमे संकलित 'महाकविक महाप्रयाण' नाटकक प्रश्न अछि ओ एक सफल मंचनीय नाटक अछि। कतेको बेर एकर सफल मंचन भेल अछि। एहि नाटकमे पात्रानुरूप भाषाक प्रवाह, ठाम-ठाम गीत-फकरा-लोकोक्ति सभक प्रयोग, गस्सल कथानक इत्यादिक संयोजनसँ नाटक लोकप्रिय भेल अछि। पात्रानुरूप भाषाक प्रवाह केहन अछि ओ कलुआक संवाद आ फेर महाकवि बनलाक बाद कालिदासक भाषामे जे स्पष्ट अन्तर अछि ओहिसँ सहजतापूर्वक अकानल जा सकैछ। अनुचरक भाषाक लालित्य पंडित सभक संग रहलाक कारणेँ नीक बनि गेल अछि मुदा ओकर भावाभिव्यक्तिक 'टोन' नैसर्गिक अछि। एहि नाटकक एकटा सूक्ष्म विशेषता जे हम लक्ष्य कएलहुँ ओ अछि महाकवि कालिदासक सृजन प्रक्रियासँ साक्षात्कार कराएब। समुद्रमे सन्हिआइत अस्ताचलगामी सूर्यक अद्वितीय उपमा जेना कोनो स्वर्ण परात ओन्हल हो वा समुद्रपर जेना कोनो अर्द्ध चंद्राकार कनक भवन बनल हो वा जेना सिन्दूरी शोभासँ सुशोभित सागरतटपर श्रीलंकाक समस्त स्वर्ण भंडार एकहि ठाम एकत्रित भऽ स्वर्णक सेतुबंध बनि गेल हो वा वसुधा देवीक अनन्त केशराशिक सीथमे सिन्दूर शोभित हो, सरिपहुँ मुग्ध करैत अछि। एहिना आरक्त समुद्रमे खसैत बरखाक बुन्नीसँ जे लघूर्मि स्वर्ण कलश समान उठि फेर समुद्रमे विलीन होइत अछि एकर वर्णन मुग्धकारी अछि। लेखकक सूक्ष्म दृष्टि यथार्थमे प्रशंसनीय अछि। कालिदासकेँ ई कहब जे एहि समस्त भावकेँ लिखब आ जे अहाँ (राज नर्तकी)केँ सर्वश्रेष्ठ लागत ओकर परिमार्जन करैत अपन आगामी

रचनामे स्थान देब। ई सम्पूर्ण बिम्बविधान महाकवि कालिदासक सृजन प्रक्रियासँ साक्षात्कार करएबाक एक अनुपम प्रयास तऽ अछिए। ई मैथिलीए नहि भारतवर्षक वा विश्वक कोनो भाषाक लेल अभिनव गौरवगान थिक।

अखन सम्पूर्ण विश्वमे देश आ धर्मक जे द्वंद्व पसरल अछि एहि विषयपर दिवाकरजीक राष्ट्रवादी सोच एकदम फरिच्छ भऽ कऽ अभरल अछि। ओ स्पष्ट रूपसँ कहैत छथि जे देश आ धर्ममेसँ जँ मात्र एकहिटाक चुनाओ करबाक हो तखन निश्चित रूपसँ राष्ट्रकेँ अधिमान देबाक चाही। देशक लेल धर्मक त्याग करबाक श्रीलंकाक राजा धातुसेनाक उदाहरण दैत ओ कहैत छथि जे धर्म देशसँ पैघ नहि भऽ सकैछ। जँ आवश्यकता हो तखन देशक लेल धर्मक त्याग करब सभसँ पैघ धर्म थिक।

हिनक ई राष्ट्रवादी सोच हिनक रचना संसारमे अनेक ठाम मजगुतीक संग दृष्टिगोचर भेल अछि। एहि प्रसंगमे 'एकटा बकलेल चाही' आ 'भैया हम आबि रहल छी' एहि दुनू कथामे सरदार उधम सिंहक प्रतिशोधकेँ सम्मान दैत कथानायक इंग्लैंडक कैक्सटन हॉलमे उधम सिंहक लेल अपन माथ झुकबैत छथि, हुनक स्मृतिसँ उत्प्रेरित होइत छथि। दिवाकरजीक रचनामे अनेक ठाम देशभक्तिक एहन स्वर अभरल अछि। हिनक कथा सभमे प्रेम पूजाक फुलडाली रूपमे वर्णित अछि। आजुक समयमे विरल भेल जा रहल सहज मानवीय गुण सभक चित्रण भेल अछि। 'एकटा बकलेल चाही'मे पुतोहु द्वारा बीमार ससुरकेँ थूक फेकबाक लेल अपन तरहत्थी आगू करब आ वृद्ध लाचार ससुर द्वारा पुतोहुकेँ 'माए' कहब सरिपहुँ मर्मन्तुद अछि। 'महानन्दाक एक चुरुक पानि' कथामे जे प्रेम आ त्यागक उदात्त रूप अभरल अछि ओ मोनकेँ भाव-विह्वल करैत अछि। 'पाँच बरखक कथा'मे घरसँ भागलि एक युवतीक संघर्ष आ सफलताक कथामे मामक काज समाप्तिक बादक एक वाक्य 'आँगन नहि जेबही बुच्ची'क एक शब्द 'बुच्ची'क जे जादू अभरल आ परिवार एक भेल ओ बेजोड़ बनल अछि। हृदयक स्पर्श करैत अछि। आनो कथा सभक एहने स्थिति अछि। मुदा, आइ हम हिनक कथा सभपर नहि जाएब। एहि सभपर फेर कहियो।

एखन चलैत छी प्रस्तुत पोथी 'अभिज्ञान महाप्रयाण' दिस। तऽ सभसँ पहिने संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, मैथिली आदि भाषाक निष्णात् विद्वान् आ अतुलित मेधाक स्वामी डॉ. प्रभाकर पाठक कहैत छथि जे— 'महाकविक महाप्रयाण' ई विहंग-उछंग गारुड़ी उड़ान बनि नमगर-उच्च आकाश प्राप्त करबाक सामर्थ्य रखैत अछि।
डॉ. पाठकक मान्यता अछि जे ई पोथी आ एकर मान्यता, एकर मूर्त्तसँ अमूर्त्त दिशि 'आगमनिक' प्रस्थान आ स्थूलसँ सूक्ष्म दिशि बढ़ैत शोधपरक प्रयाण मात्र प्रशंसनीये नहि पुरस्करणीय आ अग्रसार्य सेहो अछि। ओ स्पष्ट कहैत छथि जे एहि विद्वान (डॉ. दिवाकर)केँ विश्व— D. Litt. केर उपाधि विद्वान सभ द्वारा अनुशंसित होएबाक चाही।

आगू कहैत छथि जे महाकवि कालिदासक जन्मस्थलीक लेल इतिहास, ऐतिह्य आ किंवदन्ती सभक वात्याचक्रसँ रंगनाथ जतेक लड़ि सकलाह ओ श्रम एहि पोथीमे हम पहिल बेर देखि रहल छी। लेखक अपन ग्रंथक अध्याय-क्रमकेँ एतेक वैज्ञानिक आ सुस्पष्ट रूप देने छथि जे ग्रंथक प्रमुख बात सर्वसामान्यक लेल कपोत-दृष्टि बनि जाइत अछि आ ओतबेसँ ओकर ग्रन्थावलोकन भऽ जाइत अछि। पोथीमे विभिन्न तथ्य, रचना, आन्तरिक संकेत सभक दिग्दर्शन आ अपन भाषाक प्रवाहमयता, अभिव्यक्तिक तटस्थता, दूरारूढ़ कल्पनाभाव, तथ्य सभक विश्वसनीयता, न्याय-निर्धारण, प्रमाणाधिक्य, कालिदासक मातृभूमिक अंचल-वैशिष्ट्य, प्राकृतिक सौन्दर्य, मैथिल पावनि-तिहार आ व्यवहार सभक उल्लेख जाहिमे मिथिलाक माटिक सोन्हगर सुगंध, माधुर्य आ सौन्दर्य अछि, सभक संकेत महाकविक मैथिलत्वकेँ परिपुष्ट करैत अछि। 'विक्रमोर्वशीयम्'क आधारपर जे मिथिलापभ्रंश (पूर्वी)क उद्धरण अछि आ एकर विश्लेषण अछि से सर्वोपरि अछि। एहि सभसँ अपन शोध केर विश्वसनीयता सिद्ध करैत डॉ. रंगनाथ अपन सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषणसँ ई मानबाक लेल विवश करबाक अभूतपूर्व चेष्टा कयने छथि जे कालिदासक जन्मस्थली मिथिला छल।

मैथिली आ हिन्दीक एक सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर डॉ. नरेश कुमार 'विकल'जीक कहब छनि जे अपन प्राणद काव्य-कर्म (कथा, नाटक, गद्य)सँ राष्ट्रीय फलकपर आ साहित्यिक मंचकेँ कृत्-कृत्य एवं चमत्कृत कयनिहार, नव-नव भावोन्मेष कयनिहार डॉ. रंगनाथ दिवाकर मैथिली एवं हिन्दीक गण्य प्रतिभामे साहित्यकार लोकनिक माँझ शीर्षस्थ एवं सर्वमान्य छथि। ई गद्य गौरव-ग्रंथ शोधकर्ताक निष्णात् साधनासम्पन्न सृजनशीलताक साक्षी अछि।

शब्द चयन, भाषा-सौष्ठव, उत्कृष्ट वाक्य विन्यास, सहज संप्रेषणीयता, संदर्भक निरन्तरता, गतिमयता, भावाभिव्यक्ति डॉ. दिवाकरकेँ वाग्मी विद्वत्ताक विरल विभूतिक अग्रणी पाँतीमे प्रतिष्ठापित करैत अछि। ई अपन ऊहिसँ शोध-प्रज्ञताक पराकाष्ठापर अपनाकेँ आसीन कएलनि; बहुप्रशंसित, बहुप्रचारित-प्रसारित कएलनि आ विद्वत् समाजमे समादृत भेलाह। ई सभटा संभव भए सकलनि हिनक अपन साधनामयी प्रतिभाक पुण्यलोकसँ। शोधपरक ई सौरभित स्तवक 'महाकविक महाप्रयाण' मैथिली साहित्यक अविकल्प, अविचल, अनुकरणीय, अनुसरणीय बनबाक चाही, स्वीकरणीय होयबाक चाही— एहन हमर अखंड आस्था अछि।

तहिना सुच्चा कवि आ मैथिली दोहा छन्दक प्रखर प्रणेता सुरेन्द्र शैलजी अपन आलंकारिक भाषामे कहैत छथि जे डॉ. रंगनाथ दिवाकर लिखित पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' एक अद्भुत शोधपरक पुस्तक अछि जे निस्संदेह साहित्य आ इतिहासक भंडारमे अविचल नगपति जकाँ स्थापित भए गेल। तहिना एकर

यशस्वी लेखक अपन अलौकिक प्रतिभाक बलेँ सम्प्रति गिरि शिखरपर जमल प्रालेयपर उषाकालक निरभ्र क्षितिजसँ उद्भासित सविता-मयूखक स्पर्शसँ निर्मित ऋजुरोहित जकाँ साहित्याकाशमे देदीप्यमान छथि।

लेखक महाकविक समय आ जन्मस्थानपर गहन शोध करैत महाकवि कालिदासक अन्य ठाम उद्भूत होएबाक मान्यता सभकेँ अपन विद्वत्ताक पघरियासँ कुट्टी-कुट्टी काटि देबामे समर्थ सिद्ध भेलाह अछि आ मिथिलाकेँ महाकविक जन्मभूमि प्रमाणित करबामे सफल भेलाह अछि।

मैथिल संस्कृतिक ध्वजवाहक डॉ. दिवाकर अपन ग्रंथ 'महाकविक महाप्रयाण'मे विभिन्न साक्ष्य सभक आलोकमे अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण ढंगसँ महाकवि कालिदासक मैथिलत्व सिद्ध कयने छथि। ई कहब छनि सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास विशेष रूपसँ मैथिल संस्कृतिपर अनेक महत्वपूर्ण काज कएनिहार सिद्ध प्राच्यविद् पं. विनयानन्द झाजीक।

अपन माटि-पानि, लोक-वेद, देस-कोस आ समाजक लेल अपन हृदयमे अनुपम मात्सर्य रखने बिहार सरकारमे लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभागक पूर्व मंत्री आ सम्प्रति वर्तमानमे बेनीपट्टी (मधुबनी)क लोकप्रिय विधायक श्री विनोद नारायण झाक मान्यता छनि जे 'महाकविक महाप्रयाण' अद्भुत पुस्तक अछि। ई एकटा उत्कृष्ट शोधग्रंथ थिक। आबैवला कोनो पीढ़ीकेँ, कोनो शोध छात्रकेँ, कोनो सामान्य आदमीकेँ जिनका मिथिला-मैथिलीक विषयमे जानबाक उत्कंठा अछि, जिज्ञासा अछि वा जे महाकवि कालिदासक विषयमे सांगोपांग जानए चाहैत छथि ओ सब एहि पोथीकेँ अवश्य पढ़थि। हमरा ई पुस्तक पढ़ि बड्ड नीक लागल।

एहि पुस्तकमे सभसँ तऽ असाधारण अछि कालिदासक महाप्रयाण। एकर एहन भावुक वर्णन दिवाकरजी कयने छथि जे पाठकक आँखिसँ अनेक बेर नोर बहबाक परिस्थिति बनैत छै। एहि नाटकमे हुनक लेखनीक ताकत देखाइत अछि। अनेक देशक भ्रमण केनिहार श्री विनोद नारायण झाजीक जे श्रीलंकाक माटरा जा महाबोधिय मन्दिरक दर्शन करबाक इच्छा जागल अछि ओ भारत-श्रीलंका मध्य गमनागमन केर नव द्वार खुजबाक संकेत अछि।

केदार सन्त रामाश्रय महाविद्यालय, सरायरंजन (समस्तीपुर)मे हिन्दीक विभागाध्यक्ष आ अनेक सम्मान-पुरस्कारसँ अलंकृत प्रो. अवधेश कुमार झाजीक आलेख पर चलैत छी तऽ हिनक कहब छनि जे डॉ. रंगनाथ दिवाकरजी अपन पुस्तकमे पूर्ण प्रमाण प्रस्तुत कएलनि अछि जे महाकवि कालिदासक जन्मभूमि मिथिला थिक। अपना जन्मभूमिमे सभकेँ अपन डीह-डाबर रहैत अछि। जमीन-जथाक कागजात सरकारी प्रमाण अवश्य रहैत अछि। उच्चैठ भगवती स्थानसँ महाकवि कालिदासकेँ माता भगवती महाकालीक

वरदान प्राप्त भेल। महाकवि कालिदासक संबंधमे सभटा प्रमाण, सैकड़ो वर्षसँ मौजूद सरकारी राजस्वक प्रमाणकेँ दिवाकरजी प्रस्तुत कऽ सभटा शंका समाधान कएलनि। उच्चैठमे कालिदासक डीह एखनहुँ मौजूद अछि। सरकारी राजस्व पत्रकमे कालिदासक नामे भूमि खतियानमे प्रामाणिक रूपसँ उपस्थित अछि। एहि प्रकारेण दिवाकरजी महाकवि कालिदासक जन्मभूमि, पितृ भूमि, निजी भूमि तक सभटा प्रमाण प्रस्तुत कऽ महाकवि कालिदासकेँ पूर्ण रूपसँ मैथिल होयबाक प्रमाण प्रस्तुत कएलनि अछि।

समकालीन कविताक एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर, कुशल कथाकार, साधल समीक्षक आ सुधी शोधप्रज्ञ रमेशजी अपन आलेखमे दिवाकरजीक शोधप्रज्ञताकेँ उच्च स्थान दैत छथि। एकरा संगे प्रकाशित नाटककेँ मिथिकीय कहैत छथि। सत्य तऽ यैह अछि जे दिवाकरजी अनुश्रुति सभकेँ वैज्ञानिकताक निकषपर कसिएकेँ ओकर ऐतिह्य स्वीकार करैत छथि। प्रस्तुत नाटकमे वर्णित दृश्य श्रीलंकाक इतिहास, शिलालेख आ विद्वत् परम्परासँ परिपुष्ट होइत देखलाक बादे डॉ. दिवाकर अपन लेखनीकेँ एहि दिशामे बढ़ओलनि। जाहि नाटकक आन विद्वान सब जी भरिकेँ प्रशंसा करैत अघायत नहि छथि ओकरा श्री रमेशजी मिथकपर आधारित नाटक मानैत छथि। मिथक जँ ऐतिहासिक निकषपर सत्य प्रमाणित होइत अछि तखने ओ इतिहास बनैत अछि। श्रीलंकाक इतिहास-परम्परा, साहित्य-संस्कृति आ जनश्रुति-अनुश्रुतिक सागरक गहन मंथन केर बाद महाकविक महाप्रयाणक अमृत-कलशकेँ जे नाटकक रूप देलनि अछि से ऐतिहासिक अछि।

महाकविक मैथिलत्वक सिद्धिमे एतेक प्रशस्त सामग्री एकेठाम अंतह कहाँ भेटैछ! दुइ सय छप्पन पृष्ठक पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' केर आखर-आखर बस एतबा कहबा लेल आतुर अछि जे विश्व भरिमे समादृत प्रख्यात साहित्यकार महाकवि कालिदास विशुद्ध मैथिल छथि। एहि पोथीसँ अगबे कालिदासक मैथिलत्वेटा नहि उजागर होइत अछि अपितु एहिमे हुनकर स्थिति काल सेहो साफ-साफ फरिछा जाइत छैक। एहि हिसाबसँ तत्विषयक एकरा मिथिलाक मान ओ साबिकक पहचानक श्रेष्ठ दस्ताबेज कही तऽ कोनो अतिशयोक्ति नहि। ई विजयघोष करैत छथि 'दैनिक जागरण' केर हरियाणा राज्य सम्पादक, 'दैनिक हिन्दुस्तान'मे अररिया, जहानाबाद, आरा, बक्सर जिलामे ब्यूरो इंचार्ज आ हरियाणाक राज्य सम्पादक रहल श्री अवधेश कुमार बच्चनजी। अपन सुन्दर भाषामे कहैत छथि बच्चनजी— 'महाकविक महाप्रयाण' गहिंरगर शोथग्रंथ आ ललितगर साहित्यक सुंदर सुयोग अछि। एकरा मणिकांचनक संयोग कही तऽ बेजाए नहि। शोध आ सृजन दुहुक जुटान आ सेहो एक्कहि ठाम! एकटा उत्कृष्ट पोथीक रूपमे। ई पोथी मिथिलाक कीर्तिपताकाकेँ फेरसँ आकाशमे फहराबैकेँ पूरा दमखम रखैत अछि से हम्मर विश्वास अछि। एकर सभसँ पैघ कारण छैक एकर आखर-आखर केर भाव। जे

आदिसँ अंत धरि मैथिलत्वक भास गेबामे रत अछि। बच्चनजी नाटकक एक-एक दृश्यकेँ खोइँचा छोड़ा जे समीक्षा कएने छथि ओ नाटकक अनुरूपे अछि। शास्त्रार्थक दृश्यमे द्वैत-अद्वैत, पंचतत्त्व, ब्रह्म-जीव आदिक व्याख्यामे नाटककारक ज्ञानक गाम्भीर्य हुनका मोहित कएलक। ओना प्रत्येक दृश्यकेँ अवधेशजी एक-पर-एक श्रेष्ठ कहने छथि।

इतिहास आ संस्कृतिक अध्येता, स्वतंत्रता आन्दोलनक व्याख्याता आ गांधी दर्शन केर महत्त्वपूर्ण उद्‌गाता सम्प्रति बिहार विधान परिषद्‌मे परियोजना पदाधिकारीक पदपर कार्यरत भैरव लाल दासजी कहैत छथि— डॉ. दिवाकरजी महाकविक महाप्रयाण प्रकरणकेँ नाटकक मुख्य विन्दु बनौलनि। आन कोनो पोथीमे कालिदास केर महाप्रयाणक एतेक स्पष्ट, गम्भीर आ सुंदर वर्णन भेटब कठिन अछि। आगू कहैत छथि जे अध्ययन आ पर्यटनक दृष्टिकोणसँ मिथिला आ श्रीलंकाक संबंध माता सीताक हरणसँ जुड़ल छल, आब महाकविक महाप्रयाण स्थल माटरासँ सेहो जुड़ि गेल। एहि पोथीक माध्यमसँ दिवाकरजी मिथिला आ माटराक बीचक भौगोलिक दूरीकेँ पाछाँ छोड़ैत दुनूकेँ भावनात्मक डोरिमे बान्हबामे सफल भऽ गेलाह। आब सब मैथिल माटरा जाए चाहता आ महाकविक महाप्रयाण स्थलपर अपन माथ सटाबए चाहता।

आब चलैत छी पटनाक महावीर मन्दिर दिस। एहि ठामसँ प्रकाशित प्रतिष्ठित शोधपत्रिका 'धर्मायण'क यशस्वी सम्पादक प्राच्यविद् आ पाण्डुलिपि विशेषज्ञ भवनाथ झाजी डॉ. दिवाकरक पोथीक सभसँ पैघ विशेषता मानैत छथि इतिहासक प्रति हुनक वैज्ञानिक दृष्टिकोणकेँ। भवनाथजी कहैत छथि जे दिवाकरजी यूरोपीय विद्वान् द्वारा निर्धारित इतिहासक कसौटीकेँ मानैत छथि आ अन्त:साक्ष्य, बहि:साक्ष्य, समकालिकता सभक परस्पर अन्वय आदि करओलाक बादे कोनो तथ्य धरि पहुँचैत छथि। एहि पोथीमे अनेक शिलालेख आ पाण्डुलिपिक उल्लेख साक्ष्यक रूपमे भेल अछि जे लेखकक शोधकेँ उच्च सोपान दैत अछि। भवनाथ झाजी पाण्डुलिपि सभक गहन मननसँ अनेक नुकाएल तथ्य सभक उद्‌घाटन कएलनि अछि।

मिथिला-मैथिलीक लेल पत्रकारिताक माध्यमसँ लगातार पछिला बीस सालसँ सक्रिय कपिल कुमार झाजी 'महाकविक महाप्रयाण'केँ वास्तवमे शोधक महार्णव मानैत छथि जाहिमे लेखक स्वयं हेलैत लगैत छथि, आ अंतमे ओ महाकविक मैथिलत्वक नवनीत संग बाहर अबैत छथि। अपना संग पाठककेँ सेहो ओहि नवनीत केर भव्य दर्शन करबैत छथि। पाठककेँ महाकविक मैथिलत्व केर अमृतसँ भावविभोर करैत छथि। एहि पोथीमे अनेक एहन बात अछि जे पाठककेँ रमणगर लगैत अछि। बहुत बात स्पष्ट भेल अछि। दिवाकरजी बहुत एहन बात सभक शोध समावेशनसँ फरिछा देने छथि जे पहिने स्पष्ट नहि छल। किन्तु-परन्तुसँ

परे पाठककेँ आश्वस्त करैत छथि आ पाठक मिथिलाकेँ महाकविक जन्मस्थान मानबाक निर्णय लैत छथि। 'महाकविक महाप्रयाण' नामक सम्पूर्ण पोथीमे पहिल बेर एक ठाम बेनीपट्टीसँ श्रीलंकाक माटरा धरि महाकवि कालिदासक जीवन यात्रा पूर्णत: गहन अध्ययन आ शोधपर आधारित अछि।

दिवाकरजी महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रापर विशद् विचार कएलनि आ ओकर प्रमाण सभक गंभीर मीमांसा करैत कालिदासकेँ मैथिल प्रमाणित कएलनि। डॉ. दिवाकर निश्चित रूपसँ श्रीलंकाक साहित्य संग पुरातात्विक स्रोत (श्रीलंकाक शिलालेख) आ जनश्रुति सभक अध्ययन आ परीक्षण करैत इतिहासक गहन मंथन, परम्परा सभक अनुशीलन करैत महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर एकटा अनुपम काज कएलनि।

एहि पर डॉ. संजीत झाजी कहैत छथि जे 'महाकविक महाप्रयाण' नामक ई ग्रन्थ मैथिली साहित्य संसारमे अपन एकटा विशिष्ट स्थान स्थापित करैत पाठक एवं शोधकर्ता सभक लेल अत्यंत उपादेय होएत ई हमर दृढ़ विश्वास अछि। एहि ग्रन्थक लेखनमे जाहि तरहक शोधदृष्टि अपनाओल गेल अछि, ओ भारतीय साहित्य संसार होइ या विश्व संसार होइ, पूर्वपक्ष या सिद्धान्तपक्षमे ओकर आदर हेबेटा करतैक। एहि महत्त्वपूर्ण विषयपर आगू सेहो शोधकार्य होइत रहक चाही, संगहि एहि ग्रन्थक हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजीमे सेहो अनुवाद हेबाक चाही, जाहिसँ अन्य भाषाक लोक सेहो एहि विश्वक महान कविक विषयमे भेल एहि शोधकार्यसँ अवगत भऽ सकथि। ई पोथी महाकवि कालिदास विषयक एकल पोथी अछि जे कालिदासकेँ मैथिल होएबाक ठोसगर प्रमाण सभ प्रस्तुत करैत अछि। पोथी मूलत: नाटकक अछि मुदा, नाटकसँ पूर्व जे शोध सामग्री प्रस्तुत कएल गेल अछि से बहुत सूक्ष्मताक अंगेजने अछि। एहि पोथीमे एक संगे एतेक रास जानकारी अछि जे प्राय: कोनो आन पोथीमे नहि अभरैत अछि। शोधक सभ मापदंडकेँ पूर्ण करैत अछि 'महाकविक महाप्रयाण'। डॉ. संजीत कुमार झा सी. एम. कॉलेज, दरभंगाक संस्कृत विभागाध्यक्ष छथि, राष्ट्रीय स्तरपर अपन मेधाक धाक जमा कतेक स्वर्णपदक प्राप्त कयने छथि।

लेखकक वैश्विक परिचितिक आकांक्षी डॉ. संजीत कहैत छथि जे समस्त साहित्यानुरागी पाठकगण एहि ग्रन्थकेँ पढ़थि एवं संरक्षित करथि।

एहि पोथीक सम्पादन करबाक काल हमरा जे एक महत्वपूर्ण विषय दिस ध्यान गेल अछि ओ थिक मैथिलीमे वर्तनीक समस्या। आश्चर्य तखन होइत अछि जखन एक जिला, एक शहरक दू लेखक भिन्न-भिन्न वर्तनीक प्रयोग करैत देखाइत छथि। अपना भरि हम विभिन्न लेखक सभक वर्तनीकेँ यथासाध्य एक

करबाक चेष्टा कएलहुँ मुदा एकर मानकीकरण परम आवश्यक अछि ताकि एकटा परिनिष्ठित मानक मैथिलीक स्वरूप अभरि सकए। एहि दिशामे सार्थक आ प्रभावी पहल उचित!

हमरा ने संस्कृतक अवगति अछि आ ने ओ योग्यता अछि जे एहि संकलनमे संकलित विद्वान सभक रचनाक सम्पादन करी तथापि एहन दुस्साहसक लेल हम विद्वान सभसँ करबद्ध क्षमा याचना करैत छी। हमर एक अनुरोधपर विद्वान लेखक लोकनि जे रचना पठा हमरा कृतार्थ कएलनि एहि लेल हम हुनका सभक चिर कृतज्ञ रहब। श्रद्धेय पूर्व कुलपति पं. (डॉ.) शशिनाथ झा आ मैथिली नाटकक शलाकापुरुष श्री महेन्द्र मलंगियाजीक पोथी विषयक मंतव्य पोथीएसँ लेल गेल अछि। हम एक बेर फेरसँ समस्त विद्वान लेल माथ झुका आभार प्रकट करैत छी जे अपन रचना/टिप्पणी पठा हमर मान बढ़ओलनि। हम वर्ष 2019सँ 'अनुप्रास' पत्रिकाक सम्पादन करैत आबि रहल छी। थोड़बे दिनमे पत्रिका साहित्ययिक समाजमे प्रतिष्ठित स्थान बनौलक अछि। पत्रिकामे सुप्रतिष्ठित रचनाकार सभक रचना प्रकाशित होइत अछि। एकरा संगे नवतुरिया रचनाकार सभक अभिसिंचन हेतु उचित स्थान सेहो उपलब्ध कराओल जाइत अछि। हमर प्रयास रहैत अछि जे पत्रिका साहित्य आ समाजक पथ-प्रदर्शनमे उपयोगी सिद्ध हो। तथापि स्वतंत्र पोथीक रूपमे 'अभिज्ञान महाप्रयाण'क सम्पादन करबाक हमर ई प्रथमे प्रयास अछि तेँ सभसँ निवेदन जे कोनो त्रुटि होइ तऽ हमरा संज्ञानमे दैत त्रुटि लेल हमर मार्गदर्शन करथि। प्रेरणादायी शुभकामना लेल डॉ. रामावतार यादवजीक प्रति हृदयसँ आभार प्रकट करैत छियनि। प्रणाम करैत छियनि।

बैसाखक लहकैत दुपहरियामे हमरा संग बेनीपट्टी, उच्चैठ, वनकट्टा, दामोदरपुर आदि गामक भ्रमण करओनिहार युवा कवि एवं नाटककार श्री मनोज कुमार कामतजीक प्रति स्नेहसिक्त आभार प्रकट करैत छियनि।

अंतमे हम ओहि प्रतिभा पुञ्जक समक्ष नतशिर होइत छी जे इतिहासक अनुशीलनमे निष्णात् इतिहासकार, साहित्यक मूल्यांकनमे शुद्ध साहित्यकार, शोध काल विशुद्ध अन्वेषक आ प्रज्ञ, दर्शनशास्त्रक ज्ञाता, संगीतशास्त्रक उद्गाता, दक्ष समाजशास्त्री आ वैज्ञानिक निकष सभक व्याख्याता, एकीकृत पुंजीभूत स्वरूप डॉ. दिवाकरजी जहिना अपना-आपमे एसकरे छथि तहिना हुनक पोथी 'महाकविक महाप्रयाण'। आशा अछि जे 'अभिज्ञान महाप्रयाण' सेहो एहिना अप्रतिम होएत।

***'धनेश्वरीधाम'**, मधुबनी*

रामनवमी, 17 अप्रैल 2024

(दीप नारायण)

अभिज्ञान महाप्रयाण

डॉ. प्रभाकर पाठक

जन्मतिथि : 30 जून 1948, सीवान।
सम्पर्क : +91 94706 23439

डॉ. प्रभाकर पाठक संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, मैथिली आदि भाषाक निष्णात् विद्वान् रूपमे सुप्रसिद्ध छथि। हिन्दी साहित्यक अनुपम व्याख्याता आ यशस्वी प्रोफेसर रूपमे छात्रसभमे अत्यधिक लोकप्रिय। हिन्दीक वर्गमे हिनक ओजस्वी, मोनहरू आ सारगर्भित व्याख्यान सुनबा लेल अन्य विभागक छात्र हिन्दीक वर्गमे जुमि जाइत छल आ जगह नहि भेटलापर कक्षाक वातायन सभपर लुधकल रहैत छल। हिन्दी विभागाध्यक्ष आ संकायाध्यक्ष रूपमे लब्धप्रतिष्ठ छलाह। अतुलित मेधा हिनक एकमात्र सम्पत्ति जेकरा छात्र सभमे मुक्तहस्तसँ दान करैत पुराकालक आदर्श गुरु रूपमे समादृत भेलाह। एक अप्रतिम वक्ता रूपमे सर्वमान्य! प्रकाशित कृति सभमे प्रमुख अछि— *हिन्दी साहित्य का सर्जनात्मक इतिहास, विन्ध्येश्वरी-वर्णन, पृथ्वीराज, हिन्दी कवियों का कृतित्व एवं व्यक्तित्व, प्रबन्ध चतुरंग* (सम्पादित) आदि। हिनक अनेकश: आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित एवं आकाशवाणीसँ प्रसारित। सरस्वतीपुत्र डॉ. प्रभाकर पाठक मिथिलारत्नसँ अलंकृत छथि।

‘महाकविक महाप्रयाण’ : एक समीक्षा

डॉ. रंगनाथ दिवाकर, यानी शोध-समर्थ, शोधातुर विद्यार्थी! हँ, सनातन विद्यार्थी, बुद्धिजीवी नहि विद्याजीवी! बुद्धि तऽ स्मृतिक कारण अछि आ स्मृतिक भ्रंश तऽ अवश्यम्भावी। बुद्धिक अनेक रोग ग्रंथसभमे कथित अछि मुदा विद्याक तऽ एकमात्र रोग अछि आ एहि रोगक याचना सभकेँ करबाक चाही— ‘सा विद्या या विमुक्तये’। रंगनाथ एहने रोगी, एहने विरल ‘व्यसनी’ छथि—

व्यसनानि सन्ति बहुधा व्यसनद्वयकेवलं व्यसनम्।
विद्याभ्यसनं व्यसनं अथवा हरिपाद सेवनं व्यसनम्॥

रंगनाथकेँ विद्याक व्यसन विश्रुत विश्वासक संग व्यस्तताक विस्तृत आकाश दऽ चुकल अछि। प्रशासन केर ‘प्र’ उपसर्गक प्रकृष्टता तऽ हुनका सेवोपरामक सीमा धरि प्राप्त होइते रहल अछि। अद्यतन ओ छात्रधर्म पूर्ण युवता आ कर्मठतासँ निभा रहल छथि समाजक छत्र आ साहित्यक नेत्र बनि।

रंगनाथकेँ समझौता करब पसन्द नहि। ओ अखनो अपन आलेख आ ग्रंथमे सत्यप्रिय बनल छथि। ई युवक अपन स्वेदसँ सरस्वतीक एतेक सेवा कयलनि जे आइ पैघ-पैघ विद्वान सभक बातकेँ अपन विवेचनासँ मात कऽ देलनि। एकर प्रमाण अछि 2022मे प्रकाशित हुनक परिश्रमक प्रकृष्ट ग्रंथ— ‘महाकविक महाप्रयाण’। ओ महाकवि जनिक जीवन-वृत्त आओर व्यक्तित्वसँ संबलित विवाद-परिवाद आ संवादकेँ डॉ. रंगनाथ अपन विषय बनओलनि, ओ छथि संस्कृत वाङ्मयक कनीष्ठिकाधिष्ठतं कालिदास। जँ साँच कही तऽ रंगनाथे सन मेधावी, परिश्रमी, प्रतिभासम्पन्न आ पुरुषार्थी व्यक्तिए एहि बिढ़नीक छत्तामे ढेला मारबाक साहस कऽ सकैत छल। हिम्मते मददे मरदे खुदा! ओहिनो मिथिलाक न्याय-विमर्श (तर्क-सिद्धि)

तऽ जगत्प्रसिद्ध अछिए। 'महाकविक महाप्रयाण' एहि तथ्यकेँ सरासर प्रमाणित करैत अछि जे रंगनाथक लेखनीक खुदाई कतेक गहीँर आ गूढ़ता रखैत अछि।

कालिदास काव्यसम्राट आ नाट्यसम्राट छथि तऽ किंवदन्ती सभक सेहो सम्राट छथि। ई एक दिशि कविकुलगुरुक महत्ताकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि तऽ दोसर दिशि 'ढेर योगी मठ उजाड़' कहावतकेँ सेहो चरितार्थ करैत अछि। जँ सभटा जोगी भिक्षाटनपर निकलि जाय तखन मठ सून तऽ होयबे करत। सब योगी योग्य तऽ नहिए ने, अधिकांश योगी तऽ संयोगेसँ योगी होइत छथि। जे योगी 'योग'सँ होइत छथि वैह तत्त्वदर्शी आ विषयनिष्ठ(विद्याविषय) सेहो होइत छथि। बीसम सदीमे सेहो मिथिलांचलमे कालिदास संबंधी विमर्श भेल अछि आ हमर अनुमान अछि जे बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री पं. विनोदानन्द झाक आह्वानमयी वाणीए एकर विशेष कारण भेल जे "मिथिलाक विद्वान ई सिद्ध करथि जे महाकवि कालिदास मिथिलाक छलाह।" 21म सदीमे 'महाकवि कालिदास : कहाँ और कब' समीक्षार्थ हमरा भेटल छल। 2002 ई.मे हम आलस्यवश एकर समीक्षा नहि लिखि सकल रही। एहि पुस्तकक लेखक छथि पं. लक्ष्मण झा। वैह एहि पोथीक प्राक्कथनमे उपर्युक्त पं. विनोदानन्द झाक बात उद्धृत कयने छलाह जे मुख्यमंत्री कालिदास-समारोहक अवसरपर वैवाहिक शुद्धक समय होइवला ब्राह्मणक महासभामे कहने छलाह। अपन पोथीमे कालिदाससँ संबद्ध एक लोकगाथा (भगैत)क उल्लेख सेहो ओ कयने छथि। अपन नओ अध्यायक एहि पोथीमे अनेक दृष्टान्तसँ ओ यैह सिद्ध कयने छथि जे कालिदास मिथिलेक छथि। ई पोथी जिज्ञासाक मनोभूमिकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि जाहिमे भावात्मकताक पुट अधिक अछि। किछु अन्य विद्वान सभसँ भिन्न नव बातक लेल लेखक परिश्रम कयने छथि किन्तु एकरा शोधोन्मुख केर संज्ञा देल जा सकैछ शोधात्मक नहि कहल जा सकैछ। सामान्य आओर विदित जानकारी सभक आधारपर लक्ष्मण झाजी किछु विशेष आ अज्ञात कहबाक प्रयत्न अवश्य कयने छथि तेँ 'शोध' शब्दक निरन्तरताक एक विन्दु तऽ अछिए।

2022मे डॉ. रंगनाथक मैथिली भाषामे प्रकाशित 'महाकविक महाप्रयाण' कृति हमरा समक्ष आएल। रंगनाथ हिन्दीक निविष्ट विद्वान छथि आ हिन्दी भाषामे हिनक विशिष्ट रचना सब सेहो अछि। जँ ई प्रशासनक अनुशासनिक आसनपर नहि रहितथि तखन हिन्दीकेँ अद्यतन हिनक लेखनीक विमल वैभव विस्तृत रूपसँ भेटल रहैत। हमर तऽ मुखर मान्यता अछि जे प्रस्तुत ग्रंथो जँ हिन्दीमे आएल रहैत तखन एहिपर सुदीर्घ विमर्श-अमर्ष होएतए; पाठक, समीक्षक सेहो बहुश: होएतए। एहिमे कोनो शक नहि जे मातृभाषाकेँ अपन ई अमूल्य अवदान दैत रंगनाथ कृतार्थ भेल छथि। ई विहंग-उछंग गारुड़ी उड़ान बनि नमगर-उच्च आकाश प्राप्त करबाक सामर्थ्य

रखैत अछि। एहि पोथीक परिनिष्ठित आ ठेठ मैथिली जतेक मनमोहक अछि ओतबे वैदुष्यपूर्ण। मैथिलीक ऐरे-गैरे पाठक एहि ठाम पानिए भरताह। ई स्वाभाविके अछि किएक तऽ रंगनाथक समक्ष एक शास्त्रीय (क्लासिकल) कविक व्यक्तित्व छल। कोनो भाषा किएक नहि हो भाषाक मर्मज्ञ ओकर उपयोग कृतिक अनुरूपे करत। मैथिलीक पाठक आ विद्वान सभक लेल तऽ ई पोथी आ एकर मान्यता, एकर मूर्त्तसँ अमूर्त्त दिशि 'आगमनिक' प्रस्थान आ स्थूलसँ सूक्ष्म दिशि बढ़ैत शोधपरक प्रयाण मात्र प्रशंसनीये नहि पुरस्करणीय आ अग्रसार्य सेहो अछि। एहि विद्वानकेँ विश्व— D. Litt. केर उपाधि विद्वान सभ द्वारा अनुशंसित होएबाक चाही।

ई एक सुखद आ रोचके नहि अपितु रोमांचक तथ्य अछि जे कालिदासक मैथिलत्वकेँ मिथिलेक भाषामे सिद्ध कयल जाय आ सेहो एक वाङ्मय (मैथिली, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी)क विद्वान द्वारा— देवो भूत्वा देवं यजेत्। ई तऽ सर्वाधिक सम्यक् अछि। एहि अवधारणाकेँ अखनो नकारल नहि जा सकैछ जे अद्यतन ई सुसिद्ध नहि अछि जे कालिदास मिथिलाक छथि वा उज्जैनक, तथापि प्रजातंत्रक लेल अंग्रेजीमे एक कथन अछि— Majority must be granted अधिसंख्य प्रमाणक बहुलताक आधारपर या आप्त, आदर्श साक्ष्य सभक आधारपर अथवा ऐतिहासिक अभिलेख, शिलालेख आ विद्वान सभक अधिकतम विमर्श, विवेचना आ जागरुकताक आलोकमे— 'Ever inquisitiveness is the source of real research'मे जे मिथिलांचलमे अद्यतन प्रस्तुत अछि, जे मात्र किंवदन्तीक कुहेलिकामे काराग्रस्त छल, आइ ई मान्य होयबाक चाही जे कालिदासक मैथिलत्व-प्रतिपादन मात्र अन्हरियामे आलोड़न नहि अपितु प्रकाशक प्रस्फुटन अछि। एहि दिशामे स्वतंत्रताक तुरंत बादेसँ बहुत रास ग्रंथ, आलेख आ शोधपत्र अखनो लिखल जा रहल अछि जेकर ज्वलन्त प्रमाण डॉ. रंगनाथ दिवाकर रचित 'महाकविक महाप्रयाण' ग्रंथ अछि जे अपन श्रम, संधान, संसाधनोपचार आ प्रमाण पुरस्सरतामे अनूठा अछि। ई स्थिति 'महाकविक जीवन हुनक कालेमे जनश्रुति, किंवदन्ती आ दन्तकथा सभक केन्द्रविन्दु बनि गेल छल जे अखनो धरि फरिछायल नहि अछि' स्वीकार करितो डॉ. अपन मेधाक विशद् प्रयोग कयलनि आ कविकुलगुरुक विराट व्यक्तित्वकेँ पुनर्नवता प्रदान करबाक अथोर प्रयत्न कयलनि। मेघदूतम् केर श्लोकमे 'दिङ्गनागानां' शब्दक श्लेषार्थ द्वारा अपन प्रतिभाक विच्छुरित प्रकाशसँ ओ पुस्तकक प्रारम्भेमे प्रभावित करैत छथि। महाकवि गुप्तकालीन छथि, ई तऽ इतिहासक सम्यक् परीक्षणसँ हम सेहो मानैत छी आ एकरा संगे जहाँ धरि हुनक उज्जैन आ मिथिलाक होयबाक बात अछि तऽ अनेक विद्वान आ अनुसंधित्सु अपन विमर्शमे एहि दुनू स्थानमेसँ एककेँ छानबाक प्रयत्न करैत छथि। सरकारी सेवामे रहि

पं. लक्ष्मण झा एहि दिशामे सुधी प्रयत्न करैत कालिदासक मैथिलत्वेकेँ अपन निष्कर्षमे सिद्ध करैत छथि मुदा पंडितजी अपन व्यस्तता अथवा उम्रक अनुशासनसँ बाध्य भऽ रंगनाथक युवोचित श्रम-साधन-यात्रा धरि नहि पहुँचि सकलाह तथापि हुनक पोथी एक संकेत आ पड़ाओ तऽ अछिए। मिथिलानरेशक मत्स्यध्वजाक प्रमाण हुनको पुस्तकमे विस्तारसँ अछि जेकर प्रतिपादन डॉ. रंगनाथक ग्रंथमे सेहो भेल अछि। एकर बावजूद महाकविक जन्मस्थलीक लेल इतिहास, ऐतिह्य आ किंवदन्ती सभक वात्याचक्रसँ रंगनाथ जतेक लड़ि सकलाह ओ श्रम एहि पोथीमे हम पहिल बेर देखि रहल छी। रंगनाथ अपन ग्रंथक अध्याय-क्रमकेँ एतेक वैज्ञानिक आ सुस्पष्ट रूप देने छथि जे ग्रंथक प्रमुख बात सर्वसामान्यक लेल कपोत-दृष्टि बनि जाइत अछि आ ओतबेसँ ओकर ग्रन्थावलोकन भऽ जाइत अछि। पोथीमे विभिन्न तथ्य, रचना, आन्तरिक संकेत सभक दिग्दर्शन आ अपन भाषाक प्रवाहमयता, अभिव्यक्तिक तटस्थता, दूरारूढ़ कल्पनाभाव, तथ्य सभक विश्वसनीयता, न्याय-निर्धारण, प्रमाणाधिक्य, कालिदासक मातृभूमिक अंचल-वैशिष्ट्य, प्राकृतिक सौन्दर्य, मैथिल पावनि-तिहार आ व्यवहार सभक उल्लेख जाहिमे मिथिलाक माटिक सोन्हगर सुगंध, माधुर्य आ सौन्दर्य तथा सर्वोपरि 'विक्रमोर्वशीयम्'क आधारपर मिथिलापभ्रंश (पूर्वी)क उद्धरण अछि। एहि सभसँ अपन शोध केर विश्वसनीयता सिद्ध करैत डॉ. रंगनाथ अपन सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषणसँ ई मानबाक लेल विवश करबाक अभूतपूर्व चेष्टा कयने छथि जे कालिदासक जन्मस्थली मिथिला छल। हम सब बातकेँ नकारि सकैत छी मुदा एहि कहावतकेँ नकारि नहि सकैत छी जे 'लिखतं के आगू वक्तं की'। एकरे परिपुष्टताक लेल रंगनाथ जे राजस्वक एहन अभिलेख प्रस्तुत कयने छथि जाहिसँ 'अहाँ मानू वा नहि मानू मुदा जानय तऽ पड़त'। अपन प्रशासनिक निष्ठा आ साहित्यिक प्रतिपाद्य क्षमताक सफलतापूर्वक दोहन करैत रंगनाथ एहि ग्रंथमे प्रामाणिकताक रंग जमा देने छथि। एहिना कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंकाक सन्दर्भमे सेहो लेखक केर स्पष्ट मत अछि जे कालिदास आ कुमारदासक रचनामे अनन्य साम्य अछि आ एहि तरहेँ दुनूसँ कालिदासक सम्बद्धता असंदिग्ध अछि। कालिदासक महाप्रयाण-स्थलक जेहन ऐतिहासिक आ भौगोलिक चित्रण अछि ओ तऽ रंगनाथकेँ साहित्यकारक संगहि इतिहासक अधीत विद्यार्थी प्रमाणित करैत अछि। अपन एहि विरल रचनाक निष्कर्ष रंगनाथ एहि प्रकारेँ स्पष्ट करैत छथि— "कहि सकैत छी जे महाकवि कालिदास मैथिल छथि। महर्षि वाल्मीकि आ महर्षि व्यासकेँ ब्रह्मा (सृजनकर्ता) मानल जाए आ महाकवि कालिदासकेँ 'न भूतो न भविष्यति' महाकवि प्रातिभ।"

अनेक बाध्यताक बावजूद एहि श्रमसाध्य, विवेकसाध्य ग्रंथक असाध्यताकेँ, रंगनाथ द्वारा सिद्ध कऽ देबाक सफलतापर ओ आशीर्वादक पात्र अछि आ हमरा

विश्वास अछि जे ई पोथी हाथो-हाथ फिरत। एहि पुस्तकक अन्तमे रंगनाथ प्रणीत कालिदासपर एक नाटक सेहो अछि आ मूलत: एकरे नामपर एहि पोथीक नामकरण भेल अछि। ई नाटक सेहो कालिदासक मैथिलत्वे केर सदाग्रही प्रतिपाद्य अछि।

हमरा लगैत अछि जे एहि पोथीक मूल प्रतिपाद्य महाकविक मैथिलत्व अछि तेँ शीर्षक वस्तुवाचक नहि भऽ घटनाप्रधान अथच व्यक्तिवाचक भऽ गेल अछि। जँ अनुप्रासक मोह हो तऽ ओ 'महाकविक मैथिलत्व'मे सेहो अछि मुदा ई शीर्षक रखलासँ नाटक केर उपादेयता एहि पोथीमे नहि रहैत। संभवत: 'काव्येषु नाटकं रम्यम्'केँ हृदयस्थ करैत लेखक ओकरे प्रधानता दैत मूल प्रतिपाद्यकेँ अनदेखी कयलनि वा फेर एहि संभ्रममे आबि गेलाह जे 'मैथिलत्व' प्रजातांत्रिक (तथाकथित) कालमे जातीय वा आंचलिक गंधयुक्त शीर्षक भऽ जायत। मैथिली भाषाक उपयोगक कारणेँ एकर शीर्षक 'मैथिलत्व' जातिवाचक नहि भऽ सकैछ। आब रहल बात नाटकक तऽ एहि पुस्तकसँ अलग ओकरा प्रकाशित कयलासँ दुनूक महत्ता बढ़त। रंगनाथकेँ सुरेन्द्र वर्माक नाटक 'आठवाँ सर्ग'केँ स्मरण करबाक चाही। एहि शीर्षकमे कालिदास कतहु ध्वनित नहि होइत छथि मुदा 'आठवाँ सर्ग'क रहस्यवाची शीर्षक सहृदयकेँ देखबाक लेल आकर्षित आ बाध्य करैत अछि। ओहिना 'महाकविक महाप्रयाण' शीर्षकसँ ई नाटक अपन काज करत। 'महाकविक मैथिलत्व'मे सेहो रहस्य रहत विशेषत: विद्यापति प्रथम प्रकाशित होयताह मुदा पृष्ठ पलटाबैत पाठक चमत्कृत भऽ जयतथि। दू महाकविक रहस्य टकराकेँ पाठकक लेल चकचोन्ही बनितए आ हुनक उत्सुकता बढ़ितए। ई हम समीक्षक केर अपन अभिमत थिक कोनो बाध्यता नहि।

रंगनाथ (लेखक) हमरा लेल आशीर्वाद आ अभिशंसेक पात्र नहि, अभिनन्दनक योग्य छथि। रंगनाथ ओ कऽ रहल छथि जे हमसब नहि कयलहुँ। हुनक शोधातुर व्यक्तित्वक लेल एहि ब्रजभाषी सवैयामे हमर आशीष अछि—

अति सूधो न सोध को मारग है जैह अंध तिमिर तीर मारत हैं।
बहु कंटक पाथर ह्वै पथ में जन भीत नहीं पग डारत हैं।
तँह धीर मशाल लै ज्ञान गुहा सब ग्रंथ महा झकझोरत हैं।
कह 'पाठक' हे रंगनाथ सुनो तुम सत्य ही सोध को सूरत हैं।

डॉ. नरेश कुमार विकल

जन्मतिथि : *27 जुलाइ 1950,* समस्तीपुर

सम्पर्क : *+91 94302 44114*

मैथिलीक यशस्वी प्रोफेसर विकलजी मैथिली आ हिन्दी (एम. ए. द्वय)क लब्धप्रतिष्ठ हस्ताक्षर छथि। काव्य संकलन 'युग की पुकार', 'मोद मंजरी', 'अरिपन', 'बिन बाती दीप जरय', 'अनचोके मे', 'उगायब पानि पर आखर', 'महुआ मदन रस टपकय', 'कविता 1992'(सम्पा.) आ 'एक बूँद दरिया' (सम्पा.) प्रकाशित छनि। कथासंकलन 'वह हरिजन नहीं है', 'गोनू झा की हँसती कहानियाँ', 'पूरवी', 'अड़ाँच', 'भरि गेल दर्दक इनार' लोकप्रिय भेलनि। उपन्यास 'टहकैत टीस', 'अमावस का चाँद', 'मधुछन्दा' पाठक सभक प्रशंसा प्राप्त कएलक। नाटक 'धरती है बलिदान की', 'न्याय की बलिवेदी पर', 'भौजी', 'गुरुदक्षिणा', 'दासी', 'चित्रप्रिया', 'चोखगर खाँच', 'जय बाबा खुदनेश्वर', 'ओ तऽ गोबरक चौंत छलै' बहुत चर्चित भेल छल। मराठी उपन्यास 'ययाति', गुजराती उपन्यास 'तत्वमसि', तमिल उपन्यास 'चित्रप्रिया' आदिक अनुवाद कएलनि। अनेक अभिनन्दन ग्रंथ, स्मृतिग्रंथ, मैथिली निबंध संकलन, समस्तीपुर गजेटियर, विभिन्न स्मारिका आदिक सम्पादन कएलनि। हिन्दी फिल्म 'दहेज'सँ अभिनेता आ गीतकार रूपमे तथा भोजपुरी फिल्म 'केहू जाने ना दरदिया हमार 'सँ गीतकार रूपमे जुड़ल छथि। 'छठि मैया', 'कोहबर घर', 'रोहू माछक मूड़ा' आदि कैसेट केर लोकप्रिय गीतकार छथि। विभिन्न संस्था सभक अध्यक्ष छथि। साहित्य अकादेमीक प्राक्तन सलाहकार सदस्य रहल छथि आ अकादेमीसँ प्रकाशित Who's who of Indian Writersमे सम्मिलित छथि। बहुमुखी व्यक्तित्वक स्वामी विकलजी समस्तीपुरक साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधि केर मेह छथि। हालहिमे मैथिल समाज, रहिका द्वारा अनुप्रास प्रकाशनसँ प्रकाशित हिनक चर्चित पोथी 'चोखगर खाँच'पर प्रतिष्ठित किरण पुरस्कार देल गेल अछि।

‘महाकविक महाप्रयाण’ : एकटा बेसोह पाठकक लेखेँ केहन ?

वाग्देवीक वर-प्रसूत डॉ. रंगनाथ दिवाकरक ज्योतिश्चुंबी व्यक्तित्व सहजता, सरलता आ सौम्यताक पर्याय थिकनि। हिनक संस्कारित आचरण समयकेँ थाती नहि, जीवन माननिहार दिवाकरजी इंच-इंच, साँस-साँस नापल-जोखल जिनगी...केँ अपन आचरण आ व्यवहारमे आत्मसात कयलनि। यैह कारण थिक जे विविध क्षेत्र सभमे बेसीसँ बेसी बाझल रहलाक बादो ई संतुलित एवं संयमित ढंगसँ अनवरत कार्यरत रहलनि। अपन दिनचर्याकेँ ई एहि रूपमे व्यवस्थित कऽ रखने छलाह जतय समयक बेसीसँ बेसी सदुपयोग कयल जा सकय। हिनक कार्य क्षेत्रो तऽ विविध छलैक— शैक्षणिक, साहित्यिक, सामाजिक आ किछु-किछु आध्यात्मिक सेहो। हिनक अतिरिक्त सक्रियता सभ क्षेत्रकेँ अपन प्रभावी उपस्थितिसँ समृद्ध करैत रहैत छल। ई अनुशासित छात्र, कुशल कथाकार, मूर्द्धन्य समालोचक, सम्मानित शिक्षाविद्, मैथिल संस्कृतिक प्रखर प्रवक्ता आ सामाजिक कार्यकर्ताक रूपमे समाजमे समादृत रहलाह अछि। मुदा, हिनक अन्तस सभ दिनसँ औनाइत रहलनि जे क्षेत्रीय, प्रान्तीय आ देशीय स्तरपर किछु चपोतल तहकेँ कोना उघारी। प्रबल जिज्ञासा रहलनि जे किछु किंवदन्ती, किछु भुम्हुर भेल इतिहास, किछु अपर्याप्त-अप्राप्त सत्यकेँ सार्वजनिक कय अनर्गल भ्रमकेँ भंग करी। लोकक माँझ प्रचलित अपूर्ण वा मिथ्या जनतबकेँ खोइँछा छोड़ा कऽ सबहक सोझाँ राखी। एहि लेल हिनक मन सभ दिनसँ आतुर रहलनि आ यैह हिनक शोध-प्रवृत्तिक कारण बनल। यैह शोधप्रज्ञता हिनका ‘ब्रह्मभट्ट वैभव’, ‘सहदेव सुषमा’, ‘मधुबनी दर्पण’ ‘विरासत मुजफ्फरपुर’, ‘भामती’ आदिक सम्पादन करबा लेल विवश कयलकनि आ शोधक पराकाष्ठापर पहुँचाय देलकनि। हिनक स्वतंत्र ओ मौलिक शोध-ग्रन्थ— ‘हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान’, ‘मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी’, ‘सुलातानपुर सौरभ’, मंडन मिश्र-शंकराचार्यक कथित शास्त्रार्थक खंडन

आ प्रस्तुत शोधग्रंथ 'महाकविक महाप्रयाण' अछि। जहिना ई 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी'मे मैथिल शौर्यक दिग्दर्शन करोलनि, तहिना हिनक सार्थक प्रयास रहलनि एहि पोथीमे महाकवि कालिदासक मैथिलत्व सिद्ध करबाक।

ओना मनुष्य जहियासँ सृष्टि आ प्रकृतिक रहस्यकेँ जानबाक-बुझबाक गुनधुनमे लागि गेल, तहियेसँ ओकरा मन मस्तिष्कमे घुरिआइत मेघक निर्माण प्रारम्भ भऽ गेलैक। जीवनकेँ जानबाक, प्रकृतिकेँ चीन्हबाक, सृष्टिकेँ बुझबाक, रहस्य सभसँ रस लेबाक बरमहल लिलसा आ अनवरत अतृप्त अंतरक अभिलाषा आ आकांक्षाए अनुसंधानक नेओ रखलकैक। मनुष्यक ई प्रयास रहलैक जे अज्ञानक अन्हरायल तहकेँ हटा कऽ अनुसंधानक मार्ग प्रशस्त कयल जाय। साहित्यिक आ भाषिक अनुसंधानकेँ पहिने उपेक्षा कयल जाइत छलैक मुदा, जखन एहिमे इतिहास आ संस्कृतिक प्रमाण भेटब शुरू भेलैक, लोकजीवनक, तत्कालीन समाजक तथ्याख्यान प्राप्त होमय लगलैक, तखन जा कऽ ई लोकक संज्ञानमे अयलैक। डॉ. विनय मोहन शर्माक कहब छनि जे 'खोज एक गोट स्वत: प्रवहमान क्रिया अछि, जकर आदि तऽ अछि, मुदा अंत नहि अछि। नीक जकाँ व्याख्या-सहित परिकल्पना वा समस्याक समाधान बहार करबाक व्यवस्थित ओ तटस्थ प्रक्रियाक नाम शोध थिक।"

यद्यपि शोध शब्दक बहुतो पर्याय प्रचलित अछि, तैयो साहित्यमे शोधक लेल शोध आ अनुसंधाने शब्द मान्य भऽ गेल अछि। 'अनु' उपसर्गसँ युक्त 'संधान' शब्दक अर्थ लक्ष्यक पाछाँ लागब थिक। डॉ. उदयभानु सिंहक कहब छनि जे अनुसंधानक परिनिष्ठित अर्थ अछि, कोनो महत्वपूर्ण सुनिश्चित तत्वाभिनिवेशी वैज्ञानिक अध्ययन, तत्सम्बन्धी तथ्यकेँ व्यवस्थित ढंगसँ अन्वेषण निरीक्षण-परीक्षण आ वर्गीकरण-विश्लेषण ओ एकत्रीकरण आधारपर प्रस्थापन योग्य निष्कर्ष सभक प्रमाण निर्देशपूर्वक उपस्थापन। समस्या सभक निराकरण एवं स्पष्टीकरणक प्रक्रिया सेहो 'रिसर्च'क अन्तर्गत समाहित अछि। जे पहिने भऽ गेल ओ सभ 'सर्च' थिक। आब रिसर्च होइछ, अर्थात पुनर्मूल्यांकनक पुनर्शोधन होइत अछि। युगक गर्तमे दबि कऽ जे सत्य अन्हारमे आच्छन्न होइत अछि ओकरा खोधि कऽ ताकब सेहो रिसर्च थिक आ कोनो विषय वा विन्दुकेँ केन्द्र मानि कऽ सत्यक निरीक्षण-परीक्षण सेहो 'रिसर्च'क गंतव्य थिक।

डॉ. दिवाकरक ई शोध-ग्रंथ एहि सभ कसौटीपर ठाढ़ उतरैत अछि आ कहल जा सकैछ जे ई सफलताक सोपानपर चढ़ि गेल छथि। आ जाहि संस्थान दिससँ ई प्रस्तुत कयल गेल अछि ओकर नामो थिकै— जय-राम शोध संस्थान।

महाकविसँ अभिप्राय मात्रे महाकवि कालिदास नहि होइतय। कियेक तऽ मिथिलामे मारते रास महाकविसँ विभूषित कवि भऽ चुकल छथि। मुदा, कोष्ठमे फरिछा देला सन्ताँ ई स्पष्ट भऽ जाइछ, जे ई महाकवि कालिदासक सम्बन्धे लिखल अछि।

जहिना एकर भूमिकामे महेन्द्र मलंगियाजी कालिदासक नामक शुद्धतापर प्रश्न उठौलनि अछि, बहुतो विद्वानक मनमे ई बात बरमहल घुरिआइत रहैत छनि— जे हिनक नेनाक नाम किछु आओर हेतनि वा होयबाक चाही।

काव्य आ साहित्यक महत्ता, उन्मुक्त काव्यक रमणीय अभिव्यक्तियेमे भेटैछ। वाङ्मयक आन कोनहु प्रवाहमे शक्ति-सौन्दर्यकेँ व्यक्ति-सुलभ बना देबाक शक्ति नहि छैक। तेँ उन्मुक्त अथवा विराट् चेतनानुकृति सभसँ अनुप्राणित करबाक लेल युगान्तर अनुष्ठानक ई कार्य काव्य वा साहित्ये द्वारा पूर्ण होइत अछि। व्यक्तिक उन्मुक्तता, उदारता, सक्रियता, सर्वप्रियता आ तेजस्विता आदि तद्वृति सभक ओज संकल्पकेँ अहीसँ प्राणपद शक्ति भेटैछ, आ ओकर संसर्गसँ सामाजिक जीवनमे गौरवशाली, विराट् संकल्पक अनन्त ज्योतिर्धारा सभक निर्झर सेहो प्रवाहित होइत अछि। तेँ भारतीय महर्षि लोकनि अनेक मंत्र सभमे 'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः'क रूपमे कविक महिमाक गान गओलनि अछि।

एतय कालिदासकेँ महाकवि कहि सम्बोधित कयल गेल अछि। कालिदास यशस्वी नाटककारो छलाह, मुदा हुनक कवित्व शक्ति सेहो न्यून नहि छल आ तेँ डॉ. दिवाकरजी हुनका महाकवियेक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक प्रयास कयलनि अछि। महाकवि कालिदासक काव्यमे प्रकृतिक दर्शन बेसी दृष्टिगोचर होइछ। कियैक ने होइक। भारतीय चिन्तनक स्रोत मानव आ प्रकृतिक अभिन्न आत्मीयताक प्रतीति व्यंजक अपन परिचयक आदिकालेसँ अछि। तपोवनक साधना सभसँ आविर्भूत भारत-भारती वनस्थलीक सुषमाक उपेक्षा कोना कऽ सकैत अछि? वैदिक साहित्यमे उषा, संध्या, राति, नदी, वनस्पति, वादर, मातृभूमि आदिक मानव कल्पनाक आत्मीयताक संगे मंजुल दर्शन भेटैत अछि। आदिकाव्यमे प्रकृतिक सुछविक कतेको रूप सभमे आलम्बनक रूपमे प्रत्यक्ष होइछ। सीताक विरहसँ संतप्त राम वर्षा आ शरदक अनेक दृश्य सभमे उद्विग्न देखाइ पड़ैत छथि। संयोग-सुखक अनुरूपतामे प्रकृति जतय आनन्ददायिनी होइत अछि, ओतहि विप्रलम्भक समयमे दुखक नितान्त-वृद्धिक कारण बनल देखाइ दैछ।

कविवर कालिदास प्रकृतिकेँ चेतन रूपमे देखलनि अछि। हुनक 'मेघदूत'क कल्पना प्रिया-विधुर पक्षक मानसिक संताप, उछाह आ सौहार्दक संग मेघक माध्यमे पठाओल गेल सनेसक अभिव्यंजने तेँ थिकै। आश्रमसँ विदा होइत शकुन्तला लता आ हरिण सभसँ हृदय खोलि कऽ मिलैत अछि। 'कुमारसंभव'मे वर्षाकालमे पार्वतीजीक तपस्याक साक्षी विजुरी रूपी नेत्रसँ देखैत राति बनैत अछि। 'रघुवंश'मे राम लंकासँ घुरती काल अपन जिनगीक वियोग कालक परिचय सीतासँ दैत कहैत छथि— 'पुष्पगुच्छ सभक भारसँ लेओत भेल एहि कोमलांगी अशोकलताकेँ अहाँक प्राप्तिक

बुद्धिसँ आलिंगन करबा काल कनैत लक्ष्मण हमरा रोकलनि'। ऋतुसंहारमे महाकवि कालिदास षड्-ऋतु सभसँ प्रस्तुत आ अप्रस्तुत दुनू रूपमे प्रत्यक्ष करओलनि अछि।

उपर्युक्त तथ्य सभसँ ई परिलक्षित होइत अछि जे कालिदास संयमक माधुर्यानुभूतिक मुक्त आकर्षणक चमत्कारपूर्ण दृश्य अंकित कय-कय युग प्रतिनिधि कविक प्रतिभाक मार्मिक परिचय देलनि अछि। तेँ डॉ. दिवाकरजी सर्वप्रथम महाकवि कालिदासक आकर्षक भाषाक एतिहासिक आ नैतिक-स्वरूपक सामान्य परिचय पाठकसँ करओलनि अछि।

ओना लेखक कालिदासक विभिन्न पक्षक विशिष्ट तथ्यकेँ उद्घाटित कयलनि अछि। वैदिक ऋषि सभ जकाँ अकातर मर्म-वाणीक जे मधुर स्वर कालिदास मुखरित कयलनि अछि, ओ भारतीय तटस्थ जीवन दृष्टिक तन्मयताक अनुपम चमत्कारेटा नहि, संसारक काव्य-साहित्यक लेल सप्राण गौरवक वस्तु थिक, सृष्टिक निर्माण कयनिहार ओ ज्वार जे युग-युगसँ चेतन सृष्टिकेँ भस्म करैत आबि रहल अछि, उपेक्षणीय नहि कहल जा सकैछ।

ओना तऽ हिन्दी आ मैथिलीमे सेहो कालिदासपर विभिन्न विद्वान लोकनिक पोथी आ आलेख आयल अछि आ कतिपयकेँ पढ़बाको सुअवसर भेटल अछि। किछुक नाम तऽ विद्वान कुलपति पं. शशिनाथ झाजी गनेबो कयलनि अछि मुदा, जतेक मनोयोगसँ, श्रमसाध्य परिश्रमसँ गहींर अध्ययन कऽ डॉ. दिवाकरजी प्रस्तुत कयलनि अछि, प्राय: अन्यत्र दुर्लभे जानि पड़ैछ।

महाकविक समय आ जन्म स्थानपर ई विस्तृत चर्च कयलनि अछि। एतबा धरि तऽ अवस्से कहल जा सकैछ, जे कवि विद्यापतिये जकाँ विभिन्न विद्वान लोकनिक दृष्टिमे हिनकहुँ जन्म स्थान लऽ कऽ भ्रम रहलनि। मुदा, डॉ. दिवाकरजी विभिन्न साक्ष्य प्रस्तुत कय हिनक जन्म स्थान मिथिलामे सिद्ध करबाक सार्थक प्रयास कयलनि अछि। ई विभिन्न उदाहरण उद्धृत कऽ कालिदासक जन्म स्थान मिथिलामे होयबाक संभावना व्यक्त करैत कहैत छथि, जे 'कालिदासक सम्बन्धमे मिथिलाक अपन दाबी सेहो अछि जे उच्चैठ भगवतीक कृपासँ बज्रमूर्ख कलुआ महाकवि कालिदासमे परिणत भेल छलाह। पं. आद्याचरण झा, डॉ. देव नारायण झा, डॉ. भारती श्रीवास्तव, डॉ. राम चन्द्र ठाकुर, श्री कृष्णानन्द, आर. आर. दिवाकर, राम प्रकाश शर्मा, अनन्त शयनम आयंगर आदि विद्वान महाकविक मैथिलत्वक उद्घोष करैत छथि। मिथिलाक समर्थनमे कयल गेल एहि दावी सभक समीक्षा कालिदासक रचनामे आयल विभिन वर्णन, रीति रेवाज, पावनि-तिहार, इतिहास, भाषा वैज्ञानिक आ राजस्व अभिलेखादिक आधारपर मीमांसा करब हमर अभिप्रेत अछि। नब्बेक दशकमे 'मिथिला मिहिर'मे सेहो

एकटा आलेख छपल छल, जाहिमे हिनक रचनाक मूलमे गाछी-बिरछी, चऽर-चाँचर, जजातिक वर्णनसँ हिनका मैथिल सिद्ध करबाक प्रयास कयल गेल छल।

समय आ कालिदासक नाम लऽ कऽ बहुतो विद्वानक विभिन्न मत प्रस्तुत कयल जा सकैछ आ विद्वान अन्वेषक डॉ. दिवाकर कयलनि अछि। गोस्वामी तुलसीदास लऽ कऽ सेहो एहिना भ्रम पसारल गेल आ बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटीक राय प्रमाणित कयलनि जे तुलसीदास नामक चउबालिसटा सन्त भऽ गेल छथि आ जाहि तुलसीदासपर ई लिखित भ्रम पसारल गेल जे रत्नाक फटकारसँ ओ तुलसीदास भेलाह, तकरा 1960 ई.मे दिल्लीमे भेल धर्मसभामे एहि मान्यताकेँ स्थापित कयल गेल जे ओ— राम चरित मानसक प्रणेता तुलसीदास नहि छलाह। ई गोस्वामी तुलसीदास ब्रह्मचारी छलाह, जेकर उल्लेख ओ मानसमे एकाध ठाम करबो कयलनि अछि। शोध-प्रज्ञ रायक शोधमे सेहो ई बात प्रमाणित अछि जे दुनू तुलसीदास दू छलाह। तहिना डॉ. दिवाकर कालिदासक समय लऽ कऽ विभिन्न विद्वानक मत-अभिमतकेँ विशद व्याख्या कयलनि अछि। 'विभूति' पत्रिकामे सेहो एकटा आलेख अछि, जकर शीर्षक अछि, कालिदासक समयमे हूण। डॉ. दिवाकर जीक शोध कहैत अछि जे कालिदासक समयमे हूण नहि छल। रामायणमे हूणक चर्चा नहि अछि मुदा महाभारतमे अछि।

विभिन्न तर्क, उदाहरण उद्धृत कय विद्वान लेखक हुनक मैथिलत्व प्रमाणित करबामे अपस्यांत भेल छथि। 'रचनामे व्यक्त विचार समक आधारपर महाकविक मैथिलत्वमे डॉ. दिवाकर लिखैत कहैत छथि जे 'जाने विसृष्टां प्रणिधानततस्त्वां येनासि ममानुकम्प्या।

एहि वर्णनमे महाकवि ओहि आम मैथिल पिता जकाँ सामने अबैत छथि जिनकर सर्वगुण सम्पन्ना सुताकेँ अकारण पति द्वारा परित्याग कऽ देल गेल हो।

हुनक भावना ओहिना अछि। एहि मर्मन्तुद प्रसंगक सान्द्र चित्रण मैथिल कालिदास द्वारा भेल अछि एहिमे सन्देह नहि।

रामक उज्ज्वल कुलपर उठल ई प्रश्न एहि तथ्यसँ आर दृढ़ होइत अछि जे मिथिलामे कोनो पिता विवाह पंचमी दिन शुभ मुहुर्त रहितो अपन बेटीक विवाह ओहि दिन नहि करैत अछि। ई अपन सर्वश्रेष्ठ पुत्रीकेँ शील-शक्ति-सौन्दर्य समन्वित श्रीराम सन सुयोग्य वरसँ भेल विवाहक बादो सीताक कष्टमय जीवनक प्रतिकार स्वरूप आम मैथिलक नैराश्य केर परिणाम अछि जेकर उत्स महाकविक एहि आक्रोशमे देखल जा सकैछ।

डॉ. दिवाकरजी द्वारा महाकवि कालिदासक मैथिलत्व प्रमाणित करबाक ई दोसर उदाहरण छल। तेसर उदाहरण ई महाकविक मैथिलत्व हुनक प्रकृति वर्णनक आधारपर

प्रमाणित करबाक चेष्टा कयलनि अछि। वायु प्रवाहक कारणेँ बाँसक छिद्रसँ बहराइत मधुर ध्वनि, पाकल धानक खेत आ आमक गाछीक वर्णन, शेफालिकासँ महमह करैत वातावरण एवं विपुल जलराशिमे चिड़ै-चुनमुनीक कलरव करब सभक संकेत यैह अछि।

गंगाजीक वर्णन करैत महाकवि द्वारा बिहारक दूटा छोट स्थान सभक वर्णन भेल अछि। गज-ग्राहक युद्धमे विष्णुक प्राकट्य स्थली सोनपुर पवित्र अछि आ जँ एतय प्राण त्याग करब तँ देवता बनि सुख भोग करबाक बात आएल अछि। ई महाकविक मैथिलत्वक संकेत अछि।

अपन 'मेघदूत'मे कालिदास द्वारा अत्यन्त कुशलतापूर्वक सीताक चरण वन्दना करब, मिथिलेश जनक आ श्रीरामक नामसँ मेघदूतक श्रीगणेश करब, सीताक स्नानसँ पवित्र भेल सरोवर आ घनगर गाछीक छाहरिक वर्णन करब हुनक मैथिलत्व प्रमाणित करैत अछि। जनकतनया स्नानपुण्योदकेषु, सद्यः सीरोत्कषण सुरभि... आदि वर्णनसँ हुनक मैथिलत्व प्रमाणित करबामे सुगमता होइछ।

कतेको उदाहरणकेँ उद्धृत करैत कर्मशील विद्वान अन्तमे कहैत छथि जे उपर्युक्त विवरणसँ महाकविक मस्तिष्कमे क्रियाशील मातृभूमि मिथिलाक लेल अद्‌भुत मनोलय केर कल्पना कयल जा सकैछ।

एहि मनोलयमे महाकविक मैथिलत्वक मनोरम चित्र अभरल अछि जेकर संकेत भेल अछि।

कालिदासक मैथिलत्व प्रमाणित करबा लेल डॉ. दिवावर महाकवि द्वारा वर्णित रीति-रिवाज आ पावनि-तिहारक आश्रय सेहो लेलनि अछि। जेना, कुमार संभवमे धानक लाबासँ विवाहक अग्निमे हवन आ बादमे होमधूपकेँ सूँघब, विवाहक वेदी लऽग जरैत अग्निक धुआँसँ लाल भेल आँखिक वर्णन (उदाहरण सहित), नव वर-वधूकेँ चतुर्थी राति धरि भूमिपर सूतब, दुर्वाक्षतसँ आशीर्वाद, देवोत्थान एकादशीक वर्णन, सामा-चकेबाक चर्च, ग्रामबाला सभक खेतमे गायन आदि।

एहि शीर्षकक अन्त अपन एहि निष्कर्षसँ करैत छथि जे 'मिथिलामे आदिकालसँ माटिक महादेव बना तरहत्थीपर ओकर पूजन केर परम्परा अछि। जँ स्वहस्तोल्लिखितश्चसँ हाथसँ उकेरित महादेवक चित्र केर कल्पना करब तखन प्रश्न उठत जे निर्जन हिमालयमे तपस्या करैत पार्वतीकेँ रंग-कूची आदि चित्र तैयार करबाक सामग्री कतयसँ भेटल होयत! तँ एकरा माटिक महादेव मानल जयबाक चाही। ई प्रसँग सेहो महाकविक मैथिलत्व दिशि संकेत करैत अछि।

डॉ. दिवाकर महाकविक मैथिलत्व सिद्ध करबाक लेल साहित्यक कोनहु अस्त्र-शस्त्रकेँ नहि छोड़लनि अछि। आब ओ हुनक मैथिलत्व प्रमाणित करबाक

लेल भाषा विज्ञानक आधार लेलनि अछि। जेना अभिज्ञान शाकुन्तलम्मे नटी केर शुद्ध संस्कृत नहि बाजब, विक्रमोर्वशीयम् केर चारिम अंकमे प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित 17 पद आ शुद्ध अपभ्रंशक 14 पद भेटब, नेपथ्यसँ अबैत स्वर, चित्रलेखा आ सखी सहजन्याक वार्तालाप आ निम्न कोटिक पात्र सभक भाषा सेहो शुद्ध संस्कृत नहि होयब, विभिन्न पद सभमे टेकक प्रयोग, मिथिलाक सोहर, चैतावर, स्वयंवर, विरहा, बटगबनी बारहमासा आदि लोकगीतमे अद्यतन प्रयुक्त 'ओ', 'यौ', रे', 'ए', 'हो', 'जान' आदिक प्रयोग करब हुनक मैथिलत्व प्रमाणित करैत अछि। मिथिला अपभ्रंशक प्रयोग मिथिलेक दूटा रत्न कयने छथि— कालिदास आ विद्यापति।

यशस्वी लेखक डॉ. रंगनाथ दिवाकर एहि सभक अतिरिक्त कालिदासक मैथिलत्व सिद्ध करबाक लेल किछु आर उद्धरण सभसँ पाठककेँ आश्वस्त करय चाहैत छथि, जाहिमे—

1. इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व
2. महाकवि कालिदास आ सीता चरित्र चित्रण
3. उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास
4. महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा।
5. कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका
6. महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनन्तपथ केर सहयात्री
7. श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल

अछि। हम एतय उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदासपर किछु चर्च करब समीचीन बुझैत छी। पद्मश्री पोद्दार रामावतार अरुण सेहो अपन खंडकाव्य 'कालिदास' आ 'कालिदासक आत्मकथा'मे हुनक मैथिलत्वपर विशद चर्चा कयने छथि। ओ तऽ समस्तीपुरमे 10 मार्च, 1956केँ कालिदास समारोहक विशाल आयोजन कयने छलाह, जाहिमे देशक विभिन्न क्षेत्रसँ विद्वान लोकनि एहि महोत्सवमे अपन सहभागिता प्रदान कयने छलाह जकर विशद चर्चा डॉ. दिवाकर अपन भूमिकामे सेहो कयने छथि आ ई हमरा अरुणजीक संस्मरणात्मक पोथीसँ उद्धृत करय पड़ल छल। कहल जाइछ जे एकरे देखा-देखी उज्जैनमे सेहो कालिदास समारोहक आयोजन प्रारम्भ कयलनि।

डॉ. दिवाकरजी एहि शीर्षक अन्तर्गत कतिपय उदाहरण दय ई निष्कर्ष बहार कयलनि जे महाकवि कालिदासक जन्म स्थली मिथिला, कर्मस्थली उज्जैन आ महाप्रयाण माटरामे भेलनि तकरा ई अद्भुत संगति बैसब कहलनि अछि।

मिथिला भारतक ऐतिहासिक-गौरव तथा आत्मतत्त्व-बोधक अक्षय गौरव ज्योति थिक। इतिहास समुज्ज्वलकारिणी एहि भूमिमे विद्याक अविजेय निर्झर अप्रतिहतगतिसँ बहैत आबि रहल अछि। कालिदासक जन्मक समयमे सेहो संस्कृतक पाण्डित्यक समुद्र उधिआइत रहल छल, ताहिमे कालिदासक उत्पन्न होयब कोनो आश्चर्यजनक गप नहि कहल जा सकैछ।

मिथिलामे कतेको दिनसँ ई किंवदन्ती प्रचलित अछि जे कालिदास माँ उच्चैठ भगवतीक कृपासँ अलग सिद्धि प्राप्त कयलनि आ ई मान्यता एखन धरि यथावत् अछि। एकर पुष्टि एहि बातसँ सेहो होइछ जे आब बिहार सरकार उच्चैठमे कालिदास समारोहकेँ राजकीय महोत्सव घोषित कय देलक अछि जे कालिदासक मैथिल होयब आ उच्चैठक होयबपर सरकारी मोहर लगबा इतिहासमे सम्मिलित करबा लेल मार्ग प्रशस्त करैत अछि।

195 पृष्ठक मंथन, तर्क-वितर्क, उद्धरण, अन्वेषण, शोध-कार्यक बलपर डॉ. दिवाकर साढ़े तीन पृष्ठमे एकर निष्कर्ष, अपन श्रमसाध्यक परिणति पाठकक सोझाँमे उपस्थापित कयलनि अछि। एकरा एहि शोध-ग्रंथक सार कहल जा सकैछ, पूर्णाहुति कहल जा सकैछ, फलाफल कहल जा सकैछ।

ई फड़िछा कऽ विभिन्न कालिदासक चर्च कयलनि अछि— ईसापूर्व केर विक्रमादित्यकालीन कालिदास, मातृगुप्त कालिदास, राजा भोजकालीन कालिदास, यशोधर्मन् आ कुमार धातुसेनाकालीन कालिदास, मूकशंकर शिष्य कोटिजित् कालिदास, धार नरेश मुञ्ज केर समकालीन नवसाहसांक चरित्रकार परिमल कालिदास, नलोदयकार कालिदास, चम्पूभागवतकार कालिदास, लम्बोदर प्रहसनकार कालिदास, शंकर दिग्विजयकार माधव कालिदास, पार्श्वाभ्युदयकार जिनसेन प्रभृति कालिदास प्रमुख छथि। भऽ सकैछ जे विद्वान लोकनि अपन नाम कालिदास राखि यश-प्रतिष्ठा पयबाक अपेक्षा रखैत होथि अथवा एहि कालिदासक आकर्षणी शक्तिसँ विमोहित भऽ, प्रभावित भऽ अपन नाम वा उपनाम कालिदास रखने होथि से संभव। डॉ. दिवाकरजी पाठककेँ ओझराकेँ नहि राखि, भ्रमजालमे नहि फँसा एतय स्पष्ट कऽ देलनि अछि जे मेघदूतम्, रघुवंशम्, विक्रमोर्वशीयम् आदिक रचयिता रूपमे प्रसिद्ध कालिदास निर्विवाद रूपमे मैथिल छलाह जे आजीविका लेल मालवा क्षेत्रक दशपुर उज्जैनकेँ अपन कर्मक्षेत्र बनौने छलाह। अल्प समयमे सम्पूर्ण उत्तर भारतकेँ अपन शौर्यसँ आयत्त कयनिहार सम्राट् यशोधर्मन् विक्रमादित्य केर राज्यसभाक ई अनुपम स्यमंतक मणिप्रभासँ सपूर्ण संसार आलोकित भेल। मित्र सिंहल नरेश कुमार धातुसेना वा कुमारदासक आह्वानपर महाकवि श्रीलंका गेल छलाह, जतय लोभवश नर्तकी द्वारा माहुर खुआ हत्या कयल गेल छल। राजा कुमारदास हिनक चितामे प्रवेश करैत मित्रताक मोल चुकओलनि जे काल केर कपालपर अमिट शिलालेख बनि अंकित अछि।

एकर समापन करैत डॉ. दिवाकर लिखैत छथि– निष्कर्षत: कहि सकैत छी जे महाकवि कालिदास मैथिल छथि। महर्षि वाल्मीकि आ महर्षि व्यासकेँ ब्रह्मा (सृजनकर्ता) मानल जाय आ महाकवि कालिदासकेँ 'न भूतो न भविष्यति' महाकवि प्रातिभ।

अपन प्राणद काव्य-कर्म (कथा, नाटक, गद्य)सँ राष्ट्रीय फलकपर आ साहित्यिक मंचकेँ कृत्-कृत्य एवं चमत्कृत कयनिहार, नव-नव भावोन्मेष कयनिहार डॉ. रंगनाथ दिवाकर मैथिली एवं हिन्दीक गण्य प्रतिभामे साहित्यकार लोकनिक माँझ शीर्षस्थ एवं सर्वमान्य छथि। ई गद्य गौरव-ग्रंथ शोधकर्ताक निष्णात् साधनासम्पन्न सृजनशीलताक साक्षी अछि।

शब्द चयन, भाषा-सौष्ठव, उत्कृष्ट वाक्य विन्यास, सहज संप्रेषणीयता, संदर्भक निरन्तरता, गतिमयता, भावाभिव्यक्ति डॉ. दिवाकरकेँ वाग्मी विद्वत्ताक विरल विभूतिक अग्रणी पाँतीमे प्रतिष्ठापित करैत अछि। ई अपन ऊहिसँ शोध-प्रज्ञताक पराकाष्ठापर अपनाकेँ आसीन कयलनि; बहुप्रशंसित, बहुप्रचारित-प्रसारित कयलनि आ विद्वत् समाजमे समादृत भेलाह। ई सभटा संभव भए सकलनि हिनक अपन साधनामयी प्रतिभाक पुण्यलोकसँ।

ई गद्य गौरव-ग्रंथ मिथिला-मैथिलीक निमित्त अनुपम उपहार थिक। बहुप्रतीक्षित विषयकेँ प्रतिपादित कय ई कालिदासक मैथिलत्व सिद्ध करबा हेतु ओकरा अपन रचना-सृष्टिसँ विस्तृत व्योम प्रदान कयलनि। शोधपरक ई सौरभित स्तवक 'महाकविक महाप्रयाण' मैथिली साहित्यक अविकल्प, अविचल, अनुकरणीय, अनुसरणीय बनबाक चाही, स्वेकरणीय होयबाक चाही-एहन हमर अखंड आस्था अछि। हिनक दीर्घायु आ स्वस्थ जीवनक अशेष मंगलकामना!

'महाकविक महाप्रयाण' नाटक

नाटक दृश्य काव्यक एक गोट सशक्त विधा अछि, मुदा एकर लेखन कठिने नहि दुरूह सेहो अछि। एक अनपढ़ मूर्ख दर्शक सेहो सहज एवं स्वाभाविक रूपसँ सटीक टीका-टिप्पणी करबासँ नहि हुसैत अछि तेँ नाट्य लेखनमे गंभीरता आ सचेष्टताक अपेक्षा कयल जाइछ। साहित्य-सम्पृक्तताक संगहि अनुभवक अनिवार्यता सेहो अभिप्रेत अछि।

नाटकक उत्पत्तिक संबंधमे विद्वान लोकनिक मतैक्य नहि छनि। डॉ. रिजवे नाटकक उत्पत्तिक मूलमे मुइल वीर सभक कथेकेँ मुख्य मानैत छथि। हुनका अनुसार मृतात्माक महत्व आ हुनका प्रति आदर भाव प्रदर्शित करबाक उद्‌देश्यसँ नाटक अभिनीत कयल जाइत छैक। डॉ. पिसेल कठपुतरीक नाचसँ नाटकक उत्पत्ति मानैत

छथि मुदा अनेक भारतीय आ पाश्चात्य विद्वान नाटकक उत्पत्ति वेदसँ मानैत छथि। वेद सभमे आयल किछु सम्वादकेँ नाटकक मूल रूप मानैत छथि।

किछु गोटे भारतीय नाट्यकलाक उत्पत्ति यूनानी नाट्य कलाक नकल मानैत छथि वा ओहिसँ प्रभावित मानैत छथि। यवनिका आ शकारि शब्दक आधारपर ई मान्यता छनि। मुदा प्रसादजी एकरा नकारि दैत छथि।

हुनक कहब छनि जे यवक अर्थ त्वरा होइछ, अर्थात् जे त्वरापूर्वक उठाओल वा खसाओल जाय ओ थिक यवनिका। यूनानी नाटक सुखान्त होइत अछि आ भारतीय नाटक बेसी दुखान्त, इहो अन्तर अछि।

मुदा हमर नाट्यकला संसारक प्राचीनतम नाट्यकला थिक। भरत मुनिक अनुसार स्वयं ब्रह्मा एकर रचना कय एकरा पंचम वेद मानने छलाह, किएक तऽ मनोरंजनक विधान एहिमे सेहो कयल गेल छल। भरतमुनिक नाट्यशास्त्रमे सेहो पूर्वक नाटकक उल्लेख भेटैत अछि। कोनो शास्त्रीय रचना तखने कयल जाइछ जखन ओकर लक्ष्य ग्रंथ पहिनेसँ अस्तित्वमे होइक।

ईसासँ अनेक वर्ष पूर्व आचार्य पाणिनि अष्टाध्यायीक प्रणयन कयने छलाह आ ओहिमे कृष्णाश्व शीलालीन नाटकक उल्लेख भेटैत अछि। हरिवंशपुराण जे महाभारत कालक बाद लिखल गेल अछि, ताहूमे उल्लेख अछि जे बज्रनाभ नगरमे रामजन्म आ कौवेरारम्भभिसार नामक दू गोट सफल नाटकक मंचन भेल छल।

ओना कहल जाइछ जे नाटकक उत्पत्ति धार्मिक कृत्य आ सामाजिक कृत्यसँ भेल अछि।

पौराणिक नाटक संस्कृत अथवा अपभ्रंशमे लिखल जाइत छल। ओना हिन्दी साहित्यमे 16म शताब्दीसँ पहिने एकोटा नाटकक उल्लेख नहि भेटैत अछि। मैथिलीमे ज्योतिरीश्वरसँ नाटकक उत्पत्ति मानि सकैत छी, विद्यापति तऽ नाटककारो छलाहे।

डॉ. दिवाकर पहिनहुँ नाटक लिखने छथि आ ओकर मंचन सेहो भेल अछि। हिनक कएकटा नाटक रेडियोसँ सेहो प्रसारित भेल अछि, तेँ हिनका नाटक लिखबामे निष्णात मानल जा सकैत अछि। अहू नाटकक तीन बेर मंचन भेल छनि– प्रथम मंचन उच्चैठ कालिदास महोत्सव, 2019मे, दोसर आ तेसर मंचन राज्य स्तरीय युवा महोत्सव 2020मे सेहो, जकर निर्देशन इन्द्र भूषण रमण बमबमजी कयने छलाह।

ई नाटक सात दृश्यमे समाहित अछि। एहिमे कुल 17टा पात्र छथि, जाहिमे 11टा पुरुष पात्र आ पाँचटा स्त्री पात्र। एकटा परिचारिकाक समावेश सेहो कयल गेल अछि। पुरुष पात्रमे कालिदास, कुमारदास, पंडित 1, पंडित 2, अनुचर, नट, राजा, चारण, सभासद -1, सभासद 2 आ कित्तिसेना।

स्त्री पात्रमे विद्योत्तमा, प्रियंवदा, कामसेना, रानी, नटी आ अंतिम परिचारिका अछि। पौराणिक ढर्रापर लिखल गेल ई नाटक सर्वथा मंचोपयोगी दृष्टिकोणसँ लिखल गेल बूझि पड़ैछ। जेना पहिलुक नाटकमे सूत्रधार एकगोट प्रमुख पात्र होइत छल जे नाटकक कथावस्तु अपन संवादमे नाटक प्रारंभसँ पूर्वहि दर्शककेँ ज्ञात करा दैत छल। अहूमे नट-नटीक उपयोग कयल गेल अछि। नट आ नटी दुनू सर्वप्रथम मंचपर नाटकक संबंधमे सम्वाद प्रेषित करैत अछि जे ई प्रस्तुति कालिदासपर लघु नाटिकाक रूपमे होइत अछि आ सम्वादक क्रममे घोषित करैत अछि, कालिदासक परिचय अर्थात् कोन कालिदास? अहूमे नटीक मुँहे विद्वान नाटककार कालिदासक मैथिलत्वपर मोहर लगबैत छथि जे वैह कालिदास, मिथिलाक वरदपुत्र कालिदास, उच्चैठ भगवतीक उपासक कालिदास। हुनक संक्षिप्त प्रारम्भिक परिचय नट-नटी दैत अछि आ महाप्रयाणक विस्तृत विवरण सेहो करैत अछि। ई सब प्रयोग एहि लेल कयल जाइछ जाहिसँ दर्शकक जिज्ञासा बनल रहैक, उत्सुकता बनल रहैक। कालिदासक महाप्रयाणक खिस्सासँ अनभिज्ञ श्रोताकेँ पूर्ण जनतब भेटि जाइक।

पंडितक अहं, अनुचरक ई कहब जे 'एहन जब्बर छौँड़ी नहि देखने रही' दर्शककेँ ठेँठ मैथिलीक ई शब्द गुदगुदी लगयबाक लेल यथेष्ट अछि आ मनोरंजन करबामे सक्षम। दर्शकक उत्सुकता सदति बनल रहैत छैक। एहि दृश्यमे नट-नटीक अतिरिक्त अनुचर, पंडित 2क बीच सम्वाद अछि। एहि दृश्यमे विद्योत्तमाक रूप लावण्य, ओकर विद्वत्ता, ओकर प्रतिभा आ ओकरा प्रति षड्यंत्रक लेल सम्वाद प्रेषण भेल अछि। एकटा सम्वाद द्रष्टव्य अछि जे 'धन्य धन्य हे उच्चैठ भगवती! कलुआक कपारमे कारी खोरनाठो कनिञा नहि लिखल छलै। कहियासँ एकर माय एकर बियाहक लेल अपस्याँत छलै, कतेक कबुला-पाती कयलक, जोड़ा छागर गछलक आ देखू तऽ यैह! सब भगवतीक कृपा! कहाँ करिकिओ कनिञा नहि आ कहाँ गोरकी राजकुमारीसँ विवाह! वाह वाह! देखू तऽ यैह!' पंडित द्वारा शास्त्रार्थमे हारबाक क्षोभ व्यक्त कयल गेल अछि। अही दृश्यमे कलुआक विवाहक प्रस्ताव राजकुमारीसँ होयबाक चर्च अछि।

डॉ. दिवाकर एहि दृश्यमे ठेठ मैथिली शब्दक कएक ठाम प्रयोग कयलनि अछि, जेना कारी खोरनाठ, कबुला-पाती, छागर, जारनि, भानस आदि।

दोसर दृश्यमे पंडित 1, राजा, विद्योत्तमा आ प्रियंवदाक माँझ सम्वाद होइत अछि। विद्योत्तमा आ कलुआ जे मौन व्रत धारण कयने अछि, तकरा बीच संकेतसँ शास्त्रार्थ होइत अछि जाहिमे अद्वैत, आत्मा-परमात्मा, भारतीय दर्शन सभक नीक व्याख्या कयलनि अछि नाटककार।

पंचतत्त्वक व्याख्या सेहो श्लाघनीय अछि। संगहि मिथिलामे प्रचलित आ आवश्यक मंत्र दुर्वाक्षतक, तकरा सेहो उद्धृत कयलनि अछि नाटककार आ ई वर-वधूक आशीर्वाद कालक लेल अछि।

तेसर दृश्यमे विद्योत्तमा, कलुआ आ मूलरूपसँ प्रियंवदा एहि तीनूक माँझ महत्त्वपूर्ण सम्वाद सभ अछि। एकटा बड़ आकर्षक सम्वाद अछि। विद्योत्तमा अपन पति (कलुआ)सँ कहैत अछि, 'आइ हमरा अहाँक मधुर मिलनक राति अछि। अहाँक मौनव्रत से समाप्त भऽ गेल अछि। आब अपन मुखारविन्दकेँ किछु कष्ट देल जाय स्वामी!' एक राजकुमारीक त्याग, उत्सर्ग, बलिदानक अभूतपूर्व सामंजस्य देखाओल गेल अछि एहि दृश्यमे। कलुआ द्वारा अरविन्दाक डर, जे ओकर मालिक छैक, तकरा जाहि ठेठ भाषामे संवाद प्रस्तुत कएल गेल अछि, नाटककारक ओहि वर्गक बजबाक 'टोन'क ज्ञानक बखान करैत अछि। कलुआ द्वारा अपन अज्ञानताक बखान जे मधुयामिनी, कविता कामिनी, मधुर मिलन, कामदेव, मदनबाण! ई सब की होइ हय, हमरा तऽ कुच्छो नहि बुझाय हय। अपने की बोली हती? कंचनजंघा पहाड़क चोटी तऽ हमरा गाममे दूरेसँ देखाइत हय। हम एक साधु संगे ओहिपर चढ़ल हती।'

ई सम्वाद गामक सामान्य लोकक बीच बड़ लोकप्रिय होयत, कियैक तऽ ओकरे बाजबकेँ नाटककार पात्रक मुँहसँ कहबा रहल छथि।

चारिम दृश्यमे ऋषि कण्वक आश्रमक हवनकुण्ड आ ओकर समिधाक चर्च कयल गेल अछि। एहि दृश्यमे मूलतः कुमारदास आ कालिदासक माँझ सम्वादक आदान-प्रदान होइत छनि। एहि दृश्यमे कालिदासक संबंधमे जे जनश्रुति अछि, कलुआक कालिदास बनबाक, उच्चैठ भगवतीक कृपा, कलुआक भनसिया बनब, कारिख लेपब आदिक वर्णन कुमारदासक मुँहसँ नाटककार कहबौने छथि। लंकेशक वर्णन सेहो कुमारदास कयने छथि आ कालिदासकेँ सम्पूर्ण परिभ्रमण करा मिथिला अयबाक सेहो वचन दैत छथिन। अंतमे कुमारदासक कहब जे 'विद्योत्तमा सन विदुषी आ अहाँ सन विद्वान् जतए शिक्षण कार्य करत ओ गुरुकुल विश्व-विश्रुत अवश्य होयत। हमरो परिवार आ देशसँ बटुक सभ एहि गुरुकुलमे आबि शिक्षा ग्रहण करताह। हम सेहो आयब। ओह! की अनुपम दृश्य होयत।'

कालिदास आभारक स्वरमे कहैत छथि– 'अहाँ जखन एतए आयब तखन विद्योत्तमा ई जानि अहाँक आर विशेष मान-दान करतीह जे अहाँक कारणेँ हमरा सभक पुनर्मिलन भेल। सब उच्चैठ भगवतीक कृपा! माता उच्चैठ भगवती अहाँक मंगल करथि!'

हमरा जनैत ई चारिम दृश्य एहि नाटकक सभसँ महत्त्वपूर्ण दृश्य अछि, नाटककारक नाटक लिखबाक जे अभीष्ट छलनि, पूर्ण होइत बुझना जाइछ।

पाँचम दृश्यमे शयनकक्षमे विद्योत्तमाकेँ देखाओल गेल अछि बिनु श्रृंगार पटारक बैसलि कोनो ग्रंथ पढ़ैत। एहि दृश्यमे मूलत: विद्योत्तमा-कालिदासक बीच सम्वाद अछि।

कालिदास अपन स्वाभाविक रूपमे विद्योत्तमासँ कहैत छथि जे 'क्षमायाचना नहि कयल जाय देवी! क्षमायाचना तऽ हमरा अहाँसँ करबाक चाही जे अपात्र रहितो छलपूर्वक अहाँ संग विवाह कयने रही। छद्म विद्वत्ताक दम्भ भरने रही। अहाँक संग विश्वासघात कयने रही। अहाँ चाही तऽ हमर परीक्षण कऽ सकैत छी।'

बड़ मार्मिक सम्वाद अछि पति-पत्नी माँझ। अंतमे विद्योत्तमा आ कालिदासक पुनर्मिलनसँ प्रियंवदा बड़ उल्लसित भेल बुझना जाइछ आ कालिदासकेँ भारतवर्षक सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक मेधासम्पन्न कहि सम्बोधित करैत अछि। ओ एहि खुशीमे गिरिजास्थान आ उच्चैठ भगवतीक दर्शन करबाक इच्छा सेहो प्रकट करैत अछि।

दृश्य छओमे मात्र कालिदास आ कामसेनाक माँझ सम्वाद अछि। कामसेना श्रीलंकाक माटरा नगरमे रहैत अछि। ओ राजनर्तकी अछि। कामसेनाक संग वार्तालापमे ई स्पष्ट करब जे सिंहल राजदरबारमे मिथिलाक मातृभाषा मैथिलीक व्यवहार होइत अछि, आह्लादकारी अछि। कालिदास अपन अयबाक उद्देश्य ओकरा पुछलापर कहैत छथि। राति ओकरे ओहिठाम विश्रामक अपेक्षा छनि, मुदा बहुतो जिज्ञासाक शान्ति समाधान कालिदाससँ ओ चतुर नर्तकी करबैत अछि।

सातम आ अंतिम दृश्यमे चारण, कामसेना, कुमारदास, सभासद बीच वार्तालाप सम्वाद होइत अछि, जाहिमे कामसेना राजदरबारसँ मुद्रा प्राप्तिक स्वार्थमे कालिदासक प्राण लैत अछि। बादमे गछबो करैत अछि आ कुमारदास अपन ऐतिहासिक उत्सर्गताक परिचय दैत कालिदासक चितामे आत्मोत्सर्ग करैत छथि। 'प्राणनाथ', 'स्वामी', 'लंकेश्वर', 'प्राणेश्वर' आ 'हृदयेश्वर'क ध्वनिसँ वातावरण कारुणिक होइत अछि आ एहि नाटकक दुखान्त होइत अछि। ई दृश्य ककरो विमोहित कऽ सकैत अछि आ नाटककार पूर्णत: सफल भेल छथि। नाटकक जे अपेक्षित वस्तु चाही ओ सभटा भरल आ पर्याप्त अछि एहि नाटकमे। डॉ. रंगनाथ दिवाकर अपन बहुआयामी व्यक्तित्वक परिचय देलनि अछि एहि नाटकक माध्यमे। इति!

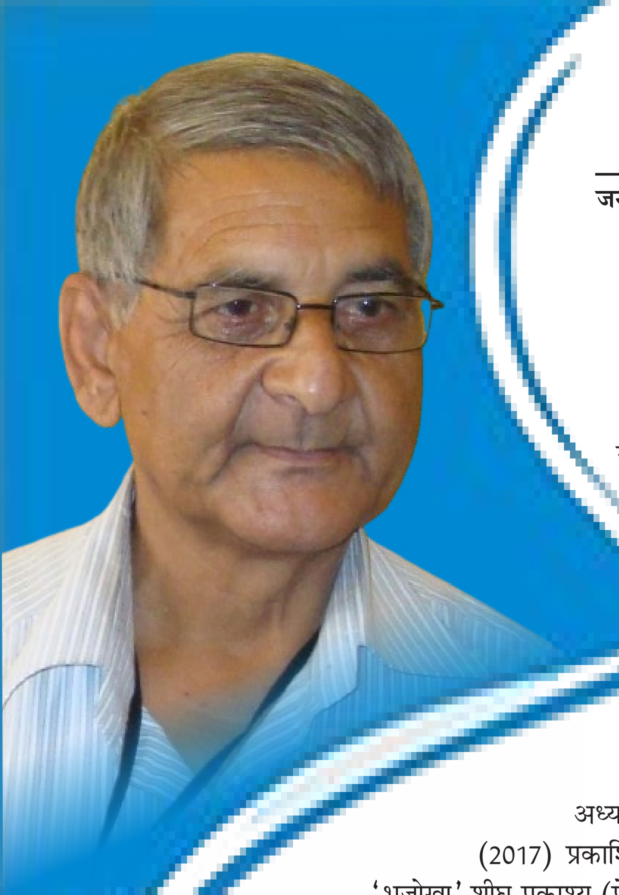

सुरेन्द्र शैल

जन्मतिथि : *01 जनवरी1951, दरभंगा।*

सम्पर्क : *+91 89870 72636*

सुरेन्द्र शैल राजस्व विभागसँ सेवा निवृत्तिक पश्चात् साहित्यिक अध्ययन/ लेखनमे रमल छथि। अखिल भारतीय राज्य सरकारी पेंशनर्स फेडरेशनक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आ पेंशनर्स एसोसिएशन, बिहारक अध्यक्ष छथि। हिनक पोथी 'अछिंजल' (2017) प्रकाशित अछि। पोथी 'हमर गाम' आ 'भजोखा' शीघ्र प्रकाश्य (प्रेसमे) अछि। आधुनिक कविता वा समकालीन कविताक उझैय्यामे शुद्ध कविता लिखैत छथि। हिनक गीत सभ बेस रमणगर आ लालित्यसँ पूर्ण रहैछ। नव पीढ़ीक अनेक नवसिखुआ कविकेँ आँगुर पकड़ि शुद्ध कविताक मर्म सिखा देलनि अछि। मंडन भारती साहित्य सम्मान 1980, मिथिला युवा साहित्यकार शिखर सम्मान 1981, ललिता अतिविशिष्ट काव्य प्रतिभा सम्मान 2020मे नवरस अनुष्ठानक सर्वश्रेष्ठ कविक सम्मान, ललिता अति विशिष्ट काव्य प्रतिभा सम्मान, वीर रसक रचनामे सर्वोत्कृष्ट रचना सम्मान 2020, मिथिला भारती सर्वोत्कृष्ट साहित्य सम्मान 2021, दयानन्द स्मृति सम्मान 2024 सँ अलंकृत छथि। 'कर्णप्रिय' पत्रिकाकेँ सर्वप्रिय बनएबामे हिनक अनुपम अवदान रहल अछि। पूर्वमे एहि त्रैमासिक 'कर्णप्रिय' पत्रिकाक प्रधान सम्पादक रूपमे लब्धप्रतिष्ठ भेल छलाह। सम्प्रति 'पेंशनर्स संदेश' त्रैमासिक पत्रिकाक प्रधान सम्पादक छथि। मैथिली/हिंदीक प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकामे अनवरत कविता, समीक्षा, आलेख आदि रचना सभ प्रकाशित होइत अछि। दोहा विधाक यशस्वी कवि छथि। सामाजिक माध्यममे सक्रिय कवि-गीतकार रूपमे लब्धप्रतिष्ठ छथि। सुच्चा कवि सुरेन्द्र शैलक अखनो सक्रियता मुदित करैत अछि।

‘महाकविक महाप्रयाण’ : एक अद्‌भुत शोधपरक पुस्तक

डॉ. रंगनाथ दिवाकर लिखित पोथी ‘महाकविक महाप्रयाण’ एक अद्‌भुत शोधपरक पुस्तक अछि जे निस्संदेह साहित्य आ इतिहासक भंडारमे अविचल नगपति जकाँ स्थापित भए गेल। तहिना एकर यशस्वी लेखक अपन अलौकिक प्रतिभाक बलेँ सम्प्रति गिरि शिखरपर जमल प्रालेयपर उषाकालक निरभ्र क्षितिजसँ उद्‌भासित सविता-मयूखक स्पर्शसँ निर्मित ऋजुरोहित जकाँ साहित्याकाशमे देदीप्यमान छथि।

महाकवि कालिदासपर एहन विलक्षण पोथी विरल अछि आ अपन मातृभाषा मैथिलीमे नहिए अछि। एहि पोथीक बिनु गहन अध्ययन कैने अपन विचार रखनाइ सोझे सोझ अपन अज्ञानताक परिचायक होएत। ई पोथी एक संजाल नहि अपितु एहिमे लटकल पाकल सुस्वादु मधुर फल अछि जेकरा चिखनहुँसँ तन्तु-तन्तु तरंगित भए जाइछ।

महाकवि कालिदास संस्कृत वाङ्‌मयक अद्‌भुत प्रातिभ छथि जे भारतक आन भाषा सहित विश्व वाङ्‌मयकेँ चकित कयलनि आ भारतीय साहित्यक श्रेष्ठता स्वीकार करबा लेल बाध्य कयलनि अछि। कवि कुल गुरु कालिदास विश्व वाङ्‌मय केर सिरमौर छथि। लेखक महाकविक तुलना शेक्सपियरसँ करबामे घोर आपत्ति व्यक्त करैत कहैत छथि जे निस्संदेह शेक्सपियर महान् कवि छथि मुदा कालिदाससँ तुलना कएलापर ओ पासंगे हेताह। लेखकक उक्तिमे कफी दम अछि सरिपहुँ तुलना सेर-सवासेरमे कयल जा सकैछ। पासंगसँ तऽ किन्नहु ने। महाकविक प्रति अनामिका आँगुरक सार्थकतामे ई उपमा विलक्षण अछि—

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदास:।
अद्याततुल्य कविर्भावात् अनामिका सार्थवती बभूव।

उल्लेख्य पोथी मूल रूपसँ दू भागमे विभक्त अछि। प्रथम-कालिदास आ हुनक मैथिलत्व आ दोसर, महाकविक महाप्रयाण नाटक।

प्रथम भाग अत्यंत महत्वपूर्ण अछि जे एहि पोथीक आत्मा छी। एहिमे महाकविक मैथिलत्वपर गहन मीमांसा भेल अछि। इएह लेखकक मूल उद्देश्यो छनि। जेकरा लेखक 1. महाकवि कालिदासक समय एवं जन्मस्थान 2. रचनामे व्यक्त विचार सभक आधारपर महाकविक मैथिलत्व 3. प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व 4. रीति-रिवाज व पावनि तिहारक चर्चमे महाकविक मैथिलत्व 5.भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व 6. राजस्व अभिलेखक आधारपर महाकविक मैथिलत्व 7. इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व 8. महाकवि कालिदास आ सीताक चरित्र-चित्रण 9. उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास 10. महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा 11. कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका 12. महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनन्त पथ केर सहयात्री 13. श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल 14. निष्कर्ष शीर्षकसँ विभक्त कए गहन मीमांसा प्रस्तुत कयलनि अछि। दोसर भागमे महाकविक महाप्रयाण नामक नाटक अछि। दुहू भागक उद्देश्य कालिदासक मैथिलत्व सिद्ध केनाइ आ महाकविक श्री लंकासँ संबंध स्थापित केनाइ अछि आ एहिमे लेखक आश्चर्यजनक रूपसँ समर्थ साबित भेलाह अछि।

पोथीक शुभकामना सन्देशमे वरेण्य विद्वान सम्प्रति कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक कुलपति श्री शशिनाथ झा उदार मनसँ लेखकक भूरि-भूरि प्रशंसा कयलनि अछि।

एकर भूमिका प्रसिद्ध नाटककार स्वनामधन्य श्री महेन्द्र मलंगिया लिखलनि अछि। ओ अपन भूमिकामे नाटक विधाक चर्चा करैत एकटा रोचक कथाक माध्यमे नाटककेँ साहित्यिक क्षेत्रक सर्वश्रेष्ठ विधाक संज्ञा देलनि अछि। एहि विधाक प्रांगणमे लेखक दृढ़तासँ अपन साधल, नापल प्रथम डेग राखि चकित कयलनि अछि जेकर मीमांसा दोसर भागक समीक्षान्तर्गत कयल जाएत।

लेखक 'किछु आखर' शीर्षक अन्तर्गत पोथी लिखबाक उद्देश्य स्पष्ट करैत लिखैत छथि जे विश्वक आन-आन भाषामे कालिदाससँ सम्बंधित सामग्रीक अछैतो अपन मातृभाषा आ माँ मैथिलीक खोइँछ खालिए छल। तैं समर्थ नहि रहितो कालिदासक रचनाक विशाल उदधिमे मोती हेरबाक उद्देश्यसँ डुबकी लगेबाक दुस्साहस कयलहुँ। हमरा जनैत लेखक अपन विनम्रतासँ विद्या ददाति विनयमकेँ

चरितार्थ कएलनि अछि। वस्तुत:अपन मातृभाषाक प्रति अगाध स्नेहसँ ओतप्रोत भए उदधिक अन्तस्तलसँ एहन मोती निकालि अनलनि जे मैथिलीक माथपर शोभित मुकुटमे सजि अपन आभासँ दिग्दिगंतकेँ जगमगा देलक। लेखक अपन भावनाकेँ स्पष्ट करैत उद्घोष करैत छथि जे एहि पोथीक एक-एक आखर केर मूल स्वर महाकविक मैथिलत्वक उद्घोष अछि। सरिपहुँ ई पोथी अद्भुत अछि, अनुपम अछि आ महाकविक अब्धिमे उठैत-खसैत नगदाक चरित्रसँ भिन्न अछि।

लेखक पोथीक लेखन, आवरण पृष्ठक अभिकल्पना, प्रकाशक एवं प्रकाशन कार्यमे लागल सहयोगीकेँ बिना बिसरने अपन कृतज्ञता ज्ञापित करैत छथि।

लेखक महाकविक समय आ जन्मस्थानपर गहन शोध करैत पूर्व मान्यताकेँ अपन विद्वत्ताक पघरियासँ कुट्टी-कुट्टी काटि देबामे समर्थ सिद्ध भेलाह अछि।

इहो स्पष्ट अछि जे विश्वक आन-आन प्रातिभ जकाँ महाकवि अपन रचनामे कतहु अपन जन्मस्थान आ जन्मकालक चर्च नहि कयलनि।

किछु एहने विकट स्थिति होमर, शेक्सपियर, आदि पुरा प्रातिभ संग सेहो अछि। विलियम शेक्सपियरक नामसँ प्रसिद्ध बहुत रचनाक मूल रचनाकार ओएह छथि वा फ्रांसिस बेकन, क्रिस्टोफर मार्लोव, एडवर्ड डे वेरे वा अन्य केओ छथि एहि विवादक फरिछौट जखन ग्रेट ब्रिटेन आ अमरीकाक न्यायालय नहि कए सकल तखन आनक कथे कोन? तहिना एकल होमरकेँ इलियड आ ओडेसी केर रचनाकार मानी वा एक परम्पराकेँ जाहिमे बहुत रास होमर सन कवि छथि जनिका एकर श्रेय देल जाए। एहि विन्दुपर एखनो ओझरायल घुरछीसँ यूनानी सभ्यता त्राण नहि पौलक अछि। लेखकक उक्ति हठात् मस्तिष्कमे हथौड़ी मारय लगैत छैक मुदा तर्क आधारित तथ्य सोचबा लेल विवशो करैत छै।

महाकविक रचनाक सरसता, लालित्य, उपमा, अलंकार, शब्दक गुम्फन, रस आ गुणक एहन विलक्षण सूक्ष्मताक अध्ययनोपरान्त सभ पाठक अपनामे कालिदासकेँ आत्मसात नहि कालिदासमे अपनाकेँ विलीन कए लैत छथि आ तेँ महाकवि हुनका अपन आ अपना क्षेत्रक लागए लगैत छथिन। एहन माननिहार आ दावी केनिहार विभिन्न क्षेत्रक विद्वानक श्रृंखला अछि। मुदा वास्तविकताक धरातलपर सभक दावी मान्य तऽ नहि भए सकैछ।

लेखक लिखैत छथि जे महाकविक जीवनेकालमे जनश्रुति, किम्वदंती आ दन्तकथा सभक केन्द्रविन्दु बनि गेल छल जे अद्यावधि नहि फरिछाएल अछि।

विभिन्न क्षेत्रक विद्वज्जन अपन-अपन दावीक समर्थनमे अपन योग्यता, साक्ष्य आ तर्कक पेटारी फोलि देलनि अछि। एहि सभ दावीमे पसाही लगाए अपन दावीकेँ जगजियार केनाइ सरिपहुँ पूर्वसँ खचित डरीरक कातमे ओहिसँ पैघ डरीर खिचबामे लेखक निस्संदेह सफल भेलाह अछि।

लेखक अपन गहन अध्ययनक बलेँ महाकविक कालखंडक मीमांसा कयलनि अछि। पुलकेशिन द्वितीय केर ऐहोल अभिलेखमे(634 ई.) रविकीर्तिक तुलना महाकवि कालिदास आ भारविसँ कयल गेल अछि।

हर्षवर्धन (606-647)कालीन वाणभट्टक हर्षचरितक प्रस्तावनामे व्यक्त उद्‌गार महाकविक प्राचीनतम प्रशस्ति मानल गेल अछि। एहिसँ ई तऽ स्पष्ट होइते अछि जे कालिदासकेँ सातम शताब्दीक पूर्वार्द्ध बाद नहि राखल जा सकैत अछि।

महाकवि रचित मालविकाग्निमित्रम् आ विक्रमादित्यक अस्तित्वक आधारपर एफ. वी. कावेल, एस. आर. राय, डी. सी. सरकार, प्रोफेसर क्षेत्रेशचन्द्र चटोपाध्याय, हरिनारायण दूवे, डॉ. भगवती लाल राज पुरोहित प्रभृति विद्वान सभ कालिदासक समय ईसापूर्व प्रथम आ दोसर शताब्दी मानलनि अछि।

डॉ. राजबली पाण्डेय विक्रमादित्य सहित सभ नौरत्नक काल ईसापूर्व दोसर शताब्दी मानलनि अछि।

अधिकतर इतिहासकार महाकविकेँ गुप्त कालीन मानैत छथि एहिमे वी.ए.स्मिथ, बसाक, भगवत शरण उपाध्याय, वासुदेव शरण अग्रवाल आदि छथि। पंडित लक्ष्मण झा कालिदासक समय 510-590 ई. मानैत छथि। कृष्णानंद कालिदासक समय 360 ई.सँ 440-45 ई. अनुमान करैत छथि।

के. एस. रामास्वामी कालिदासकेँ समुद्रगुप्तक सभाकवि मानैत छथि। ए. वी. कीथ महाकविक काल तेसर शताब्दी, डी. भी. केलकर 280 ई., रामचन्द्र तिवारी हिनक कालखंड 370-450 ई. मानैत छथि।

राजा भोज (999-1054 ई.) आ कालिदास बिषयक किंवदंती प्रसिद्ध अछि। अर्थात ईसापूर्व दोसर शताब्दीसँ एगारहम शताब्दी धरि तेरह सौ बरखक समय महाकविक कालखंडक निर्धारण विद्वज्जन कयलनि अछि जे स्वयंमे विरोधाभासक दिग्दर्शन करबैत अछि।

हूण सभक भारतवर्षमे ईसापूर्व कतहु स्पष्ट उल्लेख नहि भेल अछि। मालविकाग्निमित्रम्मे शुंग वंशक तेसर पीढ़ीक उल्लेखक आधारपर कालिदासक

कालखंडक निर्धारण अमान्य अछि। कालिदासकेँ ईसापूर्व मत मानलापर पतंजलिकेँ कालिदासक समकालीन मानए पड़त। लेखक लिखैत छथि, महाभाष्यमे पतंजलिक उक्ति— 'इह पुष्यमित्रं याजयाम:' एहिसँ ई स्पष्ट अछि जे पतंजलि पुष्यमित्रक समकालीन छलाह। स्वयं पतंजलि अपन रचनामे कतहु कालिदासक चर्च नहि करैत छथि। पतंजलिक प्रभाव कालिदासपर निस्संदेह छल।

जयशंकर 'रघुवंशम्'केर रचना काल पांचम शताब्दीक अंत आ छठम शताब्दीक आरम्भ निर्धारित करैत छथि। हुनका मतेँ छठम शताब्दीक आरम्भमे रघुवंशम्, मेघदूतम्, कुमासंभम् आ ऋतुसंहारक रचना महाकवि कयलनि।

रघुवंशम्मे कुश कुशावतीसँ अयोध्या मार्गमे पश्चिमवाहिनी गंगा पार करबाक उल्लेख अछि—

तीर्थे तदीये गजसेतुबन्धनात् प्रतीपगामुत्तरतोऽस्य गड्ंगाम्।
अयत्नबालब्यजनीबभूवुहँसा नभोलड.घनलोलपक्षा:॥

लेखकक मतेँ तेसर शताब्दीक बाद गंगाक धारा परिवर्तित भेल। ज्योतिर्विविदाभरण नामक ज्योतिष ग्रंथमे विक्रमादित्यक नओटा नवरत्नक नामक उल्लेख अछि यथा—

धन्वन्तरि:क्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासा:।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपते:सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

लेखकक मतेँ वस्तुत: यैह श्लोक कालिदास-विक्रमादित्य विषयक समस्याकेँ ओझरौलक अछि। डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, शंकर बालकृष्ण दीक्षित, जैन शास्त्र, घनेरो विद्वज्जन, अनेको इतिहासकार, दन्तकथा आ विभिन्न कालखंडमे लिखित ग्रंथसभमे वर्णित श्लोक आ तेकर काटक अपन अलौकिक तर्क, विभिन्न शिलालेख, स्वर्ण मुद्रा, रजत मुद्राक उदाहरण दए ई सिद्ध करबाक चेष्टा कयलनि अछि जे महाकविक कालखंडपर मतैक्य नहि अछि आ ओ अद्यावधि विवादग्रस्त अछि। मुदा विक्रमादित्य-कालिदासक सम्बन्धक विचारकेँ खंडित कए महाकवि मालवा क्षेत्रक(अही क्षेत्रांतर्गत उज्जैन अछि) प्रतापी राजा यशोधर्मनक समकालीन

रहथि ताहि विचारसँ सहमत दृष्टिमध्य आबि रहल छथि। यशोधर्मन प्रतापी आ अद्भुत वीर योद्धा छलाह आ हूण राज मिहिरकुलक पराजयक प्रमाण मन्दसौर प्रशस्तिमे उल्लेख अछि। जाट विद्वान ठाकुर देशराजक जाट इतिहासक चर्च करैत लेखक लिखैत छथि जे देशराज यशोधर्मनक राजसभामे कालिदासकेँ विद्यमान मानलनि अछि। हुनक मान्यता अछि जे लोक यशोधर्मनकेँ चक्रवर्ती आ विक्रमादित्य मानैत छल। कक्कपुत्र बासुल रचित आ गोविंद द्वारा उत्कीर्ण यशोधर्मनक मन्दसौर स्तम्भलेखमे हुनका मनु, भरत, मांधाता आ अलर्क सन सम्राट कहल गेल अछि। यशोधर्मनक कालखंड अल्पावधिये (515-43 ई.) छल। लेखको एहि कालखंडमे कालिदासक उपस्थितिकेँ बेसी तर्कसंगत मानैत छथि।

अस्तु एहि पोथीकेँ पढ़लासँ एतबा तऽ स्पष्ट होइते अछि जे लेखक महाकविक कालखंडक उधेड़बुनमे गहन अध्ययन आ असाध्य श्रम व्यय कयलनि अछि। इतिहास आ शोध-परक पोथीक अनेको पन्ना फड़फड़ौलनि अछि जे हिनक शोधक प्रति उत्कट आकर्षण आ एहि शोध-पुष्प-परागक सौरभसँ सुधी पाठकक तन मनकेँ सुगन्धित करबाक अदम्य अभिलाषाक श्रेष्ठतम दिग्दर्शन अछि।

महाकविक मैथिलत्वपर मीमांसासँ पूर्व लेखक हुनक जन्मस्थलपर गहन विचार कयलनि अछि जे स्वाभाविक अछि। मानव जीवनमे व्यक्तित्व निर्माणपर ओकर माए-बाप, संगी-तुरिया, गाम-समाज, रीति-परीति, पावनि-तिहार आदिक बड़ पैघ प्रभाव पड़ैत छै जेकर प्रस्फुटन कोनो ने कोनो रूपमे होइते छै। लेखक एहि मर्मकेँ मस्तिष्कमे सहेजि महाकविक जन्मस्थलपर अतुलित आ संतुलित विवेचना कयलनि अछि। पहिने स्पष्ट कयल गेल जे महाकविकेँ जन्मस्थलपर अपन तर्क लए अपन-अपन दावी केनिहारक श्रृंखला अछि। मिथिलाक दावी सेहो प्रबल अछि। विदर्भक कृष्णमूर्ति महाकविकेँ विदर्भक, डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित महाकविक जन्मस्थल गढ़वालक देवगिरि मानैत छथि। राजेन्द्र मिश्र सदृश किछु विद्वान मेघदूतममे क्रौंच रन्ध्रक आधारपर महाकविक रुद्रप्रयागक कविल्ठा गामक मानैत छथि। केसर, सूर्यपूजा आ प्रत्यभिज्ञान दर्शनक आधारपर काश्मीरी(प्रो.लक्ष्मीधर कल्ला, डॉ.भगवतीशरण उपाध्याय आदि), खेतमे खाउर करबाक आधारपर बंगालक मुर्शिदाबाद जिलाक गढ़सिंगरू गाम (वी वीवी मिरासी आदि) आ पंडित मोरेश्वर नीलकंठ शास्त्री उज्जैन आदिक प्रबल दावी छनि। संगहि मिथिलाक सेहो सबल दावी अछि। मिथिलाक दावीमे लेखकक ई पोथी मीलक पाथर सदृश गड़ा गेल अछि।

एहनो नहि अछि जे लेखकसँ पूर्व केओ कालिदासक मैथिलत्व प्रमाणित करबा लेल अपन कलम नहि उठौलनि अछि। पंडित आद्याचरण झा, पंडित जीवनाथ झा, पंडित जयमंत मिश्र (किं कालिदास मिथिला वासी?), पंडित बलदेव मिश्र, पंडित लक्ष्मण झा, पंडित दिगम्बर झा प्रभृति विद्वान आ मनीषी लोकनि कोनो कसरि नहि छोड़लनि अछि मुदा लेखक दिवाकरजीक अपन अलौकिक तर्क आ कथ्यक प्रति एतेक दृढ़ता निस्संदेह अनुपम अछि।

लेखक लिखैत छथि जे महाकविक अमर रचना सभमे रचनाकारक रूपमे हुनक नाम उद्धृत नहि छल। मेघदूतम, रघुवंशम् आदि रचना महाकवि कालिदासक थिक ई ज्योतिर्विदाभरणसँ स्थापित भेल। मुदा आश्चर्यजनक बात जे ओहि ज्योतिर्विदाभरणकेँ मूल कालिदासक रचना नहि मानल गेल। जखन महाकवि अपन रचनामे नाम तक नहि देलनि तखन जन्मस्थान आ समयक कथे कोन? तथापि लेखक महाकविक रचना सागरमे डूबि हुनक सृजनक विभिन्न कोणसँ परखि अपन अभिमत आ दावीपर अंगदी पैर रोपि देलनि अछि।

महाकविक रचनामे क्रौंचरन्ध्रक वर्णनसँ कवि गढ़वाली वा रुद्रप्रयागक वासी सिद्ध नहि होइत छथि। एहन सम्भव अछि जे महाकवि क्रौंचरन्ध्र होइत हंसकेँ मानसरोवर जाइत देखने होथि आ ओ मनोरम दृश्य हुनक भावना संसारसँ नि:सृत भए रचना संसारमे आकार ग्रहण कए नेने हो।

केसर उत्पादन स्थल, सूर्यपूजा आ प्रत्यभिज्ञानक वर्णनक आधारपर हुनका कश्मीरी मानव तर्कसंगत नहि अछि। विदित हो कि कश्मीर आ गढ़वाल क्षेत्र शीतल क्षेत्र अछि आ कालिदासक धारागृहमे शीतल जलक फुहारक कल्पना यन्त्रधारागृहत्वम् (पूर्व मेघ, पद 65)आ जलक फुहारसँ शीतल भेल समीर स्वजलकणिकाशीतलेनानिलेन (उत्तर मेघ, 40)सँ निर्मूल भए जाइछ।

एहिना शरद पूर्णिमाक निशीथमे चारुचन्द्रक मनोमुग्धकारी चित्रणपरिणतशरच्चन्द्रिकासु कोजागरा रातिक निरभ्र चन्द्रकिरणक स्मरण करा दैत अछि। आस्थाक पावनि प्रतिहार षष्ठी एखनो मिथिलाक सभसँ प्रसिद्ध पावनि अछि जाहिमे उगैत आ डुबैत सूर्यकेँ अर्घ्य देल जाइछ। ध्यातव्य जे डुबैत सूर्यकेँ अर्घ्य मिथिला/मगध छोड़ि अन्यत्र नहि देल जाइछ।

कश्मीरी विद्वान लोकनि इन्दुमतीक स्थानपर सुनन्दा द्वारा अजकेँ वरमाला पहिरायब, प्रत्यभिज्ञान दर्शन, अलकापुरीक अवस्थिति, केसरक चर्च देखि कालिदासपर कश्मीरक होमक दावा ठोकि दैत छथि। केसरक खेती कश्मीरमे

भेलासँ महाकवि कश्मीरी नहि भए जाइत छथि। ओहुना महाकवि केसरक खेतीक तकनीकक सूक्ष्मताक कतहु वर्णन नहि कैने छथि जखन कि मिथिलाक धनखेतीमे खाउर विधिक वर्णन करैत छथि जे कालिदासपर मिथिलाक दावीकेँ सम्पुष्ट करैत अछि। ई विद्वान लोकनि, कल्हण द्वारा कश्मीरक प्रातिभ सभक चर्चामे महाकविक कतहु उल्लेख नहि कयने छथि, एहि सत्यकेँ दृष्टि ओझल कए दैत छथि। सुनन्दा द्वारा स्वयंवरमे अजकेँ माला पहिरायबसँ एतेक तऽ सिद्ध होइत अछि जे सुनन्दा अजकेँ पतिक रूपमे चयन कयलनि। मुदा वियाह तऽ बादेमे होइत अछि।

प्रत्यभिज्ञान दर्शनक आदि आचार्य वसुगुप्त (8म शताब्दी)क छथि जे 77 शिवशिलापर उत्कीर्ण सिद्धांत सभकेँ लिपिबद्ध कएलनि। कश्मीरक ई शैव दर्शन अद्वैत दर्शनेक एक भाग थिक जेना मिथिलाक भावाद्वैत दर्शन। कालिदासक रचनामे शैव दर्शनक व्यापकता देखि हुनका एहि दर्शनक आचार्य कहब उचित नहि। कालिदासक रघुवंशममे इन्द्रियाख्यानिव रिपूंस्तत्त्वज्ञानेन संयमीसँ सांख्य दर्शनक तत्त्वक अभिव्यक्ति भेल अछि। एहि आधारपर महाकविकेँ सांख्य दर्शनक आचार्य तऽ नहि कहल जा सकैछ। आ जौं एहि आधारपर हिनका कश्मीरी मानल जाए तौं कामायनी जे प्रत्यभिज्ञान दर्शनक प्रतिपादन करैछ कैँ लेखक जयशंकर प्रसादकेँ कश्मीरी घोषित करए पड़त। लेखक विक्रमोर्वशीयम् केर श्लोक उद्धृत करैत लिखै छथि जे ओहिमे वेदांत, द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, भावाद्वैत, सेश्वरसांख्य योग भक्ति आदि दर्शनक भावाभिव्यक्ति भेल अछि। महाकविपरमेश्वरक स्वतंत्र आ आनन्दमय स्वरूपक संगपरमात्माक अवतारी स्वरूपकेँ स्वीकार करैत छथि। तैं एहि आधारपर आ अलकापुरीक अवस्थितिपर महाकविकेँ कश्मीरी घोषित केनाइ उचित नहि। कैलास पर्वतपर स्वर्णिम कमलसँ सुशोभित मानसरोवर तऽ अछि मुदा अपन घरक पता जे महाकवि शंख-पद्म चित्रसँ दैत छथि से मिथिलेक निशानी छी।

ओहिना कालीक कृपा, फलै:संवर्धयामासुरुत्खातप्रतिरोपिता:(रघुवंशम्) लिखलासँ अथवा धानक खेतमे कमल फूलक प्रस्फुटनक वर्णनसँ कालिदास बंगालक नहि मानल जा सकैत छथि। कालिदासपर कालीक कृपाक कथासँ मिथिलाक उच्चैठ भगवती प्रसिद्ध छथि।

खाउर विधिसँ धानक खेती बंगालेमे नहि अपितु अदौकालसँ एक बेर बीआ बाउग कए दोसर बेर बिच्चनि उखारि खेतमे रोपल जाइत अछि। एकरे खाउर विधिसँ धानक खेती कहल जाइत अछि

लेखकक विचारसँ सहमत होइत कहब जे बंगालक माटि-पानि, अंशुक, खान-पान, लिपिमे साम्यताक लाभ दए महाकविकेँ बंगाली नहि मानल जा सकैछ।

अषाढ़स्य प्रथमे दिवसेसँ बंगाली विद्वानक दावी जे बंगालक दिन गणनामे पक्ष आओर तिथिक उपयोग नहि होइत अछि तथ्यपरक नहि।

उज्जैनक विद्वान सभक कालिदासकेँ उज्जैनवासी मानि गर्वित होइत छथि से सहजहि। मुदा सत्य तऽ इएह जे उज्जैन कालिदासक जन्मभूमि नहि कर्मभूमि छल। जखन कालिदास अपन रचना संसारमे अपन जन्मस्थान आ कालखंडक उल्लेख नहि कयलनि तखन हुनक रचना सभमे हुनक मैथिलत्वक संकेतक तलाश लेखक कयलनि अछि जे आगू आओर फरिछैत।

इन्दुमतीक स्वयंवरमे राजा सभक क्रम आ वैशिष्ट्यक वर्णनमे महाकवि मगध नरेशकेँ प्रथम स्थानपर—

कामं नृपा:सन्तु सहस्रशोऽन्यो राजन्वतीमाहुरनेन भूमिम।
नक्षत्रताराग्रहसंकुलाऽपि ज्योतिष्मती चन्द्रमशैव रात्रि:॥

उल्लेख करैत छथि जे एहि स्वयंवरमे विभिन्न देशक राजा सभक उपस्थिति रहलोपर इन्दुमती मात्र मगधे नरेश दिशि तकैत छथि मुदा ताहि क्षण दूभिमे गाँथल हुनक महुआक माला सरकि जाइत अछि आ इन्दुमती आगू बढ़ि, बिना कोनो आन नरेशपर दृष्टिपात कैनय अजक गरामे माला पहिरा दैत छथि। ई सभ घटनाक वर्णनमे महाकविक मिथिलाक प्रति स्नेह उद्‌भासित होइछ। विदित हो कि ताहि समयमे मिथिला मगधेक अंग छल।

विदिशा आ उज्जैनक वर्णनमे महाकवि कटगर भौंहवाली कामिनीक अधरपानक स्वाद वेत्रवती नदीक जल समान मीठ कहैत छथि। एतय वारांगना सभक संग रमण करैत काल जाहि सुगन्धित पदार्थ सभक लोक प्रयोग करैत छथि तेकर महककेँ गुफासँ एबाक चर्च महाकवि करैत छथि।

एहिना बिजुरीसँ डरि चंचल कटाक्ष, महाकाल मन्दिरमे वेश्या सभक नृत्य आ नखक्षतपर मेघक शीतल फुहार पड़लासँ सुख भेटलापर दीर्घ कटाक्षक उत्कट चित्र—

वेश्यासत्वत्तो नखपदसुखान्प्राप्य वर्षाग्रविन्दुनामोक्ष्यन्ते
त्वयि मधुकरश्रेणिदीर्घानकटाक्षान्।

अछि। अन्हार रातिमे अभिसार हेतु जाइत अभिसारिका सभक हेतु बिजुरी छिटका मार्ग देखेबाक बिम्ब हो अथवा भिनसरवामे अपन पत्नीक मनुहार करैत आ नोर पोछैत ओहन पति सभक चित्र जे पत्नीकेँ एसकर छोड़ि अन्य रमणी संग राति व्यतीत करैत आपस आयल हो। सभ ठाम रास-रंग विलास, केलि सम्भोग सभक बाहुल्य अछि। ओतहि महाकवि अपन क्षेत्रक स्त्री विषयक वर्णन—

इक्षुच्छाया निषादिन्यस्तस्य गोप्तुर्गुणोदयम।
आकुमार कथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यश:।

महाकविक विलक्षण चातुर्यपर सहजहिं मोहित भेनाइ अवश्यंभावी अछि। अपन जन्मभूमि आ अपन क्षेत्रक स्त्रीगणक लेल एतेक सरल आ निश्छल भाव आ अपन कर्मभूमिक स्त्रीगणक सरस आ उद्दाम यौवनक चित्रसँ महाकविक मनोदशा परखल जा सकैछ। ई मनोवैज्ञानिक तथ्य अछि जे अपन गामक गुप्त बात लोक देखार नहि करैत अछि। महाकविक ई चातुर्य चिचिया-चिचियाकेँ कहैत अछि जे महाकवि मिथिलेकेँ छलाह।

महाकवि अपन रचनामे जतय-ततय मत्स्य ध्वजाकेँ फहराइत देखा अपन मातृभूमिक गौरव पताका फहरबैत दृष्टिगोचर होइत छथि। ध्यातव्य हो कि अदौकालसँ मिथिलाक ध्वजापर माछक चित्र विख्यात रहल आछि जे एखनो अवसर विशेषपर दृष्टिमध्य अबैत अछि।

रघुवंशम् मे सूह्म, बंग, उत्कल सहित अनेक राजा सभकेँ पराजित देखाओल गेल अछि परञ्च ओहिमे मिथिला/मगध शामिल नहि अछि। महाकविक ई कौशल अपन जन्मस्थलक प्रति स्नेहक परिचायक अछि। महाकविक अन्तस्तल राजर्षि जनककेँ मैथिल आ जानकीकेँ मैथिली कहबामे सहजताक अनुभव होइत छनि।

रघुवंशम् मे राम द्वारा जानकीक परित्यागपर जानकीक आक्रोश राम काव्यक परम्परामे विरल अछि। एहि ठाम जानकीक व्यथा आ आक्रोशक स्वर महाकविक आत्माक स्वर प्रतीत होइछ। एहन वेदना आ आक्रोश अपन बेटी-बहिनक परित्यागपर सहज रूपसँ प्रगट होइत अछि। निर्जन वनमे छोड़लाक पश्चात् सीताक क्रन्दनपर महर्षि वाल्मीकिक ई कहब जे मिथ्या आरोपपर अपन छवि बनौने रहबाक उद्देश्यसँ राम अहाँक परित्याग कयलनि अछि। हुनक एहन अनुचित व्यवहारपर हमरा क्रोध अबैत अछि। ई कहि जानकीक पिता विदेह कुलक संग

जानकीक पातिव्रत्यक प्रशंसा करैत छथि। निश्चित रूपसँ एहन वर्णनक आत्मामे अपन जन्मस्थलक प्रति मोह आ अपन धीआक क्लेशपर अपन आक्रोशक उदात्त अभिव्यक्ति अछि जे सिद्ध करैत अछि जे कालिदास मैथिल छलाह।

रामक कुलपर उठल प्रश्न एहि तथ्यसँ आओर दृढ़ होइत अछि जे आइयो मिथिलाक कोनो पिता अपन धीआक वियाह विवाह-पंचमी दिन नहि करैत छथि। एहि मर्मान्तक भावनाक उत्स महाकविक आक्रोशमे देखल जा सकैछ।

महाकवि कतहु अपन जन्मस्थानक उल्लेख केने बिना प्रकृतिक वर्णनमे अपन मैथिलत्वक स्पष्ट इंगित कए अपन चातुर्यकपरिचय देबामे नहि चुकैत छथि। वायु प्रवाहक कारणे बाँसक छिद्रसँ गुंजित सुमधुर ध्वनि— दरी मुखोत्थेन समीरेण (कुमार सम्भवम्)हो, चूड़ा गूड़क वर्णन हो महाकविकेँ सोझे अपन मातृभूमिसँ जोड़ि दैत अछि। पाकल धानक खेत, आमक गाछी, जामुनक वन जमुनटोकी, तिलकोरक फड़सँ ठोरक उपमाक भाव महाकविक बाल्यकालसँ कैशोरावस्थामे अपन गाम घरमे देखल बिम्ब अभरल अछि।

शेफालिकासँ सुरभित वातावरण आ विपुल जलराशिमे कलरव करैत पखेरुक दिग्दर्शन आइयो मिथिलामे यत्र-तत्र आ खास कए कोशी प्रक्षेत्रमे कयल जा सकैछ।

महाकवि गंगा वर्णनमे बिहारक दू स्थान सोन नदी आ भगवान विष्णुक प्राकट्यस्थली, गज-ग्राह युद्धमे गजक उद्धार स्थल सोनपुरक चर्च करैत लिखैत छथि जे अज एतए अपन प्राण त्याग कए देवता बनि अधिक सुखक भोग करए लगलाह। लेखकक विचारसँ सहमत होइत एहि प्रसंगक उल्लेख मिथिलाक अनुश्रुति जे अयोध्या जएबासँ पूर्व मिथिलावासीकेँ सीताक अनुरोधपर रामक वरदान प्राप्त छनि जे एहि पावन भूमिपर प्राण त्यागितहि हुनका विष्णुलोकक प्राप्ति भए जाइत छनि, केँ सम्पुष्टे नहि अपन मातृभूमिक प्रति स्नेह आ पवित्रताक स्पष्ट उद्घोषणा छी। संगहि एहि अनुश्रुतिक सम्पुष्टियो अछि।

मेघदूतक आरम्भे जानकीक वन्दना, मिथिला नरेश जनक आ श्रीरामसँ करैत छथि। जनकसुता जानकीक स्नानसँ पवित्र भेल सरोवर आ घनगर छाहरियुक्त गाछसँ सुशोभित रामगिरि आश्रममे कोनो यक्ष कर्त्तव्यच्युत भेलापर निर्वासनक दंड आ पत्नीक वियोगक समय व्यतीत करवाले अपन कुटी बनौलनि। एतय जानकीक महत्ता स्पष्ट अछि जे स्नानार्थ जानकीक चरणकमल एहि सरोवरमे पड़लाक बादे एकर जल पवित्र होइछ। जानकीक प्रति श्रद्धा आ मात्सर्य भावक उच्चताक स्पर्श हृदयंगम होइछ।

रत्नच्छायाव्यतिकर इव प्रेक्ष्यमेतत्पुरस्ताद्वल्मीकाग्रात्प्रभवति धनु:खण्डमाखण्डलस्य।
येन श्यामं वपुरतितरां कान्तिमापात्स्यते ते बर्हेणेव स्फुरितरुचिना गोपवेषस्य विष्णो:

प्रकृति चित्रणक एहि नैसर्गिक बिम्बसँ विलग लेखक अपन इष्ट प्राप्तिक प्रति अपन ध्यान 'धनु:खण्डमाखण्डलस्य'पर केन्द्रित करैत छथि। लेखकक मतेँ खण्डित धनुषक कल्पनासँ महाकवि अपन मातृभूमिक संकेत करैत छथि। विदित हो कि रामक हाथे धनुर्भंगक पश्चाते सीतासँ हुनक बियाह भेल छल। भंग धनुषक एक अंश एखनो मिथिलाक धनुषामे प्रस्तर रूपमे विद्यमान अछि। एहिना यक्ष मेघसँ विनती करैत कहै छथि—

सद्य:सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालं।
किषञ्चित्पश्चाद् व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण॥

हमसभ जनैत छी जे सद्य:चासल, समारल आ तेखारल खेतसँ एक अद्‌भुत सुगन्ध अबैत अछि आ ताहिपर एक अछार पानि पड़ि जाए तऽ ओ सोन्हगर सुगन्ध अपूर्व भए जाइछ।

महाकविक एतवे अभिप्राय नहि छनि। मिथिलामे अनावृष्टिक बाद राजा जनक द्वारा स्वयं पुनौराधाममे हऽर चलेबाक क्रममे हरक फाड़ (सीता)सँ सीताक उत्पत्तिक आख्यान आ एकरा पूर्णता प्रदानक हेतु जनक द्वारा इन्द्रसँ बरखा करबाक प्रार्थनासँ हमसभ परिचित छी। ध्यातव्य जे सीता जन्मक एहन प्रसंग मिथिला छोड़ि अन्यत्र कतहु नहि अछि। महाकवि जेँ मिथिलाक छलाह तेँ ई आख्यान हुनक संज्ञानमे छल आ ओ लेखनीसँ नि:सृत भेल।

लेखक हिमालयक भौगौलिक विशद् चर्च करैत लिखैत छथि जे महाकवि अपन शैशवास्थहिंसँ हिमालयक सौन्दर्यक प्रति आकर्षित छलाह। कारण अही हिमालयक उपत्यकामे महाकविक जन्मस्थल छल।

समीक्षान्तर्गत रीति-परीतिमे कालिदासक मैथिलत्व प्रमाणित करवाले पूर्वमे देल गेल तथ्य सभसँ फराक मिथिलाक सभसँ सशक्त दावी समक्ष अबैत अछि। लेखकक विवेचना, प्रमाण आ अकाट्य तर्क विस्मित तऽ करिते अछि जे महाकविक मैथिलत्वक दावीक समक्ष आन प्रांतक सभ दावी निर्मूल भए जाइत अछि। ई अंश महिकविक मैथिलत्वक उद्‌घोष ढोल-पिपही बजा कए लेखक करैत छथि जे वन्दनीय अछि।

कुमारसंभवम् मे धानक लावासँ बियाहक अग्निमे होम आ पश्चात् होम-धूपकेँ सूंघव, विवाह-वेदी लग वेदीक धुआँसँ लाल भेल आँखि विवाह धूमारुण लोचन, वर कनिञाकेँ संग बैसा दूर्वाक्षतसँ आशीर्वाद— लौकिक मेषणीयम, नव विवाहित वर कनिञाकेँ चतुर्थी धरि भूमिपर शयन, वराह तीर्थक चर्च, देवोत्थान एकादशीक वर्णन, राजा रघु द्वारा जलपात्रसँ कौत्स मुनिक सत्कार, ससत्वा शकुन्तलाक विदागरी काल खोँइछमे फल देब, खोभारसँ बहराइत सुगरक वर्णन आ वप्रक्रीड़ा रत वृषभ केर पंकमग्न सींग (रघुवंशम्, 3/24)सँ पखेवक हूड़ा-हूड़ी, सामा-चकेबाक गीत, ग्राम बाला सभक खेतमे गायन आ ऋषि कण्वक शकुन्तलाक विदागरी काल कोंढ़ फाटब—

वैकलव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकस:।
पीड्यन्ते गृहिण: कथं नु तनयाविश्लेषदुखैर्नवै:॥

आ द्वारोपान्ते लिखितवपुषौ शंखपद्मौ च दृष्ट्वा (उत्तर मेघ, 20) कहि घरपर शंख आ कमलक चित्रसँ घरक पता देब आदि उदाहरण महाकविक मैथिलत्वक अमर उद्घोष करैत अछि। ई रीति-परीति आ व्यवहार अद्यपर्यंत मिथिलामे अक्षुण्ण अछि।

कुमार सम्भवक सातम सर्गमे बियाह हेतु प्रस्तुत पार्वती श्रृंगारक बाद हाथमे दर्पण नेने क्षीरसागरक फेनिल लहरि वा सोम सुशोभित शारदीय रात्रि सन सुन्दर लगैत छलीह तखन माता मैना पार्वतीसँ कुलदेवताकेँ प्रणाम कराय श्रेष्ठ सभक चरण स्पर्श करबैत छथि।

ठीक ओहिना मिथिलामे बिऔहतलि धीआकेँ जाँत गूहि, सिंगार -पटार कए आ भूषणादि पहिरा, भगवतीकेँ प्रणाम कराए श्रेष्ठ सभक चरण स्पर्श कराओल जाइत अछि। इएह पल होइछ अन्तिम रूपसँ कुमारि कान्याक मुह देखबाक।

बरियाती देखबाक उत्कंठा हो वा महादेवकेँ आसनपर बैसाए रत्न, अर्घ्य मधु, दही आ दू नव वस्त्र देब, अग्नि प्रदक्षिणा आ धानक लाबाक हवन हो, दूर्वाक्षत देबाक रूप हो वा कौतुकागार (कोबर)मे राखल कलश एवं भूमिपर लागल बिछानक बर्णन हो—

कनककलशयुक्तं भक्तिशोभासनाथं
क्षितिविरचितशय्यं कौतुकागारमागात

एखनहु मिथिलामे प्रचलित अछि। मधुपर्क आ वेदीक प्रदक्षिणासँ कोन मैथिल परिचित नहि हेताह! मड़बापर वरकेँ नव वस्त्र देबाकपरम्परा एखनहुँ अछि।

कोबर घरमे नगहरमे जल भरल रहैत अछि जाहिसँ चतुर्थी दिन पालोपर बैसाए वर-कनिञाक स्नान कराओल जाइत अछि। भरि चतुर्थी कोबरमे भूमिपर पटिआक बिछौन बिछाओल जाइत अछि। चतुर्थीक बादे पलंग आ ताहिपर बिछौन देबाक प्रथा अद्यावधि प्रचलित अछि।

महादेव बियाहक पश्चात् एक महिना सासुरेमे रहैत छथि। मिथिलामे बियाहक वरकेँ सासुरमे एक निश्चित अवधि धरि रहबाक परम्परा अछि जे मिथिला छोड़ि आन कोनो क्षेत्रमे नहि अछि। आन क्षेत्रमे बियाहक प्राते बरिआतिये संगे वर-कनिञा वरक गामक हेतु प्रस्थान कए जाइत छथि।

मिथिलामे वेदीक चारू कात लावा छिड़िअबैत वर कनिञाकेँ तीन बेर घूमए पड़ैत छनि। मिथिलासँ इतर वर-कनिञा द्वारा सात बेर वेदीक प्रदक्षिणा करबाक विधि मान्य अछि। जँ कालिदास उज्जैन सहित आन कोनो भूभागक रहितथि तऽ शिव पार्वतीकेँ वेदीक सातबेर प्रदक्षिणा करबितथि। जेँ महाकवि मिथिलाक छलाह तेँ अपन कौलिक परंपरानुसार शिव-पार्वतीसँ वेदीक तीनिए बेर वेदी घुमबैत छथि।

मिथिलामे शिशुक अक्षरारम्भ भूमिकेँ नीपि ओहिपर गाविससँ लिखाए कराओल जाइत अछि जे भठ्ठा धराएब नामसँ जानल जाइत अछि। रघुवंशममे एहन अक्षरारम्भक वर्णन—

न्यस्ताक्षरामक्षरभूमिकायां कात्स्नर्येन गृहणाति लिपिं न यावत्।

शकुन्तलाक विदागरीक समय जलाशय धरि अरिआतब, संगमे भाइकेँ रूपमे शाङ्गरव आ शारद्धत तथा मड़राइनक रूपमे गौतमीक हस्तिनापुर जएबाक वर्णन कए कालिदास अपन मैथिलत्वक स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत कए दैत छथि।

वराह क्षेत्रमे ऊँच-ऊँचपर्वतक मध्यसँ निकसित सप्तकोशीक नयनाभिराम धारक मनोरम दृश्य देखि लेखक कहैत छथि जे कालिदास इएह अनुपम धाराक नाम आकाशगंगा रखलनि। ई सरिपहुँ देखलासँ लगैत अछि जेना आकाशसँ गंगा पृथ्वीपर उतरि रहल छथि। लेखकक सम्मति छनि जे मिथिलाक वासी रहला सन्तां महाकवि महावराहक्षेत्रक दर्शन कएने हेताह आ ओ मनोहर दृश्य हृत्पटपर अंकित

भए गेल हेतनि जे विगलित भए काव्यधारा बनि प्रवाहित भेल। पार्थिव महादेवक पूजनक सनातनहिसँ मिथिलामे प्रचलित अछि। कुमारसंभवममे पार्वती अपने हाथे माटिक महादेव बना हुनकर आराधनामे कहैत छथि जे लोकक कथनानुसार अहाँ सभहक मोनक बात जानि जाइत छी तऽ हमर मोनक बात किऐक नहि जानि हमरा प्रेमकेँ स्वीकार करैत छी।

अपन विवेचनाक अमोघ अस्त्रक बलेँ लेखक महाकविक मैथिलत्वक पक्षमे युधिष्ठिर बनि रणभूमिमे ठाढ़ भए गेलाह अछि। लेखक भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्वकेँ सिद्ध कयलनि अछि जे अनमोल अछि।

भाषा विज्ञानक आधारपर महाकविक मैथिलत्व विक्रमोर्वशीयम् मे महाकविक मातृभाषा आ मैथिलत्वक स्पष्ट संकेत दैत अछि।

एहिमे विशुद्ध अपभ्रंशक 14 पद आ प्राकृत अपभ्रंश मिश्रित 16टा पद अछि। एहि पद सभमे 'क्ष' केर 'क्ख'मे विकास, 'ए', 'ओ' केर ह्रस्व उच्चारण, करण कारकमे निरनुनासिक 'ए' विभक्ति, सम्बन्ध परसर्ग 'क' एवं लोकगीतक टेक रूपमे अद्यतन मिथिलामे प्रयुक्त ओ, यौ, रे, ए, हो, जान आदिक भाषा वैज्ञानिक निकषपर विक्रमोर्वशीयम् केर चारिम सर्गक एहि पद सभकेँ मिथिलापभ्रंश प्रमाणित करैत अछि—

मइ जाणिअ मिअलोअणि णिसिअरु कोई हरेइ।
जाव णु णवतडसामलि धाराहरू वरिसेई॥
जलहर संहर कोपई आढत्तओ अविरलधारासारदिसामुहकंतओ।
ए मई पुहविं भमंतो जइ पिअं पेक्खमि तव्वे जं जु।
करीहिसि तं तु सहीहिमि॥
रे रे हंस किं गोइज्जइ गइअणुसारें मई लक्खिज्जइ।
कई पईसिक्खउ ए गइ लालस सा पइं दिट्ठी जहणभरालस॥

प्राकृत अपभ्रंश मिश्रित पद—

पिअसहिविओअविमणा सहिसहिआ व्वाउला समुल्लवइ।
सूरकरफंसविअसिअतामरसे सरवरुच्छंगे॥

अन्य उदाहरण हेतु मूल पोथी 'महाकविक महाप्रयाण'द्रष्टव्य।

ओना एहि पद सभक रचनाकार महाकवि छथि ताहिपर विद्वज्जनक मत विभाजित अछि मुदा पंडित भगवद्दत्त (भाषा का इतिहास)सहित अधिकांश विद्वान एकरा महाकवि विरचित मानैत छथि।

आब लोकगीतक टेकक प्रयोग विवेच्य पदमे ओ केँ प्रयोग टेकक रूपमे भेल अछि। मिथिलाक सोहर, चैतावर, स्वयंवर (सम्मर), विरहा, बटगवनी, बारहमासा प्रभृति लोकगीतमे अद्यतन ओ, यौ, रे, ए, हो, जान आदिक प्रयोग टेकक रूपमे होइत अछि। इएह ओ मात्रावृद्धि वा श्रुतिक कारणे यो यौ रूपमे मैथिली लोकगीतमे आयल अछि—

चैत हे सखी फूलल बेली भ्रमर लेल निज वास यौ।
तेजि मोहन गेल मधुपुर हमर कोन अपराध यौ।
कथी लै देव देवालय भक्ति अराधल रे।
आजु जनकपुर मंगल भूप सब आयल हे।
उत्तर बनिजसँ एलै खोदापारनी रे जान।
बारह बरषपर भैया अयला मेहमानवाँ ए जान।

विक्रमोर्वशीयम् केर विवेच्य पद सभ लोकगीते रूपमे प्रयुक्त अछि। निष्कर्ष जे विक्रमोर्वशीयमक एहि पद सभकेँ पूर्वी वा मिथिलापभ्रंश प्रमाणित करवाले यथेष्ट अछि। जेना सुप्तावस्थामे हठात् चोट लगलापर चौंकल मनुक्खक प्रथम स्वर माए होइत अछि तहिना विक्षिप्तावस्थामे प्रलाप मातृवाणीएमे होइत अछि।

भाषा विज्ञानक आधारपर महाकविक मैथिलत्व निर्धारण हेतु डॉ.रामचन्द्र ठाकुर (मिथिलापभ्रंशकेँ आकर स्रोत)आ लेखक दिवाकरजीक (हिन्दी भाषा और साहित्य केँ विकास में मिथिला का योगदान) पोथीक अवलोकन हेतु परामर्श दैत आगू बढ़ैत छथि।

कालिदासपर आन-आन क्षेत्रक दावी तखन दम तोड़ि दैत अछि जखन मिथिलाकेँ छोड़ि राजस्व अभिलेखमे कालिदासक डीह आओर कतहु नहि उपलब्ध होइछ। मिथिलाक बेनीपट्टी अंचलान्तर्गत उच्चैठ (थाना सं. ८९) गाममे कैडेस्ट्रल सर्वे खतियान आ पुनरीक्षित सर्वे खतियानमे निम्न भूमि कालिदास डीहक नाम तस्दीक अछि—

मौजे- उच्चैठ, थाना नं. 89, थाना- बेनीपट्टी, जिला- दरभंगा

खाता	***खेसरा***	***रकबा***
231	*883*	*1-9-2*
	885	*1-3-17*
192	*880*	*1-0-8*

राजस्व अभिलेख केर कैफियतमे अंकित अछि— कालिदास डीह। लगभग दू सय वर्षसँ बेसी पुरान एहि राजस्व अभिलेख केर तोड़ भारतवर्षक कोनो क्षेत्रक हाथमे नहि अछि। हाल राजस्व खतियानमे ई प्रविष्टि निम्न प्रकारसँ अछि—

खाता	***खेसरा***	***रकबा***
494	*2138*	*12 डिस्मिल*
	2139	*26 डिस्मिल*

महाकवि कालिदास समिति स्थान-उच्चैठ

खाता	***खेसरा***	***रकबा***
497	*2137*	*1 एकड़ 1 डिस्मिल*

अनाबाद बिहार सरकार गढ़ कालिदास डीह।

सार्वजनिक भूमिपर कब्जा करबाक तीव्र प्रवृत्तिक पश्चातो महाकविक डीह एखनहुँ बाँचल अछि आ कहि रहल अछि जे कालिदास मिथिलेक वरद् पुत्र छथि आ ई भूमि अपन सुतपर गर्वित अछि। आइयो एहि परोपट्टाक लोक कालिदास डीहक माटिसँ अपन बच्चाकेँ भट्ठा धरबैत छथि। मान्यता अछि जे एहि माटिसँ भट्ठा धरौलापर ओहि बच्चापर उच्चैठ भगवतीक कृपा बनल रहैत अछि। विदित हो कि मिथिलामे ई अनुश्रुति एखनहुँ घर-घरमे विख्यात अछि जे महामूर्ख कलुआ भगवतीक वरदान पाबि महाकवि बनि गेलाह अन्यथा ओ तऽ जही ठाढ़िपर बैसल छलाह ओकरे कटैत रहथि।

एहि पोथीकेँ अध्ययन अन्तर्गत अनुभव होइछ जेना इतिहास आ साहित्य संगहि चलि रहल हो। इतिहासपर विमर्श आ समीक्षामे विस्तारक संभावना देखैत पूर्वहि भेल संक्षिप्त चर्चाक बाद आगू बढ़ैत छी।

लेखक इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्वपर गंभीर मीमांसा कयलनि अछि। महाकविक गहन इतिहास बोधपर विचार करैत लेखक लिखैत छथि जे किछु विचलनकेँ छोड़ि महाकविक इतिहास बोध स्तरीय अछि। जेना मालविकाग्निमित्रम् मे महाकविक इतिहास बोध कतेक इतिहासकार सभक हेतु मार्गदर्शक भेल। सुखद आश्चर्य तखन होइत अछि जखन महाकविक रचनामे वर्णित शिव विषयक भाव ओहिना शिव पुराणमे उल्लिखित भेटैत अछि। रघुवंशममे सीताक चरित्र-अनुपम अछि। महाकवि सीताक चरित्र-चित्रण ओहिना करैत छथि जेना कोइ अपन पुत्री वा अपन बहिनक बर्णन करैत होथि। सीताक गरिमापर साकांक्ष रहैत महाकवि सीताक उद्दाम श्रृंगारक बिना वर्णन कैने हुनक मर्यादाक सीमा उल्लंघन नहि कयलनि अछि।

एहि ग्रंथमे महाकवि सीताक चरित्रक शुचिता, विशालता, प्रगल्भता, अनन्य पतिपरायणता प्रभृति सद्गुणक वर्णन अधिक करैत छथि आ हुनक रूप-सौन्दर्य आ केलिक कम।

बभौ तमनुगच्छन्ती विदेहाधिपते:सुता:।
प्रतीषिद्धाल्टऽपि कैकेय्या लक्ष्मीरिव गुणोन्मुखी:॥ *(12/26)*

हनुमान द्वारा सीताक सुधि लेलाक बाद सीता द्वारा देल चूड़ामणि जखन रामकेँ देल जाइत अछि तखन राम आनन्द विभोर होइत छथि जेना स्तन स्पर्श नहि स्वयं सीता शरीरसँ सटि गेलि हो— अपयोधरसंसर्गा प्रियालिङ्गननिर्वृतिम् (12/65)। तहिना लंकासँ आपसी काल समुद्रक सौन्दर्यसँ मुग्धित राम सीतासँ कहैत छथि—

वेलानिल: केतकरेणुभिस्ते सम्भावयत्याननमायताक्षि।
मामक्षमं मण्डनकालहानेर्वेत्तीव बिम्बाधरबद्धतृष्णम्॥
आगू सीताकेँ महाकवि हाथीक सूँढ़ सन जांघवाली मृगनयनी कहलनि।
कुरुष्व तावत्करभोरु!पश्चान्मार्गे मृगप्रेक्षिणी(13/18)

सीता शृंगारक एतबे पद अछि जखन कि आन सभक उत्कट शृंगार प्रदर्शित अछि। रघुवंशममे ऋतुस्नानक बाद सुदक्षिणाकेँ देखि दिलीपक ई सोचब जे जौं एखन संभोग नहि करब तऽ गृहस्थी गड़बड़ा जाएत आ एहि फेरमे कल्पवृक्षक छाहरिमे बैसल कामधेनुक उपेक्षा भए गेल।

देवदारक पादपकेँ पार्वतीजीक सोनाक कलश सन स्तनसँ दुग्ध पिआ पोसबाक बात— यो हेमकुम्भस्तननि:सृताना स्कन्दस्य मातु:पयसां रसज्ञ: हो, इन्दुमतीकेँ केराक थम्ब सन जांघवाली— अनेन यूना सह पार्थिवेन रंभोरू: आ हुनका गहींर नाभिवाली— तमावर्तमनोज्ञनाभि: कहब, मथुरा नरेश सुषेणक जलविहारमे रानीक स्तनपर लागल चाननकेँ यमुना जलमे मिझ्झर भेलाक बाद मथुरामे गंगा-यमुना संगमक दृश्य उपस्थित होएबाक चर्च हो, गर्भिणी सुदक्षिणाक कारी भेल घुंडी युक्त स्तनक उपमा कमल युगलपर भ्रमरक शोभाक पराजयक चित्र सर्वत्र शृंगार प्रदर्शित अछि। राजा कुश आ रानी सभक सरयूविहारक वर्णन वेशी उत्कट अछि। अग्निवर्णक केलि-वर्णनमे तऽ सभटा सीमा वा वर्जना ध्वस्त भए गेल अछि। ओ नर्तकी, दासी, स्त्री, सेवक सभक स्त्री संग सम्भोग करैत छथि। रघुवंशममे एहन केलिक वर्णनक दुइ गोट उदाहरण लेखक दैत छथि—

निर्दय रतिश्रमसँ अलसायल स्त्री अपन वृहत् पयोधरसँ राजाक छातीक चानन पोछैत एना सूति रहैत छथि जेना सम्भोगक कण्ठसूत्र आसनमे लीन हो।

तहिना ग्रीष्मकालमे स्तनपर चानन लेपि मोतीक माला पहीरि नितम्बपर मणिजटित करधनीक आभूषण सज्जित ओ रमणी सभ राजाकेँ प्रसन्न कए दैत छलीह (21/45)।

सम्भव रहितो महाकवि सीता रामक केलि वर्णन कए सकैत छलाह मुदा मैथिलत्वक कारणे सीताक प्रति विशेष अनुराग आ आदर भावसँ शृंगारकेँ गरिमामय आवरण देने रहलाह।

सीता-राम रमणक गरिमामय चित्रण करैत महाकवि लिखैत छथि समयपर सभ राज काज निपटा राम सीता संग रमण करैत छलाह। ई ओहिना लगैत अछि जेना स्वयं राज्यलक्ष्मी रामक संग रमणक उद्देश्ये सीताक रूप धारण कैने होथि। ओ रमण हेतु ओहन भवनक चयन करैत सुखक अनुभव करैत छथि जाहिमे वनवास सम्बंधित चित्र टाँगल रहैत अछि। ओहिना सीता गर्भिणी कालमे कृशाङ्गयष्टिं वर्णान्तराक्रान्तपयोधराग्राम होइत छथि जे पूर्णत: स्वाभाविक वर्णन अछि। एहिमे गर्भक लक्षणक संकेत मात्र अछि। मात्र दूइ गोट श्लोकमे सीताक

केलि सम्बंधित वर्णन जाहिमे एकमे राज्यलक्ष्मी आ दोसरमे दण्डकारण्यक स्मृति चित्रक परिकल्पनासँ महाकविक उद्देश्यक अनुभव कयल जा सकैछ।

जँ महाकवि मैथिल नहि रहितथि तऽ राम-सीताक केलि-वर्णनमे मर्यादाक सीमोल्लंघन अवश्यंभावी छल। सीता माताक प्रति सभ मैथिलक हृदयमे आदर आ स्नेहक भाव भरले रहल अछि जे अद्यावधि अक्षुण्ण अछि। हुनका माए, धीया, अग्रजा अनुभव करैत गौरवान्वित होइत छथि। लेखक एहि विषयक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करैत अपन विद्वत्ताक संगहि मिथिला-मैथिली-सीताक प्रति अपूर्व भावक दिग्दर्शन करबैत महाकविक मैथिलत्वक प्रति ठोस आधार प्रस्तुत करैत छथि। अपन माए, बहिन आ धीआक श्रृंगार आ केलिक अश्लील वर्णन केओ केना कए सकैछ। महाकवि तैं अपन मर्यादाक सीमामे रहबाक प्रति पूर्ण साकांक्ष रहैत छथि जे हुनका मैथिल होएब सिद्ध करैत अछि। लेखको सीताक उच्च आदर्श चरित्रक विभिन्न उदाहरण दए अपन मैथिलत्व आ मिथिलाक धीआक प्रति अपन श्रद्धा सुमन अर्पित करबामे नहि चुकैत छथि। विषय विस्तारक भयसँ सुधी पाठककेँ मूल पोथी पढ़ि आनन्द उठेबाक विनम्र निवेदन करैत छी।

हँ, एक बात द्रष्टव्य जे सीताक शुचिताक परीक्षा लेलाक बादो मात्र लोकापवादसँ बचबाक भयसँ सीताक गर्भावस्थामे छलपूर्वक परित्याग आ शम्बूक वधक पक्षमे भक्तजन कतबो लच्छेदार भाषा आ तर्क प्रस्तुत कए रामक महिमा मंडन करथु मुदा ई दुनू निर्णय रामक कुल, चरित्र आ न्याय-निर्णयक सामर्थ्यपर प्रश्नचिन्ह तऽ लगबिते अछि।

अपन धीआपर एहन अत्याचार आ धीआक वेदनाक प्रति सम्वेदनशील आ आक्रोशित भेनाइ सहजहि प्रतीत होइत अछि। महाकविक रचनामे से संवेदनशीलता आ आक्रोश हुनक मैथिलत्वपर मोहर मारि दैत अछि।

दोसर जे रघुवंशममे जतेक रानीक वर्णन अछि ताहिसँ पृथक आ आदर्श चरित्र सीताक दर्शाओल गेल अछि। सीताक चरित्र-चित्रणमे मानवीय गुणक श्रेष्ठतम छविक दिग्दर्शन करा महाकवि अपन मैथिलत्वक बोध करा दैत छथि।

लेखक लिखैत छथि जे सीताक परित्याग प्रसंगमे महाकवि बिना अपन मैथिलत्व नुकौने महर्षि वाल्मीकिक संग ठाढ़ भए सीताक विलाप, क्षणिक निराशा आ एहि अन्यायपूर्ण कठोर निर्णयक प्रति आक्रोशक अभिव्यक्ति सीताक मुहेँ करबैत छथि जखन कि तुलसीदासो एहि घटनासँ अपन लेखनीकेँ बचौलनि अछि। रामक एहि अनुचित व्यवहारपर आदिकविक आक्रोश बहुत छोट चीज नहि अछि

तऽ मैथिलत्व भावनान्तर्गत महाकविक आक्रोश सहज आ स्वाभाविक अछि। ओहि निर्जन सघन वनमे हताशाक उदधिमे डुबैत सीताक विलापक बीच महर्षि वाल्मीकिक आगमन आ पुत्रीक रूपमे सम्बोधन करैत ओ कहैत छथि जे सीताक यशस्वी ससुर हुनक मित्र, सीताक पिता अपन ज्ञानोपदेशसँ भवसागर पार करा दैत छथि, स्वयं अहाँ पतिव्रता नारि सभमे श्रेष्ठ छी। तखन अहाँ (सीता)पर अनुकम्पा नहि करबाक एहन कोनो कारण शेष नहि रहि जाइत अछि। ई कहैत वाल्मीकि सीताकेँ पुत्री कहि सम्बोधित करैत छथि। विदित हो जे एतय महाकवि आदिकविक मुहेँ सीताकेँ पतिव्रता नारि सभमे श्रेष्ठ सम्बोधित करा सीताक प्रति अपन मात्सर्य प्रकट करबामे कोनो संकोच नहि करैत छथि।

रावणक संहार आ सीताक विमुक्तिक पश्चात् अग्निपरीक्षा प्रसंगमे विभाजित विचारमे भक्त कवि, लेखक विचारक तर्कान्तर्गत मायाक सीताक परिकल्पना आ हुनक अग्निप्रवेश आ लंका-विजयक पश्चात् मायाक सीताक अग्निप्रवेश आ वास्तविक सीताक निकसब प्रसंगकेँ एक नाटक कहि रामक चरित्रक विशालताक निमित्त उचित भए सकैत अछि मुदा वैदेही चरित्रक उत्कर्ष हुनक सतीत्वसँ होइछ। महाकवि अग्निपरीक्षापर बिना कोनो नाटक कएने 'जातवेदोविशुद्धां प्रगृह्य प्रियां' लिखि सभकेँ पुष्पक विमानसँ अयोध्या पठा दैत छथि। राम काव्यपरम्परामे रामपर क्रोधक प्रकटीकरण विरल अछि।

तहिना सीताक पाताल प्रवेशपर राम काव्यपरम्परामे मतैक्य नहि अछि। वाल्मीकि रामायणक उत्तर रामायण भागकेँ बहुत विद्वान प्रक्षिप्त मानैत छथि मुदा आम भारतीय एहि प्रसंगककेँ सत्य मानैत अछि। महाभारतक रामकथामे सीताक निर्वासन प्रसंग नहि अछि। आदिकवि वाल्मीकि (रामायण), महाकवि कालिदास (रघुवंशम्), विमल सूरि (पउम चरिय), रविषेण (पद्मचरित), सोमदेव (कथासरितसागर), हरिभद्रसूरि (उपदेश पद), भद्रेश्वर (कहावली)आदि एहि प्रसंगक वर्णन कयने छथि। एकरा अतिरिक्त हिन्देशिया, जावा, मलेशिया, थाईलैंड, कम्बोडिया आ वर्माक विद्वानक द्वारा एहि प्रसंगक वर्णन कयल गेल अछि जेकर नामक उल्लेख लेखक करैत छथि।

महाभारतक रामकथामे सीता निर्वासन प्रसंग नहि अछि। आदिकवि वाल्मीकि, महाकवि कालिदास, विमलसूरि (पउम चरिय), रविषेण (पद्मचरित), सोमदेव (कथा सरित्सागर), हरिभद्रसूरि (उपदेशपद)भद्रेश्वर (कहावली)आदि एहि प्रसंगक वर्णन कयने छथि। हिन्देशियाक सेरीराम, जाबाक सेरतकण्ड, मलेशियाक हिकायत महाराज रावण, थाइलैंडक रामकिएन, कम्बोडियाक रामकेत्ति वर्माक

रामवत्थुमे सेहो ई प्रसंग आएल अछि। असमी आ बांग्ला भाषाक रामायणमे ई प्रसंग आर गंभीरतासँ वर्णित अछि।

सीताक अग्निप्रवेश आ लवकुश कांडक वर्णन कविवर चन्दा झाक मिथिला रामायण, मुंशी रघुनंदन दासक वीर बालक, बैद्यनाथ लाल दासक सीतायण, आध्यात्म रामायणक आधारपर रचित सुप्रसिद्ध पुराणवेत्ता अन्धराठाढ़ीक गौरव पंडित कालीकान्त झाक हनुमान चरितमे ई प्रसंग प्रमुखतासँ अभरल अछि। राधेश्याम रामायणमे सीता परित्याग आ पाताल प्रवेशक अत्यंत रमणीय वर्णन अछि। लेखक राधेश्याम रामायणक अनेक पद्यक उदाहरण देलनि अछि।

ओ रामक प्रति मिथिलाक लोकक आक्रोश छल जे राम मिथिलामे पूजित नहि छलाह। एतय 17हम-18हम शताब्दीक (सीतायण-संत रामप्रियाशरण) महात्मा सूर किशोर आ महात्मा चतुर्भुज गिरि द्वारा जनकपुरक अधिमान्यतासँ नव स्फूर्तिक संचार भेल। पश्चात् कवीश्वर चन्दा झाक मिथिला रामायण एहि बंद द्वारकेँ फोललक ओहि मार्गकेँ लालदासक रामायण, मुंशी रघुनंदन दासक वीर बालक, पं.सीताराम झाक अम्बचरित, बैद्यनाथ मल्लिक विभूक सीतायण, आचार्य रामलोचन शरणक मैथिली श्रीरामचरितमानस, खड्ग बल्लभ दास स्वजनक सीताशील, हीरालाल झा हेमक सीताचरितामृत, भुवनेश्वर प्रसाद अध्यापकक बालरामायण, काञ्चीनाथ झा किरणक पराशर, पं. जीवनाथ झाक रावणवध, पं. कपिलेश्वर मिश्र वैयाकरणक सीतादाइ, पं. कालीकान्त झाक हनुमान चरित, राजेन्द्र लाल दासक सीताक प्रस्थान प्रभृति पोथी सभ रामक पूजनक मार्ग प्रशस्त कयलक।

बहुआयामी प्रतिभायुक्त यशस्वी लेखक उच्चैठ भगवतीक कृष्ण पाथरक चतुर्भुजी दुर्गाक खंडित विग्रहक चर्चा करैत कहैत छथि जे विदेशी विद्वान सभसँ प्रभावित किछु गोटे एहि विग्रहकेँ कर्णाटकालीन प्रतिमा कहैत छथि। लेखक एकरा मानबासँ इंकार करैत एकरा गांधार शिल्पक प्रतिमा मानैत छथि। एहि विग्रहपर लेखकक विस्तृत अनुशीलन श्लाघनीय अछि। एहि प्रतिमा आ मन्दिर विषयक किंवदंती वा आस्था यैह अछि जे राम-लक्ष्मण विश्वामित्रक संग जनकपुर जैबाक क्रममे एतय दर्शन कएने रहथि। पाण्डव सभ सेहो एहि मन्दिरमे दर्शन कएने छलाह।

पंडित दिगम्बर झा मिथिलामे प्रचलित जनश्रुति पुराण आधारित किछु रमणीय प्रसंगक उल्लेख कालिदासक ऐतिह्य आ मैथिलत्वपर परोक्ष रूपेण अवश्य प्रकाश दैत अछि। विभिन्न बौद्ध साहित्यक चर्चा करैत विद्वान लेखक एहि मन्दिरक आ कालिदाससँ सम्बंधित अनुश्रुतिक प्राचीनताकेँ स्वीकार करैत छथि। उज्जैनक दू

मन्दिर क्रमशः हरसिद्धि मंदिर आ गढ़कालिका मन्दिरक विशद् वर्णन आ ओकर पौराणिकता आ कालिदासक जन्मभूमिपर विमर्श करैत लेखक कहैत छथि जे कालिदाससँ सम्बन्धित अनुश्रुति जे उच्चैठ भगवतीक कृपासँ मूर्ख कलुआ रातिये भरिमे विश्व प्रसिद्ध महाकवि भए गेल। एहि तरहक कालिदास समबन्धी कोनो अनुश्रुति उज्जैनक दुहू मन्दिरसँ जुड़ल/प्रचलित नहि अछि। एहि मन्दिरक एक विशेषता अवश्य अछि जे एहि मन्दिरक पुजेगरी मैथिले होइत एलाह अछि। एहिसँ ई अनुमान लगौल जा सकैछ जे महाकवि मिथिलासँ आनि पुजेगरी नियुक्त करौने होथि जे पश्चात्परम्परा बनि गेल हो। हमरा जनैत लेखकक अनुमानक आधार पशुपतिनाथ मंदिर, काठमांडूमे अदौकालसँ केरलक नम्बूदरी पुजेगरीपरम्परा कैँ निरखि बल भेटैछ। एहिसँ महाकविक मैथिलत्व सम्पुष्ट होइत अछि।

आब लेखक अपन पोथीमे सभसँ पृथक आ चमत्कारी अनुशीलन लए उपस्थित दृष्टिगोचर होइत छथि। प्रतीत होइछ जे विद्वज्जनक महाकविक जीवनसँ सम्बंधित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य दृष्टि ओझल भए गेल। तैं लेखकक ई सद्प्रयास अपूर्व, अलौकिक आ अचम्भित करबामे पूर्ण सक्षम अछि।

लेखक ओहि घटनाक विस्तृत वर्णन महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा, कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका, महाकवि कालिदास आ कुमार दास:अनंत पथ केर सहयात्री, श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा शीर्षक अन्तर्गत कुल 109पष्ठक संग निष्कर्ष निकाललनि अछि (मूल पोथी द्रष्टव्य)

अन्तमे बहुमोनहरू, बहुमंचित आ चर्चित नाटक ‘महाकविक महाप्रयाण’ लिखि ओहि 109पृष्ठक सार तत्वक निस्तारण कयलनि अछि।

लेखक संस्कृत नाटकक परम्परामे एहि नाटकक आरम्भ सूत्रधार आ नटी संवादसँ करैत छथि। शनैःशनैः नाट्यशास्त्रक सभ विधाकैँ समेटि नाटक आगू बढ़ैत अछि। राजकुमारी विद्योत्तमाक प्रण जे शास्त्रार्थमे जे हुनका पराजित करताह सएह हुनका सिऊंथमे सिनूर भरताह। परम विदुषी विद्योत्तमासँ बियाहक इच्छुक सुप्रसिद्ध पंडित वररुचिक शिष्य राजकुमारीसँ पराजित होइत छथि। पराजयक दंशसँ व्यथित, इर्ष्या आ द्वेषाग्नि-दग्धित पंडित छलपूर्वक महामूर्ख कलुआक बियाह विद्योतमासँ करा दैत अछि। मुदा कोबर घरमे कालिदासक भेद जखन फुजैत अछि तऽ विद्योत्तमा कलुआकैँ दुर्गतिक तऽर कए दैत छथिन। अपमानक गरल पान कए आ क्रोधे थर-थर कँपैत कहैत छथि जे यावत् विद्या प्राप्त कए विद्योत्तमाक घमंड चूरि नहि देब तावत् अपन मुह नहि देखाएब।

आ जाहि क्षण घमंड तोड़ब ताहि क्षण ओकरा छोड़ि देब। एहि प्रणक संग ओ रातिएमे कोबरा घरसँ बाहर भए जाइत छथि। कालिदाससँ सम्बंधित अनुश्रुतिक ओ अंश जे उच्चैठ भगवतीक आशीषसँ आ परामर्शसँ विद्वत्ता परखि महाकवि रातिये भरिमे जतेक पोथीक पन्ना उनटलनि से हुनका कण्ठाग्र होइत गेलनि आ ओ मूर्खसँ विश्वविश्रुत भऽ गेलाह। एहिसँ पृथक नाटककार उच्चैठ भगवतीक आशीष आपरामर्शसँ कालिदास विद्याश्रममे जा विद्याध्ययन करैत छथि जतय हुनका श्रीलंकाक राजकुमारसँ प्रगाढ़ मित्रता होइत छनि। विद्याक उच्चतम शिखरपर पहुँचि ओ कुमारदासक विचार मानि विद्योत्तमासँ भेंट करै छथि जतय राजकुमारी कालिदासक विद्वत्ता परखि विद्योत्तमा अत्यन्त लज्जित होइत छथि। पश्चात् राजकुमार कुमार धातुसेनाक देल वचनक निर्वहन हेतु श्रीलंका जाइत छथि जतय लंकाक एक नगर माटरामे राजनर्तकी कामसेना हिनका माहुर खुआ मारि दैत छनि। पश्चात् सत्य प्रकाशित होइत राजकुमार कुमार धातुसेना जे आब श्रीलंकाक राजा छथि अपन मित्रक मृत्युसँ सन्तप्त भए अपन प्राण त्यागि दैत छथि। हुनक पाँचू रानी अपन पतिक संग सती भए जाइत छथि।

एहि विषय वस्तुकेँ नाटकक रूपमे बहुत मनोरम आ चित्ताकर्षक स्वरूप देबामे नाटककार पूर्णत: सफल भेलाह अछि।

माटराक कथा कपोल-कल्पित नहि अछि। लेखक अपन गहन शोधक बलेँ एकरा पूर्ण तथ्यात्मक सिद्ध करबामे सफल भेलाह अछि।

नाटकमे शब्दक चयन, गंभीर साहित्यक चिंतन, रसक प्रवाह, संवादक प्रेषण आ भाषाक प्रांजलताक गुम्फन एहन मनोरम अछि जे एकहि बैसारमे आद्योपांत पढ़बा लेल विवश करैत अछि आ तहिना मंचित नाटक देखबा काल सम्पूर्ण काया पथरा जाइत हैत।

कालिदास आ श्रीलंकाक राजा कुमारदासक (अपर नाम धातुसेना, शासन कालखंड 513-522 ई.) संगहि माटरामे भेल महाप्रयाणक अनुश्रुति श्रीलंकामे ओहिना प्रचलित अछि जेना मिथिलामे कालिदास द्वारा जाहि ठाढ़िपर बैसल रहथि ओकरे काटब, छलपूर्वक राजकुमारीसँ बियाह, तिरस्कार आ उच्चैठ भगवतीक आशीषसँ अज्ञसँ विज्ञ बनबाक अनुश्रुति। लेखक लिखैत छथि जे ई अनुश्रुतिक अभिलिखित प्रमाण तिब्बती बौद्ध धर्मयात्री धर्मस्वामिन् (1197-1264 ई.)क मिथिला आ भारत यात्रा (1234-36 ई.)क उपासक चोस-दार कृत जीवनीमे उपलब्ध अछि। श्री लंकाक इतिहास आ साहित्यमे राजा कुमारदासक राजनर्तकी द्वारा पारितोषक लोभमे माहुर

खुआ महाकविक हत्या, आत्मग्लानि आ मित्रक हत्यासँ व्यथित राजा कुमार धातुसेना आ हुनक 5 रानी सहित ओहि धधकैत राजकीय चितामे प्रवेश प्राय: मान्य अछि।

माटरामे महाप्रयाण स्थलपर रोपल सात बोधि बृक्ष, दुनू महाकविक समाधिस्थली, एतहि भगवान बुद्धक मन्दिर, माटरामे कालिदास मार्ग (नीलवाला बाइपासक आर्यतिलक मवाथा सड़क केर सोझासँ बहराइत मार्ग जे आगू रहुला रोडमे मिलैत अछि)केर अवस्थिति, कालिदास-कुमारदास विषयक अनुश्रुति आदि एहि घटनाकेँ सत्यापित करैत अछि।

सिंहल ग्रंथ-निकाय संग्रह, सद्धर्म रत्नाकर सहित दर्जनो ग्रंथक साक्ष्य प्रस्तुत करैत लेखक कहैत छथि जे उल्लेख्य ग्रंथक रचनाकार एहि घटनाकेँ सत्य मानैत छथि।

प्रस्तुत पुस्तकमे लेखक अद्भुत विद्वत्ताक परिचय देलनि अछि। कालिदास सम्बन्धी विद्वज्जनक कालिदासक मैथिलत्वपर स्थापित दृष्टिकोणसँ लेखकक दृष्टिकोण फराक लक्षित भेल अछि। सीताक चरित्र, मेघदूतममे सद्य:सीरोत्कषणसरभि, धनु:खण्डमाखण्डलस्य आदि प्रसंग, श्रीलंकाक ग्रंथपरम्परा, जनश्रुति, इतिहासक अनुशीलन लेखककेँ एकात ठाढ़ करैत अछि।

नाटकमे महाकविक मैथिलत्वकेँ वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भाषा विज्ञानक आधारपर सिद्ध कएल गेल अछि।

कालिदास आ कुमारदासक अनुपम संवाद सुधी पाठककेँ एकाग्रता प्रदान करैत अछि। धर्म आ राष्ट्र विषयक अपूर्व संवाद मोहित करैत अछि। लेखक द्वारा महाकविक सृजनशीलताक सौन्दर्य देखएबाक प्रयास अत्यंत मनोरम अछि। समुद्रक कात सूर्यास्तक अभिनव दृश्यक अंकन, श्रीलंकाक समस्त स्वर्णभंडारकेँ सेतुबंध कहब अद्भुत अछि। बर्षामे आ रक्त समुद्रमे पड़ैत बुन्नी ताहिसँ उठैत लघूर्मि कलशक कल्पना नाटककेँ अद्वितीय बनबैत अछि।

अन्तत: लेखकक एहि अनुपम पोथीक माध्यमे माँ मैथिलीक अलौकिक सेवाक समक्ष समग्र मिथिला नतशिर होएत ताहिमे कोनो सन्देह नहि।

पं. विनयानन्द झा

जन्मतिथि : *15 फरवरी 1952, मधुबनी।*

सम्पर्क : *+91 88773 74666*

पं. विनयानन्द झा प्रसिद्ध प्राच्यविद् आ साहित्यकार छथि। सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास विशेष रूपसँ मैथिल संस्कृतिपर हिनक अनेक महत्वपूर्ण कार्यसभ अछि। एहि क्षेत्रमे हिनक किछु महत्त्वपूर्ण पुस्तक सभक नाम अछि— 'दार्शनिक शिक्षा का पारंपरिक केन्द्र मिथिला', 'मिथिला की सारस्वत सुषमा', 'मिथिला के सामाजिक इतिहास में पंजीकरण का प्रभाव' एवं 'महामहोपाध्याय सचल मिश्र'। साहित्यक क्षेत्रमे विनयानन्दजी मैथिलीमे लेखन करैत छथि आ शोध क्षेत्रमे हिन्दीमे। मैथिलीमे प्रकाशित हिनक कवितासंग्रहक नाम अछि— 'विनयलता अनुराग'। संस्कृत केर अनेक काव्य सभक मैथिली एवं हिन्दीमे अनुवाद कयने छथि यथा गोकुलनाथ रचित शिवस्तुति केर मैथिली अनुवाद 'नीलाक्षी', जयदेव विरचित गीतगोविन्दक मैथिली पद्यमय रूपांतरण 'विनय नयन नीलिमा विलास', पं. मोहन मिश्र प्रणीत 'राधानयनद्विशती'क हिन्दी अनुवाद 'विनयावलोकन'। मैथिलीमे हिनक दूटा ऐतिहासिक उपन्यास शीघ्र प्रकाश्य अछि। ई दुनू उपन्यास अछि ' सरकार तिरहुत' आ 'किलाघाट'। मधुबनी जिलाक इतिहासपर सेहो हिनक एक ग्रंथ "मधुबनी : वर्तमान और अतीत" शीघ्र प्रकाश्य अछि।

मैथिल संस्कृतिक ध्वजवाहक
डॉ. रंगनाथ दिवाकरक ग्रंथ 'महाकविक महाप्रयाण'

डॉ. रंगनाथ दिवाकर हिन्दी व मैथिलीक प्रशस्त लेखक छथि। आलेखनमे हिनक अभिरूचि साहित्य आ इतिहास विशेषत: मिथिलाक इतिहास क्षेत्रमे रहल अछि। बिहार प्रशासनिक सेवाक यशस्वी पदाधिकारी रहल छथि अत: प्रशासनिक उत्तरदायित्व सभक निर्वहन करितो आलेखन विशेषत: शोधात्मक आलेखनमे प्रवृत्त होयब हिनक विरल एवं विलक्षण व्यक्तित्वकेँ रेखांकित करैत अछि। एहन आलेख सभक लेल पुरस्कृत सेहो भेल छथि। हिनक पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' केर चर्चा करब।

'महाकविक महाप्रयाण' मैथिलीमे लिखित एक नाटक थिक। मिथिलामे अदौ कालसँ प्रचलित अछि जे महाकवि कालिदास मिथिलाक मधुबनीक उच्चैठ प्रक्षेत्रक निवासी छलाह। शुरूमे ओ शिक्षित नहि छलाह किन्तु उच्चैठ भगवतीक कृपासँ एकाएक महाज्ञानी भेलाह। बादमे वृत्तिक क्रममे उज्जैन गेलाह आ अपन वैदुष्य प्रदर्शन आ संस्कृत वाङ्मयमे अनेक रचना करैत अमर भेलाह। यद्यपि कालिदासक मैथिलत्वपर बाह्य विद्वान सब अधिक ध्यान नहि देलनि मुदा समय-समयपर अनेक मैथिल विद्वान एकर विवेचन कयलनि। एहि क्रममे डॉ. रंगनाथ दिवाकरक 'महाकविक महाप्रयाण' ग्रंथ अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। डॉ. दिवाकर विभिन्न साक्ष्य सभक आलोकमे अत्यन्त विद्वत्तापूर्ण ढंगसँ महाकवि कालिदासक मैथिलत्व सिद्ध कयने छथि। ओ विभिन्न विद्वान द्वारा कालिदासक समयपर देल गेल मन्तव्यपर विस्तारसँ विचार कयलाक बाद अपन महत्वपूर्ण टिप्पणी देलनि अछि। महाकवि कालिदासक महाप्रयाण श्रीलंकामे होयब एवं श्रीलंकाक राजा

कुमारदास संग हुनक संबंध आदिपर शोधात्मक विवेचन विद्वत्तापर्ण अछि। यथार्थमे ई ग्रंथ कालिदासक जीवनीपर आधारित मैथिली नाटक अछि जकर पूर्व पीठिका स्वरूप लेखक कालिदासक मैथिलत्व निरूपित कयने छथि जे उच्च कोटिक शोधात्मक ग्रंथ स्वरूप अछि। कालिदास संबंधी जनश्रुति आ अपन बोधकेँ ध्यानमे राखि दिवाकरजी एहि नाटकक रचना कयलनि।

एहि पोथीक पूर्वपीठिका स्वरूप आलेखनकेँ मुख्यत: तीन परिच्छेदमे विभक्त कयल जा सकैछ 1. महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व 2. इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व एवं 3. निष्कर्ष।

प्रथम दू परिच्छेद कएटा अनुच्छेदमे विभक्त अछि। एकर प्रथम अनुच्छेदमे महाकविक समय आ जन्मस्थान संबंधी विवरण अछि। एहिमे लेखक कालिदासक जन्मतिथिक संबंधमे पूर्व केर विद्वान सभक जे मत रहल अछि ओहिपर विस्तारसँ चर्चा कयलनि। ओ यशोधर्मन् केर समय कलिदासक अवस्थितिक सम्बन्धमे अपन सहमति दैत छथि। संभवत: डॉ. दिवाकरक मूल ध्येय कालिदासक काल निर्धारण नहि छल तेँ विभिन्न विद्वानक मत केर परिचय मात्र कराओल गेल अछि। एहि अनुच्छेदमे डॉ. दिवाकर कालिदासक जन्मस्थानक संबंधमे जे विभिन्न विद्वान सभक मत अछि ओकर वर्णन कयने छथि। शेष अनुच्छेदमे कालिदासकेँ मैथिल होयबाक अपन मत केर प्रतिपादन कयने छथि। एहि क्रममे प्रथम अनुच्छेदक द्वितीय अनुच्छेदमे दिवाकरजी कालिदासक विभिन्न रचना सभक सूक्ष्म अध्ययन कऽ ओहिमेसँ उद्धरण दैत विभिन्न विद्वान द्वारा कालिदासक अन्य ठाम उत्पत्ति संबंधी मत सभकेँ निरस्त करैत हुनक मैथिलत्वक बात तर्कपूर्ण ढंगसँ कहने छथि।

दोसर परिच्छेदमे इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ कोना कालिदास मैथिल सिद्ध होइत छथि एहिपर यथेष्ट प्रकाश देल गेल अछि। एहि क्रममे कालिदास द्वारा सीताक जे चरित्र-चित्रण रघुवंशमे भेल अछि ओहि आधारपर कालिदासक मैथिलत्व प्रतिपादित भेल अछि। मिथिलामे मधुबनी जिलाक उच्चैठ गामक कालिदास मानल जाइत छथि। डॉ. दिवाकर एहि मतक आधारपर उच्चैठकेँ जन्मस्थान आ ज्ञानप्राप्तिक स्थान आ उज्जैनकेँ कर्मभूमि मानने छथि।

दोसर अनुच्छेदमे उच्चैठ आ उज्जैनक वर्णन एहि परिप्रेक्ष्यमे कयल गेल अछि। तेसर अनुच्छेदमे कालिदासक श्रीलंका यात्राक विवरण आ चारिममे ओतय केर राजा कुमारदासक वर्णन कालिदासक संबंधक सन्दर्भमे कयल गेल अछि। पाँचम अनुच्छेदमे कालिदास आ कुमारदासक मित्रतापर प्रकाश देल गेल अछि एवं छठममे श्रीलंकाक माटराकेँ कालिदास एवं कुमारदासक महाप्रयाण स्थलक रूपमे वर्णित अछि। तेसर परिच्छेद निष्कर्ष अछि। एहिमे अपन विचार सभक सार प्रस्तुत करैत दिवाकरजी कहैत छथि— 'राजशेखर तीन एहन कालिदासक चर्च करैत छथि जाहिमेसँ किनको कोइ कखनो शृंगार आ लालित्यमे नहि जीति सकल-शृंगारे ललितोद्गारे कालिदासत्रयी किमु। मुदा महाकविक लोकप्रियता आ हुनक रचना सभक सरसता-सूक्ष्मतासँ तीन की 53 कालिदास भऽ जाथि, तखनो कोनो आश्चर्य नहि।' (पृष्ठ 197)।

डॉ. दिवाकर आगू कहैत छथि जे ईसापूर्वक विक्रमादित्य कालीन कालिदास, गुप्तकालीन कालिदास, राजा भोजकालीन कालिदास, मूकशंकर शिष्य कोटिजित् कालिदास, नलोदयकार कालिदास, चम्पू भागवतकार नव कालिदास, लम्बोदर प्रहसनकार कालिदास, शंकर दिग्विजयकार माधव कालिदास, पार्श्वाभ्युदयकार जिनसेन कालिदास प्रभृति अनेक कालिदास सोझाँ अबैत छथि। जेना कालिदास नाम कोनो पारस पाथर हो जकर स्पर्शसँ केहनो कमजोर कवि कंचन-कंचन भऽ जाइत हो।

एहि प्रकारे 25सँ बेसी अन्य ग्रंथ सभक नाम लैत दिवाकरजी कहैत छथि जे एहि सभक रचयिता रूपमे कोनो ने कोनो कालिदासक नाम अछि मुदा महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि जे एहि सभमेसँ मैथिल कालिदास के छथि? यद्यपि प्रश्न जटिल अछि आ उत्तरो स्पष्ट नहि अछि तथापि मेघदूत, रघुवंश, विक्रमोर्वशीय आदिक रचयिता रूपमे प्रसिद्ध कालिदास निर्विवाद रूपसँ मैथिल छलाह जे आजीविका लेल मालवा क्षेत्रक दशपुर-उज्जैनकेँ अपन कर्मक्षेत्र बनओलनि। अल्प समयमे सम्पूर्ण भारतवर्षकेँ आयत्त करयवला सम्राट् यशोधर्मन विक्रमादित्यक राजसभाक एहि स्यमन्तक मणिप्रभासँ सम्पूर्ण संसार आलोकित भेल। मित्र सिंहलनरेश कुमार धातुसेना वा कुमारदासक आह्वानपर महाकवि श्रीलंका गेल छलाह जतय नर्तकी द्वारा लोभवश माहुर खुआ हुनक हत्या कयल गेल। राजा कुमारदास हिनक चितामे

प्रवेश कऽ मित्रताक एहन मोल चुका देलनि जे कालक कपालपर अमिट शिलालेख बनि अंकित अछि।

एकर बाद डॉ. रंगनाथ दिवाकर रचित 'महाकविक महाप्रयाण' नामक मैथिली नाटक सात दृश्यक अछि। एकर कथानक कालिदास संबंधी विभिन्न अनुश्रुति आ साहित्यिक स्रोत सभक विश्लेषणपर आधारित अछि आ एहिमे कालिदासकेँ मैथिल रूपमे देखाओल गेल अछि।

एक स्थानीय राजाक पुत्री राजकुमारी विद्योत्तमा विदुषी छलीह जे अपन विवाहक लेल प्रतिज्ञा कयने छलीह जे शास्त्रार्थमे पराजित केनिहारक संग विवाह करब। विवाहक इच्छुक विद्वान अबैत गेलाह आ पराजित होइत गेलाह। प्रसिद्ध विद्वान वररूचि अपन एक शिष्यकेँ राजकुमारीक समक्ष शास्त्रार्थ लेल प्रस्तुत कयलनि। विद्योत्तमासँ पराजित भेलाक बाद वररूचि आ हुनक शिष्य क्षोभवश प्रतिशोधमे कोनो महामूर्खसँ राजकुमारीक वियाह करएबाक निश्चय कयलनि।

ओ सब कलुआ नामक युवककेँ एहि कारणेँ उपयुक्त मानलनि जे जाहि ठारिपर ओ बैसल छल ओकरे काटैत छल। बातचीतमे सेहो ओ मूर्खे लागल। वररूचि ओकरा प्रलोभन दैत समझा-बुझा कण्व ऋषिक महाज्ञानी शिष्यक रूपमे राजकुमारीक समक्ष शास्त्रार्थक लेल प्रस्तुत कयलनि। वररूचि राजकुमारीसँ कहलनि जे अखन महाज्ञानी पंडित मौनव्रतमे छथि तेँ संकेतसँ शास्त्रार्थ होयत। सांकेतिक शास्त्रार्थमे महामूर्ख कलुआ जे संकेत करथि ओकर विद्वत्तापूर्ण आ शास्त्रोचित व्याख्यासँ वररूचि राजकुमारीकेँ प्रभावित कयलनि। विवाहक बाद जखन दुनूमे प्रथम संभाषण भेल तखन भेद खुजलापर राजकुमारी कलुआकेँ बहुत धिक्कारलनि। एहिपर कलुआ ओही राति भागि गेल।

एकर बाद जीविका लेल कलुआ उच्चैठ अवस्थित विद्यापीठमे रसोइयाक चाकरी शुरू कयलक। एक राति घनघोर बरखाक कारणेँ लऽगक भगवती मन्दिरमे दीप जरबय केओ नहि जा सकल तखन कलुआकेँ पठा देल गेल। कलुआ द्वारा एहन दुर्गम समयमे साहस करैत मन्दिर आबि दीप जरओलक। भगवती वरदान देलनि। एकर बाद कालिदास कण्व ऋषिक आश्रममे शिक्षा प्राप्त कऽ अप्रतिम विद्वत्ता प्राप्त कयलनि।

कण्व आश्रममे हुनक मित्रता श्रीलंकाक राजकुमार कुमारदाससँ भेलनि। कुमारदास कालिदाससँ तीन वचन लेलनि जे कालिदास परित्यक्त पत्नीकेँ स्वीकार करथि, विक्रमादित्यक राजसभाक नवरत्न बनबाक आमंत्रण स्वीकार करथि आ भविष्यमे एक बेर कहियो श्रीलंका पधारि कृतार्थ करथि। कुमारदासक दुनू वचन पूर्ण कयलाक बाद कालिदास श्रीलंका गेलाह। ओतय राजनर्तकी ईर्ष्या आ लोभवश माहुर खुआ हत्या कऽ देलनि। दोसर दिन कुमारदास ई सब जानि विचलित होइत छथि आ कालिदासक अन्त्येष्टि करैत धधकैत चितामे कुदि प्राणोत्सर्ग करैत छथि। ई नाटक सरल एवं सरस भाषामे लिखित अछि। पूर्व पीठिकामे कालिदास विषयक अनुसंधानात्मक विवरण डॉ. रंगनाथ दिवाकरक प्रतिभा आ विद्धत्ताक अप्रतिम रूप प्रस्तुत करैत अछि।

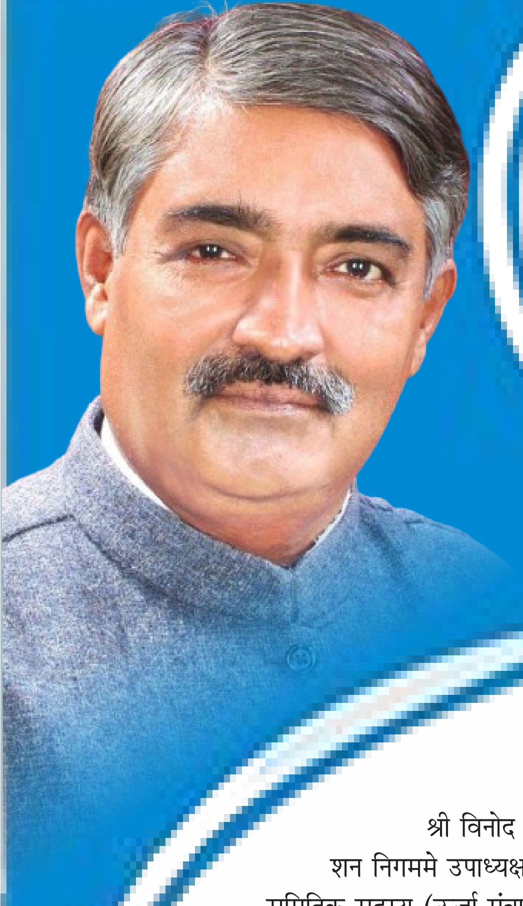

विनोद नारायण झा

जन्मतिथि : *28 फरवरी 1957, मधुबनी।*

सम्पर्क : *+91 94318 15798*

राजनीतिमे रहितो विनोद नारायण झाजी साहित्यिक-सांस्कृतिक-अध्ययनशील व्यक्तित्व छथि जे प्राय: राजनेता सभक लेल विरल अछि। अपन माटि-पानि, लोक-वेद, देस-कोस आ समाजक लेल अपन हृदयमे अनुपम मात्सर्य रखने छथि। बिहार सरकारमे लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभागक मान. मंत्री श्री विनोद नारायण झा बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक प्रकाशन निगममे उपाध्यक्ष, राज्य नियोजन समिति आ हिन्दी सलाहकार समितिक सदस्य (ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार); सचेतक, सत्तारूढ़ दल, बिहार विधानसभा आदि बहुत रास पदपर अपन कुशल कार्यशैलीक छाप छोड़ने छथि। अमेरिकन कॉसिल ऑफ यंग पॉलिटकल लीडर नामक संस्थाक आमंत्रणपर अमेरिकी राष्ट्रपतिक चुनावक अध्ययन एवं विश्लेषणक क्रममे अमेरिकाक एगारह राज्यक यात्रा कयने छथि। कम्युनिष्ट पार्टी ऑफ चाइनाक आमंत्रणपर चीन यात्राक अतिरिक्त फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, वेटिकन सिटी, वियतनाम, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, भूटान, थाईलैण्ड, नेपाल आदि देशक यात्रा कएने छथि। मैथिली साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिमे एक डेग आगू बढ़ि भाग लैत छथि। सम्प्रति वर्तमानमे बेनीपट्टी (मधुबनी)क लोकप्रिय विधायक छथि। विधायक रहितो साहित्य सर्जनामे मोन रमैत छनि। मिथिला-मैथिलीसँ सम्बंधित शोधपरक अनेक आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित भेल छनि। उच्चैठमे उच्चैठ-कालिदास महोत्सव केर शुरूआत करबामे हिनक महती भूमिका रहल अछि। साहित्यिक-सांस्कृतिक विचार-गोष्ठी सभमे लब्धप्रतिष्ठ वक्ता रूपमे भाग लैत छथि। सहज-सरल स्वभाव आ आमजनसँ आत्मीय जुड़ाव हिनक अनुपम वैशिष्ट्य अछि।

‘महाकविक महाप्रयाण’ : मिथिलाक एक गौरवग्रंथ

वर्ष 2022मे उच्चैठ-कालिदास राजकीय महोत्सवमे पूर्वसँ निर्धारित महाकवि कालिदास विषयक विद्वत् गोष्ठी चलि रहल छल। एहि गोष्ठीमे हमरो एक वक्ता रूपमे आमंत्रित कयल गेल रहए। प्रतिष्ठित विद्वान सभक बीच हम सेहो बैसल रही। महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर हम सेहो उपलब्ध सामग्री सभ पढ़ि तैयार रही। वक्ता लोकनि रहरहाँ ‘महाकविक महाप्रयाण’ पोथीक चर्चा करैत छलाह। एहि पोथीक चर्चासँ हमरा जेना छगुन्ता लागि गेल हो! महाकवि कालिदास विषयक हमर अपन तैयारी जेना झुझुआन भऽ गेल हो। हम दीप नारायणसँ ई पोथी लेलहुँ। जखन उनटा-पुनटाकैँ देखलहुँ तखन जेना हमरा चकचोन्ही लागि गेल हो। विश्वासे नहि होइत रहए जे मैथिलीयोमे एहन अजगुत दिव्य पोथी छपि सकैत छै। महाकविक कालिदासक मैथिलत्वपर एहन तर्कपूर्ण तथ्यक संकलन पूर्वमे नहि भेल छल। हमरा तऽ लगैए जे दिवाकरजी जाहि तरहेँ महाकवि कालिदासक विषयमे उत्कृष्ट शोध कयलनि, महाकविक मैथिलत्वकैँ जाहि तरहेँ स्थापित कयलनि, एहन काज जँ पहिने कयने रहितथि तखन मिथिलाक जे छिपल इतिहास छैक से बहुत पहिने उजागर भेल रहैत। दिवाकरजी एहि पोथीमे जे अपन प्रतिभाक असाधारण रूप देखेलनि अछि ओ वास्तवमे अत्यन्त उच्च स्तरक अछि। दिवाकरजी सन-सन लोक जे मिथिलाक दबल इतिहासपर काज करितथि तखन मिथिलाक जे पौराणिक गौरव अछि से बाहर आओरो जगजियार होइतै। ‘महाकविक महाप्रयाण’कैँ एक उत्कृष्ट पुस्तक कहल जा सकैछ।

‘महाकविक महाप्रयाण’ अद्‌भुत पुस्तक अछि। ई एकटा उत्कृष्ट शोधग्रंथ थिक। आबैवला कोनो पीढ़ीकैँ, कोनो शोध छात्रकैँ, कोनो सामान्य आदमीकैँ जिनका मिथिला-मैथिलीक विषयमे जानबाक उत्कंठा अछि, जिज्ञासा अछि वा जे

महाकवि कालिदासक विषयमे सांगोपांग जानय चाहैत छथि ओ सब एहि पोथीकेँ अवश्य पढ़थि। हमरा ई पुस्तक पढ़ि बड्ड नीक लागल। दिव्यज्ञान भेल। मोन गदगद भऽ गेल आ एकर अध्ययनक बाद महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर कोनो भाँगठ नहि रहल। हमर विश्वास एकदम दृढ़ भऽ गेल जे महाकवि कालिदास पक्का मैथिल छथि।

कालिदासपर बहुत रास ग्रंथ लिखल गेल। अनेक तरहसँ लोक लिखने छथि। महाकविक जन्मस्थान विषयमे उज्जैन, कश्मीर, बंगाल (मुर्शिदाबादक गढ़सिंगरू गाम), गढ़वालक देवगिरि आ रुद्रप्रयाग जिलाक कविल्ठा गाम, विदर्भ, विन्ध्य, मिथिला आदि क्षेत्रक दावा छैक। एहन दावा सभमे बहुत किछु किंवदन्ती सभक आधार छै। मात्र केसरक उल्लेख आ सूर्यर्पूजासँ कश्मीरक दावा मान्य नहि भऽ सकैछ। एहिना कालीक पूजा आ धानकेँ खाउर करबाक उल्लेखसँ बंगालक दावा प्रमाणित नहि भऽ सकैत अछि। रंगनाथजी एहि दावा सभक जे समीक्षा कयने छथि ओ अत्यन्त सारगर्भित आ विचारणीय अछि। ओ ई नहि कहैत छथि जे जे हम कहैत छी वैह सत्य अछि। ओ सब क्षेत्रक दावा केनिहार विद्वान सभक किनकर की मत अछि, सभकेँ सविस्तार उद्धृत करैत तर्कपूर्ण खंडन करैत छथि। ओ वैज्ञानिक रूपसँ महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर जे विचार कयलनि से अद्‌भुत छै। एहिसँ महाकविकेँ नीकसँ जानैमे पाठककेँ सुविधा होइत छै। अंततः सभ क्षेत्रक दावाकेँ तथ्यहीन प्रमाणित करैत ओ दृढ़तापूर्ण ई साबित कयलनि जे महाकवि कालिदासक जन्म मिथिलामे भेल। जीविकोपार्जन लेल पाटलिपुत्र आ मालवा क्षेत्रक उज्जैन गेलाह।

कालिदास अपन रचनामे अपन जन्म आ समयक विषयमे किछु नहि लिखलनि मुदा रंगनाथजी हुनक रचना सभमे सूक्ष्मतापूर्वक महाकविक मैथिलत्वक संकेत ताकि लेलनि। मातृभूमि मिथिलाक गौरव रूपमे यत्र-तत्र मत्स्य ध्वजाक फहराइत दृश्य, अनेक ठाम वैदेहीकेँ मैथिली आ मिथिलेश जनककेँ मैथिल सम्बोधन, सीताक प्रति अतिरिक्त अनुरागक प्रदर्शन, निजी ममतासँ भरल सीताक अद्‌भुत चरित्र चित्रण, सीता परित्यागपर यशस्वी रघुकुलपर पहिल प्रश्नचिह्न ठाढ़ करब आदि एहन असंख्य प्रसंग सभकेँ ताकि-हेरि जे दिवाकरजी प्रस्तुत कयने छथि ओकरा सभक स्पष्ट संकेत अछि जे महाकवि मैथिल छथि। सीता परित्यागपर अनेक उद्धरण दैत दिवाकरजी अपन पुस्तक 'महाकविक महाप्रयाण'क पृष्ठ 56पर स्पष्ट लिखैत छथि— 'एहि वर्णनमे महाकवि ओहि आम मैथिल पिता जकाँ सामने

अबैत छथि जिनकर सर्वगुण संपन्ना सुताकेँ अकारण पति द्वारा परित्याग कऽ देल गेल हो। हुनक भावना ओहिना अछि। एहि मर्मन्तुद प्रसंगक सान्द्र चित्रण मैथिल कालिदास द्वारा भेल अछि एहिमे सन्देह नहि।'

एहिना महाकवि जे अपन प्रकृति वर्णनमे मिथिलाक प्रति जे मात्सर्य देखेने छथि ओ हुनक मैथिलत्वक इशारा अछि। कालिदास गंगाजीक वर्णनमे सोन नदीक उत्ताल तरंगक उदाहरण दैत कहैत छथि जे सोन नदीक उत्ताल तरंग गंगाजीक प्रवाहकेँ ओहिना रोकि लैत अछि जेना राजा अज प्रतिपक्षी राजा सभक बाढ़ि रोकि लैत छथि। (रघुवंश, 5/36, 8/95)। गज-ग्राह युद्धमे भगवान विष्णुक श्रीचरणसँ पवित्र भेल बिहारक सोनपुरक जे गरिमामय चित्र प्रस्तुत अछि ओ महाकविक मैथिलत्वक संकेत करैत अछि।

जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु, सद्य:सीरोत्कषणसुरभि आ धनु:खण्डमाखण्डलस्य सभक मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे दिवाकरजी जेहन व्याख्या कयलनि ओकर परतर आनठाम कत्तहु नहि भेटत। दिवाकरजीक सोदाहरण ई विश्लेषण भावपूर्ण संग वैदुष्यपूर्ण सेहो अछि। मैथिल रीति-रेवाज, विधि-व्यवहार, संस्कार-परम्परा सभमे महाकविक मैथिलत्वक जे तलाश हुनक रचना सभमे करैत डॉ. दिवाकर असंख्य उदाहरण देने छथि ओ सब महाकवि कालिदासक मैथिलत्वक स्पष्ट प्रमाण थिक।

भाषा वैज्ञानिक आधारपर जे दिवाकरजी महाकविक मैथिलत्वक रूप प्रमाणित कयलनि ओ विलक्षण अछि। दिवाकरजी मिथिलापभ्रंशक आदिकवि रूपमे कालिदास आ अंतिम कवि रूपमे बाबा विद्यापतिक उल्लेख कयने छथि। महाकवि कालिदासक विक्रमोर्वशीयम् केर चारिम अंकक हुनक भाषिक विश्लेषण अभूतपूर्व अछि। राजस्व खतियान केर आधारपर महाकविक मैथिलत्वक निर्धारण शोधपूर्ण अछि। उच्चैठक अतिरिक्त साबिक सर्वेमे कालिदासक नामपर भारत भरिमे कोनो खतियान नहि अछि।

जहिना महाकविक जन्मस्थान विषयक हिनक अध्ययन केर निष्कर्ष महाकविक मैथिलत्व निश्चित करैत अछि तहिना महाकविक काल-गणना आ एकर निर्धारण सेहो सुन्दर अछि। हूण सभक मूल स्रोत आ विस्तार, सेनापति पुष्यमित्र शुंग द्वारा सम्राट वृहद्रथकेँ ईसापूर्व 185 ई.मे हत्या, मालविकाग्निमित्र केर विस्तृत मीमांसा, पतंजलिकेँ कालिदासक पूर्ववर्ती कहैत हुनक समय ईसापूर्व मानबाक सिद्धान्तकेँ अस्वीकार करैत छथि। डॉ. दिवाकर अनेक प्रमाण दैत सिद्ध करैत

छथि जे महाकवि कालिदास गुप्तकालक अवसान कालमे वर्तमान यशोधर्मन् केर समकालीन छलाह। श्रीलंकाक परम्परा आ ग्रंथ सभक मनोयोगपूर्वक अध्ययनसँ ओ कालिदासक समय पाँचम शताब्दीक उत्तरार्द्ध आ छठम शताब्दीक पूर्वार्द्ध मानैत छथि। एहिसँ जे डॉ. दिवाकर कालिदासक संगति भारतवर्षक सम्राट यशोधर्मन् आ श्रीलंकाक राजा कुमार धातुसेना (कुमारदास)सँ बैसबैत छथि ओ प्रशंसनीय अछि। श्रीलंकाक इतिहास, दीपवंश, महावंश सहित अन्य वंशग्रंथ आ सिंहल-संस्कृत साहित्य, श्रीलंकाक नागिरीकाण्डा शिलालेख, माटरा महाबोधिय आदिक गहन अध्ययनसँ डॉ. दिवाकर ई प्रमाणित करबामे सफल भेलाह जे वस्तुतः कुमार धातुसेने कुमारदास छथि। महाकवि कालिदासक महाप्रयाण श्रीलंकाक माटरा शहरमे भेल छल जतय आइ महाबोधिय माटरा अछि। एतए कालिदासक नामपर अखनो कालिदास रोड अछि जे निर्विवाद रूपसँ स्थापित करैत अछि जे कालिदासक संबंध माटरासँ अवश्य छल।

सभसँ तऽ असाधारण अछि कालिदासक महाप्रयाण। एकर एहन भावुक वर्णन दिवाकरजी कयने छथि जे पाठकक आँखिसँ अनेक बेर नोर बहबाक परिस्थिति बनैत छै। एहि नाटकमे हुनक लेखनीक ताकत देखाइत अछि। लोक भावुक होइत छथि। एहि पोथीमे बहुत रास नव चीज संकलित अछि। कालिदासपर बहुत किछु जानबाक लेल हम बेचैन रही। ई पुस्तक कालिदासपर एकटा बड़का स्रोत अछि। केना कुमारदास संग प्रगाढ़ मित्रता भेल। केहन मित्रता रहनि जे कुमार धातुसेना कालिदासक नामसँ मिलैत-जुलैत अपन नाम कुमारदास कऽ लेलनि। कालिदास कोना हुनकासँ भेंट करय माटरा गेलाह आ कोना राजनर्तकी द्वारा माहुर खुआ मारल गेलाह आ कुमारदास हुनक चितामे कोना कुदि अनन्त पथ केर सहयात्री भेलाह। कुमारदासक ई अभिलाषा रहिए गेलनि जे मिथिला जाइ। एहि नाटकसँ बहुत रास नव चीज सामने अबैछ आ महाकवि कालिदासक मैथिलत्व स्थापित होइत अछि। माटराक वर्णन अत्यन्त मार्मिक अछि। हम तऽ दुनिञा घुमैत रहलहुँ अछि। अमेरिका, चीन, फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, वैटिकन सिटी, वियतनाम, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, थाइलैंड, भूटान, नेपाल आदि देशक यात्रा कयलहुँ मुदा श्रीलंका नहि गेल छी। दिवाकरजीक ई पोथी पढ़लाक बाद मोन हुअए लागल अछि जे एक बेर श्रीलंका जयतहुँ, माटरामे कालिदास आ कुमारदासक समाधिस्थल देखितहुँ। ओतय कालिदास, कुमारदास आ हुनक पाँच रानी सभक स्मृतिमे

सातटा बोधिवृक्ष रोपल गेल छल। ओकरा सभक दर्शन करितहुँ। समाधिस्थलपर निर्मित भगवान् बुद्धक मन्दिरमे माथ झुकबितहुँ।

हम एक बेर फेर दोहराबय चाहब जे कोइ मिथिला-मैथिली-कालिदासक विषयमे जानय चाहैत छथि, ओ विद्यार्थी वा शोधार्थी छथि, सामान्य जन छथि वा विशिष्ट जन, हुनका सभकेँ ई पुस्तक अवश्य पढ़बाक चाही। मनन करबाक चाही। विशेष रूपसँ नवपीढ़ीकेँ तऽ ई पोथी अवश्य ध्यानसँ पढ़बाक चाही। एहिमे मिथिला, कालिदास आ श्रीलंकाक विषयमे बहुत रास एहन जानकारी छै जे आन कोनो ठाम उपलब्ध नहि छै। एकहि ठाम एतेक जानकारी देबाक लेल हम रंगनाथजीकेँ आभार प्रकट करैत छियनि, बहुत बहुत शुभकामना दैत छियनि।

हमसब उच्चैठ-कालिदास महोत्सव प्रतिवर्ष मनबैत छी। एहि पोथीमे जतेक सामग्री अछि, जाहि-जाहि विन्दुपर ई प्रकाश दैत अछि, अकाट्य तर्क दैत अछि ओ बेजोड़ अछि। हम तऽ चाहब जे ई पुस्तक उज्जैनवासी सब अवश्य पढ़थि। एहि पोथीमे जे कतय-कतय गलती छै वा सही नहि छै, से अवश्य लिखथि। ओना हमरा तऽ एहि पुस्तकमे कोनो त्रुटि वा गलती नहि भेटल। ई पुस्तक अपना-आपमे असाधारण अछि। श्री दीप नारायणजी सुन्दर कलेवरमे एकर प्रकाशन कयने छथि। सम्पूर्ण मिथिलाक लेल 'महाकविक महाप्रयाण' एकटा गौरवग्रंथ अछि। एकर जतेक प्रशंसा कयल जाय ओ कम्मे होयत। हम सम्पूर्ण मिथिला दिससँ डॉ. रंगनाथ दिवाकरजीकेँ हृदयसँ आभार प्रकट करैत छियनि।

डॉ. महेन्द्र नारायण राम

जन्मतिथि : *29 जनवरी 1958, खुटौना*

सम्पर्क : *+91* 82101 47981

डॉ. महेन्द्र नारायण राम मधुबनी जिलाक सुदूर सीमावर्ती क्षेत्र खुटौना गामक खुरपेरियासँ चलि कऽ अक्षर जगत् मे शब्दक बलेँ अपन विशिष्ट स्थान बनौलनि! ओ गामसँ शहर, शहरसँ महानगर आ महानगरसँ देशक सीमा सभकेँ लाँघैत अपन वैश्विक परिचिति बनौलनि! आइ अन्तरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन केर सम्मानित अध्यक्ष छथि! साहित्यक प्राय:सभ विधा-कविता, कथा, संस्मरण, अनुवाद, संपादन, शोध, समीक्षा आदिमे अपन मेधाक अनुपम रूप प्रदर्शित कयलनि अछि! विशेष रूपसँ लोक साहित्य, लोक संस्कृति, लोक गाथा, लोक देवता आदि विषयक हिनक सूक्ष्म अनुभूति आ हिनक विपुल अध्ययन हिनका मैथिली लोक साहित्यक पुरोधा बना देलक अछि! लोकगाथा एवं आन बिषय सभपर हिनक पचाससँ बेसी पोथी आ शताधिक आलेख प्रकाशित अछि! साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार सहित अनेक सम्मानसँ सम्मानित छथि! घुमक्कड व्यक्तित्व, शोधपरक सूक्ष्म दृष्टि, भावुक आ संवेदनशील अन्तर्मन, अपन जड़ि आ जमीनसँ जुड़ाओ, समदर्शी सोच आ व्यापक अध्ययन हिनकर वैशिष्ट्यकेँ गढ़ने अछि। साधारणमे असाधारण! मिथिला रत्न, मिथिला विभूति, मिथिला गौरव, मिथिला शिरोमणि, मैथिलीश्री आदि उपाधि सभसँ अलंकृत छथि! कुशल अभिनेता, दक्ष भगैत गायक, मृदुभाषी, उत्तम व्यवहार, शिष्टाचार, आचार-विचार, जिज्ञासा आ जीजीविषाक प्रतिमूर्ति डॉ.राम अपन मेधा आ समन्वयवादी सोचसँ समाजक सभ वर्गमे सर्वप्रियता प्राप्त कयलनि! डॉ.राम सही अर्थमे अक्षर पुरूष छथि!

‘महाकविक महाप्रयाण’ : एक विलक्षण पोथी

महाकवि कालिदास विश्वक शीर्ष कवि मानल जाइत छथि। भारतवर्षक बहुत क्षेत्र हुनकर जन्मस्थान होयबाक दाबी करैत अछि। जेना-मुख्य रूपसँ विदर्भ, गढ़वालक देवगिरि, क्रौञ्चरन्ध्र केर आधारपर रुद्रप्रयागक कविल्ठा, कश्मीर, बंगालक मुर्शिदाबाद जिलाक गढ़सिंगरू गाम, उज्जैन आदि क्रमशः के. कृष्णमूर्ति, डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित, राजेन्द्र मिश्रा, प्रो॰ लक्ष्मीश्वर कल्ला, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, वी०वी० मिरासी आ पं. मोरेश्वर नीलकंठ शास्त्री केर मंतव्य आधारें। एकर अतिरिक्त मिथिलाक सेहो अपन दाबी छैक।

सद्‌गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरीक महाप्रयाण दिवस 24 अप्रैल 2022कैँ सुलतानपुर, कुशेश्वरस्थान, दरभंगामे समारोहपूर्वक ‘सद्‌गृहस्थ संत जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान’ हमरा (डॉ. महेन्द्र नारायण राम) देबाक सुअवसरपर मिथिला विभूति, मिथिला रत्न आ बिहार प्रशासनिक सेवाक अपर सचिव पदसँ सेवानिवृत्त स्वनामधन्य विद्वान डॉ. रंगनाथ दिवाकर लिखित पोथी ‘महाकविक महाप्रयाण’ केर लोकार्पण कयल गेल छल। महाकवि कालिदास मिथिलाक छथि, हिनकर जन्म मिथिलेमे भेल छनि, तकर विद्वत्तापूर्ण ओ तथ्यात्मक शोधपूर्ण आलेख एवं नाटक के माध्यमे डॉ. दिवाकर एकरा सद्यः प्रमाणित करैत छथि।

यद्यपि हिनका अतिरिक्त मिथिलाक आनो-आन विद्वतजन एहिपर अपन-अपन विमर्श देने छथि। स्वयं एहि पोथीक माध्यमे डॉ. दिवाकर कहैत छथि जे-

कालिदासकैँ मैथिल प्रमाणित करबामे पं. आद्याचरण झा, पं. जीवनाथ झा, पं. जयमन्त मिश्र (किं कालिदास मिथिलावासी?), पं. बलदेव मिश्र, पं. लक्ष्मण झा, पं. दिगम्बर झा प्रभृति मनीषी सभक नाम श्रद्धा सहित लेल जाइत अछि। अपन ग्रंथ द्वय— ‘महाकवि कालिदास: कहाँ और कब’ आ ‘Kalidas : A Heritage of Mithila’मे शोध विद्वान् वरेण्य पं. लक्ष्मण झा विस्तारपूर्वक

कालिदाससँ जुड़ल तथ्य सभक मीमांसा करैत महाकवि कालिदासकेँ मिथिलाक वरदपुत्र प्रमाणित कयलनि। ओ उच्चैठक प्राचीन नाम अचमितपुर कहैत छथि। पं. लक्ष्मण झा अपन ग्रंथमे कालिदासक भगैत सभक उल्लेख करैत छथि। पं. झा लोकगाथामे कालिदासक मैथिलत्व प्रशस्त करैत छथि।

मुदा एहि बातपर डॉ. दिवाकर केर कहब छनि जे— ''हमरा जनैत ई भगैत ज्योति पजियारक पौत्र आ कारिख पजियारक पुत्र भगत कालिदास पजियारक थिक महाकवि कालिदासक नहि।'' (महाकविक महाप्रयाण, पृष्ठ 74)

ओना दिवाकरजी एहि विषयक पं. दिगम्बर झाक दीर्घकाय ग्रंथ 'मिथिला एवं कालिदास' (कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा), कृष्णानन्दजीक 'कालिदास बिहार के थे', डॉ. आदित्यनाथ झा, डॉ. देवनारायण झा, रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर, अनन्त शयनम् आयंगर, डॉ. भारती श्रीवास्तव, डॉ. रामचन्द्र ठाकुर (मिथिलापभ्रंश के आकर स्रोत) आदि लेखक सभक उल्लेख कयने छथि। ई सभ गोटे भिन्न-भिन्न आधारपर महाकविक मैथिलत्व प्रमाणित कयने छथि।

हमरा लगैत अछि जे डॉ. दिवाकरजी उपरोक्त जाहि विद्वान सभक चर्च कयलनि अछि, हुनका सभक ध्यान कालिदासक श्रीलंका यात्रापर नहि जा सकल वा ओ सब एकरा महत्व नहि देलनि। डॉ. दिवाकर महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रापर विशद् विचार कयलनि आ ओकर प्रमाण सभक गंभीर मीमांसा करैत कालिदासकेँ समय आ हुनक मैथिलत्व प्रमाणित करबामे सफल भेलाह अछि, ई प्रशंसनीय अछि। श्रीलंकाक शिलालेख सभक अध्ययन, इतिहासक गहन मंथन, परम्परा सभक अनुशीलन, अनुश्रुति सभक परीक्षण, ग्रंथ सभहक मननसँ डॉ. दिवाकर एहि पोथी रूपमे जे महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर एक अनुपम काज कयलनि एहि लेल मैथिल समाज हुनक चिर कृतज्ञ रहत।

पोथी दू भागमे विभक्त अछि— प्रथम सैद्धान्तिक आ द्वितीय नाटक। एहिसँ पहिने कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगाक प्रकांड विद्वान प्रो॰ शशिनाथ झाक शुभकामना संदेश आ लोक नाटककार महेन्द्र मलंगिया जीक भूमिका छनि। एकर पश्चात डॉ. दिवाकरक 'किछु आखर'— लेखकीय। पुनः डॉ. दिवाकर सैद्धान्तिक पक्षकेँ सेहो दू भागमे बाँटने छथि— प्रथम महाकवि कालिदास आ हुनकर मैथिलत्व एवं दोसर इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व। एहि दुनू भागकेँ सेहो फेरसँ निम्न रूपेण बाँटि कऽ विमर्श कयने छथि— प्रथम भाग- i. महाकविक समय आ जन्म स्थान, ii. रचनामे व्यक्त विचार सभक आधारपर महाकविक मैथिलत्व, iii.

प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व, iv. रीति-रिवाज व पावनि-तिहारक चर्चमे महाकविक मैथिलत्व, v. भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व आ vi. प्राचीन राजस्व अभिलेख केर आधारपर महाकविक मैथिलत्व। दोसर भाग सेहो निम्न रूपेण विभक्त अछि— i. महाकवि कालिदास आ सीताक चरित्र-चित्रण, ii. उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास, iii. महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा, iv कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका, v. महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनंत पथ केर सहयात्री, vi. श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा: दू महाकविक महाप्रयाण स्थल।

एकर बाद निष्कर्ष आ अंतमे 'महाकविक महाप्रयाण' (नाटक) देल गेल अछि। महाकवि कालिदास आने पुरा प्रातिभ जकाँ अपन जन्मस्थान, समय आ आश्रयदाता विषयक कोनो चर्च नहि कयने छथि। हुनक रचना सभक लालित्य, अर्थगौरव, उपमादि अलंकार एवं अन्य काव्य गुणयुक्त वर्णन तेहन सूक्ष्म आ अपनत्व भरल अछि जे भारतवर्षक बहुत क्षेत्र हुनका अपन मानबाक दाबी करऽ लागल। कोइ क्रौञ्चरन्ध्र केर आधारपर तऽ कोइ केसर, सूर्यपूजा आ प्रत्यभिज्ञान दर्शन सभक कारणें। कोइ भगवती कालीक कृपा आ धानक बिच्चनिकेँ उखारि दोसर खेतमे खाउर करब केर आधारपर अपन कहलक। तर्क आ प्रमाण सभक आधारपर मिथिलाक अपन दाबी सेहो छैक। एकर समीक्षा आवश्यक। डॉ. रंगनाथ दिवाकर सभ दृष्टिकोणकेँ मोनमे रखैत एहि पोथीक माध्यमे जे मीमांसा आ विवेचना कयलनि अछि जे महाकवि कालिदास मिथिलेकेँ छलाह, मानैमे कोनो संशय आ दुविधा नहि रहि जाइत अछि। डॉ. दिवाकर द्वारा प्रस्तुत विवेचनकेँ संक्षेपमे एहि ठाम राखब समीचीन होयत। भारतवर्षक आन क्षेत्र जे महाकवि कालिदासकेँ अपना ओहिठामक हेबाक दाबी करैत अछि, ओहिपर डॉ. दिवाकर समीक्षाक क्रममे हुनका सभक दाबीकेँ विखंडित करैत छथि। ओ निम्न प्रकार समीक्षा कयलनि अछि—

I. विदर्भ सम्प्रति महाराष्ट्रक दू कमिश्नरी नागपुर आ अमरावतीकेँ कहल जाइत अछि। महाकविक रचना रघुवंशम् मे अज अपन राजधानी अयोध्यासँ इन्दुमतीक स्वयंवरमे भाग लेबाक लेल ससैन्य नर्मदा नदी पार कऽ विदर्भ केर राजधानी अबैत छथि—

प्रस्थापयामास ससैन्यमेनमृद्धां विदर्भाधिपराजधानीम् -रघु. 5/21

मालविकाग्निमित्रम्मे विदर्भराज आ विदिशाराज अग्निमित्रमे वैमनस्य आ युद्ध देखाओल गेल अछि। कृष्ण द्वारा विदर्भराजक पुत्री रूक्मिणी केर हरण आदि बात वर्णित अछि। ई एकदम सामान्य अछि। एहि वर्णनमे कविक कोनो मात्सर्य भाव वा कोनो अतिरिक्त विशिष्टता नहि प्रकट भेल अछि जे विदर्भकेँ महाकविक जन्मस्थानक संकेत मानल जाय।

II. गढ़वालक देवगिरि वा रुद्रप्रयागक कविल्ठा वा कश्मीर शीतल क्षेत्र अछि। एहि शीतल क्षेत्रक वासी सभक लेल गर्मीसँ मुक्ति पायबक हेतु धारागृहमे फुहारक (यंत्रधारागृहत्वम्... पूर्वमेघ 65) आ जलक फुहारसँ शीतल भेल समीर (स्वजलकणिका शीतलेनानि..., उत्तरमेघ, 40) केर परिकल्पना करब कने कठिन अवश्य अछि। एहि क्षेत्रकेँ जन्मस्थान मानलासँ मेघदूत केर नैसर्गिक मार्गमे व्यतिक्रम सेहो अबैत अछि। ई पूर्णतया संभव अछि जे महाकवि क्रौञ्चरन्ध्र होइत हंसकेँ मानसरोवर जाइत देखिने होथि। तथापि एहि वर्णनक आधारपर महाकविकेँ एतए केर मूल निवासी कहब उचित नहि होयत।

III. केसर केर वर्णन आ सूर्यपूजा-प्रत्यभिज्ञान दर्शन सभक कारणें सेहो महाकविकेँ कश्मीरी नहि कहल जा सकैत अछि। केसर केर खेतीक कोनो एहन सूक्ष्म रूप, प्रकार आ प्रविधिक बात महाकवि कतहु नहि कयने छथि जखन कि धानक बिआ बाउग कएल गेल खेतसँ बिच्चनि उखाड़ि ओकरा दोसर खेतमे खाउर करबाक चर्च महाकवि करैत छथि—

फलैः संवर्धयामासुरुत्खात प्रतिरोपिताः -रघु. 4/37

IV. बंगाली विद्वान लोकनि सेहो एकरा ध्यानमे रखैत महाकविकेँ अपना ओहि ठामक रहबाक बात प्रमाणित करबाक फेरमे छलाह। अनादि कालसँ मिथिलामे धन खेतीमे खाउर करब आ रघुवंशम् केर एहि उत्खात् शब्दक समानता हुनका लोकनिक समस्त कल्पनाकेँ ध्वस्त कयलक। भगवती कालीक कृपा आ धनखेतमे कमल फुलायब मिथिलाक सेहो प्रसिद्ध अछि। मूर्खसँ विद्वान बनओनिहारि उच्चैठ भगवतीक कृपासँ सभ गोटे अवगत छी। एहिना महाकविक पाँति 'आषाढ़स्य प्रथमे दिवसे' केर आधारपर बंगाली लोकनिक दाबी जे बंगालमे अखनधरि समय केर गणनामे पक्ष आ

तिथिक प्रयोग नहि होइत अछि तैं महाकवि बंगाली छथि, बालुक भीतपर ठाढ़ अछि। ई दाबी सत्याश्रित नहि अछि। गुप्त नृपति चन्द्रगुप्त द्वितीयक सेनापति आम्रकार्दन केर साँची शिलालेखमे 'सम्वत् 93 भाद्रपद दि. 4' आ कुमारगुप्तक कालमे मनकुवार स्थानसँ प्राप्त मूर्त्तिपर 'सम्वत् 129 ज्येष्ठ मास दि. 18'सँ ई दाबी खंडित होइत अछि। जँ महाकवि बंगाली रहितथि तखन कदाचित रघुक हाथें बंगाली राजा सभक एहन भयंकर पराजय (रघु. 4/36) केर उल्लेख नहि भेल रहैत।

V. कश्मीरकेँ कालिदासक जन्मस्थान मानबाक क्रममे इहो कहब उचित जे सूर्यपूजाक विशिष्ट रूप महाव्रत छठि पावनि मिथिलामे एखनो प्रचलित अछि। प्रत्यभिज्ञान दर्शन वा इन्दुमतीक स्वयंवरमे सुनन्दा द्वारा अजकेँ वरमाला पहिरायबसँ सेहो महाकविक कश्मीरी होयबाक निर्णायक उद्घोष नहि होइत अछि। स्वयंवरमे सुनंदा द्वारा अज केर माला पहिरायब मात्र हुनक चयन केर द्योतक थिक। विवाह बादमे विधिपूर्वक होइत अछि। प्रत्यभिज्ञान दर्शन केर पताका फहरएबाक कारणें जँ महाकवि कालिदासकेँ कश्मीरी मानल जाए तखन 'कामायनी' केर प्रणेता जयशंकर प्रसादजीकेँ सेहो कश्मीरी मानए पड़त। ई उचित हयत की? कश्मीरक ई शैव दर्शन (प्रत्यभिज्ञान दर्शन) अद्वैत दर्शन केर एक प्रकार थिक ओहिना जेना मिथिलाक भावाद्वैत दर्शन। विक्रमोर्यशीयम् केर प्रथम पदमे वेदान्त, द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, भावाद्वैत, सांख्य योग आ भक्ति दर्शन केर अभिव्यक्ति भेल अछि—

वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरुषं व्याप्य स्थितं रोदती
यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः।
अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमित प्राणदिभिर्मृग्यते''
संस्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभोनिः श्रेयसायाऽस्तु वः॥

महाकवि परमात्माक स्वतंत्र आ आनन्दमय स्वरूपकेँ मानितो परमात्माक अवतारी रूपकेँ सेहो स्वीकार करैत छथि। राम आ कृष्णकेँ विष्णुक अवतार कहैत छथि— रामाभिधानो हरिरित्युवाच (रघु. 13/1), कार्यान्तरमानुषस्य विष्णोः (रघु. 16/82), गोपवेषस्य विष्णोः (पूर्वमेघ, 15) आदि।

यथार्थमे महाकविक रचनामे भारतीय दर्शन केर सार सन्निहित अछि आ हुनका मात्र प्रत्यभिज्ञान दर्शन केर आचार्य कहब एवं एहि आधारपर कालिदासकेँ

कश्मीरी कहब भारी अन्याय होयत एहि 'न भूतो न भविष्यति' महाकविक संग। एतए इहो उल्लेखनीय अछि जे कल्हण द्वारा कश्मीरी प्रातिभ सभक चर्चामे कालिदासक कोनो उल्लेख नहि अछि। ई महत्वपूर्ण तथ्य कश्मीरी दाबीकेँ समाप्त करैत अछि।

VI. उज्जैनवासी स्वाभाविक रूपसँ महाकविकेँ 'अपन' मानैत छथि। महाकविक रचनामे उज्जैनक मार्मिक वर्णन सेहो भेल अछि। मुदा एकर मूल कारण उज्जैनकेँ महाकविक जन्मस्थली नहि अपितु कर्मस्थली होयब थिक। इन्दुमतीक स्वयंवरमे महाकवि प्रथम स्थानपर मगध नरेश परंतप आ दोसर स्थानपर अंगराजक वर्णन कयने छथि। वर्तमान बिहारक दुनू क्षेत्रक राजाक बादे ओ अवन्तिराजकेँ तेसर स्थानपर रखैत छथि। ई अपन क्षेत्रक राजाक प्रति अतिरिक्त आदरक प्रकटन थिक। मगध नरेशक विषयमे उद्‌गार अछि जे जेना असंख्य तारा ग्रह, नक्षत्र सभक बादो राति तखने इजोरिया राति मानल जाइछ जखन चन्द्रमा पूर्णतामे शोभैत हो, तहिना सहस्राधिक राजाक रहैत पृथ्वी मात्र मगधराजेक कारणें राजायुक्त कहाइत अछि—

कामं नृपाः सन्तु सहस्रशोऽन्ये राजन्वती माहुरनेन भूमिः,
नक्षत्रताराग्रहसङ्कुलाऽपि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः

(रघु. 6/22)

इन्दुमती मगध नरेश दिशि तकैत छथि तखने हुनक महुआक माला सरकि जाइत अछि आ ओ मात्र प्रणाम करैत आगू बढ़ि जाइत छथि। अवन्तिराज सहित आन राजा सभकेँ बिनु कोनो अभिवादन कयने ओ आगू बढ़ि जाइत छथि। एहिना बिहारक सोनपुरक महिमा (5/36 आ 8/95) केर प्रसंग अपना क्षेत्रक लेल स्वाभाविक मात्सर्य केर प्रकटन थिक जे परोक्ष रूपसँ महाकविक जन्मस्थानक संकेत अवश्य करैत अछि। उज्जैनक वारांगना सभक महाकाल मन्दिरमे नृत्य आ नखक्षतपरपर पड़ैत शीतल फुहारसँ सुख भेटलापर दीर्घ कनखी मारबाक बिम्ब (पूर्वमेघ 39) हो वा अभिसारिका सभकेँ अन्हारमे मार्ग देखएबाक चित्रण (पूर्वमेघ 27) हो वा दोसर स्त्री संग राति व्यतीत कऽ भिनसरवामे गृह आयल पति द्वारा नोर बहबैत रूसलि प्रियाकेँ मनुहारमे नोर पोछबाक चित्र (पूर्वमेघ 43) हो वा पण्य स्त्री संग संभोगमे प्रयुक्त सुगंधित पदार्थ सभक गुफासँ अबैत महक केर चित्र (पूर्वमेघ 27) हो, ई सभ स्पष्ट रूपसँ वर्जना करैत अछि जे उज्जैन महाकविक जन्मभूमि थिक। ई

मनोवैज्ञानिक तथ्य अछि जे लोक यथासाध्य अपन गामक गुप्तकथा सभक प्रकटन अन्यत्र नहि करैत अछि आ एतए तऽ महाकवि सभटा उघारिकेँ राखि देने छथि। उज्जैनक गढ़कालिका भगवतीकेँ महाकवि कालिदास पूजित मानल जाइत अछि। ई सर्वथा सत्य अछि। एहि गढ़कालिका मंदिरमे लागल शिलालेखमे वर्णित बारह शक्तिस्थल सभमेसँ कोनो स्थल संग कोनो मूर्खकेँ महाकवि बनएबाक कोनो कथा अनस्यूत नहि अछि। संगे ई एकटा महत्त्वपूर्ण तथ्य अछि जे एहि मन्दिरक पुजेगरी परम्परागत रूपसँ मैथिल होइत छथि आ एतए केर पूजन परम्पराक विधान सेहो मैथिल पूजन परम्परापर आश्रित अछि। एहिसँ ई धारणा बलवती होइछ जे मैथिल महाकवि कालिदास जखन अपन कर्मक्षेत्र मन्दसौर-उज्जैन (मालवा क्षेत्र) अयलाह तखन एहि गढ़कालिका भगवतीकेँ अपन परम्परानुसार पूजन कयलनि। जे परम्परा एखनो अक्षुण्ण अछि। एहि तथ्य सभसँ सेहो उज्जैन वा मालवा क्षेत्र महाकविक जन्मस्थली नहि कर्मस्थलीए प्रमाणित होइत अछि।

निष्कर्षत: कहल जा सकैत अछि जे डॉ. रंगनाथ दिवाकर द्वारा महाकवि कालिदासक जन्मस्थानपर विदर्भ, कश्मीर, बंगाल, उज्जैन आदि द्वारा कयल गेल दाबी संदर्भित जे उपरोक्त वैदुष्यपूर्ण विवरण प्रस्तुत कयल गेल अछि, ताहिसँ हुनका सभक दावा स्वयं विखंडित होइत अछि। अकाट्य तर्क आ प्रमाण प्रस्तुत करैत डॉ. दिवाकर आन ठामक दावा कयनिहारक दावासँ अपन पैघ डरीर खींचि कऽ ओहि दावी सभकेँ छोट कयलनि। ई आन ठामक दावी के निरस्त करबामे पूर्ण सफल भेल छथि। एहिसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे महाकवि कालिदास विदर्भ, देवगिरि, कविल्ठा, कश्मीर, बंगाल वा उज्जैनक मूलवासी नहि छथि।

आब डॉ. दिवाकर एहि पोथीक माध्यमे अंतिम दावेदार मिथिलापर सेहो अपन तथ्य, शोध एवं प्रमाणपूर्वक अपन मंतव्य देलनि अछि। एहि मंतव्य के सेहो एहि ठाम राखब हमरा लेल समीचीन बुझना जाइत अछि।

(i) सीताक चरित्र—

रघुवंशम् मे जे सीताक चरित्र उकेरित अछि ओ महाकविक मैथिलत्वक स्पष्ट संकेत अछि। एहिमे सुदक्षिणाकेँ ऋतुस्नानक बाद देखि दिलीपक ई सोचब जे जँ अखन संभोग नहि करब तखन गृहस्थी गड़बड़ा जाइत (रघु. 1/76), मथुरा नरेश सुषेणक जल विहारमे रानीक स्तनपर लागल चन्दनकेँ यमुना जलमे मिज्झर भेलासँ मथुरामे गंगा-यमुना केर संगम केर दृश्य (रघु. 6/48) उपस्थित होयब आ कुशक रानी सभक संग जलविहारक माँसल वर्णन भेल अछि। अग्निवर्ण केर केलि

वर्णन अत्यन्त उत्कट अछि। ओ नर्तकी, दासी, सेवक लोकनिक स्त्री संग संभोग करैत छथि। (रघु. 21/32, 45)। रघुवंशमे राम-सीता केलि वर्णन विषयक मात्र दू पद (14/24, 25) अछि जे दुनू इच्छानुसार भोग ओहि घरमे करैत छथि जाहि घरमे वनवासकालीन चित्र टाँगल अछि। कोनो माँसलता नहि। एहिसँ सीताक प्रति महाकविक अतिरिक्त आदर आ अनुराग प्रकट होइत अछि। अपन बहिन वा बेटीक उत्कट केलि-वर्णन कोन कवि करए चाहत?

सीता परित्याग प्रसंगमे सेहो महाकविके मैथिलत्व सोझाँ अबैत अछि। अपन परित्यागक बात सुनि सीता विह्वल होइत छथि, कुररी जकाँ कनैत छथि। एहि चित्रणमे 'हमर अभाग हुनक नहि दोष' केर भाव अवश्य अछि तथापि सीताक ई प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि जे जखन ओ (राम) अपना सोझामे हमरा अग्निपरीक्षामे पवित्र पओने छलाह तखन मात्र लोकापवाद सुनि अपयशक भयसँ हमर परित्याग कयलनि, ई कृत्य की रघुकुलक अनुरूप थिक?

वाच्यस्त्वया मदवचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्।
मां लोकवाद श्रवणादहासी: श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥

(रघु. 14/61)

रामक विराट व्यक्तित्वपर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ करबाक साहस अपूर्व अछि। आगू नि:सहाय, निरूपाय, निराश सीताकेँ वाल्मीकि आबि बोल भरोस दैत छथि जे हे पुत्री! हम योगबलसँ जानि गेल छी जे अहाँक पति मिथ्या अपयशसँ डरि अहाँक परित्याग कऽ देलनि। अहाँ चिन्ता जुनि करू किएक तऽ अहाँ अपन पितृगृह आबि गेल छी—

जाने विसृष्टां प्राणिधानतस्त्वां मिथ्यापवादक्षुभितेन भर्त्रा।
तन्मा व्यथिष्ठा विषयान्तरस्थं प्राप्तासि वैदेहि! पितुर्निकेतम्॥

आगू रामक 'चरित्र' केर प्रशंसा कयलाक बादो ई कहएसँ ओ संकोच नहि करैत छथि जे अहाँक संग जे राम अनुचित व्यवहार कयलनि एहि लेल हुनकापर हमरा भारी क्रोध आबि रहल अछि (रघु.14/72, 73)। वाल्मीकि द्वारा सीताक लेल पुत्री सम्बोधन, पितृगृह नैहर अयबाक बात एवं रामपर आक्रोशक मर्ममे महाकवि कालिदासक मैथिलत्व नुकायल अछि।

डॉ. दिवाकर उपरोक्त मूल्यांकनमे महाकवि कालिदासक मैथिलत्वकेँ नुकायल कहैत छथि। मुदा हमरा लगैत अछि जे ई नुकायल नहि अछि अपितु महाकवि सद्य: मैथिल छलाह से प्रमाणित भेल अछि। महाकवि कालिदासक रघुवंशम् (14/61) केर ई आक्रोश आनो-आन रामायण सभक रचनाकारमे देखल जा सकैत अछि। डॉ. दिवाकर जतनपूर्वक एहन एक विशिष्ट परम्पराक दिग्दर्शन करबैत छथि आ एहि आक्रोशक उत्स रघुवंशक 14/61केँ मानैत छथि। डॉ. दिवाकर इहो कहैत छथि जे— 'मिथिलाक सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ सुता सीता संग भेल अनुचित परित्यागक दंशपर मैथिल मानस कतेक विचलित छल ओ एहि तथ्यसँ स्पष्ट होइछ जे अनेक सहस्राब्दी व्यतीत भेलाक बादो विवाहपंचमी दिन विवाहक शुभ मुहूर्त रहितो अखनो मैथिल अपन बेटीक विवाह ओहि दिन नहि करैत छथि। एहिसँ मैथिल आक्रोशक गाम्भीर्य अकानि सकैत छी।'

(महाकविक महाप्रयाण, पृ०-98)

एकर कारणो बतबैत डॉ. दिवाकर आगाँ कहैत अछि— ''मिथिलामे रामकाव्य परम्पराक श्रीगणेश कतेक सहस्राब्दीक बादे (17म 18म शताब्दीक सीतायण) होइत अछि। महात्मा सूर किशोर आ महात्मा चतुर्भुज गिरि द्वारा जनकपुरक अधिमान्यतासँ नवस्फूर्तिक संचार आरंभ भेल। सूर किशोरक सत्यप्रयाससँ अवध मिथिला संबंध सेतुपर जमल बर्फ सीताक प्रति अतिशय आदर आ भक्तिक आरतीक धाहसँ पसीझ गेल। संत रामप्रियाशरण दासक सीतायण (1701-2 ई.) जे नवद्वार खोललक ओहि मार्गकेँ कवीश्वर चन्दा झा आ पं. लालदास आर प्रशस्त कयलनि। मैथिलीमे कवीश्वर चन्दा झाक मिथिला रामायण (पूर्ण 1886 ई., प्रथम प्रकाशन 1892 ई.) जाहि राम काव्य परम्पराक श्रीगणेश करैत बंद द्वार अनावृत कयलक ओहि मार्गकेँ लालदासक रामायण, मुंशी रघुनंदन दासक वीर बालक, पं० सीताराम झाक अम्बचरित, बैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' जीक सीतायन, आ. राम लोचन शरणक मैथिली श्रीरामचरितमानस, खड्ग बल्लभ दास 'स्वजन' जीक सीताशील, हीरालाल झा 'हेम'जीक सीताचरितामृत, भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक' जीक मैथिली बाल रामायण, काञ्चीनाथ झा 'किरण' जीक पराशर, पं० जीवनाथ झाक रावणवध, पं. कपिलेश्वर मिश्र' वैयाकरण'क सीतादाइ, पं. कालीकान्त झाक हनुमान चरित, श्री राजेन्द्र लाल दासक सीताक प्रस्थान प्रभृति कृति आर प्रशस्त कयलक।'' (पृ०-99)

''महाकवि पं. लाल दास रामक लेल बिनु कोनो आक्रोश प्रकट कयने अपन रमेश्वरचरित रामायणमे पुष्कर काण्डक रचना कऽ ओहिमे ग्रियमाण राम

केर सीता द्वारा महाकाली बनि रक्षा आ राम द्वारा सीताक स्तुति करा अपन अधिमान स्थापित कऽ देने छथि। पुष्कर काण्ड आ अपन पृथक् जानकी रामायण ग्रंथसँ महाकवि पं. लालदास मैथिली रामकाव्य परम्पराक स्वर रूपमे समादृत छथि।''

(पृ०-९९)

तँ डॉ. दिवाकर जीक कहब छनि जे एहि सभक उत्स महाकवि कालिदासक रघुवंशम् केर पावन गंगोत्रीसँ निस्सरित भऽ मैथिल भाव सम्पूर्ण संसारमे पसरि गेल।

(ii) प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व—

महाकविक प्रकृति चित्रण अद्भुत अछि। साहित्यिक सौन्दर्य वा विलक्षण स्वरूप सहित महाकविक मैथिलत्वक भावसँ ओत-प्रोत अछि। महाकवि कालिदासक प्रकृति वर्णनमे अनेकश: एहन प्रसंगक अन्वेषण कयल जा सकैत अछि, जे यथार्थत: मिथिलेमे संभव अछि। डॉ. दिवाकर द्वारा साहित्यिक सौन्दर्य वा विलक्षण स्वरूप छोड़ि महाकविक मैथिलत्वपर अपन पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' केर पृष्ठ सं. 57सँ 63 धरि मूल्यांकन कयल गेल अछि। ओ मूल्यांकन कतेक प्रामाणिक ओ सटीक अछि से स्वयं देखल जा सकैत अछि। ओ प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्वपर मूल्यांकन करैत कहैत छथि— जे चूड़ा-गुड़ केर चर्च (ऋतु. -5/16), वायु प्रवाहक कारणें बाँसक छिद्रसँ बहराइत बाँसुरीक ध्वनि (कु.सं. 1/8), जमुन टोकी (पूर्वमेघ 21, 25), आमक गाछी आ पाकल धानसँ भरल खेत (ऋतु. 3/5, 6/38)मे जेना महाकविक मोन रमि गेल हो, सिंगरहारक फूलसँ महमह करैत वातावरण आ विपुल जल राशिमे चिड़ै-चुनमुनी सभक कलरव (ऋतु. 3/14), तिलकोरक फऽरसँ ठोरक उपमा (पक्वबिम्बाधरोष्ठी) मिथिला छोड़ि आर कतए पाबी!

पाछू महाकविक कर्मस्थली उज्जैनक नारी सभक उद्दाम यौवन केर किछु चित्र सभक संकेत तऽ भेले छल। आब एहिठाम महाकविक अपन जन्मस्थलीक स्त्रीगण विषयक चित्र देखब आवश्यक। धानक जजाति केर रक्षा लेल कुसियारक छाहरिमे बैसलि स्त्रीगण अपन राजाक कीर्तिगाथाक गीत बना गाबि रहल छथि (पूर्वमेघ 20)। कृषक सभक भोल स्त्रीगण मेघ दिसि आदर आ नेहसँ देखैत छथि किएक तऽ खेती एक मात्र मेघेक आसरे रहैत अछि आ एहि भोल स्त्री सभकेँ भौंह चला पटिआबऽ नहि अबैत अछि (पूर्वमेघ 16)। कर्मस्थली उज्जैनक नारी सभक उद्दाम यौवन आ जन्मस्थलीक भोल स्त्रीगणकेँ भौंह चला

पटिआबऽ नहि आएबसँ कवि अपन मैथिल दृष्टि केर संकेत देने छथि। मेघदूतम् केर प्रथम श्लोकमे 'जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु'सँ महाकवि सीताक वन्दना करैत कहैत छथि जे हुनक चरण-कमलक प्रवेशसँ सरोवर केर जल पवित्र भेल। एहिना 15म श्लोकमे जखन उधिआएत श्यामवर्णी बादल सप्तवर्णी इन्द्रधनुषपर अबैत अछि तखन इन्द्रधनुष खंडित होइत अछि आ एक समय एहन लगैत अछि जे मोरपंख पहिरने साक्षात् श्रीकृष्ण सुशोभित छथि। विलक्षण उत्प्रेक्षाक एहि चित्रमे 'धनु:खण्डमाखण्डलस्य'सँ महाकवि अपन मातृभूमि मिथिलाक संकेत करैत छथि। सम्पूर्ण संसार जनैत अछि जे श्रीराम द्वारा धनुर्भंग कयलाक बादे सीताजीसँ हुनक विवाह भेल छल। एहि 'धनुः खण्डमाखण्डलस्य'सँ महाकवि अपन मातृभूमि मिथिलाक स्मरण आ वन्दन कयने छथि, एहिमे कोनो संशय नहि। एहिना अगिला श्लोक केर 'सद्यः सीरोत्कषणसुरभि:' पद-खंडपर विचार करी तखन एहिसँ महाकविक अपन मातृभूमिक लेल मात्सर्य प्रकटन केर अनुपम चातुर्यक थाह लागत। हम सब जनैत छी जे सद्यः चासल, समारल आ तेखारल खेतसँ एक अलगे सुगंध अबैत अछि। जँ एहिपर एक अछार पानि बरसि जाय तखन ओ सोन्हगर सुगंध आर दिव्य भऽ जाइत अछि। महाकवि जे मेघसँ सद्यः जोतल खेतपर एक अछार बरखाक आह्वान करैत छथि ओ ओहि क्रियाक पूर्णता देबाक लेल भेल अछि जे कहियो अकाल समाप्त करबाक लेल राजा जनक स्वयं हरबाह बनल छलाह आ सिया सुकुमारी प्रकट भेल छलीह। तकर बाद भारी बरखा भेल छल आ अकाल समाप्त भेल रहए। एतए 'सद्यःसीरोत्कषणसुरभि' सिया सुकुमारी छथि। मेघूदतक केर लगातार मननसँ विशिष्ट भाव उद्घाटित होइछ तैं 'मेघे माघे गतं वयः' कहल गेल अछि।

डॉ. दिवाकर जीक उपरोक्त विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे महाकविक मस्तिष्कमे क्रियाशील मातृभूमि मिथिलाक लेल उद्भूत मनोलय केर कल्पना स्वाभाविक अछि। एहि मनोलयमे महाकविक मैथिलत्वक मनोरम चित्र अभरल अछि जे ओकर संकेतेटा मात्र नहि करैछ अपितु हुनक मैथिलत्व केर प्रमाण के पुष्ट करैत अछि। अस्तु डॉ. दिवाकरक ई तथ्यात्मक मूल्यांकनसँ सहमत होयब मजबूरी नहि अपितु यथार्थ केर पुष्टि सेहो अछि। पूर्वी हिमालयमे महाकविक घर आ मेघक मंजिल पश्चिमी हिमालय केर अलकापुरी। मेघदूतम् केर माध्यमे मेघकेँ हिमालय अयलाक बाद स्वाभाविक रूपसँ पूर्व-पश्चिमी हिमालयक भेद समाप्त होयब, महाकवि द्वारा मातृभूमि मिथिलाक संकेत थिक।

(iii) रीति-रिवाज/पावनि-तिहारक वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व—
प्रत्येक देश/राज्य/क्षेत्रमे अपन-अपन किछु एहन रीति-रिवाज, पावनि-तिहार होइत अछि जेहन आनठाम नहि पाओल जाइत अछि। ई विशेषता ओहि क्षेत्रक खास होइत अछि। तहिना मिथिलाक सांस्कृतिक विशेषताक महत्व विश्व प्रसिद्ध अछि। एहिठामक किछु एहन रीति-रिवाज/पावनि-तिहार, व्यवहार अछि जे विश्वक आनठाम नहि पाओल जाइत अछि। आ मिथिलाक यैह विशेषता ओकर निजी पहिचान अछि।

डॉ. रंगनाथ दिवाकर द्वारा अपन पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' (पृष्ठ 64-69) मे कयल गेल मूल्यांकनमे कहैत छथि जे— 'महाकवि कालिदास वर्णित रीति-रिवाज आ पावनि-तिहारपर मिथिलाक स्पष्ट छाप अछि। भूमिपर भट्ठासँ शिशु केर अक्षरारम्भ (रघु.18/46), पतिगृह जाइत काल जलाशय तक अरिआतब आ भ्रातारूपमे शाङ्र्गरव आ लोकनी रूपमे गौतमीकेँ जाएब (अभि. शाकुं), धानक लावासँ हवन, होमधूपकेँ सुँघब, दुर्वाक्षतसँ आशीर्वाद, ध्रुवताराक दर्शन, नव-वर-कनिआँक चतुर्थी धरि भूमिपर शयन (कुं सं०-7/80, 81, 88, 94), वेदीक धुआँसँ लाल भेल लोचन (रघु. 13/28), पलवलसँ बहराइत सुगर आ वृषभ केर पंकमय सींग (रघु. 3/24), गुप्तमणि वा गूढ़मणि बालक्रीड़ाक चर्च (उत्तरमेघ 6), महावराह क्षेत्रक चाक्षुष वर्णन (कुं. सं०-8/20), देवोत्थान एकादशी (उत्तरमेघ 47), तरहत्थीपर माटिक महादेव बना पूजा करब (कुं. सं०-5/58) आ द्वारपर शंख-कमल केर चित्र (उत्तर मेघ 20)सँ घरक पता देब मैथिल परम्परागत चित्र थिक।''

डॉ. दिवाकर उक्त चित्र सभमेसँ किछुकेँ आनो क्षेत्रमे हेबाक संभावना करैत ई कहैत छथि जे आब जे चित्र सभहक विषयमे कहब से मात्र मिथिलेमे संभव अछि। ओ आगाँ कहैत छथि—

बियाहसँ पूर्व पार्वतीसँ माता मेना कुलदेवताकेँ प्रणाम करओलाक बाद श्रेष्ठ सभहक चरणस्पर्श करबैत छथि (7/27)। ई चित्र मिथिलामे एखनो देखल जाइत अछि। एतए जाँट गुहलाक बाद बेटीक कुमारि मुह देखएबाक आ बेटी द्वारा श्रेष्ठ सभकेँ गोर लागबाक प्रथा एखनो अछि। कोहबर घरमे भूमिपर शैय्या आ नगहरमे जल राखल रहैछ—

कनक कलशयुक्तं भक्तिशोभासनाथं
क्षितिविरचितशय्यं कौतुकागारमागात्

(कुं. सं०-7/94)।

चतुर्थी दिन पालोपर बैसा वर-वधूकेँ ओहि जलसँ स्नान कराओल जाइत छैक आ कोहबरमे पलंगपर शैय्या देल जाइत छैक। मिथिलाक बियाहमे बरियाती संग वधूक विदागरी नहि होइत छैक। आनठाम वधू बरियाती संगे सासुर जाइत अछि। महादेव अपन बियाहक बाद मास दिन धरि सासुरे रहैत छथि (कुं. सं०-8/20)। कुमारसंभवम् (8/80)मे महादेव-पार्वती बियाहमे मात्र तीन फेरा लगबैत छथि। ई मात्र मिथिलेमे प्रचलित अछि आनठाम सात फेरामे सात वचन लेबाक सप्तपदी केर प्रथा अछि। ई सभ तथ्य महाकविक मैथिलत्व केर स्पष्ट संकेत थिक।

डॉ. दिवाकर जीक उपरोक्त मूल्यांकन जे एहि ठाम संक्षिप्त रूपें देल अछि, पोथीमे विस्तारपूर्वक अछि से एकदम सटीक अछि। महाकवि मिथिला के छलाह से संदेहमुक्त मूल्यांकन थिक।

(iv) भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व—

भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविकेँ मिथिलाक होयबाक विशिष्ट तर्क डॉ. दिवाकर अपन पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' केर पृष्ठ सं. 69सँ 72 धरि देलनि अछि। तर्कोपरान्त ओ कहैत छथि जे वस्तुतः ई मिथिलांचल केर सौभाग्य अछि जे मिथिलापभ्रंशक आदिकवि कालिदास आ अंतिम कवि विद्यापति दुनू एहि मिथिला धरतीक वरद् पुत्र छलाह।

विक्रमोर्वशीयम् केर भाषा महाकविक मातृभाषा आ मैथिलत्व केर निर्णायक संकेत करैत अछि। एहिमे विशुद्ध अपभ्रंशक 14पद आ प्राकृत-अपभ्रंश मिश्रित 16टा पद अछि। एहि पद सभमे 'क्ष' केर 'क्ख'मे विकास, 'ए' आ 'ओ' केर ह्रस्व उच्चारण, करण कारकमे निरनुनासिक 'ए' विभक्ति, संबंध परसर्ग 'क' एवं लोकगीतक टेक रूपमे अद्यतन मिथिलामे प्रयुक्त 'ओ', 'यौ', 'रे', 'ए', 'हो', जान' आदिक प्रयोग भाषा वैज्ञानिक निकषपर विक्रमोर्वशीयमक चारिम सर्गक एहि पद सभकेँ मिथिलापभ्रंश प्रमाणित करैत अछि। महाकविक रचना सभमे मिथिलापभ्रंशक स्रोत विद्यमान अछि जे महाकविक मैथिलत्व दिशि स्पष्ट संकेत करैत अछि। भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकवि कालिदासक मैथिलत्व निर्धारण हेतु डॉ. रामचन्द्र ठाकुर केर पोथी 'मिथिलापभ्रंश के आकर स्रोत' एवं प्रस्तुत लेखक (डॉ. रंगनाथ दिवाकर) केर 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकासमे मिथिला का योगदान' पोथी देखल जा सकैत अछि। डॉ. दिवाकर जीक इहो तर्क/मूल्यांकन सटीक अछि।

(v) राजस्व अभिलेख केर आधारपर महाकवि कालिदासक मैथिलत्व— महाकवि मिथिला के छलाह तकर अकाट्य पुष्टि राजस्व अभिलेख कऽ दैत अछि। डॉ. दिवाकर जे रेकर्ड (73सँ 74) उपस्थापित कयलनि अछि से आनठामक दाबी केनिहार सभकेँ चुप्प करा दैत अछि। ओ कहैत छथि—

महाकवि कालिदासकेँ कथित रूपसँ अपन कहयवला हर क्षेत्र तखन मौन भऽ जाइत अछि, जखन उच्चैठ (थाना सं०-89)क साबिक सर्वेमे कालिदासक डीह नामसँ खाता भेटैत अछि। ओ विवरणी सेहो प्रस्तुत कयलनि अछि—

मौजे- उच्चैठ, थाना नं. 89, थाना- बेनीपट्टी, जिला- दरभंगा

खाता	*खेसरा*	*रकबा*
231	*883*	*1-9-2*
	885	*1-3-17*
192	*880*	*1-0-8*

राजस्व अभिलेख केर कैफियतमे अंकित अछि कालिदास डीह। लगभग दू सय वर्षसँ बेसी पुरान एहि राजस्व अभिलेख (साबिक सर्वे शुरू 1896मे आ अंतिम खतियान प्रकाशन 1904ई. मे)केर तोड़ भारतवर्षक कोनो क्षेत्रक हाथमे नहि अछि। हाल राजस्व खतियानमे ई प्रविष्टि निम्न प्रकारसँ अछि—

खाता	*खेसरा*	*रकबा*
494	*2138*	*12 डिस्मिल*
	2139	*26 डिस्मिल*

महाकवि कालिदास समिति स्थान-उच्चैठ

खाता	*खेसरा*	*रकबा*
497	*2137*	*1 एकड़ 1 डिस्मिल*

अनावाद बिहार सरकार गढ़ कालिदास डीह। आजुक सरकारी आ सार्वजनिक भूमि कब्जा करबाक प्रतिस्पर्धामे सेहो ई भूमि बाँचल अछि। कालिदास डीह एक ऊँचगर

टीला जकाँ अछि जेकरा पूर्व अनुमंडल अधिकारी, बेनीपट्टी रघुनाथ पहाड़पुरीजी कंक्रीट केर विभिन्न मूर्ति आ फलक चित्रसँ सुशोभित करा देलनि। परोपट्टाक लोकमे एहि भूमिक लेल अशेष श्रद्धा अछि। एहि डीह केर माटिसँ भट्ठा बना लोक अपन नेना सभक अक्षरारम्भ करबैत छथि। सम्पूर्ण मिथिला (नेपाल सहित) मे ई डीह अत्यंत प्रशस्त अछि।

भारतवर्षक कोनो राज्य, क्षेत्र वा नगरक पुरान राजस्व अभिलेख वा साबिक सर्वेमे एक बित्ता जमीन महाकवि कालिदासक नामपर कतहु नहि छल आने एखनो अछि। प्राचीन राजस्व अभिलेखसँ समर्थित मिथिलाक उच्चैठ गामक दावीक आगू आन सभ क्षेत्रक दावी निर्मूल भऽ जाइत अछि।

पूर्वमे कहलहुँ अछि जे डॉ. दिवाकरजी एहि पोथीकेँ दूखंड आ फेर ओकरा उपखंडमे बाँटि कऽ मूल्यांकन कयलनि अछि। एहि ठाम आब एक उपखंड इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनकेँ माध्यमे ओ महाकविकेँ मैथिल सिद्ध करबाक प्रयास कयलनि अछि, जे सिद्ध होइत अछि। ओ पृष्ठ 75सँ 199 धरि सीताक चरित्र-चित्रण; उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास; महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा; कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका; महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनन्त पथकेर सहयात्री आ श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल केर माध्यमे मूल्यांकन कयलनि अछि, जकरा संक्षेपमे एहिठाम देखब समीचीन होयत—

महाकवि कालिदासक समय निर्धारणमे पुलकेशिन द्वितीय केर 634 ई.क ऐहोल अभिलेख आ महाकविक मालविकाग्निमित्रम् केर महत्वपूर्ण स्थान अछि। ऐहोल अभिलेखमे रविकीर्तिकेँ कालिदास समान श्रेष्ठ कवि कहल गेल अछि—

जिनेवेश्मसँ विजयतां रविकीर्ति:
कविताश्रित कालिदास भारवि कीर्ति:

स्पष्ट अछि जे कालिदासकेँ 634ई०केँ बाद नहि राखल जा सकैछ। एहिना पुष्यमित्र आ अग्निमित्रक कथा कहबाक कारणें महाकविकेँ ईसापूर्व दोसर शताब्दीसँ पहिने सेहो नहि राखल जा सकैछ। कारण जे इतिहाससँ ई सिद्ध भऽ गेल अछि जे अंतिम मौर्य सम्राट वृहद्रथकेँ सेना निरीक्षण काल ईसापूर्व 185ई.मे सेनापति पुष्यमित्र शुंग वध करैत शुंग राजवंश केर स्थापना कयने छलाह। हुनक पुत्र अग्निमित्र आ

मालविका केर कथा मालविकाग्निमित्रम्मे कहल गेल अछि। ओना बेसी विद्वान महाकविक अवस्थिति गुप्तकालमे चन्द्रगुप्त द्वितीय (राज्य काल 375-414ई.) केर समयमे मानैत छथि। मुदा इहो संदेह रहित नहि अछि। चन्द्रगुप्त द्वितीयक बेटी प्रभावतीक विवाह वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय (राजत्व काल 385-90ई.) संग भेल छल। प्रभावतीकेँ असमय विधवा भऽ गेलाक बाद प्रभावती आ हुनक दुनू नाबालिग पुत्र-दिवाकर सेन आ दामोदर सेन केर अभिभावक बनि कालिदासकेँ वाकाटक जयबाक बात सेहो कहल जाइत अछि, मुदा इतिहासमे एहिपर मतैक्य नहि अछि। यशोधर्मन (शक्तिकाल 515-543ई.) केर समय महाकतिक अवस्थिति सेहो मानल जाइत अछि। श्रीलंकाक राजा कुमारदास (अपर नाम कुमार धातुसेना, राजत्व काल 513-522ई.) आ कालिदासक संग-संग माटरामे भेल महाप्रयाण विषयक श्री लंकाक अनुश्रुति ओहिना प्रचलित अछि जेना मिथिलामे जाहि डारिपर बैसल ओकरे काटब, छलपूर्वक राजकुमारीसँ विवाह, तिरस्कार आ उच्चैठ भगवतीक कृपासँ अज्ञसँ विज्ञ बनबाक अनुश्रुति प्रचलित अछि। उच्चैठ भगवती आ मूर्खसँ विश्व विश्रुत होयबाक कालिदास विषयक जनश्रुतिक अभिलिखित प्रमाण तिब्बती बौद्ध धर्मयात्री धर्मस्वामिन (समय 1197-1264ई.)क मिथिला आ भारतयात्रा (1234-36ई.) हुनक उपासक चोस-दार कृत जीवनीमे उपलब्ध अछि। श्रीलंकाक इतिहास आ साहित्यमे राजा कुमारदासक राजनर्तकी द्वारा समस्यापूर्तिक पारितोषिक केर लेभमे माहुर खुआ कालिदासक हत्या, भेद खुजलापर कालिदासक राजकीय चितामे द्रवित राजा कुमार दास (जानकीहरणकार) आ एकर बाद हुनक पाँच रानीक प्रवेश प्राय: मान्य अछि।'

उपरोक्त कथन केर अतिरिक्त डॉ. दिवाकर जीक ई कथन सेहो एहिठाम उद्धृत करब उपयुक्त बुझाइत अछि—

''महाकवि कालिदासक जीवन यात्रा भारतवर्षक बेनीपट्टीसँ शुरू भेल। मिथिला, पाटलिपुत्र, मालिनी नदी कात बसल कोटद्वार (कण्व ऋषिक आश्रम, उत्तराखंड), उज्जैन, मालवा, मन्दसौर आदि स्थान सभकेँ अपन अपूर्व आभासँ आलोकित करैत ई अप्रतिम जीवन ज्योति श्रीलंकाक वर्तमान माटरा शहरमे कुमारदासक संग अनन्त ज्योतिमे विलीन भऽ गेल। मिथिलाक बेनीपट्टीसँ श्रीलंकाक माटरा तक केर महाकवि कालिदासक ई अप्रतिम जीवन-यात्रा दुनू देशक अनुपम धरोहर थिक।

एकर पुष्टि डॉ. दिवाकरक दोसर खंड लघु नाटिका 'महाकविक महाप्रयाण' केर घटना, वार्तालाप, वाक्यांश, पात्रादिसँ होइछ। नाटिका सात दृश्यमे विभक्त अछि। कालिदासक मिथिला आ कुमारदासक श्रीलंकाक माटराक परिदृश्य

केर सत्याश्रित अवलोकनमे किछु वाक्यांश प्रस्तुत करब एहिठाम उपयुक्त हयत। एतए ई कहब उचित जे डॉ. दिवाकर आँखि-मुनि महाकवि कालिदासकेँ भगवतीक कृपासँ एकहि रातिमे जतेक पोथी पलटि देब सब कंठाग्र भऽ जायत केर दंत कथापर विश्वास नहि करैत छथि। एकरा वैज्ञानिक आधार दैत कहैत छथि जे भगवतीक प्रेरणासँ ओ महर्षि कण्वक आश्रम कोटद्वार जाइत छथि। एतहि सिंहल युवराज कुमारदाससँ परिचय होइत अछि। मिथिला आ श्रीलंकामे प्रचलित अनुश्रुति सभक वैज्ञानिक समीक्षा करैत डॉ. दिवाकर एकरा सभक उपयुक्तताकेँ रेखांकित करैत छथि। नाटिकामे कालिदासकेँ मूर्ख आ जाहि डारिपर बैसल ओकरे कटैत, छलपूर्वक राजकुमारीसँ विवाह, विद्योत्तमा द्वारा तिरस्कार, पुरुषार्थपर उठाओल गेल प्रश्नपर कालिदासक प्रण जे तोहर घमंड चूरबौ आ फेर जयनाद करैत कालिदासक गृहत्याग, उच्चैठ भगवतीक प्रेरणा आ वरदानसँ कण्व ऋषिक कोटद्वार आश्रममे शिक्षा ग्रहण, श्रीलंकाक युवराज आ मित्र कुमारदासकेँ देल तीन वचनकेँ पूरा करबाक लेल माटरा गमन, ओहि ठाम सूर्यास्त कालक सूक्ष्म मुदा मनोरम वर्णन, समस्यापूर्ति, राजनर्तकी कामसेना द्वारा लोभवश माहुर खुआ कालिदासकेँ मारि देबाक वर्णन जे डॉ. दिवाकर कयलनि अछि से विलक्षण अछि। श्रीलंकाक राजा कुमारदासकेँ जखन एहि बातक जनतब होइत छनि तऽ ओ अति विह्वल भऽ जाइत छथि। हुनकर दर्द असीम भऽ जाइत छनि आ ओ पुत्र कीत्तिसेनाकेँ राजमुकुट पहिरा कालिदासक चितामे प्रवेश कऽ जाइत छथि। फेर हुनक पाँच रानी सेहो ओहि चितामे प्रवेश करैत छथि।

एहि क्रममे डॉ. दिवाकर द्वारा प्रणयन आ शब्द संधान सभक लक्ष्य मात्र महाकवि कालिदासक मैथिलत्वक दिग्दर्शन अछि। एहिमे दिवाकरजी पूर्ण सफल भेल छथि। कुमारदास आ कालिदासक मुँहसँ नि:सृत संवाद मिथिला आ श्रीलंका संबंध आ दुनू महाकविक एक दोसराक प्रति नेह आ अपना-अपना देशक प्रति आत्मीयता प्रकट करैत अछि।

नाटिकाक पहिल दृश्यमे नट-नटीक माध्यमसँ नाटिका विषयमे जनतब अछि तऽ अनुचर केर फकरा सभसे भरल संवाद आकृष्ट करैत अछि। दोसर दृश्यमे विद्योत्तमा आ पंडित सभक शास्त्रार्थ वैदुष्यपूर्ण अछि। तेसर दृश्यमे विद्योत्तमा आ कालिदास संवादमे कालिदासक अज्ञानता, हिनकर तिरस्कार आ नपुंसक कहलापर जागल कालिदासक पुरुषार्थ आ प्रण केर नीक समायोजन भेल अछि। एहि ठाम प्रियंवदा एक सुन्दर गीत गबैत छथि मुदा विद्योत्तमा आहत छथि। परित्यागक बात जानि ओ विद्योत्तमाकेँ गर्दनिमे घैल बान्हि नदीमे डूबि आत्महत्या करबाक निर्णयसँ रोकैत छथि।

दृश्य-चारिमे कुमारदास आ कालिदासक संवाद अनुपम भेल अछि। एहि ठाम कुमारदास कालिदाससँ तीन वचन लैत छथि। प्रथम वचन जे विद्योत्तमाकेँ क्षमा करैत हुनका संग राखब, दोसर जे विक्रमादित्यक आमंत्रण स्वीकार करब आ तेसर जे एक बेर हमर मातृभूमि माटरा आयब। एहि दृश्यकेँ विशिष्ट बनबैत अछि लंकापति रावण, कुंभकर्ण, मेघनाद आ विभीषण संबंधी उद्‌गार एवं देश आ धर्मसँ संबंधित दृष्टि। एखन धरि हम रावण संहिता आ शिव तांडव स्तोत्रक विषयमे मात्र जनैत रही। रावण केर अरुण संहिता, ऋग्वेदपर भाष्य आ रावणीयम्, अर्क प्रकाश, कुमारतंत्र, नाडी परीक्षा, इन्द्रजाल, प्राकृत कामधेनु, प्राकृत लंकेश्वर केर रचनाकार रूपमे रावणक परिचय हमरा एहि संवादे सभसँ भेटल। कुमारदास कुंभकर्ण आ मेघनादकेँ भ्रातृ-धर्म, पुत्रधर्म आ देशधर्मक प्रतिमान कहैत छथि जे निज देशक रक्षार्थ अपन प्राण दऽ देलनि। ओतहि ओ विभीषणकेँ देशद्रोही कहैत छथि। संवाद केर किछु अंश उद्धृत करैत छी—

कुमारदास : अहाँ समक्ष एक रहस्य अनावृत करैत छी मित्र! जेना भगवान् राम सम्पूर्ण भारतवर्षमे पूजित छथि तेना महाबली दशानन हमर सम्पूर्ण देशमे पूजित नहि छथि। ओ किछु भागमे पूजित छथि। ई सत्य अछि। मुदा इहो सत्य अछि जे श्रीलंकाक महानायक रूपमे ओ सम्पूर्ण देशमे प्रतिष्ठित अवश्य छथि। हुनका संगे महाबली कुंभकर्ण आ मेघनादकेँ हमरा ओतए असीम प्रतिष्ठा प्राप्त अछि। भ्रातृधर्म, पुत्रधर्म आ देशधर्मक प्रतिमान छथि ई दुनू। राम-लक्ष्मण भले जे रहल होथि, लंकाक लेल तऽ ओ आक्रमणकारी छलाह आ कुंभकर्ण-मेघनाद अपन कर्तव्य निर्वहन कयलनि। देशक आनपर प्राणोत्सर्ग कयनिहार ई दुनू नरश्रेष्ठ जन-जनकेर हृदयमे वास करैत छथि।

लोक मानैत छथि जे एहि कुलघाती आ देशद्रोही विभीषणक कारणेँ महाबली रावण पराजित भेल छलाह। विद्या, शास्त्र, शक्ति, अस्त्र-शस्त्र, सम्पन्नता सभमे श्रेष्ठ रहलाक बादो एकमात्र एहि देशद्रोही विभीषण केर कारण महाबलीक पराभव भेल। एहि कारणेँ एहि कुलघातीकेँ हमरा देशमे कहियो प्रतिष्ठा नहि भेटि सकल। कोइ अपन नेनाक नाम विभीषण नहि रखैत छथि। धर्मक मिथ्या आलम्बन लऽ देश संग घात करब कथमपि उचित नहि। कारण जे रहल हो मुदा श्रीराम दल तऽ लंकापर आक्रमण कयने छल। देशपर आक्रमण कयनिहारक प्रतिकार करबाक चाही आ एहन संकटक स्थितिमे देशत्याग करब कखनो धर्म नहि भऽ सकैछ।

कालिदास : सर्वथा सत्य मित्र। देशक रक्षा करब सभसँ पैघ धर्म थिक। जे धर्म देशहितपर भारी पड़ि जाय ओहि धर्मक परित्याग करब, इएह उचित धर्म

थिक। धर्मभ्रष्ट भेलापर प्रायश्चित केर प्रावधान अछि, मुदा देशसँ विश्वासघातक कोनो प्रायश्चित नहि छैक। धर्मच्युत व्यक्ति उचित प्रायश्चित कऽ पुनः अपन धर्ममे आपस आबि सकैत छथि, मुदा राष्ट्रदोहक कारणेँ राष्ट्रकेँ भेल क्षति वा पराजय केर भरपाई संभव नहि अछि। अपन मातृभूमिक लेल शीशोत्सर्ग कयनिहारसँ पैघ कोइ नहि। शहीद वा बलिदानी सर्वदा नमस्य स्तुत्य वंदनीय पूजनीय होइत छथि। हम सभ हुनकर वंदना करैत गर्वित होइत छी।

कुमारदास : सर्वथा सत्य! सुनैत छी जे हमर पितामह धातुसेना नेनपनेसँ वैराग्य धारण कयने छलाह। जखन देशपर संकट आयल आ दमिल राजा हमर देशकेँ पददलित कयलनि तखन एक दिन धातुसेना देशक लेल धर्मक त्याग कयलनि। ओ धर्म केर निशानी काषाय रंगक अन्तरवासक, उत्तरासंग आ संघाटी एहि तीनू चीवर केर त्याग कयलनि। जपमाला आ भिक्षापात्रक परित्याग करैत ओ हाथमे तरूआरि उठा लेलनि। अपन अतुलित साहस आ शौर्यसँ निज देशकेँ राजा पीठ्य केर चाँगुरसँ स्वतंत्र करओलनि।

कालिदास : हम अहाँक ओहि महान् पितामह धातुसेनाकेँ प्रणाम करैत छी। ओ वस्तुतः धर्ममर्मज्ञ छलाह। मातृभूमिक रक्षा धर्मक रक्षा थिक। धर्म देशसँ पैघ कथमपि नहि भऽ सकैछ। देशसँ पैघ कोनो धर्म नहि। (दक्षिण दिशामे दुनू हाथ जोड़ैत छथि) नमन अशेष हे! धर्मपालक धातुसेना!

साँचे एहि संवाद सभसँ डॉ. दिवाकर केर राष्ट्रवादी सोच झलकैत अछि। आइ जे धर्मक नामपर असहिष्णुता उभरि रहल अछि ओहिपर प्रहार करैत दिवाकरजीक एहि संवाद सभसँ हमरा भारत-पाक मध्य 1965 केर युद्धमे परमवीर चक्रसँ सम्मानित शहीद अब्दुल हमीद मोन पड़ि गेलाह। धर्मसँ पैघ राष्ट्रकेँ मानि ओ महावीर देशक लेल आत्मोत्सर्ग कयने छलाह। डॉ. दिवाकर केर जे राष्ट्रवादी दृष्टि अभरल अछि, ई साँचे समसामयिक आ श्लाघनीय अछि। आगू जे कालिदासक संवाद अछि सीताक लेल ओ मर्मकेँ छूबैत अछि।

कालिदास : हम अवश्य ओ सब जगह देखब जतए मैथिली दशानन रावण केर कैदमे रहल छलीह। जगत जननी जानकी मिथिलेश महाराज जनक केर पुत्री छलीह, सम्पूर्ण मिथिलाक गौरव! हम जन्मसँ मैथिल छी। एहि संबंधसँ ओ हमर आराध्य अग्रजा भेलीह, नमस्य माता भेलीह। हमरा सभक देशमे बहिन वा बेटीक सासुरमे कोनो कष्टक विषयमे जानि नैहरसँ पुछारी होइत छैक। पता नहि माता सीताक कष्ट सुनि नैहर मिथिलासँ पुछारी भेल छल वा नहि मुदा हम ई काज अवश्य करब। हम ओहि जगह सभपर अवश्य जायब। ओहि दर्दकेँ अनुभव करबाक प्रयास

करब जे माता सीता भोगने होएतीह। कमसँ कम अपन दू ठोप नोरसँ माता सीताकेँ अपन नैहरक अनुभूति तऽ अवश्य कराएब हम। हे जनक दुलारी! हे मैथिली!! ओह!!

एहि मर्मस्पर्शी संवादसँ कालिदासक मैथिलत्व पुष्ट भेल अछि।

पाँचम दृश्यमे कालिदास विद्योत्तमा संवाद अछि। परित्यागक बाद दुनूक मिलन होइत अछि। छठम् दृश्यमे कालिदास आ राजनर्तकी कामसेनाक संवाद अछि। एहि संवाद सभक माध्यमसँ डॉ. दिवाकर महाकवि कालिदासक जे सृजन प्रक्रियापर अभिनव रोशनी देने छथि ओ साँचे विलक्षण बनल अछि। डॉ. दिवाकर केर सूक्ष्म दृष्टि अनुपम अछि। किछु संवाद देखल जाय—

कालिदास : समुद्र कात सूर्यास्त केर विलक्षण दृश्य देखल। लागल जेना भगवान् भास्कर भरि दिन ताप बिल्हैत-बिल्हैत ततेक गर्म भऽ गेलाह जे संध्याकाल शीतलताक लेल स्वयं समुद्रमे सन्हिया गेलाह। सम्पूर्ण क्षेत्र सिन्दूरी शोभासँ शोभायमान छल जेना श्रीलंकाक समुद्रमे सुरक्षित समस्त स्वर्ण भंडार सतहपर आबि सोनाक सेतुबंध बना देने हो।

कामसेना : ओह विलक्षण।

कालिदास : हम अपलक ई अपूर्व दृश्य निहारि रहल छलहुँ। ओह! आधा सूर्य समुद्रमे आ आधा बाहर। लगैत छल जेना कोनो स्वर्ण परात ओन्हल हो वा जेना समुद्रपर अर्द्धचन्द्राकार कोनो कनक भवन बनल हो। डूबल भाग सेहो ओहिना देखा रहल छल। ई भागमे जेना सोनाकेँ अपना दिशि खींचबाक शक्ति हो आ सागरमे सुरक्षित समस्त स्वर्ण भंडार आकर्षित होइत ओतहि जमा भऽ गेल हो।

कामसेना : ओह! सुन्दर बिम्ब विधान!

कालिदास : देवी! जेना-जेना अन्हार बढ़ि रहल छल लगैत छल जेना वसुधा देवीक माथपर सीउथ बनि रहल हो। एक दिशि समुद्रक एक कात केर गाछ-वृक्षक हरीतिमामे सन्हिआयल अन्हार आ दोसर दिशि समुद्रमे पसरल अनन्त अन्हार जेना वसुधा देवीक अनन्त केश राशिकेँ सीउथ दू भागमे बाँटि देने हो आ एहि सीउथमे सूर्यक रेख जेना सिन्दूर बनि सुशोभित हो!

कामसेना : सरिपहुँ अपने अद्‌भुत छी!

कालिदास : तखने बुन्नी पड़ब शुरू भऽ गेल। हम दृश्यावलोकनमे तेहन लीन रही जे हम बरखामे भीजैत रहलहुँ मुदा आँखि हटा नहि सकलहुँ। वसुधा

देवीक सीउथ केर सिन्दूर जेना सर्वत्र पसरि गेल हो आ बरखाक बुन्नी जखन आरक्त समुद्रक सतहपर खसैत छल तखन जे लघूर्मि उठैत छल ओ सेहो छोट-छोट स्वर्ण कलश समान चमकि वृत्त बनि समुद्रमे समा जाइत छल।

ओह! हम आनंदविभोर भऽ भीजैत रहलहुँ तथापि हटि नहि सकलहुँ। बुन्न खसलापर बनैत लघु स्वर्णकलश आ वृत्त सभक आनंद लैत रहलहुँ।

कामसेना : ओह! एहन सूक्ष्म दृष्टि!

कालिदास : देवी! हम एहि समस्त भावकेँ लिपिबद्ध करब आ भोरमे अहाँके सुनाएब। जे भावचित्र अहाँके सर्वश्रेष्ठ लागत ओहिपर आर परिश्रम करब आ जखन ओ हमर मनोनुकूल भऽ जाइत तखन ओकरा अपन आगामी रचनामे स्थान देब।

कामसेना : हमरा जे सर्वश्रेष्ठ लागत?

कालिदास : हँ देवी! सृजन पाठके लेल ने! हम बड़भागी छी जे अहाँ सन विदुषी एहि सृजन-प्रक्रियामे हमर सहयोग करब। पूर्वमे एक बेर किछु एहने दृश्यक साक्षात्कार हमरा अपन क्षेत्रक महावराह क्षेत्रमे भेल छल आ ओतँ आकाशगंगाक अवतरण केर कल्पना साकार भेल छल। देखै छी एहि बेर की होइत अछि।

डॉ. दिवाकर केर ई सूक्ष्म दृष्टि अनुपम अछि। महाकवि कालिदासक सृजन-प्रक्रियासँ साक्षात्कार करएबाक हुनक ई प्रयास प्रशंसनीय अछि।

नाटिकाक अंतिम सातम दृश्यमे श्रीलंकाक वर्णन करैत एक गीत अछि। समस्याक प्रथम पंक्ति—

कमल: कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते।

पढ़िते कामसेना एकर पूर्ति करैत छथि—

बाले! तब मुखाम्भोजे कथमिन्दीवर द्वयम्॥

राजा 'बाले' शब्दपर संदेह करैत छथि। कठोर पूछताछ बाद कामसेना सब कथा कहैत छथि जे दोसर पंक्ति कालिदासक छल। हम लोभवश हुनका माहुर खुआ मारि देलहुँ। लाश मंगाओल जाइत अछि। राजकीय चिता सजैत अछि आ मित्रक रक्षा नहि कऽ सकबाक दंशसँ व्यथित कुमारदास पुत्रकेँ राजतिलक करैत चितामे पैसि जाइत छथि। एकर बाद कुमारदासक पाँच रानी सेहो चितामे प्रवेश करैत छथि। एहि दृश्यमे कुमारदासक एकल विलापक मुद्रा भाव-विभोर करैत अछि—

कुमारदासक : (एकल विलापक मुद्रा) कालिदास! हमर मित्र, हमर सखा, हमर बंधु! हमरा क्षमा करब, हम अहाँक रक्षा नहि कऽ सकलहुँ। ओह! एक बेर गुरुकुलमे अपना लेल अग्रज आ बंधु संबोधन सुनि अहाँ द्रवित भऽ गेल छलहुँ। हमर अंक मालिकापर अहाँ केहन भाव-विह्वल भेल छलहुँ मित्र! आ हम केहन अधम आ अभागल जे अपन बंधुकेँ बचा नहि सकलहुँ। हम कोन मुहसँ विद्योतमाक सोझाँ जा सकब? हुनकर पैघ-पैघ आँखिसँ अश्रु-प्रवाह कोना देखि सकब हम? हमरे देल वचन केर निर्वाहक कारणेँ महाकवि कालिदास आ विदुषी विद्योत्तमाक पुनर्मिलन भेल छल आ एहि अनुपम युगल जोड़ीकेँ तोड़बाक पापो हमरे माथ बथायल। हाय रे हमर भाग्य! कालिदास आ विद्योत्तमाक बहुत पैघ ऋण हमरापर, हमर देशपर चढ़ि गेल अछि। एहि महाऋणसँ हम कोना उऋण होयब हे महादेव!

कुमारदास : (विलाप करैत) हे मित्र कालिदास! जे हाथ कहियो अहाँकेँ उठा हृदयसँ लगओने छल वैह हाथ आइ अहाँके मुखाग्नि देलक! ओहि दिन अंक मालिका काल हमर हाथ काँपल नहि छल ओ अत्यन्त प्रफुल्लित छल मुदा आइ... आइ मुखाग्नि दैत काल (थरथराइत दुनू हाथ उठबैत) ई दुनू हाथ काँपि रहल छल। हमरा क्षमा करब मित्र! अहाँ हमरा देल अपन तीनू वचन निभा देलहुँ। हमरासँ भेंट करय हमर मातृभूमि श्रीलंका अयलहुँ मुदा हम अकिंचन अपन राजधर्मक निर्वहनमे असफल भऽ गेलहुँ। अहाँ अपन दू ठोप नोरसँ सीता माताकेँ अपन नैहर मिथिलाक अनुभूति करएबाक मार्मिक कथा कहने रही से हमरे कारण संभव नहि भऽ सकल। हे मित्र हमर! हमरा माफ करब? हमर देशक माटि हमर महाकवि मित्रकेँ उदरस्थ कऽ लेलक तऽ एकर प्रतिदान तऽ हमरे करए पड़त। अहाँकेँ एतएसँ एसकर कोना प्रस्थान करऽ दी मित्र? हम वचन देने रही जे आपसीमे अहाँक संग मिथिला जायब। जहिना भारतीय सभ प्राण दइयोकेँ अपन देल वचनक रक्षा करैत अछि तहिना हम सिंहलवासी सब सेहो अपन देल वचनक रक्षामे प्राणक मोह नहि करैत छी। हम अपन देल वचनक रक्षा अवश्य करब आ अहाँक संग अपन अनन्त यात्रा शुरू करब। संभव अछि जे एहि अनन्त यात्रामे कहियो हमरा अहाँक संग मिथिलाक दर्शनक सौभाग्य भेटि जाए। ओहि दिन हम कृत्-कृत् होयब आ तखने हमरा एहि जीवन चक्रसँ मुक्ति आ मोक्ष भेटि सकत। हे हमर देश! हमरा क्षमा करब। महाकविक कालिदासक सिंहल देशमे हत्यासँ भारतवर्षक ऋण हमर देशपर चढ़ि गेल अछि। हम कथमपि नहि चाहब जे हमर देशपर कोनो आन देशक ऋण रहय। तेँ हे हमर देश! क्षमा करब हमरा! हम आब आर अहाँक सेवा नहि कऽ सकब! हे महाकवि! आइ मित्रधर्मक निर्वहन करैत भारतवर्षक श्रीलंकापर चढ़ल ऋणकेँ हम

चुकता करब। अहाँक देल अपन वचन निर्वहन लेल हम अनन्त पथपर अहाँक संग चलब। प्रायश्चित करबाक लेल हम आबि रहल छी मित्र! एहि पावन नील गंगा नदीक तीरपर हमरा सभक महाप्रयाण संग-संग होयत! हमरा क्षमा करब मित्र! हमरा क्षमा करब हे हमर देश!

कुमारदास युवराजक हाथसँ मुकुट अपना हाथ लऽ युवराजकेँ मुकुट पहिरा अपन माथक तिलकसँ युवराजकेँ तिलक करैत कालिदासक धधकैत चितामे पैसि जाइत छथि। हाहाकार मचि जाइत अछि। फेर पाँच बेर विभिन्न स्त्री स्वरमे 'प्राणनाथ', 'स्वामी', 'लंकेश्वर', 'प्राणेश्वर' आ 'हृदयेश्वर' शब्द अभरैत अछि। वातावरणमे अनेक प्रकारक करुण क्रन्दन केर स्वर, हे महादेव, हे अवलोकितेश्वर केर आर्त्तनाद, चीत्कार, गूँज आ कोलाहल पसरि जाइत अछि। (यवनिका पात)

उपरोक्त मूल्यांकन ओ लघुनाटिकाक वाक्यांश केर मादे डॉ. दिवाकर प्रत्यक्ष प्रमाण स्वरूप श्रीलंकाक माटरा शहर केर स्थल एवं एतद् संबंधी जे सबूत प्रस्तुत कयलनि अछि तकरो अवलोकन आवश्यक—

''माटरामे महाप्रयाण स्थलीपर रोपल सात बोधिवृक्ष (माटरा बोधिय), दुनू महाकविक समाधिस्थली, एतए भगवान बुद्ध केर मन्दिर निर्माण, माटरामे कालिदास मार्ग (नीलवाला बाइपासक आर्यतिलक मवाथा सड़क केर सोझाँसँ बहराइत मार्ग जे आगू रहुला रोडमे मिलैत अछि) केर अवस्थिति, कालिदास-कुमारदास विषयक अनुश्रुति आदि एहि मार्मिक घटनाक सत्यता केर उद्घोष करैत अछि। कालिदास कुमारदास विषयक ई मर्मन्तुद प्रसंग सिंहल ग्रंथ निकाय संग्रह, सद्धर्म रत्नाकर, राज रत्नाकर, राजावलीय, पूजावली (1265ई.), पेरू कुम्बसिरित (पराक्रमबाहु चरित, 15म शताब्दी), एच जोसेफ एन्डू फेरन्दाक कालिदास चरिताया (1887ई.), एफ कूरे केर कालिदास नृत्यापोता (साइमन दे सिल्वा सेने विरत्ना आ मुहरन्द्रम द्वारा The Historical Tragedy entitled Kalidas रूपमे सम्पादित, 1887), शताधिक शोध-प्रबंध, नागिरीकाण्डा शिलालेख (सिद्धम्! महाकुमारातसा-राजा अपाया [हा बामनागा] रीय-वहेर अताया केनावि चदा कोतु....)सँ समर्थित अछि। सेनार्थ पारानविताना (Nagrikanda Rock Inscription of Kumardas, EZ, Vol.4), बी. गुणशेखर (राजावलीय केर सम्पादकीय), एम. मेघनकर (पूजावली केर भूमिका), गेगर (चूलवंश), एच विद्याभूषण/जीआर नादार्गीकर (Kumardas and his place in Sanskrit literature), विलियम नायटन (History of Ceylon), रिया डेविड्स (Journal of the Deptt. of Letters) ए.एम. होकार्ट (Mortuary use

of Bo trees), गामिनीजी पूंछीहेवा (The Historic Tales of Matara) प्रभृति विद्वान कालिदास-कुमार दास विषयक एहि प्रसंगकेँ सत्य मानैत छथि।

एहि आधारपर महाकवि कालिदासक अंतिम समय 522ई० मानल जा सकैछ। 70 वर्ष केर आयुक अनुमान करी तखन महाकविक समय 452-522ई. मानल जा सकैछ। डॉ. दिवाकर कालिदासक समय एकरे मानने छथि।

डॉ. रंगनाथ दिवाकर जीक उपरोक्त मूल्यांकन, शोध निर्माण, प्रस्तुत लघु नाटिकाक संग एतद् संबंधी साक्ष्यक संग जे 'महाकविक महाप्रयाण'क प्रणयन भेल अछि तकर निष्कर्ष रूपें अंतमे ओ स्वयं फेर कहैत छथि—

राजशेखर तीन एहन कालिदासक चर्च करैत छथि जाहिमेसँ किनको कोइ कखनो शृंगार आ लालित्यमे जीति नहि सकल, मुदा महाकविक लोकप्रियता आ हुनक रचना सभक सरसता-सूक्ष्मतासँ तीन की तिरपन कालिदास भऽ जाथि तखनो कोनो आश्चर्य नहि।

डॉ. दिवाकर बहुत रास कालिदासक नाम उद्धृत करैत अनेक कालिदासकेँ सोझाँ लबैत छथि। ओ कहैत छथि जे कालिदास नामक एहन आकर्षण आ प्रभाव सरिपहुँ अद्भुत अछि। ओ फेर बहुत रास काव्यक नामक उल्लेखोपरान्त कहैत छथि जे एहन काव्य सभक रचयिता रूपमे सेहो कोनो-ने-कोनो कालिदासक नाम अबैत अछि। मुदा महत्वपूर्ण प्रश्न अछि जे एहि सभमे मैथिल कालिदास के छथि? तकर प्रत्युत्तरमे ओ स्वयं कहैत छथि जे प्रश्न ओझरायल अवश्य अछि, उत्तरो स्पष्ट नहि अछि, तथापि मेघदूतम्, रघुवंशम्, विक्रमोर्वशीयम् आदिक रचयिता रूपमे प्रसिद्ध कालिदास निर्विवाद रूपसँ मैथिल छलाह जे आजीविका लेल मालवा क्षेत्रक दशपुर उज्जैनकेँ अपन कर्मक्षेत्र बनओने छलाह। एहिपर शक करब सर्वथा अनुचित! मुदा कालिदासके समस्त भारतीय हुनका 'अपन' मानैत छथि। महाकविक ई राष्ट्रीय स्वरूप सरिपहुँ मुदित करैत अछि। महाकवि अनुपम छथि। हिनक कीर्तिकलश केर आसवसँ सम्पूर्ण विश्व विस्मित होइत आप्यायित अछि। विश्व वाङ्मयमे महाकवि सभक मध्य कालिदास अपना सन एसकरे छथि। निष्कर्षत: कहि सकैत छी जे महाकवि कालिदास मैथिल छथि। महर्षि वाल्मीकि आ महर्षि व्यासकेँ 'ब्रह्मा' (सृजनकर्ता) मानल जाए आ महाकवि कालिदासकेँ 'न भूतो न भविष्यति' महाकवि प्रातिभ!'' *(पृष्ठ 200)*

एहि तरहेँ डॉ. रंगनाथ दिवाकर द्वारा रचित 'महाकविक महाप्रयाण' एक शोधग्रंथ तऽ अछिये साहित्य-संसारमे अद्वितीय सेहो अछि। परिश्रमपूर्वक ओ एतेक प्रसंग

सभ देने छथि जे सभक चर्चा करब दुष्कर अछि। महाकवि कालिदासक मैथिलत्व केर संबंधमे एतेक सामग्री एक ठाम पूर्वमे कतहु नहि आएल अछि। मैथिलीमे तऽ ई प्रथमे अछि। शोधार्थी लोकनिक लेल ई ग्रंथ अत्यन्त उपयोगी आ लाभदायक अछि। संगहि पाठक, आमजन ओ विद्वतजन लेल उच्चस्तरीय ई पोथी मीलक पाथर सिद्ध होयत। लगन ओ परिश्रमपूर्वक लिखल ई ग्रंथ कालिदासक संदर्भमे बहुत रास भ्रांति ओ संशयकेँ दूर करत। एहि लेल डॉ. दिवाकर धन्यवादक पात्र छथि। संगहि अनुप्रास प्रकाशन केर श्री दीप नारायणजी सेहो एहिमे खूब परिश्रम कऽ ग्रन्थके अन्तरराष्ट्रीय स्तरक बनएबामे कोनो कसरि नहि छोड़लनि अछि। प्रुफ रीडिंगसँ लऽ कऽ एकर गेटअप-सेटअप सेहो विलक्षण बनओलनि अछि। खासकऽ श्री मिथिलेश कुमार, भा.प्र.सेवा (सेवानिवृत) द्वारा बनाओल एकर मुखपृष्ठ सेहो आकर्षक ओ मनोहारी अछि। श्रीलंकाक माटरामे कालिदासक धधकैत चिता आ ओहिमे हुनक मित्र कुमारदासकेँ मित्रधर्म निर्वहन हेतु प्रवेश कऽ जेनाइ मार्मिक एवं हृदय स्पर्शी क्षणक चित्रावली उकेरल अछि। कुमारदासक पाँचू रानीक भाव स्पष्ट दृश्यांकित अछि। कवर-पृष्ठक भीतरी भागमे देल चित्र सेहो नयन-सुख दैत अछि।

हँ, एहि पोथीक संदर्भमे हमरा जे अखरल ओ अछि एकर मूल्य। ८००/- (आठ सय) रूपयामे आम पाठक लोकनि लेल खरीद कऽ पढ़ब सहज नहि। नाटकक संवादमे कतहु-कतहु अर्वाचीन शब्दक प्रयोग सेहो खटकैत अछि। मुदा समग्रतामे कही तऽ जेहने वैदुष्यपूर्ण महाकविक कालिदासक मैथिलत्वक निर्धारण भेल अछि ओहने विलक्षण नाटक सेहो अछि। एक संग्रहणीय एवं विलक्षण पोथी। अंतमे एहि अनुपम ग्रंथक लेल दुनू-गोटेकेँ धन्यवाद समर्पित करैत अपन कलमकेँ विराम दैत छी।

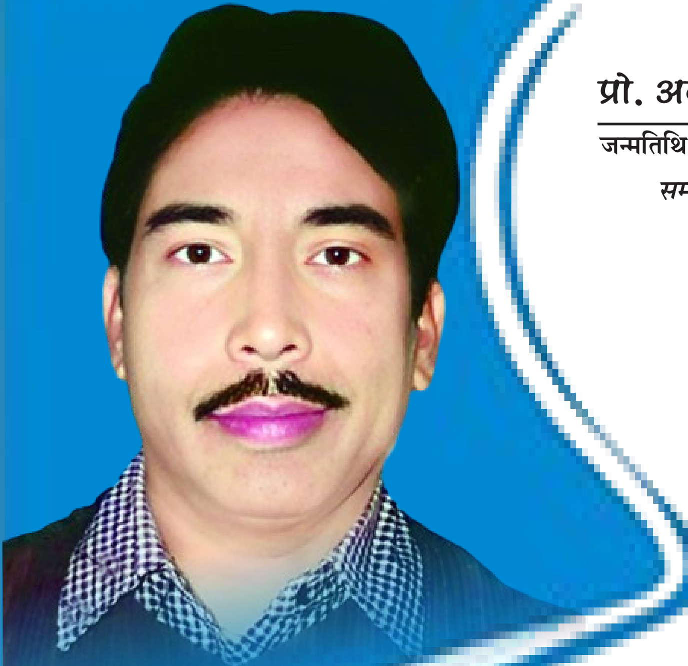

प्रो. अवधेश कुमार झा

जन्मतिथि : *15 मइ 1960, समस्तीपुर।*

सम्पर्क : *+91 6206 478 342*

प्रो. अवधेश कुमार झा केदार सन्त रामाश्रय महाविद्यालय, सरायरंजन (समस्तीपुर)मे हिन्दीक विभागाध्यक्ष छथि। 'दैनिक हिन्दुस्तान' सहित अन्य अनेक पत्र-पत्रिकासँ संवाददाता व पत्रकार रूपमे सक्रियतासँ जुड़ल छथि। शोधग्रंथ 'रामचरितमानस की प्रकरी कथाओं का दार्शनिक विश्लेषण' पी-एच. डी.क शोध प्रबंध अछि। हिनक अनेक रचना प्रकाशित अछि जाहिमे 'सांप्रदायिक सौहार्द की स्थापना में बिहार के लोकदेवताओं का योगदान' लघु शोध परियोजना महत्त्वपूर्ण अछि। हिनक 'भावांजलि', 'मैथिली भगवती गीत' 'सती वंदना', 'राष्ट्र रत्न कर्मयोगी', हिंदी खंडकाव्य भगवान शिव वर्णित अमर कथा आदि रचना लोकप्रिय भेल। फिल्म 'जय बाबा खुदनेश्वर' आ 'बाबा अमर केवल' केर पटकथा लिखलनि। अन्य रचना सभमे 'आदि कुंभस्थली सिमरियाधाम माहात्म्य', 'जय माँ सरस्वती', 'जय माँ सती' आदि दर्जनाधिक रचना प्रकाशित छनि। अवधेशजी अनेक सम्मान-पुरस्कारसँ अलंकृत छथि जाहिमे महाकवि कालिदास सम्मान, महाकवि विद्यापति सम्मान, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, राष्ट्रकवि दिनकर सम्मान, विद्या वाचस्पति सम्मान, स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीय शिखर सम्मान, महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला सम्मान आदि प्रमुख अछि।

मिथिला-मैथिलीक अन्यतम कीर्तिमान : 'महाकविक महाप्रयाण'

मिथिला आओर मैथिली साहित्यक अन्यतम कीर्तिमान अछि डॉक्टर रंगनाथ दिवाकर जीक अत्यंत उत्कृष्ट शोधपरक पुस्तक महाकविक महाप्रयाण। ई शोध परक अत्यंत उत्कृष्ट पुस्तकमे डॉक्टर चौधरी प्रमाणित कयलनि अछि, जे विश्व साहित्यक महान साहित्यकार महाकवि कालिदास शत-प्रतिशत मैथिल छलाह। एखनि धरि बहुत रास मैथिल विद्वान महाकवि कालिदासकेँ मैथिल अवश्य मानैत छलाह, किंतु प्रमाण नहि प्रस्तुत कऽ सकल छलाह। तेँ लऽ कऽ महाकवि कालिदासक संबंधमे हुनका मैथिल होयबाक बावजूद, अन्यत्रक लोक अन्य स्थानक दावा करैत छलाह। हमरा मोन अछि लगभग उनैस सौ तेरासी-चौरासी ईस्वीमे, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक हिंदी विभागक प्रोफेसर डॉक्टर श्री नारायण सिंह प्रतिदिन चुनौती दैत छलाह जे कोई भी, कवि कालिदास को मिथिला का मैथिल सिद्ध कर दे तो मैं उसे इनाम दूंगा।

आइ जँ ओ महापुरुष जीवित रहितथि, तऽ तहन डॉक्टर रंगनाथ दिवाकरजीकेँ निश्चित रूपसँ पुरस्कृत करितथि, विशेष कऽ महाकविक महाप्रयाण पुस्तकक लेल। एतबहि नहि, मिथिला विभूति श्री विद्वद्प्रवर महेश झाजी उर्फ शंकराचार्य शिरोमणि गोवर्धन पीठाधीश्वर जगतगुरु निश्चलानंद सरस्वती महाभाग समस्तीपुर जिलाक बरबट्टा गाममे आएल छलाह। मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगाक पूर्व प्राचार्य सुदिष्ट मिश्रजीक द्वारा अपना गामपर भगवान शिव पार्वती, श्रीराम जानकी, श्री राधाकृष्ण भगवानक प्राण प्रतिष्ठा महायज्ञक आयोजन कएने छलाह। जगद्गुरु शंकराचार्यक कार्यक्रमक उत्तर बिहारक प्रभारी दरभंगाक परम विदुषी डॉक्टर इंदिरा झाजी छलीह। शंकराचार्यजीसँ दीक्षा लेबाक लेल, चंद्रधारी महाविद्यालय कला विज्ञान सहित आर कोनो महाविद्यालयक लगभग आधा दर्जन

प्राध्यापक सेहो समारोहमे आयल छलाह। प्रेस वार्ताकेँ संबोधित करैत शंकराचार्यजी आदि कुम्भ स्थली सिमरिया धाम सहित महान मिथिलाक संबंधमे सेहो चर्चा कयलनि। अही चर्चाक क्रममे पूज्य शंकराचार्य बजलनि जे मिथिलाक लोग, आचार्य मंडन मिश्र और कालिदास को मिथिला का बतलाते हैं, जबकि दक्षिण के लोग उन्हें दक्षिण का बतलाते हैं। ई बात सुनि कऽ दरभंगासँ आएल एकटा विद्वान प्राध्यापक उठि कऽ हाथ जोड़ि कऽ शंकराचार्यजीसँ निवेदन कयलन्हि जे गुरुदेव, आचार्य मंडन मिश्र आओर कालिदासकेँ, मिथिलेक रहऽ देल जाए, हुनका दक्षिणक कथमपि नहि बनाओल जाए। दूनू गोटे मिथिलेक छलाह। ई सुनितहि पूज्य जगतगुरु शंकराचार्य कुपित भऽ कऽ बाजि उठलनि, तुम कौन होते हो मेरे बोलते हुए बीचमे बोलने वाले, उनको मिथिला का रहने वाला सिद्ध करने का क्या प्रमाण है तुम्हारे पास? मेरे बोलते हुए बीच में बोलने का साहस राष्ट्रपति भी नहीं करते हैं। तुम कौन होते हो बीचमे बोलने वाले, टोकने वाले? शंकराचार्यजीसँ हाथ जोड़ि कऽ आग्रह करऽ वला प्राध्यापकजी महोदयक मुहक बात मुहेमे रहि गेल आओर ओ सभ गोटे बिना दीक्षा लेनहि दरभंगा आपस भऽ गेलाह। ई सभटा बात तऽ स्पष्ट प्रमाणक अभावमे भेल ने।

आब जहन, डॉक्टर रंगनाथजी द्वारा लीखल महाकविक महाप्रयाण पुस्तक हमारा हाथमे आएल, तहन विगत 40 वर्षसँ महाकवि कालिदासजीक संबंधमे सुनऽ वला सभटा बात याद आबि गेल। डॉ रंगनाथ दिवाकर जीकेँ कतेक रास धन्यवाद दियैन, जे कहल नहि जाइए। हमरा मैथिली विद्वान सभहक एकटा यैह कमजोरी देखाइ दैत रहैइए, जे अपनासँ ऊंच स्थान दोसराक देबाक प्रयास नहि करबाक प्रयत्न करैत छथि। जे आन लोक हमरा हुनकासँ कहीँ कमजोर विद्वान ने बूझऽ लागथि। अही डरे मिथिलाक महापुरुषक जतबा चर्चा होयवाक चाही से नहि भेल अछि। महा महोपाध्याय बच्चा झा सन शास्त्रार्थ मार्तंड, उद्‍भट विद्वान जे धर्म सम्राट करपात्रीजी महाराजक गुरु रहबाक गौरव प्राप्त कएने छथि, जिनक शिष्यक शिष्य सभ, कैकटा शंकराचार्य भेलाह। एखनुक सभटा शंकराचार्य हुनक शिष्यक शिष्य सभ छथि। ओहन महान विद्वान बच्चा झाक संबंधमे मिथिलाक लोक कतेक जनैत छथि से की छीपल अछि! अहिना महाकवि कालिदासक संबंधमे सैकड़ो वर्षसँ प्रमाण उपस्थित रहलाक बादो कहाँ कोनो गोटा प्रमाण प्रस्तुत कयलनि। डॉ रंगनाथ दिवाकर अतीतक गहन अंध कर्णकुहरसँ सत्यक मोती बहारि कऽ भगवती मैथिलीक जगमग कंठहार सजएबाक महान काज कऽ संपूर्ण मिथिलाक

गौरवान्वित कयलनि अछि। महाकवि कालिदासक मैथिलत्वक प्रकाशनोमे तऽ सेहो डॉक्टर रंगनाथ दिवाकरजीक एहि महान कार्यक संपादनक महान गुरुतर काज तऽ आइयो अपन रंगनाथेजी कयलनि।

महाकवि कालिदासक उज्जैनक महाराज विक्रमादित्य आओर भोजराजक संग जिक्र होइत अछि। अही लऽ कऽ दक्षिण दिशक विद्वान लोकनि महाकवि कालिदासजीकेँ दक्षिण दिशक विद्वान साहित्यकार मानैत छथि। अही कारणसँ पूज्य शंकराचार्यजी कालिदासजीक संबंधमे दक्षिणक होयबाक मान्यताक चर्चा कयलनि। मूदा डॉक्टर रंगनाथ दिवाकरजी अपन एहि पुस्तकमे पूर्ण प्रमाण प्रस्तुत कयलनि अछि जे महाकवि कालिदासक जन्मभूमि मिथिला थिक। अपना जन्मभूमिमे सभकेँ अपन डीह-डाबर रहैत अछि। जमीन-जथाक कागजात सरकारी प्रमाण अवश्य रहैत अछि। उच्चैठ भगवती स्थानसँ महाकवि कालिदासकेँ माता भगवती महाकालीक वरदान प्राप्त भेल। महाकवि कालिदासक संबंधमे सभटा प्रमाण, सैकड़ो वर्षसँ मौजूद सरकारी राजस्वक प्रमाणकेँ दिवाकरजी प्रस्तुत कऽ सभटा शंका समाधान कऽ देने छथि। दिवाकरजी सिद्ध कऽ देने छथि जे ओहि ठाम कालिदासक डीह एखनहुँ मौजूद अछि। सरकारी राजस्व पत्रकमे कालिदासक नामे भूमि खतियानमे प्रामाणिक रूपसँ उपस्थित अछि। एहि प्रकारेण दिवाकरजी महाकवि कालिदासक जन्मभूमि, पितृ भूमि, निजी भूमि तक सभटा प्रमाण प्रस्तुत कऽ महाकवि कालिदासकेँ पूर्ण रूपसँ मैथिल होयबाक प्रमाण प्रस्तुत कयलनि अछि।

महाकवि कालिदासक विद्योत्तमासँ विवाह उपरांत ऊंटकँ संस्कृतमे ऊष्ट्र कहि प्रताड़ित निष्कासित होयबाक बाद भगवतीक कृपा ज्ञानसँ लबालब कालिदास द्वारा विद्योत्तमाकेँ केबाड़ खोलबाक आग्रहक वाक्य— अनावृत्त कपाटं द्वारं देहि सुनि विद्योत्तमाक आश्चर्य मिश्रित हर्षयुक्त वाक्य— अस्ति कश्चितवाग्विशेष: पदकेँ महाकवि कालिदास द्वारा कालजयी कृतिक आदि वाक्य बनेबाक जिक्र कऽ कालिदास द्वारा विद्योत्तमा प्रेमिका पत्नीक प्रति अगाध श्रद्धा आओर अमर प्रेमकेँ दिव्यता, अमरता प्रदान करएवला महाकवि कालिदासक महान उदात्त विराट व्यक्तित्वक प्रकाश कयलनि। अपन हृदयेश्वरी विद्योत्तमाक अस्ति शब्दसँ अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:, कश्चित् शब्दसँ कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्त:, महान भारतक भूगोल किंवा मूलाधारचक्रसँ सहस्रार चक्र तक आध्यात्मिक यात्रा युक्त कालजयी मेघदूतम् केर रचना कयलनि, तऽ अंतिम वाग्विशेष: शब्दसँ वागार्थाविवसँ महत् कालजयी अमर

रघुवंश महाकाव्यक द्वारा यावच्चंद्र दिवाकरौ दिवाकरजी महाकवि कालिदासकेँ, अपन प्रेमिका पत्नी भगवती सीताक लेल महान प्रेमी शिरोमणि श्रीराम द्वारा घहराइत सिंधुपर कालजयी रामसेतु निर्माणक प्रेमक इतिहासक अमरताक श्रेणीमे आनि कऽ ठार कयलनि। महाकवि कालिदासकेँ मैथिल होयबाक प्रमाणक पूर्णत: पूर्णताक अहि काजक लेल हम समस्त मिथिलावासिये नहि समस्त भारतवासी उपकृत छी। महाकवि कालिदासजीक महाप्रयाण लंका देशक माटरामे भेल छल। हुनक मित्र लंकानरेश कुमारदासकेँ पता चलि गेलनि जे हमर मित्र कालिदास लंका नगरीमे प्रवेश कऽ चुकल छथि। दरवार राजा कुमारदास एकटा समस्यापूर्तिक पद घोषित कयने छलाह— कमल: कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते। समस्या पूर्तिमे अपनाकेँ अक्षम आओर पुरस्कार पएबामे अपनाकेँ अक्षम बूझि राजनर्तकी उदास हतास अपन महलक दरवाजापर बैसल छलीह। महाकवि कालिदास हुनक समस्या पूर्ति कऽ उदासी दूर कऽ देलनि। कालिदास लिखि देलथिन, बाले तव मुखाम्भोजे कथमीन्दीवरद्वयम्। समस्या पूर्तिक पश्चात कुमारदास अपन मित्रकेँ पहचानि गेलनि आओर नर्तकीपर दवाब बनौलनि। तहन नर्तकी राजाकेँ कालिदासक सच्चाइ बता हुनक अवसानक हाल सुनौलनि। तहन तऽ कुमारदासकेँ भारी अपराध बोध भेलनि। अपन मित्र कालिदासक विछोहमे कालिदासक चितामे कुदि अपनो प्राणांत कऽ लेलनि। हुनक पाँचू रानी सेहो चितामे प्रवेश कऽ गेलीह। ओहि समाधि स्थलपर बोधि वृक्ष अवस्थित अछि। ई सभ प्रमाण सहित प्रस्तुत कऽ दिवाकरजी समस्त देशवासीकेँ उपकृत कयलनि। जौं आइ मिथिलाक महाकवि कालिदासकेँ महाराज विक्रमादित्य आओर भोजराज लऽ कऽ लोक ई कहता जे कालिदास मध्यप्रदेशक छलाह तऽ काल्हि लंका वासी हुनक समाधि स्थलीक लऽ कऽ हुनका लंकावासी होयबाक दावा सेहो करताह। तहन भारतवासी सभ की करताह?

ई सभटा भूत, भविष्य आओर वर्तमानक शंकाक समाधान प्रस्तुत कऽ देलनि। महाकवि कालिदासक संबंधमे डॉक्टर रंगनाथ दिवाकरजी महाकवि कालिदासक मैथिल होयबाक प्रमाण प्रस्तुतक कऽ समस्त संभावित शंकाक समाधान कऽ देलनि अछि। डॉक्टर रंगनाथजी महाकवि कालिदासक मेघदूतम्, अभिज्ञान शाकुंतलम्, विक्रमोर्वशीयम् आदि ग्रंथक उत्कृष्ट उद्धरणक प्रमाण सहित मिथिलाक ग्रामीण क्षेत्रक सामाजिक परिवेशक वर्णन कऽ कालिदासकेँ पूर्णतया मैथिल होयबाक प्रमाण प्रस्तुत कयलनि अछि। एतबे नहि डॉक्टर रंगनाथजी महाकवि कालिदासक विक्रमोर्वशीयम् सन महान कृतिमे जे अपभ्रंश

श्लोकक प्रमाण प्रस्तुत कयलनि अछि सेहो अत्यंत सराहनीय कार्य थिक। महाकवि कालिदासक अपभ्रंश श्लोक पढ़लाक आ देखलाक उपरांत हम तऽ डंकाक चोटपर महाकवि कालिदासकेँ मैथिली भाषाक प्रथम कवि आओर मैथिली साहित्यक प्रथम महाकवि मानैत छियनि। ओना हम हिन्दी भाषाक आदि कविक रूपमे सातम शताब्दीक सिद्ध संत सरहपाद वा सरहपाकेँ मानैत छियनि। किंतु जँ कालिदासक कार्यकाल अधिकांश लोकनिक मान्यताक अनुसारें महाराज विक्रमादित्यकेँ लऽ कऽ ईसापूर्व छप्पन वर्ष पूर्व अथवा चारिम शताब्दी सिद्ध होइए, तखनहु अपन अपभ्रंश साहित्यक मैथिलीक सन्निकट होयबाक कारणेँ कालिदासे मैथिली भाषा सहित हिन्दी भाषाक आदि कवि सेहो प्रमाणित होइत छथि। महाकवि कालिदासक विक्रमोर्वशीयम् ग्रंथक अपभ्रंश पद, जे तालाबमे खिलल कमल वला पद, लाल सिया वाला पद तऽ निछच्छ मैथिली भाषाक पद प्रमाणित होइत अछि। तैं लऽ कऽ अही पदक कारण महाकवि कालिदास हिन्दी भाषाक सेहो आदिकवि प्रमाणित होइत छथि। समस्त मैथिली विद्वान जहन विक्रमोर्वशीयम् केर समस्त अपभ्रंश श्लोक पढ़बाक प्रयास करताह, तऽ हुनका सभकेँ मानए पड़तनि जे मैथिलीक आदिकवि महाकवि कालिदास थिकाह। महाकवि कालिदासक मिथिला अपभ्रंशकेँ महाकवि विद्यापति विस्तार देलनि। आदिकवि तऽ महाकवि कालिदास थिकाह। आओर महाकवि कालिदास हिन्दी भाषाक आदिकवि सेहो प्रमाणित होइत छथि। डॉ. रंगनाथ दिवाकरजी द्वारा एहि प्रामाणिक पुस्तक महाकविक महाप्रयाणक रचना करबाक लेल हम समस्त मिथिला वासी दिवाकरजीक प्रति हार्दिक आभारी छी। अइ कठिन शोधपरक काजक लेल डॉक्टर दिवाकरजीक प्रतिभा-दिनकर आ हुनक सरस्वतीकेँ हम वंदन अभिनंदन करैत छियनि।

रमेश

जन्मतिथि : *18 नवम्बर 1962, दरभंगा।*

सम्पर्क : *+91 70918 96541*

रमेशजी समकालीन कविताक एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर छथि, कुशल कथाकार छथि, साधल समीक्षक छथि, सुधी शोधप्रज्ञ छथि, सुदक्ष सम्पादक छथि। हिनक अनेक कृति अक्षय कीर्त्तिकलश बनल अछि। कृति सभमे 'समांग', 'समानान्तर', 'दखल', 'समकालीन नाटक' आ 'कथा समय' बहुप्रशंसित कथासंग्रह अछि। कविता-संग्रहमे 'संगोर', 'समवेत स्वरक आगू', 'पाथर पर दूभि', 'कोसी घाटी सभ्यता', 'काव्यद्वीपक ओहि पार' आ 'कविता समय' अकूत यश अर्जित कयलक। गजल-संग्रह 'नागफेनी' गजलक संसारमे अपन स्थान सुरक्षित करओलक। समीक्षा-संग्रह 'प्रतिक्रिया' आ 'निकती' अपन नाम सार्थक कयलक। सगर राति दीप जरय कार्यक्रम केर कथा-संकलन 'श्वेत पत्र'क सह सम्पादन कयने छथि। 'एकैसम शताब्दीक घोषणापत्र' (कथागोष्ठीक कथा-संकलन) आ 'मंडन मिश्र : मीमांसा-अद्वैत समागम' केर सम्पादन कयने छथि। तिरहुत साहित्य सम्मान, डा. इन्द्रकान्त झा सम्मान (विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा) आदिसँ सम्मानित छथि।

‘महाकविक महाप्रयाण’ : एकटा ‘शोधपरक नव-स्थापना’

श्री रंगनाथ दिवाकर जेहने नीक लोक, तेहने नीक मित्र, आ ताहूसँ पैघ विद्वान लेखक छथि।‘प्राचीनताक गौरवकेँ साहित्यमे सुस्थापित केनिहार’, प्राचीन पारंपरिक धाराक पैघ प्रवक्ता आ विद्वानक रुपमे, मैथिली साहित्यमे स्वयं सुस्थापित भऽ गेल छथि रंगनाथ दिवाकर!

ओ आरंभहिसँ अपन कटिबद्ध राष्ट्रीय विचारधारा आ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद पर, अत्यंत मजगूतीसँ, फर्रोस भऽ कऽ, बिना तोतरेने अथवा बिना कोनो ततमतीक ताल ठोकैत ठाढ़ छथि जे हम रांचीक प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थानेक प्रशिक्षणावधिसँ हुनका देखि रहल छी।

हुनकर लिखल मैथिली कथा/प्रेमकथा ‘महानन्दाक एक चुरुक पानि’क ‘पहिल पाठक’ बनबाक सौभाग्य तऽ प्राप्त भेले अछि हमरा, तकरा ‘भारती मंडन’मे प्रकाशनार्थ तहिया केदार भाइकेँ पठौने रही आ छपलो रहनि। तहिये बुझा गेल छल जे मैथिलीमे अपन विशेष धाराक एकटा नीक आ पैघ लेखकक निर्माण आ आविर्भाव भऽ रहल अछि।

ओ अदौसँ, ‘भारतीय राष्ट्र’केँ, गणराज्यकेँ, ‘भौगोलिक स्वरुप’मे, ‘सांस्कृतिक राष्ट्रवादकेँ अयनामे’ देखलनि, आ हम ‘जन गण मन’केँ अयनामे ‘देस’केँ देखैत रहलहुँ।

हमरा लोकनिक ‘वैचारिक बहस’ सबदिन बहुत जमैत छल! ओ स्व.सुमन जीक पक्षमे बेसीकाल रहल करथि आ हम स्व. किरणजी आ यात्री जीक पक्षमे!

ओ अपन झंझारपुर अनुमंडल अधिकारीक पदावधिमे ‘मैथिल गौरव/अस्मिता’केँ, ‘कन्दर्पी-घाट युद्ध’क, ‘जनउक ढ़ेरी’क अयनामे देखि मात्र ‘खड़गर-सनगर पक्का स्तम्भे’टाक निर्माण नहि करौलनि, अपितु, तकर गौरव-गाथाक वर्णन करैत, हिन्दीमे तद्विषयक पोथी सेहो लिखलनि आ छपबौलनि। स्वाभिमानी मैथिलक

लेल, 'कन्दर्पीघाट'क ओ आख्यान-पोथी, अपना विषयक, अपना तरहक, असगरे अछि, यद्यपि पूर्वमे एकटा अन्य नाटक एहि युद्धपर देखल छल।

मुदा, हम मैथिलीक आरंभिक अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यासकार, पं.पुण्यानंद झा('मिथिला दर्पण')क गामक प्रवेश-स्थान (जहानपुर, प्रखंड-जोकीहाट, अररिया) मे, हुनकर पुण्य-स्मृतिमे पक्का तोरण-गेट, 'पं.पुण्यानंद झा स्मृति-द्वार' बनबायब बेसी जरुरी बूझल आ से बनबाओल।

यद्यपि ओहो आजुक जीवनक कथा-संग्रह छपबौलनि अछि 'भखरैत नील रंग'! मुदा, एखन धरिक रंगनाथजीक 'सबसँ पैघ मैथिलीक सेवा' मानल जायत महाकवि कालिदासक मैथिलत्व प्रमाणित करैत पोथी, 'महाकविक महाप्रयाण', जे 'अत्यंत शोधपरक शैली'मे, हुनकर 'मिथिलावतरण आ मैथिलत्वक' 'साक्ष्य-पुरस्सर संस्थापना', 'आधिकारिक ढ़ंगसँ, तथ्य केर विश्वसनीय ऐतिहासिकता आ विश्लेषणक संयोजनक संग प्रस्तुत भेल अछि।

ओना अइ पोथीक दू भाग अछि, जाहिमे, अपन वैज्ञानिक उपस्थापन आ ऐतिहासिक विश्लेषणकेँ कारण, पहिल भाग, अर्थात्, 'कालिदासक मैथिलत्व', 'पोथीक प्रधान प्रतिपाद्य' भऽ गेल अछि!

से मिथिलाक समाज, मैथिली भाषा, मिथिलाक इतिहास आ मैथिलीक साहित्यो लेल अत्यंत प्रासंगिक आ 'नवीन विकास' भेल अछि!

रंगनाथजी द्वारा महाकवि कालिदासक प्रसंगमे कयल गेल ई प्रतिस्थापना, एकदम्मे नव नहि अछि आ तकर चर्चा पूर्वहुमे पं.जीवनाथ झा आ डॉ.जयमन्त मिश्र द्वारा कयल गेल छल, जेनाकि पं.शशिनाथ झा अपन 'शुभाशंसा'मे तथ्यात्मक सन्दर्भ देलनि अछि।

मुदा, एहेन प्रमाण-पुरस्सर, अन्तिम रुपेँ, ताहि तथ्य (कालिदासक मैथिलत्व) क 'सुचिन्तित सुस्थापना' नहि भेल छल। एकर सुयश हिनकर 'तथ्यक खोजपरक ऐतिहासिक अन्तर्दृष्टि'केँ जाइत अछि आ से 'मिथिलाक गौरव-वृद्धि' केलक अछि!

ई चर्चित पोथी पं.शशिनाथ झा सन मिथिलाक पैघ संस्कृतज्ञ आ विद्वानक 'शुभकामना-संदेश'सँ सुसज्जित तऽ अछिए, पोथीक 'अत्यंत सकारात्मक' 'भूमिका-लेखन' मैथिलीक बहुते पैघ नाटककार आ ततबे पैघ विद्वान, आ.भाइ महेन्द्र मलंगियाजी केलनि अछि, जाहिमे ओ 'पोथीक दोसर खण्ड' 'पोथीएक शीर्षकबला नाटक'('महाकविक महाप्रयाण')पर विशेष केन्द्रित भेल छथि!

भाइ मलंगियाजी लेल से उचितो छल। कारण, ओ स्वयं 'मैथिली नाट्यलेखनक गौरव' छथि, तऽ हुनकर प्राथमिकता अइ पोथीक नाट्य-पक्ष भेनाइए छल!

वस्तुत: अइ पोथीक नामकरण, 'अइ नाटकक हिसाबें', तकरे आधारपर कयल गेल अछि।

पोथीक से नामकरण ततेक तर्कसंगत, हमरा मतमे नहि भऽ सकल अछि। कारण, महाकवि 'कालिदासक मैथिलत्वक सुस्थापना', 'मिथक-आधारित नाट्यलेखन', 'महाकविक महाप्रयाण'सँ, कतोक बेसी महत्वपूर्ण अछि। 'महाकविक जीवन सेहो', 'हुनकर महाप्रयाण'सँ बेसी महत्वपूर्ण, निस्संदेह अछिए!

पोथीक 'पहिल खंड' (कालिदासक कालनिर्धारण, स्थान-निर्धारण आ सम्पूर्णतया मैथिलत्व-निर्धारण) 'मिथिला समाज, भाषा, आ इतिहास लेल', 'बेसी प्रासंगिक' आ 'तर्कसंगत ऐतिहासिकता-आधारित' भेल अछि।

पोथीकेँ तकर प्रतिनिधित्वसँ मुदा, 'ई नामकरण' वंचित कऽ देलक अछि! इतिहास-आधारित महाकविक जन्मस्थान/जन्म-समय/जीवन आ उपलब्धि झूस भऽ जाय, 'मिथक-आधारित' हुनकर 'महाप्रयाण'क अपेक्षा, से सहज स्वीकार्य कोना भऽ सकैछ, जखनकि लेखक रंगनाथ जीक वैज्ञानिक विश्लेषण-आधारित, महाकवि कालिदासक 'जीवन-उपलब्धि-आख्यान' 'ऐतिहासिक'/'तर्कसंगत'/'वैज्ञानिक खोज-आधारित' हो आ 'महाप्रयाणक नाट्यलेखन', 'मिथकीय-मान्यता-आधारित' हो...?

भलें भाइ मलंगियाजी अपन 'भूमिका'मे 'लोकमान्यता आ पं. जवाहरलाल नेहरुक मान्यता-उद्धरण'सँ अइ 'मिथकीय नाट्यलेखन'क ('महाकविक महाप्रयाण')औचित्य स्थापित करथि...!

मुदा, ताहिसँ 'पोथीक प्रथम खण्ड'क 'ऐतिहासिक प्रामाणिकता' 'उनैस नहि होइत अछि', तैओ 'बीसे पड़ैत अछि'।

ओना अइ नाटकक ताहू औचित्य-निरुपणमे आदरणीय भाइ मलंगियाजी 'अपनाकेँ बंचबैते भाषामे', कलम आगू बढ़ौलनि अछि, सेहो स्वाभाविके अछि।

मुदा लेखक दिवाकरजीसँ घनिष्ठ मैत्री-सम्बन्धक हमर एहेन पृष्ठभूमि पर की 'समीक्षा-लेखन' हमरो लेल, 'जोखिम-रहित' अछि? से निश्चिते नहि!

मुदा लेखन आ अभिव्यक्तिक से जोखिम तऽ, 'लेखनक सब संवर्गकेँ', उठाबहि पड़ैत अछि!

से 'वृहत्तर समाज, समय, आ साहित्यक हितमे' होइत अछि आ हेबाक चाही! तेँ, समीक्षा सेहो सामाजिक सामूहिक हितमे लिखल जेबाको चाही।

महाकविक रचना-संसारमे, प्रकृति-वर्णनमे, तत्कालीन 'सांस्कृतिक उपादान' सबमे अन्तर्निहित हुनकर मैथिलत्वक एहेन-एहेन अध्याय सब सुखद

आश्चर्य देलक अछि। तत्कालीन राजस्व-अभिलेख आ भाषाविज्ञानक आधार पर, महाकविक स्थान-निर्धारण आ काल-निर्धारण, बहुत वैज्ञानिक आ तार्किक चरित्रक भेल अछि। आ कालिदासक मैथिलत्व, 'प्रथमहि', 'सर्वतोभावेन', 'प्रमाणित' भऽ गेल अछि, जकरा आब कोनो आन क्षेत्रक लोक चुनौती नहि फेकि सकैत अछि।

पोथीक से प्रथम खंड, लेखक रंगनाथ दिवाकरक दशकीय कठिन परिश्रमकेँ सार्थक करैत, हुनका मिथिलामे, मैथिली भाषा-साहित्यमे, 'अमरत्व' प्रदान करैत अछि, जे हुनका 'भखरैत नील रंग'(कथासंग्रह) आ 'कन्दर्पी घाटक युद्ध' बला पोथी, अथवा 'मिथिला विजय-स्तम्भ-निर्माण' नहि प्रदान कऽ सकल छल, कारण, 'कन्दर्पीघाट' नामक एकटा आन लेखकक मैथिली 'नाटक' पहिनहुँसँ प्रकाशित छल!

तखन फेर, इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ तऽ, 'महाकविक मैथिलत्व'केँ आर सम्पुष्टे कऽ देलनि अछि लेखक दिवाकरजी, जाहिसँ प्राचीन इतिहासक वैज्ञानिकताक आधार आ कालिदासक ऐतिहासिक वैज्ञानिकता मिथिला-गृहक बरेड़ीक खाम्ह बनि गेल अछि!

उच्चैठ आ उज्जैनक ऐतिहासिक संगति बैसायब, महाकविक प्रमाणित श्रीलंका यात्रा, ओतुक्का हुनकर जीवन आ कुमारदासक घनिष्ठतम मैत्री-साहचर्य, माटराक महाप्रयाण-स्थलक ऐतिहासिकताक मैथिलीक पाठककेँ दिग्दर्शन करायब, मैथिली भाषा-साहित्यमे एना 'निस्सन साक्ष्य-आधारित' प्रथमहि आयल अछि।

प्राचीन इतिहासक 'साहित्यिक स्रोतक अर्द्ध-ऐतिहासिकता'केँ, राजस्व-अभिलेख, भाषाविज्ञान आ इतिहास-तथ्य-आधारित सम्यक् विश्लेषण, 'सर्वतोभावेन पूर्ण करैत' हिनकर 'स्थापना-मान्यता' आ 'महाकविक मैथिलत्व'केँ, 'पूर्ण-ऐतिहासिक' आ 'तर्कसंगत' बनाबैत, 'मिथिलापुत्र महाकवि कालिदास'केँ, 'मिथिला-भूमि' पर, 'पूर्ण-स्थापित' कऽ देलक अछि।
हिनका उचिते उत्तर गुप्तकालीन (यशोधर्मन् विक्रमादित्य कालीन) साबित कऽ देलनि अछि दिवाकर जी!

प्रसंगवशात् कहऽ पड़त जे, मधुबनी जिलामे जे केओ अनुमंडल अधिकारी विद्वान बनि अबैत छथि, से भाषिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक पैघ-पैघ काज कऽ कऽ अमरत्व प्राप्त कऽ लैत छथि!

तकर पहिल उदाहरण आयरलैंड (डबलिन)क जौर्ज अब्राहम ग्रियर्सन छलाह, जिनकर 'द लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इन्डीया'(कुल एगारह भौल्यूम, जाहिमे दू खण्ड, दसम आ एगारहम, मात्र मैथिली भाषापर केन्द्रित अछि), हुनका अमर कऽ देलक आ आइयो हुनका नामपर 'गिलेशन बजार', मधुबनीमे, हुनका श्रद्धांजलि दैत रहैत अछि।

तहिना बेनीपट्टीक तत्कालीन अनुमंडलाधिकारी रघुनाथ पहाड़पुरी जन सहयोगेसँ उच्चैठक छिन्नमस्तिका-स्थानक विकासक संग महाकवि 'कालिदासक डीहक' सेहो जीर्णोद्धार आ विकास करैत 'उच्चैठ-कालिदास महोत्सव'-आयोजनक, रस्ता बना देलनि!

आ तहिना श्री रंगनाथ चौधरी, 'रंगनाथ दिवाकर' बनि 'अपन ऐतिहासिक-सांस्कृतिक चेतना'केँ, कन्दर्पीघाट आ उच्चैठमे, महाकविक जमीन पर, 'निर्माण-रुपायित' आ 'पोथी-रुपायित' कऽ देलनि!

तेहेन विद्वान-लेखक जखन, ताही विषयक नाट्यलेखनमे, पोथीक पहिल खंडमे, हुनके द्वारा सुस्थापित, 'महाकविक ऐतिहासिकता-आधारित जीवनक' 'उपेक्षा करैत', 'ऐतिहासिक नाट्यलेखनक ठोस शैली'क 'जड़बसँ बांचैत', नाट्यलेखनक लेल, 'अपेक्षाकृत शुष्मालकी शैली'(मिथक-आधारित नाट्यलेखन)क संग उतरैत छथि, तऽ अकारण 'प्रमाणित ऐतिहासिकता-त्यागक, हुनकर निर्णय', 'जनश्रुतिक शैली-चयन', आ 'नाट्यलेखनक आधार-चयन' पर, 'आवश्यक प्रश्नचेन्ह' ठाढ़ करैत अछि! हुनका अइ पोथीमे, 'ऐतिहासिक प्रथम खंडक संग अइ नाटकक प्रकाशन लेल', 'इतिहास-आधारित नाट्यलेखन' केनाइ छलनि, 'ऐतिहासिक आधार'केँ पकड़नाइ छलनि।

मुदा से नहि कऽ कऽ, 'मिथकीय आधार'केँ ओ पकड़लनि आ तकरा अपन 'आमुख-लेखन'(किछु आखर)मे गछितो छथि ओ, जखनकि 'जनश्रुति आ इतिहासक मध्यक अंतर' बूझयबला हिनकासँ पैघ विद्वान के भऽ सकैत अछि?

संस्कृतक विद्वान आ मैथिलीक सेहो विद्धद्धाराक राष्ट्रवादी लेखक दिवाकर जीकेँ बूझल छनि जे 'उगनाक अ-शास्त्रीय चरित्र' विद्यापतिक जीवनमे आइ धरि, मैथिली साहित्यमे आइ धरि, 'साक्ष्याधारित' नहि भऽ सकल आ असंपुष्ट रहलाक कारणेँ, आइयो जनश्रुति बनल अछि! तद्विषयक नाटकक/लोकविश्वासक 'मिथकीय आधार-मात्र' बनल अछि, यद्यपि मिथको रुपमे से साहित्यमे रहब कोनो बेजाय बात नहि अछि!

रंगनाथजीकेँ इहो बूझल छनि जे आदिशंकराचार्य-परंपराक लेखक माधवाचार्यक 'शंकरदिग्विजय' नाटक, 'बिना शास्त्रार्थेक आ बिना ऐतिहासिकताक', 'मात्र मिथकीय आधार पर', मिथिलाक 'मीमांसावादी अद्वैतवादक जाज्वल्यमान प्राचीन दार्शनिक मंडन मिश्र'केँ, 'अनेरो' 'आदिशंकराचार्यक शिष्य' (सुरेश्वराचार्य) बना देलनि।

ताही परंपराक 'शुष्मालकी अनुसरण करैत' प्रो. हरिमोहन झा सन विद्वान, मैथिलीक पैघ लेखक, जखन, 'मंडन मिश्र'बला एकांकी नाटक लिखैत 'नकली

शास्त्रार्थ' आ 'ताहिमे मंडनक पराजय' देखा देलनि तऽ हुनका एहेन 'दार्शनिक विद्वान'कैँ की कहल जाय? साहित्यमे स्वीकार्य आ क्षम्य अछि मिथक, मुदा 'प्रामाणिक इतिहास'सँ सर्वथा भिन्न अछि ओ।

छुच्छ मिथक 'ऐतिहासिकता'कैँ बहुत क्षति करैत रहैत अछि, जाधरि विभिन्न स्रोतसँ ओ सम्पुष्ट नहि होइत अछि। आ मैथिलीमे तऽ बहुते क्षति केलक अछि।

आइ स्व.पं.सहदेव झा आ स्व.डॉ.बैद्यनाथ झा स्थापित कऽ देलनि अछि जे 'मंडन सुरेश्वरयो: भिन्नत्वं'!('मंडन मिश्र: मीमांसा-अद्वैत समागम': सं. रमेश/सुरेन्द्र नाथ)

आइ डॉ. उदयनाथ झा 'अशोक', डॉ.नारायण झा, डॉ.चित्त ना.पाठक, डॉ. भद्र ना.पाठक (महिषी/बनारस), पंकज मिश्र, पं.महेश झा(अन्हराठाढ़ी), देवशंकर नवीन, रामचैतन्य धीरज, तारानन्द वियोगी सब गोटे अपन प्रामाणिक लेखनसँ साबित कऽ चुकल छथि जे मंडन-शंकरक मध्य, 'ओ तथाकथित शास्त्रार्थ', भेले नहि छल आ 'आदिशंकरक पहचान' काल-निर्धारणे, एखन धरि 'विमर्शाधीन' अछि!

एहना स्थितिमे, नाट्यलेखनक लेल मिथकीय आधारकैँ प्राथमिकता देब 'अपन सुस्थापित ऐतिहासिक आधारक प्रति' विभ्रम उत्पन्न कऽ ओकरा क्षीण करबेटा थिक!

तकर ई अर्थ नहि, जे मिथक-आधारित नाट्यलेखन वा अन्य लेखन-कार्य नहि हो!

साहित्यमे से आ तेहेन लेखन-कार्य अबाधित रहय आ रहत, जं तकर 'साक्ष्याधारित खंडन' नहि भेल हो!

खंडन भऽ गेल हो, तऽ 'ऐतिहासिकताक आधार-चयन'क, जड़ब अबस्से लेल जाय!

'तेहने नाटककैँ', 'ऐतिहासिकता-आधारित पोथी'क संग, छापल जाय! अन्यथा जनश्रुति-आधारित विधाकैँ, फराकसँ, साहित्य-रुपैँ, छापल जाय!

अइ पोथीक अइ दुनू खंडकैँ, फराक-फराक आधारक चलतैँ, फराक-फराक पोथी भेनाइ छल। आ से विद्वान लेखकोक हितमे बेसी नीक होइत आ मैथिलीयो भाषा-साहित्यक हितमे!

महाकविक 'ऐतिहासिक प्रामाणिक मैथिलत्व'क हितमे सेहो होइतय, आ 'महाकविक तथाकथित मिथकीय महाप्रयाण'क हितमे सेहो!

अही पोथीमे विश्लेषित 'श्रीलंकाक हुनकर ऐतिहासिक जीवन', हुनकर भौतिक देहत्याग(महाप्रयाण)क 'ऐतिहासिक आधार' बनि सकैत छल, जकरा अनेरो

'मिथकीय' बना देल गेल नाटकमे, महाकविक आरंभिक जीवनमे, कालिदास द्वारा बैसलाहा गाछक डारि काटबाक जनश्रुतिक चलतेँ अथवा विद्योतमासँ हुनकर 'विवाह-आख्यानक मिथकीयताक' चलतेँ..! हुनकर 'दुनूक विवाह-आख्यानक ऐतिहासिकता'केँ एतय आधार बनेबाक पूर्वस्थापितकेँ सुस्थापित बनेबाक एकटा नीक अवसर छल एतय...(?), जकर 'जनश्रुति-व्यामोहक चलतेँ', पोथीक प्रथम खंडक ऐतिहासिक विश्लेषणक सदुपयोग, ऐतिहासिक आधार रुपेँ, दोसर खंडक नाट्यलेखनमे नहि भऽ सकल!

तखन, अइ विश्लेष्य नाटकमे, 'जे किछु नीक' अछि, तकर सबहक, 'साटीपिकट' रंगमंचीय तत्व सबहक, नाटकक हिसाबें तऽ भाइ मलंगियाजी अपन 'नाट्य-भूमिका-लेखन'मे, 'फैलसँ दैए देलनि अछि।

तकर दोहराव आ मंचधर्मिताक/मंचन-कलाक शल्यक्रिया, पात्र संख्या, मंच-सज्जा, प्रकाश-ध्वनि-योजना आदिक विश्लेषण एतय हमर उद्देश्य कोना भऽ सकैछ, जहनकि आ. भाइ मलंगियाजी, समकालीन मैथिलीक सबसँ पैघ नाटककार, 'रंगमंचक विशेषज्ञ' आ 'स्वनामधन्य निर्देशक' सेहो छथि...?

असलमे, 'पोथीक पहिल खंड' जहन कालिदासक जीवनकेँ 'ऐतिहासिकताक आधार' दऽ देलक, तहन, 'गाछ परहक अपने बैसलाहा डारिकेँ काटबाक मूर्खताबला', विद्योत्तमाक पूर्व-स्थापित 'मिथकीय आधारबला लिखल नाटकक प्रकाशन', (अही पोथीमे) 'चिप्पी-स्वरुप' भऽ गेल अछि, जे दिवाकर जीक 'सांस्कृतिक चेतना' बला निर्णय नहि, 'विशुद्ध जनश्रुतिक प्रति व्यामोह' थिक!

हिनकर 'प्रशंसनीय सांस्कृतिक चेतना' आ 'तकर सुपरिणाम', 'पोथीक प्रथम खंड'क 'महाकवि कालिदासक प्रमाणित मैथिलत्व' थिक!

ताहि लेल, समस्त मिथिला-मैथिली-संसार आ भारतीय साहित्य-संसार एकटा 'शोधपरक नव-स्थापना' लेल, हिनकर अभिनन्दन करत!

से वैज्ञानिक प्राचीन इतिहास-संसारक संग हमहूँ करैत छी!

अवधेश कुमार बच्चन

जन्मतिथि : *14 जनवरी 1964 बेरि, दरभंगा।*

सम्पर्क : *+91 89303 00333*

अवधेशजी पत्रकारिता क्षेत्रमे एक प्रतिष्ठित नाम छथि जनिकर परिचिति अखिल भारतीय स्तरक छनि। 'दैनिक जागरण' केर हरियाणा राज्य सम्पादक रहल छथि। 'दैनिक हिन्दुस्तान'मे अररिया, जहानाबाद, आरा, बक्सर जिलामे ब्यूरो इंचार्ज रूपमे आ विराटनगर (नेपाल) संवाददाता रूपमे जुड़ल रहलाह। 'दैनिक हिन्दुस्तान'क नेपाल डायरीक स्थायी स्तम्भकार छलाह। 'दैनिक सवेरा'(हरियाणा स्टेट हेड) आ कृषि विभाग, हरियाणाक स्मारिका, एतहि केर उच्चतर शिक्षा विभागक स्मारिका 'दृष्टिकोण' आ तकनीकी शिक्षा विभागक स्मारिका 'प्रज्ञान' केर सम्पादक रहल छथि। मैथिली पत्रिका 'लाली'क सम्पादक छलाह। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकामे हिन्दी आ मैथिलीमे अनेक कथा, कविता आ समकालीन विषयक आलेखादि रचना प्रमुखतासँ प्रकाशित अछि। आकाशवाणीक दरभंगा, पटना, पूर्णियाँ आ रोहतक केन्द्रसँ हिन्दी-मैथिलीमे कथा, कविता, वार्ता सभक प्रसारण भेल छनि। विभिन्न विश्वविद्यालय आ अन्य समिति-संस्था सभक स्तरीय आयोजनमे सम्मानित वक्ता रूपमे साहित्यिक-सामाजिक-सांस्कृतिक विषयपर शोधपूर्ण व्याख्यान देने छथि। हिनक प्रकाशित कृति 'चलिए गंगापुर' मिथिलाक एक सुग्राम बेरिक महाकाव्यात्मक आख्यान थिक। ई ग्रंथ बहुप्रशंसित भेल। 'गौकर्ण पीठाधीश्वर' आ 'बेमिसाल 75 साल' आदि अन्य सर्जनात्मक कृति अछि। सम्प्रति हिन्दी दैनिक 'अमर उजाला' (करनाल)मे संपादकीय सलाहकार रूपमे कार्यरत छथि।

मिथिलाक एकटा जीवंत दस्तावेज : 'महाकविक महाप्रयाण'

मिथिला! राजा जनकजीक राज्य। राजा विदेहक नगरी। तीरभुक्ति क्षेत्र। मतलब एकटा पूरा देस— तिरहुत। ई सब एक्केटा भू-भागक नाम थिक जे परापूर्व कालहिसँ शिक्षा आओर सांस्कृतिक क्षेत्रमे अपन नामक प्रतिष्ठा दूर-दूर धरि स्थापित केने अछि। संसारक सभसँ पुरान ग्रंथ वेदसँ लऽके रामायण, महाभारत, पुराणक संगे-संग जैन आओर बौद्ध ग्रंथ तकमे जकरा संबंधमे श्लाघनीय बात कहल गेल हो, जाहि धराकेँ ज्ञानक श्रेष्ठ स्रोत बताओल गेल हो, जे जगत् जननी माँ जानकीक जन्मभूमि हेबाक संगहि माँ गौरी, श्री सावित्री सन देवी सभहक जन्म ठाँव कहाइत हो, ओहि पावन पुण्य रत्नवतीकेँ आइ ओ मान-सम्मान कहाँ जेकर ई वाजिब हकदार रहल अछि! जे अपन बौद्धिक परम्परा लेल भारतवर्षे नहि बाहर सेहो सभठाँ चर्चित छल, ओकर ओ जगजियार प्रतिष्ठा दिनपर दिन नेपथ्यमे कोना चलि गेल! चलि गेल वा धकिया देल गेल? ई एकटा एहन प्रश्न अछि जेकर मर्म बूझब आइ समस्त मिथिलावासीक लेल बड्ड जरूरी छनि।

मानल जाइत छैक— जे व्यक्ति वा समाज अथवा देस अपन शक्ति, सामर्थ्य आओर इतिहासकेँ नहि बूझैए, ओकरा प्रतिएँ सजग नहि रहैए, ओ अपनेसँ अपन अवसानक बाट गहि लैत अछि। ओकर उठान ठहरि जाइ छैक आ निचाँ खसबा लेल ओ अपनहिसँ बड़का खाधि खुनि लैत अछि। विडम्बना ई जे ओकरा अपनो ई बात पता नँइ रहै छै जे ओ अपनेसँ अपन प्राण हति रहल अछि! कमोबेश अही स्थितिमे तऽ छी हमरा सभ। एहिमे मिसियो संदेह नहि जे हमरा लोकनि मिथिलाक अनुपम माहात्म्यसँ तादात्म्य बैसाइए ने पाबै छी। ई स्थिति कोनो आजुक अछि से नहि, साबिकसँ एना करैत आबि रहल छी। सभ बातक मर्म बुझितहुँ हम मिथिलावासी अपन समृद्धि आ गहन सांस्कृतिक चेतना प्रतिएँ एना अकान किये

छी? ई एकटा जटिल प्रश्न अछि जेकर तऽहमे पैसब समयक माँग थिक। हमरा हिसाबें एकरा लेल एतुक्का लोकक लजकोटर स्वभाव सभसँ पैघ कारण मानल जा सकैत अछि। दोसर ई जे आत्मप्रशंसाकेँ अनुचित मानबाक धारणा हमरा सभकेँ माइयक कोखिएसँ मानसपर साटल रहैत अछि। एहि माटि-पानिसँ जुड़ल लोक केर ई मानसिकता बनल रहै छै जे अपनेसँ अपन बड़ाइ करब नीक बात नहि। अपन धरा धामक यश कीर्ति केर चर्च-बर्च करब, अपन समृद्धि केर उचित प्रचार-प्रसार करब, अपन उपलब्धि सभहक प्रदर्शन करब, ई सभ बड्ड हल्लुक बात भेल। आ मैथिल भऽकऽ हल्लुक रही से संभव कहाँ! पैघ रहिके जँ अपनेसँ अपन गुणगान करऽ लागी तऽ भऽल कोना कहाएब? ई काज तऽ सिर्फ नेना करैयै। ओ चाहे जनमसँ हो वा बुद्धिसँ। अपनेसँ अपन बड़ाइ करब ज्ञनगर लोकक काज नहि। प्राय: समस्त मिथिलावासीक मनमे ई सोच आइ धरि जगह बनौने अछि। सभ गोटेकेँ एहि सोचक विपरीत चलब जेना अप्पन साखक खिलाफ बुझाइत छनि। हिनस्ताय बुझा रहल छनि। एकरे परिणाम ई रहल जे वैदिक युगसँ पूर्वहिमे अपन महत्वक कीर्ति पताका फहरा चुकल एहि पावन भूमिकेँ आइ धरि ओ समुचित आदर नहि भेटि सकलै जेकर ई समुचित अधिकारी छैक! जँ से भेल रहितै तऽ आइ एकर मान-प्रतिष्ठाक धोती अकासे सुखाइत रहितैक। ओ देस जे अपन धन-धान्य लेल, बौद्धिक विचार लेल, समृद्ध संस्कृति आओर ज्ञानक भंडार लेल सभ्यताक पहिल खंडमे प्रमुखतासँ अपन नाम दर्ज करा चुकल छल, से आइ शिखरपर आरूढ़ रहबाक बदला खसिते रहल, ढहिते रहल! ऊपर चढ़ि नहि सकल! अपनहि घीचल रेखकेँ सम्हारि नहि सकल। मानऽ पड़त कि एहि दिशामे मिथिला सभ दिन एक्कहि बाटपर चलल आ एखनहुँ बुलि रहल अछि, दौड़ि रहल अछि। परिणाम ई जे आजुक एहि कंम्प्यूटर कालमे सेहो मिथिलाक ओ सुप्पत मान नहि भेटि रहल छैक जेकर ई सचमुचमे सुप्पत अधिकारी अछि। एकरा लेल समस्त मैथिलकेँ बहुतरास काज करऽ पड़तनि आ अपन पुरातन सोचकेँ बदलऽ पड़तनि। आ से जँ नहि हेतै तऽ मिथिला अहिना शिथिला बनल रहती। अपन यश कीर्ति लेल अप्सियाँत रहती, किकियाइत रहती, बौआइत रहती!

ई बात नहि जे एहि दिशामे मिथिलापुत्र सभ आगाँ नहि एलाह। किछु विभूति सभ अहर्निश एहि दिशामे सोचैत रहलथि। एहि बाटपर चलैत रहलथि कि माँ मिथिलाक मान कोना शीर्षपर फेरो पहुँचै आ ओतऽ कायम रहै। मुदा इहो परम सत्य कि दोसर दिस चतुर सियार सभहक चालि एतेक मजगूत कि कोना

एहि भूभागकेँ धकियाकेँ राखल जाय! कोनो तरहेँ एकरा आगाँ नहि बढ़ऽ देबाक दीर्घ सोचकेँ मजगूती देबाक राजनीतिक रचल प्रपंचमे ओझराकेँ राखल जाय। छिटकी मारि-मारि मिथिलाकेँ पछुआकऽ राखल जाय! आगाँ बढ़बाक सभ प्रयासकेँ निष्फल करबाक तिकड़ममे बझाकेँ राखल जाय। एहि सभहक माझ अपना सभहक जरदगब स्वभाव आ इतिहासक प्रतिएँ गहन उदासीनता हमरा सभकेँ बड्ड पाछाँ धकिया देने अछि। स्थिति एहन भयावह भऽ गेलैक जे खास अप्पन मिथिला सत्पुत्र सभकेँ मैथिल नहि मानबाक खिस्सा रचल गेल आ एखनो रचल जा रहल अछि। एकटा सुनियोजित ढंगे आन देसक लोक मिथिलाक सुप्पत जजाति सभकेँ अपना ओतऽके हेबाक खेरहा पसारऽ लागल। षड्यंत्र एहेन कि कतेको वरदपुत्र सभकेँ अप्पन कहऽ बला, अपना प्रांतक रहऽ बला कहिके बड़का-बड़का मिथ्या प्रमाण पसारऽ लागल! यत्र-तत्र प्रचार करऽ लागल। मिथ्या भाखऽ लागल जे ओ महान विभूति मिथिला नहि हम्मर प्रांतक लोक छलाह। हत्भाग्य हमरा सभहक जे एहि श्रेणीमे महाकवि कालिदास, कविकोकिल विद्यापति सन आर कतेक रत्न सभ छथि। टटका नाम तऽ श्रीयुत महेश कुमार झाक छनि जे खाँटी मैथिल रहितहुँ भारतीय आध्यात्मिक नेता बनि आशुतोष महाराज बनि गेलाह आ अपन मैथिल हेबाक दृढ़ प्रमाणे गमा लेलथि! ई असाधारण घटना कोनो प्राचीन कालक नहि एहि अर्वाचीन समय केर थिक। आइ-काल्हिक थिक। महाकविक बात तऽ बड्ड पुरान छै, बाबा विद्यापतिक बात तऽ सेहो कतेको सय बरषक बात छियै मुदा ई महेश कुमार झा केर बात तऽ आइ-काल्हिक थिक। आ तैय्यो हम सभ उदासीन छी। अपन सामाजिक-सांस्कृतिक चेतनाकेँ सुताकेँ रखने छी। निफिकिर भऽ समय काटि रहल छी। एहि प्रसंगमे ई बात सेहो जोड़ब अनुचित नहि कि देसक विकास हो वा स्वतंत्रता संग्रामक बड़का लड़ाइ, अपन तन-मन-धनसँ अजस्र सहयोग समर्पण देबऽ बला, सभसँ खूब आगाँ रहऽ बला दरभंगा महराजक कीर्तिगाथा सभ बहुत पाछाँ छुटि गेल अछि! आधुनिक भारत केर सभसँ पैघ निर्माता केर बिसराएब जखन संभव अछि, जिनकर दाता-दानीक विराट रूपकेँ विस्मृत करब राजनेता सभक लेल सहज अछि तऽ आन मैथिलकेँ नकारब, बिसारब वा हुनकर कीर्ति-सरकेँ भथाहब हुनका सभलेल कोन भरिगर बात! कियैक तऽ हम सभ मैथिल छी। दारिद्र्य बोधसँ भरल आ अपनामे मस्त रहऽबला जीव। सोच बस एतबे धरि जे वर्तमानमे कोना दिन काटी? अपन विराट वैभवपूर्ण इतिहाससँ मुँह मोड़ि बस आइ आ ओहूमे बस अखुनका लेल कोना जीबी! एतबा लेल तत्पर हमरा सभक झमटगर सोच रहल

अछि। तैँ ने सभ किछु रहितहुँ देखिते-देखिते हालति कतेक बदलि गेल। फुसियाकेँ गजराज लऽ लेल गेल आ हाथमे कड़ाम थमा देल गेल। ई कहैत जे अहाँ पैघ छी, संतोषी छी। अहाँ तऽ कम्मोमे निर्वाह करब सीखने छी। तैँ पाठियोसँ काज चला लेब। अहाँ अयाची छी, ई कहि-कहिकेँ परितारय केर निषिद्ध खेलमे हमरा सभकेँ ओझराओल गेल आ हम सभ ओहीमे मस्त भऽ गेलहुँ। छल एहेन जे हाथी देलाक बाद पाठियो ने भेटल आ टरका देल गेल। आइ हालति ई अछि जे अपन वाजिब सम्मान लेल हक्कन कानऽ लेल विवश छी हमसभ।

वेद-पुराणमे जगजियार अछि जे सामाजिक-सांस्कृतिक रूपसँ संपन्न मिथिला विश्वक सभसँ पैघ देस मानल जाइत छल। विद्या वारिधि क्षेत्र कहाइ छल। तकर आइ एहन दु:स्थिति कियैक? एहि यक्ष प्रश्नपर अंतस बहुत बेचैन भऽ उठैत अछि। पूरा सोच दुखांतपर ठहरि जाइत अछि। की फुसि आ की साँच से नहि जानि, मन एहि बातपर थम्हि जाइत अछि जे कहिया धरि मिथिलाके ई दाड़िम दुख सभ सहऽ पड़तै? उपेक्षित रहऽ पड़तै? आजादी भेटलाक एते बरष बितलाक बादो एकर ई दु:स्थिति कियैक? के एकरा मर्मपर ध्यान देतैक? एहि तरहक नाना प्रकारक प्रश्न सभ मनकेँ मथैत रहैत अछि। एहिमे एकटा पैघ सवाल ई उठैयै जे एकर एहि हालति केर जिम्मेदार के? एहि प्रश्नक जवाबमे हमर मन सभसँ बेसी कसुरवार लाटसाहेब सभकेँ मानैत अछि। इतिहासक पन्ना गवाह अछि जे एकर मान-प्रतिष्ठापर जँ सभसँ बेसी कियो प्रहार केलक तऽ ओ छल अंगरेजिया सरकार। अपन छल बुद्धिसँ समस्त मिथिला-मैथिलकेँ एना ने ओझरौलक जेकर दंश एखनहुँ हमरा सभकेँ टहकि रहल अछि! आ नहि जानि ई दर्द कहिया धरि अपन तापमे झरकाबैत रहत। सुनियोजित ढंगे भौगोलिक, सामाजिक आओर सांस्कृतिक खेमामे बाँटि मिथिलाकेँ गर्तमे पहुँचाबैकेँ कोनो कसरि ओतऽ बांकी नहि राखलक। अंगरेज एहि बातके खूब नीक जकाँ बूझै छल जे मैथिल सभ्यता-संस्कृतिकेँ खतम केने बिना भारतमे आगाँ बढ़ब संभव नहि अछि। चूंकि ओ विश्व भरिमे अपन बादशाहत कायम करबाक उद्‌देश्यसँ आगाँ बढ़ि रहल छल। हम सभसँ पैघ आ हमर देस सभसँ पैघ केर नीति अपनौने चलि रहल छल। एहि यात्राक क्रममे आर्यावर्तमे ओकरा स्पष्ट बुझना गेलै जे भारतक सभ्यता-संस्कृतिक सोझाँ ओ किछु नहि अछि। तखन एकरा धकियाबैक लेल ओ नाना प्रकारक प्रपंच रचऽ लागल। ओकरा छगुंता तखन आरो बेसी लगलै जखन ओ मिथिलाक सीमा छूलक। विस्मित रहि गेल कि बाप रे! मैथिल सन विद्यानुरागी, संस्कृति प्रेमी आ देवभाषाक जानकार तऽ कतहु अछिए

नहि! एकरा सोझाँ साहित्य आ संस्कृतिए नहि, हमरा सभहक सामाजिक जीवन व्यवस्थो सेहो बड्ड दुबराएल अछि। मिथिलाक वैभवपूर्ण सांस्कृतिक संपदा तऽ अद्‌भुत छैक! बिनु एकरा धकियेने अपन उद्‌देश्यमे आगाँ कथमपि नहि बढ़ल जा सकैछ। अस्तु योजनाबद्ध रूपेँ चुनि-चुनि कऽ नियम बनौने गेल आ हमर प्रशस्त मैथिल संस्कृति-संस्कारकेँ कात-करोट लगबैत गेल। ओकरे परिणति ई भेल जे वैदिक युगसँ जे मिथिला शिक्षा-संस्कृति केर क्षेत्र हो वा सामाजिक सौहार्दक विषय अथवा गरिमामय राजनीतिक परिवेश, सभमे सभठाँ समादृत छल से अँगरेजिया सरकारक शासन कालसँ दिनानुदिन पछुआइत चलल गेल। आइ स्थिति एहेन छैक कि अपन साबिकक पहचान तक बाँचल नहि रहि गेल! राजनगर, दरभंगा, पूर्णिया, गढ़बनैली, बिस्फी, सोनवरसा, महिषी, सिंहेश्वर, कुशेश्वर, कपिलेश्वर, बिदेश्वर, चंदेश्वर, उच्चैठ, नवादा, बलिराजपुर, देकुली, जयमंगलागढ़, मंगरौनी, सीतामढ़ी, मुंगेर, कुर्साकांटा, लखीसराय, भागलपुर, समस्तीपुर, कमतौल, सौराठ, मधुबनी सहित कतेको पौराणिक ओ ऐतिहसिक स्थान अपन महत्व लेल अप्सियाँत अछि। उचित मूल्यांकन हैब तऽ दूर अस्सल पहचान पेबा धरिसँ वंचित अछि। आ ई दर्द संपूर्ण मिथिलाक छैक! ओ अप्पन अस्सल पहचान लेल आइ तरसि रहल अछि। झरकि रहल अछि। सिहरि रहल अछि। कुहरि रहल अछि। हाकरोस पाड़ि रहल अछि। हक्कन कानि रहल अछि।

दुनिया भरिमे दरभंगा हाउसक की शान छलै आ आइ की भऽ गेलै! एतुक्का कतेको मनीषी ओझल भेलाह आ कतेको विस्मृत कऽ देल गेलाह! सभटा सुनियोजित ढंगसे। नाम, काम, दाम एहि तीनूमे मैथिल सभ सबपर भारी पड़ैत अछि तेँ एकरा कात करब सभहक उद्‌देश्य बनि गेल आ सभ एहि दिशामे एकजुट भऽ काज करऽ लागल। आओर तऽ आओर मैथिल वरदपुत्र सभकेँ अप्पन क्षेत्रक बासिंदे नहि जनमल हेबाक सेहो कतेको खिस्सा पसारऽ लागल! एहि दिशामे एखनहुँ कार्यरत अछि। महाकवि कालिदासकेँ मध्य प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड सहित कतेको प्रांतक लोक अपना ओतऽ केर बतबैयै तऽ बाबा विद्यापतिकेँ बंगाली सभ अपना ओतऽ के। बंगाली सभहक दावा तऽ ई छैक जे ओ बंगाली छलाह आ बाँग्लामे रचना करै छलाह। एतबे नहि ओतुक्का अजोध अनुसंधानकर्ता सभ तऽ बंगालमे हुनकर जन्म स्थानक संगहि ओतऽ राजा शिवसिंह आ रानी लखिमाकेँ सेहो ठाढ़ कऽ लेलक! अहिना महाकवि कालिदासक बारेमे सेहो मिथ्या खिस्सा सभ पसारने अछि। आनो मैथिल महापुरुष सभकेँ संगे ई समस्या बजरल अछि।

एकर कारण बस एक्केटा जे दारिद्र्य बोधक सिक्कैरिसँ जकड़ल मिथिलावासी अपन अस्मिता तकके गमेलासँ गहन अफसोच नहि करै छथि। अपन पूँजी पगहा लुटेलाक बादो एहि समाजक सेहतपर कोनो खास फर्क नहि पड़ै छैक! की साँचे हम मैथिल सभ एहने छी? मोटामोटी स्थिति तऽ यैह अछि!

समग्रत: जे होउक मुदा किछु विभूति एहनो छथि जे एहि मान्यताकेँ चिर्री-चिर्री उधेसि रहल छथि आ उधेसैत आबि रहल छथि। एक-दू नहि एहेन कतेको नाम अछि जे ताल ठोकिके सभठाँ मिथिलाक कीर्ति ओ कृतिकेँ बखानैत रहलाह अछि। एकर मोल ओ मान्यताकेँ स्थापित करैत रहलाह अछि। चिकरि-चिकरि सभठाँ बाजैत रहलाह अछि जे हमर पुरषा, प्रतिष्ठाकेँ दोसर प्रांत धकियौने अछि! स्वतंत्रता संग्राममे मिथिलाक अहम योगदानक गाथाके मटियौने अछि! हमर गौरवशाली विद्या, वैभव आ दार्शनिक परंपराकेँ लतियौने अछि! जे सभ ई कहि रहल छथि, एकरा भाषि रहल छथि, ओहिमे एकटा बड्ड प्रतिष्ठित नाम अछि डॉ. रंगनाथ दिवाकर! ओ ई सभ मात्र भाषय नहि छथि अपितु अहर्निश एकरा लेल जीबि रहल छथि। हुनका जखन जतए जे मौका भेटै छनि ओतऽ मिथिला मैथिल केर विजय पताका गाड़ि बड़का भरोस दै छथि जे अपन जन्मभूमिक महत्ता पुनर्स्थापित हो, एकर उचित मान भेटौक, एकर असली पहचान जगजियार होउक। एकरा लेल जनचेतना जागृत करबा हेतु ओ सतत प्रयत्नशील छथि। एककेँ बाद एक अपन कृतिसँ मिथिलाक यश कीर्तिकेँ जगजियार कऽ रहलाह अछि। आ अही क्रममे अपन सिरजल टटका कृति 'महाकविक महाप्रयाण' लऽ एक बेर फेर मिथिलाक महत्ता स्थापित करबामे कोनो कोर कसरि बाँकी नहि रखलाह अछि। पोथीक आखर-आखर गर्द करैत कहि रहल छैक जे दुनिया भले ढिंढोरा पिटौ जे महाकवि कालिदास मध्य प्रदेशक छलाह, जम्मू-कश्मीरक छलाह, उत्तराखंडी छलाह वा कोनो आन ठामक छलाह, से सभटा बात मिथ्या थिक। ओ शुद्ध मैथिल छलाह आ खाँटी मिथिलाक छलाह। उत्तम रूपमे प्रकाशित एहि पोथीक पन्ना-पन्ना बड्ड आत्मतोष दैत अछि। हमरा कने बेसिए, एकर कारण बताएब एतए प्रासंगिक बुझाइत अछि आ जरूरी सेहो।

पोरकाँ साल 'दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, 2023' घूमऽ गेल रही। मेलाक आयोजनकर्ता नेशनल बुक ट्रस्टक अध्यक्ष शिक्षाविद् प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा मेला परिसर स्थित अपन कक्षमे खूब आदर सत्कार केलथि। विदा काल बड्ड हुलसिकेँ अपन लिखल एकटा पोथी भेँट केलथि जाहिमे ई वर्णित छल जे महाकवि कालिदास उज्जैनक छलाह। कोनो सामान्य मैथिलकेँ ई बात बड्ड

अनसोहाँतल लगतै, हमरो लागल! सहस्राब्दी पूर्वहिसँ मिथिलाक कण-कणमे ई बात व्याप्त अछि जे महाकवि कालिदास सुच्चा मैथिल छलाह, जन्मजात मैथिल छलाह। उतेढ़सँ लऽकँ आनो कतेक प्रमाण उपलब्ध अछि। कतेको अकाट्य प्रमाणक माँझ सभसँ पैघ प्रमाण तऽ लोककंठ अछि जे संपूर्ण मिथिलामे जन-जनमे व्याप्त अछि। लोक आस्थाक सिद्धपीठ उच्चैठ भगवती, काली डीह आ ओहिसँ जुड़ल अनगिनत खिस्सा सभ यत्र-तत्र पसरल अछि, मिथिलाक कण-कणमे व्याप्त अछि। दुक्खक बात ई जे ओ सभ आइ अपन प्रामाणिकताक बाट जोहै लेल बाध्य कएल जा रहल अछि। विडम्बना देखियौ, डेढ़ हजार बरष बाद आइ महाकविकेँ मैथिल हेबाक प्रमाण माँगल जा रहल अछि, ताकल जा रहल अछि! आन-आन प्रांतक बुद्धिजीवी सभ ई खेरहा कऽ अनघोल मचेने छथि जे महाकवि कालिदास हुनके ओतऽ के रहथि। एकरा समर्थनमे एकसँ बढ़िके एक तर्क दऽ रहल छथि। कतेको कुतर्कसँ ई साबित करैके सफल प्रयास कऽ रहल छथि जे ओ हुनके प्रांतक नागरिक छलाह। कोनो एकटा बात वा हुनक रचनामे कोनो स्थानक चर्च मात्रेसँ अपन दाबीकेँ एतेक ने भरिया देने छथि जे जेना सरिपहुँ महाकवि हुनके दरबज्जाक निवासी रहल होथि! जुग, शती, सहस्राब्दी बितलाक बाद हुनका मैथिल नहि मानि अप्पन राज्यक वासी कहऽ बला लोकक संख्या दिनपर दिन बढ़िते गेल आ अपन आदति अनुरूप मैथिल सभ एहि प्रसंगमे सेहो जरदगऽबे बनल रहलाह। ओना किछु नामीगिरामी मनीषी गण समय-समयपर एकर प्रखर विरोध करैत रहलाह अछि जाहिमे एकटा धाकड़ नाम अछि प्रखर शिक्षाविद आओर कुशल प्रशासक रहल विभूति, श्रेष्ठ साहित्यकार डॉ. रंगनाथ दिवाकर केर। ओ कतेको पैघ मंचपर महाकवि कालिदासकेँ मैथिल हेबाक अकाट्य तर्क दैत चिकरैत रहलाह आ अपन टटका सिरजल पोथी 'महाकविक महाप्रयाण'सँ हुनकर मैथिलत्वक निस्सन प्रमाण प्रस्तुत केलाह अछि। पूरा पोथी पढ़ि मन गर्वसँ भरि उठल आ ओहि दर्दकेँ बिसरि गेल जे आन-आन प्रांतक लोक महाकविक अपना राज्यक हेबाक दाबा करैत सुधी मैथिलकेँ दैत रहलाह अछि। एहिमे कोनो फराक मत नहि जे ई एकटा एहेन पोथी अछि जाहिमे डॉ. दिवाकर इतिहासके थाहि-थाहिकेँ आ साहित्यमे डूबि-डूबिकेँ कीमती मोती सभ निकाललथि अछि। अपन लगन, परिश्रमकेँ एक्कारोट कऽ घामक पूरा नदी बहा शोध आओर साहित्यकेँ जाहि रूपेँ ठाढ़ केलनि अछि से प्रणम्य अछि, परम स्तुत्य अछि। एकर जतबा प्रशंसा कएल जाय ओ कम्मे रहत।

सभसँ पहिल बात जे ई तऽ निर्विवाद सत्य थिक जे महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्यक आइ तक केर सर्वश्रेष्ठ कवि छथि। भारतक प्राचीनसँ लऽकेँ अर्वाचीन विद्वाने नहि पाश्चात्य भाषा पंडितो सभ ई सहज स्वीकार करै छथिन जे संस्कृत साहित्यक सुमेरु छथि महाकवि कालिदास। हुनकर साहित्यमे कतहु कोनो अनुपयुक्त अनावश्यक शब्दक प्रयोग नहि भेल अछि। साहित्य सृजनमे वाक्य विन्यासक अनुपम कृति आ शब्द लालित्यक बेजोड़ प्रयोग हुनका सहजहिँ 'कविकुल गुरु'सँ विभूषित करैछ। दुनिया भरिमे हुनका सन एहेन कोनो आन साहित्यकार नहि जे अपन रचनामे भाव प्रकट करबाक ओ क्षमता राखथि हो जे ओ राखि चुकल छथि। काव्य रचनामे प्रासादिक ओ स्वाभाविक शैली, झमटगर सोहनगर कल्पनाक ओ अद्भुत प्रयोग, सरस आ सुंदर नीति काव्यक अतुलित उद्गार आ नाट्यकलामे अनुपम सौंदर्यक प्रदर्शन कऽ ओ विश्वक कोनो साहित्यकारक माँझ बड्ड बेस समादृत छथि। काव्य आओर नाट्य लेखनमे हुनकर कोनो जोड़ नहि। हुनकर रचना सभ काव्यगत सौंदर्य आओर नाटकीय विशेषतासँ कंठ धरि डूबल अछि जे पाठककेँ सहज-सरल भावसँ अपना दिस आकृष्ट करैत अछि। विद्वान सभहक बीच हुनकर सातटा काव्य अपन प्रामाणिकता पबैछ जाहिमे ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव, रघुवंश, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय आ अभिज्ञान शाकुन्तलम्। एहिमे पहिल दुनु गीति काव्य अछि आ तेसर-चारिम महाकाव्य। आखिर केर तीनू नाटक। ओना तऽ हुनकर सभटा साहित्य अपने आपमे विलक्षण अछि, असाधारण अछि। नवीन उपमा आ रूपकसँ भरल। प्रकृति केर कोनो अंग एहन नहि जे हुनकर उपमाक प्रयोगसँ बाँचल हो। खास बात ई जे बड्ड विस्तारसँ वर्णन करबा काल सेहो कतहु भाषाक माधुर्य मिसियो मलिन भेल नहि देखाइछ ने कत्तौ वाक्य विन्यास दुब्बर देखाइत अछि! शैली अत्यंत परिष्कृत आ भाषाक प्रवाह एहन जेना अविरल गतिसँ बहैत कोनो बड़का धार हो। संगहि पूर्णतः मर्यादित आओर अनुशासित सेहो। भाषाक माधुर्य, ओकर कोमलता, सुंदर वाक्य विन्यास आओर भावानुकूल शब्द चयन सुधी पाठकवृंदकेँ भावविभोर करैत अछि। काव्य रसिक आ साहित्य प्रेमी मानै छथि जे नीरस विषय सभमे सेहो महाकवि जान फूँकि ओकरा सरस आओर आकर्षक बनौलथि। ठूँठ गाछ आ निर्जन खंडहर सभमे सौंदर्य स्थापित केलथि। ओ जे केलथि से आन गोटेसँ कदापि संभव नहि अछि। हुनकर रचना सभमे प्रकृति ओ परिस्थितिक तादात्म्य बैसबैत सौंदर्यक जे भाव गढ़ल गेल से आइ धरि सर्वश्रेष्ठ आसनसँ मिसियो पददलित नहि भेल अछि। तेँ तऽ प्रकांड विद्वान सभक मत

छन्हि कि कियो चाहे जतबा पढ़ि लियैऽ जँ महाकवि कालिदासक कृति 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नहि पढ़लक तऽ ओ किछु नहि पढ़लक।

महाकवि कालिदासक रचना संसारक संबंधमे बहुत बात सभ कहल जा सकैछ, बड़का-बड़का ढढ्ढर लिखल जा सकैछ तथपि ओ कम्मे रहत। एतए बेसी विस्तार से कहब उचितो नहि। तँ एहि प्रसंगकेँ एत्तहि छोड़ब उचित बुझि आगाँ बढै छी आ एकटा आओर खास बात कहैसँ अपनाकेँ रोकि नहि पाबि रहल छी जे जहिना हुनकर जन्म स्थान लऽ के लोकसभमे मतैक्य नहि अछि तहिना हुनकर स्थितिकाल आओर जिनगीक विषयमे सेहो एक मत नहि अछि। कोइ हुनका ई. पूर्व दोसर शताब्दीक मानै छथि तऽ कोनो विद्वान छठम शताब्दी ईस्वीक मानै छथि। भारतक विद्वान सभ हुनका ईसापूर्व पहिल शताब्दीक मानै छथिन तऽ पाश्चात्य विद्वान सभमे बेसी गोटे गुप्त कालक बतबै छथिन। ई कहबाक आशय बस एतबे जे हुनकर निवास स्थाने नहि स्थिति काल सेहो विवादित कएल जाइत रहल अछि। अत्यंत हर्षक बात ई जे एहि दुनु विवादपर ठोस सुबूतक ढेरी लगबैत अपन पोथी लऽकेँ उपस्थित भेलाह अछि सिद्ध अन्वेषक आ कुशल कथाकार, नाटककार डॉ. रंगनाथ दिवाकर जी। ई पोथी जेकर नाम थिक 'महाकविक महाप्रयाण' हाथमे अबिते हमरा बड्ड संतोष देलक। एकटा पैघ आत्मिक सुख देलक जे महाकवि कालिदास सुच्चा मैथिल छलाह ई बात हम आब चिकरि-चिकरिकेँ अपन ओ सभ मित्र सखाकेँ कहि सकबनि जे मिथिलाक बाहर रहनिहार छथि आ ई दाबी करै छथि कि ओ (कालिदास) दोसर देसक लोक छलाह। पटना, दिल्ली, पानीपत, चंडीगढ़, श्रीनगर, भोपाल, मुंबई सहित कतेको नगर-शहर केर साहित्यिक मंचपर कहल-सुनल गप सभमे महाकविक मैथिल हेबाक माँगल गेल प्रमाणमे मनमसोसिकेँ चुप रहि जेबाक जे दर्द हमर मानसके मथने छल वा मथैत आबि रहल छल से एहि पोथीकेँ पबिते जेना बिला गेल अछि। जनश्रुतिकेँ लोक प्रमाण मानऽसँ साफे मना कऽ दैत अछि। जनविश्वास छपल बातपर रहै छै। तँ अखबार, पत्रिका आओर पोथीक महत्व एहि कंप्यूटरो युगमे एखन धरि अक्षुण्ण अछि। लोक ई मानै/बाजै छथि जे छपलाहा बात साँच रहै छै। ओहिमे फुसिकेँ बेसी सन्हियाएब संभव नहि। एहि दृष्टिकोणसँ ई पोथी समस्त मिथिला-मैथिलकेँ कतेक संतोष देतैन तेकर एत्ता नहि। काल्हि तक महाकवि कालिदासकेँ अप्पन कहऽ बला लोक सभ एम्हर-ओम्हर किछु-किछु लिखिकेँ आ छापिकेँ अपन बात ऊपर करैत रहलाह। आ हमरा सभ हुनकर नामे जमीन, खतियान, डीह सभ अद्यतन राखियोकेँ हुनका अपना

ओतऽ केर रहऽ बला बताबैमे आ ओकरा साबित करबामे असफल रहल छलहुँ। ओना तऽ बहुत पूर्वहि पंडित जीवनाथ झा आ डॉ. जयमंत मिश्र प्रभृति विद्वान सभ एहि मर्मकेँ बुझैत कतेको साक्ष्य प्रमाण सभ लोकक सोझाँ प्रस्तुत केलथि परञ्च एहि दिशामे जे काज आइ डॉ. दिवाकर केलाह अछि ओ प्रशंसनीय अछि, वंदनीय अछि। एकर सभसँ पैघ कारण अछि जे महाकविक मैथिलत्वक सिद्धिमे एतेक प्रशस्त सामग्री एकेठाम अंतह कहाँ भेटैछ! दुइ सय छप्पन पृष्ठक पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' केर आखर-आखर बस एतबा कहबा लेल आतुर अछि जे विश्व भरिमे समादृत प्रख्यात साहित्यकार महाकवि कालिदास विशुद्ध साहित्यकार छलाह। हुनका संबंधमे पिछला डेढ़-दू सए सालसे जे खेरहा कएल जाइत रहल, घेंघाउज घमर्थन कऽ हुनका मिथिलासँ बाहरक होइके दाबी कयल जाइत रहल, से सभ बातक बड़का काट थिक ई पोथी। एहि पोथीकेँ उचित प्रचार-प्रसार होयब अत्यावश्यक अछि। एहि पोथीसँ अगबे कालिदासक मैथिलत्वेटा नहि उजागर होइत अछि अपितु एहिमे हुनकर स्थिति काल सेहो साफ-साफ फरिछा जाइत छैक। एहि हिसाबसँ तत्विषयक एकरा मिथिलाक मान ओ साबिकक पहचानक श्रेष्ठ दस्ताबेज कही तऽ कोनो अतिशयोक्ति नहि।

गहिंरगर शोथग्रंथ आ ललितगर साहित्यक सुंदर सुयोग अछि 'महाकविक महाप्रयाण'। एकरा मणिकांचनक संयोग कही तऽ बेजाए नहि। शोध आ सृजन-दुहुक जुटान आ सेहो एक्कहि ठाम! एकटा उत्कृष्ट पोथीक रूपमे। ई पोथी मिथिलाक कीर्तिपताकाकेँ फेरसँ अकासमे फहराबैकेँ पूरा दमखम रखैत अछि से हम्मर विश्वास अछि। एकर सभसँ पैघ कारण छैक एकर आखर-आखर केर भाव। जे आदिसँ अंत धरि मैथिलत्वक भास गेबामे रत अछि। पाठक एहिमे कोनो फराक मत नहि रखताह से हमर दृढ़ विश्वास अछि। एहि पोथीक सृजन करबा लेल विज्ञ लेखककेँ कोटि-कोटि नमन। पोथी पढ़ैत काल पाठक हुनका एक्कहि संग अभिजन शोधप्रज्ञ आ सिद्ध साहित्यकारक संज्ञा देथिन एहिमे कोनो दू मत नहि।

हमरा हिसाबसँ 'महाकविक महाप्रयाण' पोथी अखंड रूपें मूलतः तीन खंडमे विभक्त अछि। एहिमे दू खंड शोध साहित्य समेटने अछि जखन कि तेसर खंड नाट्य साहित्य रूपमे लिखल गेल अछि। खास बात ई जे तेसर खंडमे जे नाटक अछि ओकर शीर्षक थिक महाकविक महाप्रयाण। आ अही नामसँ पोथी पूर्णता पौलक अछि। एनामे तेसर खंडक श्रेष्ठता स्वयंसिद्ध अछि। ओकरापर विस्तारसँ अपन उद्गार प्रकट करी ताहिसँ पहिने पूर्वक दुनु खंडक चर्च करब हमरा

उचित बुझना जाइछ। दुनु खंडक शीर्षकमे पहिल अछि-'महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व' आ दोसर अछि-'इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व'। दुहु खंडमे छओ-छओ गोट निबंध विन्यस्त अछि। बारहो निबंधकेँ क्रमिक रूपेँ अत्यंत व्यवस्थित ढंगसँ स्थान देल गेल अछि। जन्मसँ मरण तक सभटा खिस्साकेँ सीढ़ी-दर-सीढ़ी एना राखल गेल अछि जे मिसियो उनट-पुनट नहि। युक्तिगर ढंगे क्रमबद्घ रूपसँ। जिनगीक गणितकेँ सहज सुन्नर ढंगसँ फरिछाकेँ समझाबैत बुझाबैत। पहिल खंडक निबंध सभ क्रमिक रूपे एना अछि-पहिल, महाकविक समय आ जन्मस्थान। दोसर, रचनामे व्यक्त विचार सभक आधारपर महाकविक मैथिलत्व। तेसर, प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व। चारिम, रीति-रिवाज व पावनि-तिहारक चर्चमे महाकविक मैथिलत्व। पाँचम, भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व आ आखिरमे, राजस्व अभिलेखक आधारपर महाकविक मैथिलत्व।

अहिना दोसर खंडमे विन्यस्त निबंध सभहक नाम क्रमशः एना अछि-पहिल, महाकवि कालिदास आ सीता चरित्र-चित्रण। दोसर, उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास। तेसर, महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा। चारिम, कालिदास, कुमार दास आ श्रीलंका। पाँचम, महाकवि कालिदास आ कुमार दास : अनंत पथ केर सहयात्री। आ अंतमे, श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल। ई बारहो निबंध पढ़लाक बाद कनियो संशय कहाँ रहि जाय छै जे महाकवि विशुद्ध जन्मजात मैथिल नहि छलाह! आन-आन देसक चतुर साहित्यकार सभ चाहे जतेक डींग हाँकथि, गाल बजा-बजाके दाबी करथि जे संसार भरिमे स्थापित साहित्यकार महाकवि कालिदास हुनके ओतऽ के रहथि तेकर बड़का काट ई निबंध माला अछि। जेकर एक-एक निबंध रूपी फूल अपन सुगंधसँ महाकविक मैथिलत्वपर ठप्पा लगबैत अछि। समवेत रूपमे ई खुलस्त करैत अछि जे कालिदास सुच्चा मैथिल छलाह। खाँटी मिथिलाक छलाह। तेँ हुनका आन प्रदेशक लोकक अप्पन मानब वा कहब पूर्णतः फुसि थिक! मिथ्या प्रलाप थिक। एकरा अनर्गल प्रपंच कही तऽ बेजाए नहि।

एहि दुनु खंडक बाद निष्कर्ष शीर्षकसँ अपन पोथीक निचोड़ प्रस्तुत करैत विद्वान लेखक दाबी करैत कहै छथि जे निष्कर्षतः कहि सकैत छी जे महाकवि कालिदास मैथिल छथि। कुल चारि पृष्ठमे वर्णित एहि भागमे लेखक अपन विचारकेँ स्पष्ट करैत जतेक बात कहला अछि ओ सभ अपने आपमे विशिष्ट अछि। बारहो

निबंधकेँ निचोड़मे कहल निष्कर्षक एक-एक आखर एहि बातके सिद्ध करबा लेल सहायक अछि जे विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार कालिदास मैथिल छलाह। तेँ ई पोथी मातृभाषाप्रिय अपन समस्त पाठककेँ मुदित करतनि, हर्षित करतनि आ आत्मतोष देतनि एहिमे मिसियो संशय नहि। पोथीक बारहो निबंध जाहि तरहेँ लिखल गेल अछि, ओकर विषय वस्तुक ओरियान कएल गेल अछि आ क्रम-क्रमसँ ओकरा सजाओल गेल अछि ओ विलक्षण अछि! स्तुत्य अछि! एतेक पैघ जटिल घमर्थन-घँघाउज विषयपर एतेक रास सामग्री जुटा साहित्य संसारमे महाकवि कालिदासकेँ मैथिल साबित करब नान्हिटा गप नहि! ई उच्च श्रमसाध्यक सुच्चा प्रतीक थिक। एहि लेल धन्यवादक पात्र थिकाह डॉ. रंगनाथ दिवाकर। हुनकर लेखनीक जय! हुनकर एकनिष्ठ मेहनतिकेँ जय-जय! हुनकर अमर कीर्तिकेँ जय-जय-जय!!

ओना तऽ दुहु खंडक निबंध सभक प्रस्तुति आ तकरा बाद निष्कर्ष रूपमे आद्योपांत सभटा बात स्पष्ट ढंगे राखि देलाक बाद आगाँ किछु कहबा-लिखबाक जरूरति नहि छल मुदा विद्वान साहित्यकार एतए चुप भऽ ठाढ़ रहब उचित नहि बुझि आगाँ चलि पड़लाह। चलला नहि, बड्ड फुर्तीसँ दौड़ि पड़लाह। बिलमला तखन जखन कि एहि विषयमे अपन मातृभाषामे एकटा नाटक लिखि देलथि। नाटक लिखऽसँ पहिने एहि विषयमे प्रशस्त सामग्री प्रस्तुत करितो बिनु हकमने नाटक लिखबाक बेचैनी मात्र एतबा लेल रहल हेतनि जे शोधक बात पाठकक सोझाँ रखलासँ पाठकक एकटा वर्ग विशेषेटा तक एहि विषय केर पहुँचि हो। आम पाठक कहीं एकर रस लेबासँ पृथक नहि रहि जाथि! अस्तु शोधक प्रस्तुतिक संगहि साहित्य सृजन (नाटक रूप मे) सेहो केलथि जेकर नाम अछि— 'महाकविक महाप्रयाण'। आ अही नामसँ नयनाभिराम पोथी प्रस्तुत केलथि जाहिमे महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर गहन शोध आ ललितगर साहित्यक सृजन भेल अछि जे आइ पाठकक हाथ तक पहुँचि गेल अछि आ अपन उचित मान्यताक बाट जोहि रहल अछि।

महाकविक महाप्रयाण पोथीक तेसर आ अंतिम खंड जे अही नामसँ नाटक रूपमे अछि, आब बात ओकरेपर। पोथीक भूमिका लिखैत आधुनिक मैथिली नाटकक श्रेष्ठ विभूति महेन्द्र मलंगिया सभसँ आखिरमे कहै छथिन जे ...हम एतबे कहब जे ई एकटा पूर्ण सफल नाटक अछि। हुनकर ई बात एहि नाटक केर श्रेष्ठताक प्रबल प्रमाण थिक। 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' शीर्षकसँ स्पष्ट कहि देने छथिन जे काव्यक समस्त कोटिमे सभसँ बेसी आनंदज अछि नाटक। नाटकेकेँ

साहित्यक मणिमय मुकुट कहल गेलैए। नाटक मतलब साहित्यक ओ विधा जे सुनला वा देखलासँ रसक अनुभूति कराबैए। काव्यक सभसँ सबल रूप। हमरा जनतबसँ नाटक मोटामोटी चारि तरहक होइत अछि।-पहिल, आंगिक जे शरीरसँ देखावोल जाइत अछि। दोसर, वाचिक जे सुनाओल जाइत अछि। तेसर, आहार्य जे रंगमंचीय होइत अछि। आ चारिम, सात्विक जे अंतरात्मासँ कएल जाइत अछि। ई सभ लिखबाक उद्‌देश्य ई नहि जे नाटक विषयपर हम कोनो पांडित्य झारी। बस एतबे जे बता सकी कि सभटा नाटक सभ तरहेँ प्रस्तुत नहि कएल जा सकैछ। बहुत कम नाटक अछि जे एहि चारू श्रेणीमे अपन स्थान बनाबैत अछि। हर्षक बात ई जे डॉ. रंगनाथ बाबूक ई वर्णित नाटक एहि चारू श्रेणीमे अपन स्थान बनेबाक गुण रखैत अछि। ओना तऽ वाचिक श्रेणीक नाटक लिखबामे ओ चारि दशक पूर्वहिँसँ निष्णात छथि। अस्सी-नब्बेक दशकमे दरभंगा रेडियो स्टेशनसँ हुनकर नाटक सभ प्रसारित भऽ बेस प्रशंसित होइत रहल। तहिया आकाशवाणीसँ प्रसारित साहित्य सभकेँ बड्ड पैघ धाक रहै। स्वभाविक रूपेँ हुनकर रेडियो नाटक सभ खूब धमगिज्जर मचबैत छल। पाछाँ जखन ओ नोकरीक क्षेत्रमे आगाँ बढ़लाह आ एक के बाद एक नोकरी छोड़ैत राजपत्रित सेवामे पहुँचलाह तऽ समयाभावेँ नाटक लेखनकेँ अनठारि जकाँ देलथि। एतेक वर्षक बाद एकबेरि पुन: जे नाटक लिखबा दिस घुरलथि तऽ वैह कमाल बल्कि आरो कमाल कऽ देलथि। ओकरे प्रतिफल थिक ई नाटक 'महाकविक महाप्रयाण'। ई एकटा एहन रचना अछि जे नाटकक चारू रूपमे अपन स्थान रखैत अछि। पढ़बा, सुनबा, देखबा आ करबामे मनकेँ तृप्ति करैत अछि, खूब सोहनगर लगैत अछि। एहि तरहक बड्ड कम रचना अछि जे चारू रूपमे लोककेँ आकर्षित करैत हो, जन-जनमे अपन भाव स्थापित करैत हो! महाकवि कालिदासक जीवन यात्राकेँ गहीँर रूपसँ सार भावेँ लिखल गेल ई नाटक वास्तवमे बेजोड़ अछि, अभूतपूर्व अछि।

बाजऽबला एगारह पुरुष पात्र आ छओटा स्त्री पात्र युक्त एहि नाटकमे जमा सातटा दृश्य अछि। सातो एक्कापर एक। शुरुएमे भारतीय प्राचीन साहित्य सांस्कृतिक बड़का चेन्ह देबामे नाटक सफल बुझाइत अछि। सूत्रधारक सबल रूपमे नट-नटीक प्रवेश एकर व्यापक हेबाक विश्वास देबाक खिस्सा कहैत अछि। श्रीगणेश होइते सनातनी सुसिद्ध साहित्यक अमिट छाप मनकेँ गदगद करैत अछि। प्रारंभेमे नट-नटीक संवाद साहित्य पिपासु सबहक जिज्ञासा प्रगाढ़ कऽ दैत अछि जखन चमत्कारिक रूपसँ नाटककार महाकविक जन्मसँ मरण धरि केर बात कहैत

हुनका मिथिलासँ सिंहल देस (श्रीलंका)सँ जोड़ि दैत छथि। उच्चैठ भगवतीक परम उपासक कालिदासक जन्म मिथिलामे भेल ई तऽ एतुक्का बच्चा-बच्चा जनैत अछि। गामे-गामे हुनकर मैथिलत्वक खिस्सा कहल-सुनल जाइत अछि। मुदा ओ श्रीलंकाक माटरा नगरमे प्राण त्यागलाह ई बुझऽ कहऽबलाक संख्या बड्ड थोड़ अछि। एहि हिसाबें आदिएमे नटक मुँहमे माटराक बात देब साहित्यकारक कबिलताक श्रेष्ठ लक्षण बुझाइछ। सभसँ बेसी नीक तऽ माटराक चर्च सुनिते नटीक मुँहसँ छगुन्ता भावमे बहराएल शब्द वाक्य अछि जे पाठक, श्रोता, दर्शकसँ लऽके समीक्षक सभकेँ सेहो मोहित करबाक पूरा सामर्थ्य रखैत अछि। नऽटे-नटी नहि दृश्यक यवनिका पात होयबासँ पूर्व पंडितद्वय, अनुचर आ कलुआक उपस्थिति, संवादक बोलसभ अपना दिस आकृष्ट करबाक अद्‌भुत क्षमता रखैत अछि। विषय वस्तुकेँ सरियाके राखब, हास-परिहास संगे कथोपकथनकेँ रुचिगर बनाएब लेखकीय श्रेष्ठताक सुन्नर नमूना अछि पहिल दृश्य। एहि दृश्यमे नट-नटीक संवाद जतेक उत्सुकता बढ़बैत अछि ओहिना पंडित आओर अनुचरक बीच भेल गपशप नीक लगैत अछि। पंडित आओर अनुचरक मध्य भेल गप जतेक गुदगुदी लगबैत अछि ओहिसँ मिसियो कम पंडितक आत्मग्लानिक भाव नहि अछि।

मनुक्ख लेल सौख सेहंताक डऽहब ओतेक कष्टप्रद नहि जतेक आशाक मरब होइत छैक। जँ ओ आशा सुख-सम्पैत आ राजपाटसँ जुड़ल हो तऽ आरो बेसी। आ जँ ओ बियाहसँ जुड़ल हो तऽ सबसँ बेसी। एहि नाटकमे ई बात खूब नीक जकाँ जगजियार भेल छै तँ पहिले दृश्यमे पाठक-श्रोता-दर्शक एकरासँ जुड़ि जाइ छथि। खास बात ई जे लोककेँ अपन हारि हकन्न कना दै छै। पुरुष हो वा जनानी, नेना हो अथवा जुआन, बूढ़ तक अपन हारिकेँ सहबा लेल तैयार नहि रहै छथि। आ जँ ई बात कदाचित विपरित लिंगसँ जुड़ल हो तऽ पुरुष समाज अपन हारि मानै लेल किन्नहु तैयारे नहि होइत अछि। परिस्थितिवश जँ ओकरा हारि स्वीकारो करऽ पड़ै छै तऽ भितरेभितर ओ अपन हारिकेँ जीतमे बदलबा लेल कोनो तिकड़म भिड़ेबासँ बाज नहि अबैत अछि। मानव मनकेँ एहि विज्ञानक भाषा बूझब कोनो कठिन बात नहि परञ्च ओकरा आखरमे उतारब सहज कहाँ अछि! तथापि एहि भारी काजकेँ खूब नीकसँ सम्पादित करबामे सफल भेलाह अछि नाटककार श्री रंगनाथजी। हुनकर लेखनीक कमाल तखन माथ चढ़िकेँ बाजऽ लागैयै जखन पंडितजीक श्रीमुखसँ अंतर्ग्लानि केर भावकेँ अपन शब्द दैत वो लिखै छथि-'... शस्त्रसँ पराजयमे कदाचित् एहन मर्मान्तक पीड़ा नहि भेल रहैत जेहन आइ शास्त्रमे

पराजयसँ भेल आ ओहो एक स्त्री द्वारा! छिया! छिया! हे महादेव! की करी जे चित्त शान्त हो।' एतबे नहि, एहि दृश्यमे आचार्य रत्न आ प्रकांड पंडित संगहि अनुचरक बीच भेल गपशप दर्शन शास्त्रक बड्ड नीक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। यैह तऽ मिथिलाक अस्सल अपन संस्कार थिक। अपन मालिकोकेँ उचित बात कहबासँ संकोच नहि करब, मुहेपर ठाइँ पठाइँ कहबाक साहस, मनमे आएल कोनो बातकेँ बिना लाग लपेटकेँ साफ-साफ बाजब, ई मिथिला छोड़ि अंतह आओर कहाँ कतहु होइ छैक! अपन माटिक खाँटी सोन्हगर सुवाद आ संस्कारक भाव नेने पात्र सभक गपशप पहिल दृश्यक कीमती गहना बनल अछि।

कहल जाय छै जे श्रेष्ठ बनब, रहब, करब ओतेक पैघ बात नहि जतेक ई जे ओतऽ पहुँचला उपरांत ओहिठाँ बनल रहब होइ छैक। ई मनुष्यक जिनगीक सभसँ पैघ चुनौती छैक जेकरा प्रत्यक्ष हो वा परोक्ष प्रायः सभगोटेकेँ सामना करइएटा पड़ैत छै। जे अपन काज वा सम्मानक ढेरीमे जीवनशास्त्रक एहि परिभाषाकेँ रटि लेलक ओ प्रतिष्ठित भऽ गेल। आ जे एकरा बिसारि देलक ओ शीर्षसँ टघरि गेल। एना खसल जे सर समाजमे बिला गेल। एहि दृष्टिसँ जँ महाकविक महाप्रयाण नाटकक पहिल दृश्य शिखर छूलक तऽ दोसर दृश्यक लेल सभसँ पैघ चुनौती यैह छल जे ओहि श्रेष्ठताकेँ बनाकऽ कोना राखल जाए। एहि दिशामे साहित्यकारक विलक्षण काज मनकेँ गदगद करैत अछि। विद्वत्ताक भावकेँ संवाद सृजन करबामे माटिक घरक देहरि धुरखुरसँ लऽ कऽ हवेली महल धरिक जतरा करैत मजगूत भाषाक बोध कराबैत अछि। बदला लेबाक अनैतिक सोचक दर्दसँ कछमछाइत पंडितक पीड़ा, बेटी बियाहक बौद्धिक भारसँ दबल पिताक वेदना, अपनासँ सबल पुरुषकेँ पति बनेबाक नारीक सेहंता, छल बलसँ विद्वान मौगीक दर्प तोड़बाक पुरुषक षड्यंत्र, थोथीसँ ककरो परास्त करबाक ताकति, बियाह हेबाक परिकल्पना करैत पुरुषक खुशीसँ लहालोट भेल चित्त, कन्याकेँ अपन मनचाहा बियाह हेबाक हर्ष आ आखिरमे अपन बालसखी सम कुमारि मलिकाइनक बिछोह हेबाक दर्दक मनोविज्ञानकेँ जाहि तरहेँ एहि दृश्यमे देखावोल गेल अछि ओ सभ मनकेँ अपना दिस बान्हिके रखने अछि। कतहु एको क्षण लेल उफांटि नहि लगैत अछि। आदिसँ अंत धरि पूरा दृश्य पहिलुक दृश्यकेँ स्थापित श्रेष्ठताकेँ आरो आगाँ बढ़ेबाक तेज देखबैत अछि।

एहि दृश्यमे आदिसँ अंत धरि बेजोड़ संवाद लोककेँ बान्हने रहैत अछि। हर्ष आओर विषादे नहि विछोहक उत्तम भाव सेहो एहिमे परिलक्षित भेल अछि। संवाद

एहन जे कतहु मिसियो बेसी नहि, ने कनियो कम। कखनो बोझिल करऽबला नहि। आ ने परिस्थितिक कोनो भावकेँ छोड़ऽबला। राजा रहितहुँ पिताक अपन धियाक बियाहक चिंता, विदुषी बेटी विद्योत्तमाकेँ अपना विरुद्ध हुअऽ बला षड्यंत्रक चिंता, पंडित सभकेँ अपन पोल पट्टी फुजि जेबाक चिंता जाहि रूपेँ एहि दृश्यमे जगजियार भेल अछि, दोसर दिस महामूर्ख कलुआकेँ अपन बियाह भऽ जेबाक हर्ष, कनिञा विद्योत्तमाकेँ अपन मन मुताबिक वर भेटि जेबाक खुशी आ अपन कएल प्रणकेँ पूरा हेबाक हर्ष, राजाकेँ अपन घोर चिंता दूर हेबाक हर्ष, पंडित सभकेँ अपन हारिक सभटा ओइलि चुका लेबाक हर्षसँ ओतप्रोत ई दृश्य बेस मोहित कएलक अछि। आ सभसँ बेसी मोहलक अछि द्वैत अद्वैतक तर्क आ चर्च। अद्वैतकेँ श्रेष्ठ मानैत जखन विद्योत्तमा अपन प्रश्न पसारैत पुछै छथिन जे ई तऽ भारतीय दर्शन केर आत्मा थिक। की एकरा नकारल जा सकैत अछि? उतारा दैत पंडित प्रवरक श्रीमुखसँ गीताक श्लोक— 'प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्धयनादि उभावपि, विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृति संभवाम्' -बहराएल। मजगूत तर्क दैत ओ बजलाह जे प्रकृतिकेँ बिना ब्रह्मक कोनो सृजन काज संभव नहि। ई बात सभकेँ बड्ड नीक लगैत अछि। ओना हल्लुक होइतहुँ अपन बातसँ पाछाँ हटब मनुक्खक स्वभाव नहि। आ एकरे प्रत्यक्षमे देखबैत राजकुमारीक अगिला प्रश्न जे ब्रह्मक सृष्टिकेँ की ब्रह्मसँ पृथक कोनो अस्तित्व छैक?-केर जवाबमे गीतामे भगवान श्रीकृष्णक उक्ति -'अहं बीजप्रद: पिता' केर चर्च करैत पंडितजी कहै छथिन जे एकरा बादो जँ कोइ बीज धारण करऽ वला वा वाली नहि हो तऽ सृजन संभव कहाँ! द्वैत-अद्वैतक यैह सिद्धांत तऽ अर्द्धनारीश्वरक परिकल्पनाक मूलाधार थिक। एतबे नहि, आत्मा बिना परमात्माक महत्वे की! भक्त बिना भगवान कहाँ! कहैत प्रश्नोत्तरीकेँ जाहि तरहेँ सहज, सरल ओ सुंदर ढंगसँ राखल गेल अछि जे उच्च साहित्यिक कौशल केर एकटा नीक नमूना बुझाइत अछि। एहि दर्शन विंबमे पिछड़ितो राजकुमारी आरो आश्वस्त भऽ जेबाक उद्देश्यसँ पंचभूतक बात इशारामे जखन पसारै छथिन आ तेकर उतारामे उठल हाथक मुट्ठीक इशारा पाबि अकचकाइत छथिन तखन पंडितजीक वाक् चातुर्यक बड़का खेल करैत अछि। ओहि काल हुनकर बोली बड्ड नीक लगैत अछि— '...जहिना पंचभूतसँ एक शरीर तहिना पाँच आँगुरसँ एक मुट्ठी।' आ अही जवाबपर तऽ निरुत्तर भऽ अपन हारियोमे जिनगी जीतऽक अतुलित आनंदसँ विभोर राजकुमारीक गालपर लाली पसरि जाइत छनि। तत्पश्चात जयमाल आ ओकर बाद ज्येष्ठ लोकनि द्वारा दुर्वाक्षत मंत्र 'ॐ आब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी

जायतामाराष्ट्रे राजनय:...' केर पढ़ला उपरांत वर कनिञाकेँ दुबि-धानसँ आशीर्वाद दिया बियाह कार्य संपन्न कराओल गेल अछि। सामान्यत: लेखकीय धर्म एत्तहि संपन्न भऽ जाइत अछि परंच एतए तऽ विशिष्ट लेखक छथि डॉ. दिवाकर बाबू जे दृश्यकेँ आर कनेँ आगाँ बढ़ा विद्योत्तमाक अनुचरी बालसखीक करुण विलापकेँ लोकक सोझा राखि अपन लेखकीय गुरुताकेँ सिद्ध करै छथि।

नाटकक तेसर दृश्य पिछला दूनू दृश्यक गरिमाके आगाँ बढ़बऽमे आरो बीस बनल बुझाइत अछि। बुद्धि कौशलसँ अपन लेखनीकेँ मजगूत करबामे साहित्यकार खूब सफल रहलाह अछि एहिमे कोनो संदेह नहि। वर कनिञाँक पहिल भेँट, कोबरा घरक पहिल रातिमे अपन रूप सौंदर्यक प्रशंसा सुनबा लेल आतुर नारि मन, अपन संचित धनकेँ दुनियासँ जोगाकऽ राखि अपन पियापर लुटेबाक अपूर्व सौख, अपन हारिमे जीतक नुकाएल सोनक सुगंध देखबा-लेबा लेल अपसियाँत विदुषीक तड़प आ दोसर दिस छलसँ भेल बियाहक खुशीमे ओझराइत मन, छुछुन्नरक माथमे चमेलीक तेल कहबी केर यथार्थ भारसँ दबल पुरुष मन, पोल-पट्टी फुजि जेबाक डरसँ कँपैत वरक देह, महामूर्ख पुरुषकेँ उच्च कोटिक विदुषीसँ प्रत्यक्ष सामना करबाक डऽर -एहि समस्त मनोभावकेँ साहित्यमे सुन्नर ढंगसँ प्रस्तुत करबाक उत्तम काज भेल अछि एहि दृश्यमे। एहि दृश्यमे एक्कहि संग मिलनक उत्कंठा अछि तऽ विछोहक व्यथा सेहो। ज्ञानी पति संग साहचर्य पेबाक उत्कट लालसा केर पूर हेबाक सपना अछि तऽ यथार्थ बुझि बुलबुलाक रूपें ओकरा (सपनाकेँ) अलोपित हेबाक दर्द सेहो। फुसिएँ कहल गेल महल अटारीक स्थानपर साँचमे टटघऽरो नहि देखि व्यथित मनकेँ संतापक डऽर अछि तऽ सोझ मनुषकेँ साँच-साँच साफ बात कहि देबाक साहस सेहो। एतबे नहि, एक्कहि लोकमे तामसे इनहोर भेल मनक रूप अछि तऽ अपन पित्त उतारबाक लेल उठाओल अनर्गल डेगकेँ प्रतिएँ कैल अफसोच सेहो। तामसमे कहल गेल बात सभपर अपनहि अफसोचक आगिमे पजरब मनुक्खक वेदनाकेँ खूब नीकसँ देखाओल गेल अछि एहि दृश्यमे।

अपनहि राखल शास्त्रार्थमे परास्त विदुषीकेँ मनवांछित सुन्नर सुभग परम विद्वान पतिसँ जखन कोबरा घरमे पहिल भेँट होइ छनि आ आतुर दुलहिन अगरा-अगराकेँ जखन अपन पति परमेश्वरसँ अपन रूपक वर्णन सुनबाक कामना करै छथिन तखने सपना टुटबाक यथार्थसँ भेँट होइतहिँ तामसे फन काढ़ि नागिन बनि परम मुरखाहा पतिकेँ बेर-बेर डँसिकेँ अपमान करै छथिन। अपना लगसँ भगा दैत छथिन। ओ बुझि जाइ छथिन कि शास्त्रार्थमे हारल पंडितजी सभ हमरासँ ओइलि

चुकौलथि अछि। हमरासँ महाछल भेल अछि। ई बात मनकेँ जतेक तामस चढ़बै छनि ततबे पतिक नेह झमारि प्रस्थान कऽ जेबाक बात मनमे करुणा आनै छनि। हुनका गेला उपरांत जाहि तरहेँ ओ ग्लानि सरोवरमे डूबऽ लागै छथिन, ओ भाव एहि दृश्यमे बड्ड सुन्नर बनल अछि।

अंत रूपमे पुरुषक जोर आ नारिक करुणा एक्के संगहि जाहि शब्द भावसँ रचनामे राखल गेल अछि ओ साहित्यकारकेँ उच्च कोटिमे लऽ जेबाक पूरा दम रखैत अछि। नपुंसक कहलापर जागल कालिदासक पुरुषार्थ आ हुनक प्रतिज्ञा करबाक दृश्य बेस आकर्षक भेल अछि। विद्योत्तमाक मुँहसँ निकलल शब्द-वाक्य '...हम कदाचित् हुनके संग निर्वाह कऽ लितहुँ, भगवतीक यैह इच्छा मानि सब स्वीकार कऽ लितहुँ। कहुना जीबि लितहुँ। मुदा आब नहि! परित्यक्ता भऽ हम किन्नहु जीबि नहि सकब।' सुनि किनकर आँखि नहि नोराएत आ किनकर हृदय द्रवित नहि हैत?

मिथिलामे यत्र तत्र सर्वत्र पसरल महाकवि कालिदासक खिस्सामे ई बात खूब जोरगर ढँगसँ उठाओल गेल अछि जे बियाहक पहिले रातिमे जखन ओ विद्योत्तमाक महलसँ अपमानित भऽ बाहर निकललाह तखन एकटा गुरुकुलमे टहलुआ बनि भनसियाक सहायक रूपेँ काज करऽ लगलाह। ओतहिए अपन शुद्ध आत्मासँ आश्रमक चटिया सभक टहल-टिकोरा करैत उच्चैठ भगवतीक आशीर्वादसँ महाज्ञानी पंडित बनि गेलाह। लोककंठमे बसल एहि बातसँ सबहक अपेक्षा यैह रहतैक जे अगिला दृश्य कलुआसँ कालिदास बनबाक वृत्तांत हेतै। मुदा अपेक्षा अनुरूप से नहि भऽकेँ चारिम दृश्य सीधा महर्षि कण्व ऋषिक आश्रम देखबैत अछि। ई लेखकीय कौशलकेँ एकटा आर पैघ मजगूत उदाहरण मानल जा सकैत अछि। महर्षि कण्व ऋषिक आश्रम जतए देशक कोना-कोनासँ लऽकेँ विदेशोसँ आबि विद्यार्थी सभ शिक्षा ग्रहण करबा लेल अपनाकेँ धन्य बूझै छलाह। ओहि चटिया सभमे एकटा बड्ड पैघ नाम छल सिंहल देशक राजा मोग्गलानक सुपुत्र युवराज कुमार धातुसेनाक। ओ कालिदाससँ ततेक ने प्रभावित छलाह जे अपन नाम बदलि कऽ कुमारदास राखि लेलथि! नाटकक प्रवाहकेँ सीधा ओतऽ लऽ जाकेँ कालिदास आ कुमारदासक प्रगाढ़ मैत्री संबंधकेँ उजागर करैत प्रथम पुरुषकेँ रूपमे कलुआसँ कालिदास बनऽक खिस्सा कहैत सांस्कृतिक रूपसँ श्रीलंका-भारतक नजदीकीक खुलस्त करब लेखकीय चमत्कारक प्रबल रूपकेर उत्तम उदाहरण अछि। एतबे नहि, लोभरहित निश्छल भावसँ मैत्री धर्म निभेबाक

लेल, एक-दोसराक हितक चिंता करैत तदनुरूपेँ काज करबाक लेल, प्रण-वचन करबा-देबा लेल जाहि लेखकीय कौशल केर चमत्कारक प्रदर्शन भेल अछि ओहो अपूर्व अछि। पाठक-श्रोताकेँ मनतोष देबामे पूर्ण सक्षम। घोर अपरिचित रहितहुँ, उमर आ अवस्थामे बेस फराक रहितहुँ, गुरु आश्रममे मित्र बनि एक-दोसराक हितक रक्षा लेल एहन जोड़ीक सुंदर प्रदर्शन एहि दृश्यक विशेषता अछि जे चिकरि-चिकरिकेँ कहि रहल अछि जे एहि नाटकक प्रतिष्ठाकेँ बेस पसारबामे हम ककरोसँ कमजोर नहि छी।

चारिम दृश्यमे लंकाधिपति दशाननकेँ परम विद्वान, उच्चकोटिक ग्रंथ सभक रचयिताक संगहि आयुर्वेदक महान ज्ञाता बताओल गेल अछि। संगहि हुनका अपन देशमे आदर्शशील हेबाक बात कहैत, देशक आन-बान-शानपर प्राणोत्सर्ग करैबला लोक बतबैत, महाबली आ पंडित कहल गेल अछि। हजारो साल बितलाक बादो विभीषणकेँ श्रीलंकामे कोनो आदर नहि, हुनका कुलघाती आ देशद्रोही मानल जेबाक बात कहल गेल छैक। लोक हुनकासँ आइयो घृणा करै छनि। ई सब बात कहैत साहित्यकार जे संदेश दै छथिन ओ राष्ट्रभक्तिक लेल बड्ड पैघ दर्शन छैक। संवाद लिखैत साफ कहै छथिन जे धर्मभ्रष्ट भेलापर प्रायश्चितक प्रावधान छैक मुदा देशघातीक लेल कोनो प्रायश्चित नहि। देशधर्मपर शीश कटाबऽबला सर्वदा नमस्य, स्तुत्य, वंदनीय, पूजनीय होइत अछि— से प्रशंसनीय अछि। निचोड़ ई जे चारिम दृश्य सेहो बहुत प्रभावित करैत अछि।

आब बात अगिला दृश्य पाँच केर। ओना तऽ ई दृश्य पिछला दृश्य सभक तुलनामे छोट अछि मुदा विषयक गांभीर्यमे मिसियो कम नहि। सुन्नर आ रोचक प्रसंग उत्सुकता बढ़बैत अछि। सालक साल निपत्ता रहि शिक्षा साहित्यमे प्रवीणता प्राप्ति उपरांत देस-दुनियामे प्रतिष्ठित भऽ अपन अनन्य मित्रक देल वचनकेँ पूर करबाक लेल, अपन तमसाएल गोहँछल विदुषी पत्नीकेँ अपन योग्यताक प्रमाण देबा लेल, विहुँसलि विरहिन कनिञासँ भेँट करबाक लेल, सासुरक द्वारपर पहुँचल पतिक मनोभावकेँ खिस्सा कहैत ई दृश्य छोट रहितो संवेदनाक भावसँ बड्ड पैघ अछि। अपनाकेँ परित्यक्ता मानै केर दर्दसँ बिलबिलाइत आ आत्मग्लानिक नीरमे उबडुब करैत कनिञा जखन कतेको साल बाद लऽग आएल अपन पतिकेँ उपस्थितिक आभास करै छथिन तखन हुनकर मनोदशाक बोलभाव हृदयके छूबि जाइत अछि। हुनकर स्वगत बोल सुनिकेँ के नहि द्रवित होइत अछि! किनकर छाती विदीर्ण नहि होइत अछि! कालिदासक बोल— 'देवि! द्वार देहि।' आ ओइ चिन्हल-

जानल स्वरकेँ अखियासैत विद्योत्तमाक अकचकाएब, तकरा बाद भावविभोर भऽ दूनू गोटाक एक-दोसरासँ सटिकेँ ठाढ हैब, बियाहक कतेको बरष बितलाक बाद पहिल बेर दूनूक एक-दोसराक बाहुपाशमे लेब, हकासल पियासल समय आओर परिस्थितिक झमारल दग्ध आत्माक तृप्तिभाव देखि सभक नयन जुड़ाइत छैक, सबहक आत्माकेँ सुख भेटैत छैक। वर्णित दृश्य संवाद सब सभकेँ शीतलता प्रदान करैत अछि। दुहु गोटेकेँ एक-दोसरासँ क्षमायाचना करबाक बात सरित ललित साहित्यक खाँटी निशानी बुझाइत अछि। एकरा लेल नाटककार लेल प्रशंसाक शब्द सब कम पड़ि जाएत।

एहि दृश्यमे कालिदासक श्रीमुखसँ बितलाहा सभटा बातकेँ, एक-एक घटनाकेँ क्रमबद्घ रूपसँ अपन कनिञाकेँ कहिकऽ सुनाएब जे ओ हुनका लगसँ भागि कोना गुरुकुल पहुँचलाह, ओतऽ भंसाघरमे काज करैत कोना एकदिन मुनहारि साँझमे झाँट-बिहारि-बरखाक बीच उब-डुब करैत नदी हेलिकऽ माता उच्चैठ भगवतीक मंदिर पहुँचलाह आ ओतऽ हुनकर सद्य: शुभाशीष पाबि सरस्वतीक कृपापात्र बनलाह। हुनके सत्प्रेरणासँ कण्वमुनिक आश्रम पहुँचि हुनकर प्रिय शिष्य बनबाक सौभाग्य पौलनि। ओतऽ परम प्रिय मित्र कुमार धातुसेनाक सभसँ घनिष्ठ संगी हेबाक मान पौलनि आ हुनके माँगल वचनकेँ पूरा करबाक लेल ओ आइ हुनका समक्ष उपस्थित भेल छथि। जँ ओ नहि रहितथि तऽ ओ आइ एतए कदापि उपस्थित नहि होइतथि। किन्नहु गृहस्थ आश्रम दिस नहि घुरितथि। ई सब बात रखैत महाकवि कालिदासक जीवनयात्राक कड़ीकेँ जाहि तरहेँ खूब सुन्नर ढंगसँ माला गाँथल गेल अछि से रमनगर लगैत अछि। तेसर दृश्यक बाद जे मन कहल सुनल कथाक अपन बाटसँ सहसा आगाँ बढ़ि जेबाक कचोट अखियासैत छल से सहसा कथाचरितकेँ खुलस्त हेबासँ आनंदित भऽ उठैत अछि। साहित्य सृजनकेँ एहि बुद्धि चातुर्यपर के ने अचंभित हैत! एतए एक बेर फेर नाटककार श्रोता-दर्शक केर मन जितबामे पूर्णत: सफल बुझाइत छथि।

छठम दृश्य श्रीलंकाक बहुचर्चित नगर माटरासँ सम्बद्ध अछि। एहि दृश्यमे अपन अभिन्न मित्र कुमारदासकेँ देल वचन निभेबाक क्रममे सिंघल देश पहुँचल कालिदासक विद्वत्ताक खिस्सा कहैत हुनकर प्रगाढ़ साहित्यिक ज्ञानकेँ वर्णन करैत अछि। दृश्यमे साहित्यक बहुचर्चित विधा रहल 'समस्यापूर्ति'क बेस चर्च अछि। पार्श्व कालमे जे विधा लोकक माथ चढ़िकेँ नाचैत रहैत छल ओकर चर्चे नहि अपितु ओकरे कारण मृत्युक ग्रास बनल महाकविक जीवनगाथाकेँ आगू लऽ

जाइत अछि। एहि दृश्यमे श्रीलंकाक राज दरबारमे मैथिली बाजल-सुनल जाइत अछि कहिकेँ सृजनकर्ता अपन मातृभाषाक प्रबल प्रेमकेँ उजागर करैत कालिदासक समग्र साहित्यक मर्मज्ञ हेबाक बड़का प्रमाण देने छथि। राजनर्तकी कामसेना जखन समस्यापूर्तिक लेल राखल गेल दस सहस्त्र स्वर्णमुद्राक इनाम जितबाक लेल आफन तोड़ने रहै छथिन आ ओकरे लेल एक राति आश्रय देबामे अपन असमर्थता जतबै छथिन तखन हुनकर मदति करबा लेल आतुर महाकविक संवाद मनकेँ अपन सिनेह डोरीमे बान्हि लैत अछि। समस्यापूर्तिक राखल पहिल पंक्ति बतबऽमे अनमनाएल कामसेना जखन बेरि-बेरि पुछला उपरांत अकछिके कहै छथिन-'कमल: कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते... कि तुरंत कालिदासक मुहसँ बहराएल पंक्ति— 'बाले! तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्।' -सुनि अचंभित होइ छथिन। 'ओह! अद्‌भुत! विलक्षण!' -कहिके हुनकर विद्वत्ताक सोझाँ अपन माथ झुका लै छथिन। लज्जाभावसँ गड़ि जाइ छथिन। अपनाकेँ धन्य-धन्य मानैत अतिथिक सत्कार लेल समर्पित करैत पूर्वक व्यवहार लेल क्षमा माँगै छथिन। ओ बुझि जाइ छथिन कि आगंतुक असाधारण पुरुष छथि आ हुनके मदतिसँ ओ आब दस सहस्त्र स्वर्णमुद्रेटा नहि जितती बल्कि हुनकर मधुर स्नेहक प्रियपात्र सेहो बनि जेतीह। ओही भेँटमे जखन साँझुक समय बरसैत बरषाक माँझ समुद्रमे डुबैत सुरुजक विहंगम दृश्यक बखान करै छथिन तऽ ओ आओर विश्वस्त भऽ जाइ छथिन जे द्वार ठाढ आगंतुक बड्ड पैघ लोक छथि। समस्यापूर्तिक बाजी जितबाक विश्वास आ ओइमे पोलपट्टी फुजि जेबाक आशंकासँ डेराएल मनकेँ अपन रास्ता साफ करबाक जाहि भावकेँ एतए लेखक द्वारा प्रदर्शित कैल गेल अछि से विलक्षण अछि! आत्माकेँ स्पर्श करऽबला।

आ आखिरमे अछि सातम दृश्य जे मूलत: महाकविक महायात्राकेँ समेटने इतिहासक बहुत रास बात कहैत अछि। एकटा सामान्य लोककेँ नहि बूझल छै जे कालिदासक हत्या भेल रहनि सेहो देशसँ बाहर श्रीलंकामे। हत्यारिन छलीह राजनर्तकी जे पुरस्कार जितबाक भंडाफोड़ नहि भऽ जाए एहि भयसँ हुनका माहुर खुआ मारि देने रहथिन। बहुते गोटेके इहो नहि बूझल हेतनि जे महाकवि कालिदासक परम प्रिय मित्र सिंहल देसक राजा कुमारदास हुनकर मृत्युक शोक सहि नहि सकलखिन आ हुनके जरैत चितामे कुदि अपन प्राण उत्सर्ग कऽ नेने रहथिन। एतबे नहि ताहि समयमे समाजमे व्याप्त सतीप्रथाक कारणे हुनकर पाँचू रानी सेहो...! ओना नाटकमे ओइ कुप्रथाक दरसेबासँ करौट फेरि साहित्यकार

सबल आदर्श प्रस्तुत करैत इतिहासक जाहि सत्यकेँ उद्‌भासित केलथि अछि से वस्तुत: प्रणम्य अछि। प्राण उत्सर्ग करबासँ पूर्व कुमारदासक मुखसँ अपन मित्र कालिदासक गुणगान करब, मिथिलाक महत्वक बखान करब आ मित्रक हत्याक दोष अपनापर लैत मित्रकेँ देल वचनकेँ पूर करबा लेल जाहि वेदना भावकेँ प्रदर्शित कैल गेल अछि से सरिपहुँ बड्ड सुन्नर अछि। विछोह वियोगक करुणभावकेँ जाहि तरहक शब्द देल गेल अछि ओ अद्‌भुत अछि। बुझना जाइत अछि जे रचनाकार एहि नाटकके लिखबासँ पूर्व महाकवि केर जिनगीक साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करैत हुनकर एक-एक दर्दकेँ सद्य: स्पर्श केने होथि।

विश्वक प्रसिद्ध कतेको नाटक सभ जकाँ इहो नाटकके दुखांत भेल अछि। संभव अछि जे एकर दुखांत भेने भारतीय जनमानसकेँ ई रुचिगर प्रतीत नहि हो कियै तऽ सिनेमाक बढ़ल प्रभाव आ अंत बढ़िया हेबाक अपेक्षा भरल भावसँ ई फराक अछि। संस्कृतक नाटक सब सेहो प्राय: सुखांतेके देखाबैत रहल अछि। अंत भला तऽ सब भलाक विचारसँ भरल भारतीय मानसकेँ पोषित करैत संस्कृतक लगभग सभटा नाटकक अंतमे यैह भेटैछ— 'किन्ते प्रियमुपकरोमि।'

दोसर दिस इहो परम सत्य जे दु:खांतसँ उत्पन्न करुणभाव जनमानसपर अमिट चिन्ह छोड़ै छै। तेँ तऽ विश्वक श्रेष्ठ साहित्यकार सभकेँ दु:खान्ते बेसी पसिन्न पड़ै छनि। एहि फराक सोचक बीच मूल बात ई जे अंत सुखांत हो वा दु:खांतक एकर फैसला तऽ कृतिकारक हाथ रहै छनि परंच ई धरि सत्ते जे जँ साहित्य इतिहाससँ विलग हो तऽ सब चलतै मुदा जँ इतिहासपर केंद्रित रहतै तखन तऽ वैह ने उचित हेतै जे साँच रहतै। एहि हिसाबसँ एकर दु:खांत बहुत दूर धरि लोकक मनपर अपन धाक जमौने रहत, एहिमे रत्ती भरि संदेह नहि।

अंतमे, पूर्ण विश्वासक संग जोर दऽके कहऽ चाहब जे डॉ. रंगनाथ दिवाकर कृत ई बेजोड़ पोथी 'महाकविक महाप्रयाण' लाजवाब अछि। अपनामे मिथिला आ मैथिलकेँ मान-सम्मानक भाव समेटने अद्‌भुत साहित्य। एहिमे शोधक खान तऽ अछिए, साहित्यक सरिता सेहो बड्ड गहीँर अछि। नाटक रूपमे प्रस्तुत साहित्यक जतबा प्रशंसा कैल जाए से थोड़ रहत। अपना तरहक अद्वितीय रचना! विलक्षण! एकरामे पाठककेँ साहित्यक सबटा (नौ) रस श्रृंगार, वीर, करुण, अद्‌भुत, हास्य, भयानक, वीभत्स, रौद्र आ शांत, भेटै छै। एहि रस सबसँ भिजैत पाठककेँ इतिहास बोध कराबऽबला खूब सुन्नरि ई पोथी मनकेँ खूब हर्षित करैत अछि। एकरा जँ पावन मिथिला भूमिक स्वर्णिम इतिहासक एकटा दस्तावेज कही

तऽ बेजाए नहि। किछु दिन पहिने मध्य प्रदेशक एकटा साहित्यिक विमर्शमे जखन सभकेँ कहैत-बजैत सुनलहुँ जे कालिदास उज्जैनक बासी छलाह तऽ हुनका अपन मिथिलाक मानैत हम बाजि उठल रही जे ओ उज्जैन नहि मिथिलाक उच्चैठ परिक्षेत्रक दामोदरपुरक छलाह। ओना एहि विषयमे लोककंठ छोड़ि हमरा लग आर कोनो सुबूत नहि छल जे हम हुनका मैथिल साबित करियनि। तेँ मन मसोसिकेँ चुप भऽ जेबाक यातना सहऽ पड़ल! आब ई पोथी पढ़ला उपरांत छाती फुलाकेँ सभकेँ कहि सकै छियनि जे महाकवि कालिदास हमर मिथिलाक छलाह। खाँटी मैथिल छलाह। समस्त मैथिलकेँ ई पोथी जरूर पढ़हक चाही, अपना लग एकरा जरूर राखक चाही जे दुनियाके ई कहबामे पूर्ण सक्षम अछि जे महाकवि कालिदास सवा सोलह आना सुच्चा मैथिल छलाह। मिथिलावासी छलाह।

भैरव लाल दास

जन्मतिथि : 15 जनवरी 1968, पटना।

सम्पर्क : +91 94306 06724

भैरव लाल दासजी अपन अध्यवसायसँ मैथिली आ हिन्दीमे अपन अनुपम स्थान बनओने छथि। राजनीति शास्त्रसँ स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कयलनि आ प्रबंधन एवं पत्रकारितामे पीजी डिप्लोमा लेलनि। दूरसंचार विभागसँ सरकारी वृत्ति आरम्भ करैत सम्प्रति बिहार विधान परिषद्मे परियोजना पदाधिकारीक पदपर कार्यरत छथि। इतिहास आ संस्कृतिक अध्येता छथि। स्वतंत्रता आन्दोलनक व्याख्याता छथि आ गांधी दर्शन केर महत्त्वपूर्ण उद्गाता छथि। बापूक चम्पारण यात्रा आ क्रान्तिकारी आन्दोलनसँ संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण काजक श्रेय हिनका भेटैत अछि। बापूक अहिंसा आ गदर आन्दोलनकारी आ अग्निपुत्र सभक सशस्त्र क्रान्तिक बीच तारतम्य आ समन्वय बैसा दुनू धाराक सशक्त आ निष्ठापूर्वक तटस्थ विवेचन हिनक अनुपम वैशिष्ट्य रहल अछि। हिनक कृति सभमे 'गोत्राध्याय', 'कैथी लिपि का इतिहास', 'विप्लवी बटुकेश्वर दत्त', 'गदर आंदोलन का इतिहास','राजकुमार शुक्ल की डायरी', 'चंपारण में गांधी की सृजन यात्रा', 'तिनकठिया' आदि पोथी प्रकाशित, चर्चित आ यशस्वी भेल। भारतीय संविधानक मैथिली अनुवाद एवं दू दर्जनसँ बेसी पोथीक सम्पादन कयने छथि। 'मिथिला भारती' नामक शोध पत्रिकाक सह सम्पादक छथि। अनेक प्रतिष्ठित संस्थान सभक मंचसँ शोधपरक आ वैदुष्यपूर्ण व्याख्यान देने छथि। जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुर द्वारा सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान सहित अनेक लब्धप्रतिष्ठ सम्मान-पुरस्कारसँ अलंकृत छथि।

‘महाकविक महाप्रयाण’ : अंतिम सत्य सदृश प्रमाण

महाकवि कालिदासक जन्मस्थानसँ संबंधित तथ्यपर कतेको शोध भऽ चुकल अछि। महाकविक महाप्रयाण पोथीमे विद्वान शोधज्ञ डॉ. रंगनाथ दिवाकरजी कालिदासक जन्मस्थानक विषयमे शोधपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करैत एहि तर्कक पक्षमे ठाढ़ भेलाह जे कालिदासक जन्मस्थान मिथिलामे छल। भारतक विद्वान लोकनि एहि संदर्भमे मतैक्य नहि रखैत छथि। लक्ष्मीधर कल्लाक मतेँ हिनक जन्म कश्मीरमे, हरिप्रसाद शास्त्रीक अनुसार हिनक जन्म स्थान विदिशामे, डॉ. जगदीश चन्द्र माथुरक हिसाबे सिरसामे, वासुदेव विष्णुक अनुसारक उज्जैनमे अछि। डॉ. ए.एन.झाक मतेँ कालिदासक जन्मस्थान बिहारमे छल। कनाडामे रहनिहार डॉ. आनन्द मोहन शरण सेहो एहि मतक पुष्टि कयलाह जे कालिदासक जन्मस्थान मिथिलामे छल। मुदा दिवाकरजीक एहि शोधग्रंथक माध्यमसँ आब ई अंतिम सत्य सदृश प्रमाणित भऽ रहल अछि।

भारतक विद्वत् परम्परामे कालिदासकेँ एहि तरहें समादृत कएल गेल अछि—

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदास:
अद्यातत्तुल्यकविर्भावात् अनामिका सार्थवती बभूव

कालिदासक नामक संग कनिष्ठ आँगुर व्यवहृत अछि। एहि श्लोकसँ स्पष्ट होइत अछि जे कविक गणना कालिदाससँ आरंभ होइत अछि।

महाकविक कुमारसंभव, रघुवंश, मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयमसँ पूर्व भारतक काव्यजगतक महत्वपूर्ण ग्रंथक सूची नमहर अछि। एहि कारणेँ विद्वतजन एहिपर शोध कऽ रहल छथि जे महाकविक रचनापर सबसँ बेसी प्रभाव किनक पड़ल छनि। कालिदासक काव्यपर महाभारत, पुराण, गीता आ रामायणक छाप देखल जा सकैत अछि। मालविकाग्निमित्रमे स्वयं कालिदास भाष आ अश्वघोषक प्रति आदर प्रकट कएलनि अछि।

ताहि समयक भारतवर्षक मानचित्र हिमालयसँ केप कोमोरिन तक छल। कालिदासककेँ ग्रहण करबाक लेल वेदिक इंडिया, एपिक इंडिया आ हिन्दू इंडिया के फरिछायब जरूरी अछि। आर्य भारत आबि अपनाकेँ हिन्दू कहलनि। रामायणमे चेरा-चोष आ पांड्या राजक चर्च अछि। कनिंघम अपन पोथी एनसिएंट ज्योग्रफी ऑफ इंडियामे स्पष्ट कएलनि जे ई कहब समीचीन अछि जे ताहि समयमे भारतीयकेँ अपन मातृभूमिक पूर्ण बोध छलनि। रघुवंशमे राजाक शास्त भूमिक चर्चा अछि। आगाँ लिखल गेल जे एहि क्रममे कतेक राजाकेँ जीतल गेल। कावेरी नदी, पांड्या राजा, केरल आदिक चर्च एहि प्रकरणमे अछि। जीतल राजाक सम्मान मोतीक अर्पणसँ हेबाक चर्च सेहो भेटैत अछि। अंग, अनूप, अवन्ती, कलिंग, कम्बोज, कामरूप, केरल, कोसल, मगध, मलय, मथुरा, नागपुरा, सुह्म एवं वैधर्मक चर्च एहिमे भेल अछि। हूण, कम्बोज आ प्रागज्योतिष अर्थात् कामरूपक चर्चा सेहो अछि। कालिदासक रचनामे भारतक भौगोलिक मानचित्र 'आसमुद्राक्षितीशाना' अर्थात् (Sea to Sea) अछि। डॉ. दिवाकर एहि प्रसंगमे स्पष्ट कएलनि जे भौगोलिक इतिहासक मादे मिथिला मगध राज्यक अंतर्गत छलीह। लेखक अभिप्राय अछि जे कालिदास सेहो मिथिलाकेँ मगधक अंतर्गत मानि उल्लेख कएने छथि।

भारतक भौगोलिक स्वरूपक वर्णन करैत महाकवि द्वारा कुमारसंभवमे हिमालयक वर्णन आ प्रेमक वर्णन अतुलनीय अछि। मेघसंदेशमे रामगिरि आ कैलास पर्वतक विशेषता दर्शाओल गेल अछि। शकुन्तालक आरंभ कण्व ऋषिक आश्रमसँ केलनि आ हेमकुंट पर्वतपर मारीचक आश्रमपर समाप्त कएल गेल। तहिना रघुवंशक आरंभ वशिष्ठ आश्रमसँ भेल। कुमारसंभवमे शिवक कुटी, उमाक घर आ सम्पूर्ण हिमालय पर्वतश्रृंखलाक विवेचन कएल गेल अछि। कालिदासक महाकाव्य यथा कुमारसंभव आ रघुवंश, खंडकाव्य यथा मेघदूत, ऋतुसंहार आ नाटक यथा मालविकाग्निमित्र, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोवर्शीयमे भारतक भौगोलिक वर्णन अछि। विद्वानक इहो मंतव्य छनि जे आन काजक संग कालिदास राजदूतक कर्त्तव्य निर्वहन सेहो करैत होयताह। इएह कारण अछि जे ओ एतेक पैघ भारतवर्षक एतेक सूक्ष्म अध्ययन कऽ सकलाह आ अपन काव्य प्रतिभाक बले एकर रोचक वर्णन सेहो प्रस्तुत कएल।

कालिदासक संदेशकाव्यक श्रृंखलामे भारतमे अनुकरणक प्रयास भेल यथा हमसंदेश, कोकिला संदेश, पिक संदेश आ मानस संदेश आदि। कालिदासक मेघसंदेशकेँ कालान्तरक कवि आदर्श मानलनि। सम्पूर्ण भारतक वाङ्मय

कालिदासक प्रति आभारसँ भरल अछि आ तदनुसार रचनाक्रमक श्रृंखला सेहो चलल अछि। बाणक पार्वती परिणयपर कालिदासक प्रभाव देखना जाइत अछि। बिलहनक कर्णसुंदरी पर, श्रीहर्षक रत्नावली आ प्रियदर्शिकामे सेहो उल्लिखित अछि। कालिदासक विक्रमोर्वशीयक प्रभाव उन्मत्तराघवपर पड़ल। विद्वानक मत छनि जे परवर्ती कविगणकेँ कालिदासक अन्य रचनाशैलीक अनुकरण करबामे सुविस्ता होइत छलनि। मुदा एहि क्रममे शकुन्तलाक छूबाक प्रयास कठिन छल कारण एकर प्राकृतिक सौंदर्य, प्रेम, काव्यक मधुरता आदि मिला कऽ भारतक काव्य विधाक एकटा महत्वपूर्ण स्तंभ मानल गेल। विद्वानक मत छनि जे भारतमे कालिदासक काव्यपरम्पराक अध्ययनक क्रममे वाल्मीकि, व्यास, टैगोर, विद्यापति, चंडीदास आ कबीरक नाम गनाओल जा सकैत अछि।

कालिदासक काव्य प्रतिभाक सम्मान पश्चिमी देशमे सेहो खूब होइत अछि। एहि लेल बैरॉन हमबोल्ड्ट, सर मोनियर विलियम्स, प्रोफेसर लैसेन आदिक शोधग्रंथ संदर्भित अछि। ए.डब्ल्यू.रायडरक स्पष्ट मत छनि जे यूरोपक कोनो देश अपन साहित्यमे कालिदासक बराबरी नहि कऽ सकैत छथि। विनय कुमार सरकार एहि मतक सम्पुष्ट करैत लिखने छथि जे यदि कालिदासकेँ नहि बुझि सकब तऽ एशियाकेँ बुझब अत्यंत कठिन होयत।

डॉ. रंगनाथ दिवाकरक पोथीक अंतिम अध्यायमे नाटक समावेश कएल गेल अछि। कालिदासक महाप्रयाण कोना भेलैन एहि संपूर्ण घटनाक्रमकेँ नाटकक रूपसँ प्रस्तुत करब दिवाकरजीक लेखनीक बहुआयामी प्रतिभाक द्योतक मानल जेबाक चाही। महाप्रयाणक घटनाक्रम संवेदनशील पाठकक आँखि नोरा दैत अछि। विद्यार्जनक पश्चात् कालिदास कोन मनोरथे श्रीलंका गेल छलाह आ सायास एहन चक्रव्यूहमे फंसि गेलाह जे प्राणघातक भऽ गेलैन। व्यवहारिक जीवनमे सेहो एहन कतेको घटनाक्रम सम्मुख अबैत अछि जतए मानवक ज्ञान, अनुभव आ जिज्ञासा हुनका लेल प्राणान्तक बनि जाइत अछि। माटरामे जखन कामसेना नामक वेश्या कवित्त पूर्ण करबामे ओझरायल छलीह तखन कालिदास तऽ हुनका लेल प्राणवायु बनि कऽ उपस्थित भेलखिन। कमल: कमलोत्पत्ति: श्रुयते न तु दृश्यते..। कमलसँ कमल केर उत्पत्ति सुनल जाइत अछि मुदा देखल नहि जाइत अछि। एकर आगाँ की होयत? जे बताओत तकरा राजदरबारमे धन आ सम्मान भेटतै। एहि माथापच्चीमे कामसेना ओझरायल छलीह। इएह कारण छलैक जखन कालिदास कामसेनाक आवासपर पहुँचलाह तऽ हिनका अतिथि सन सम्मान नहि भेटलनि। कामसेना

सोचैत छलीह जे एहि अतिथिक औपचारिकतामे समय गमायब व्यर्थ सन अछि कारण राज दरबारक समस्यापूर्ति एहिमे बाधक बनि जायत। मुदा जखन कालिदास पूरा प्रकरण बुझलखिन तऽ हठात् समस्यापूर्ति कऽ देलखिन-बाले! तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्। हे स्त्री, तखन अहाँक मुखकमलसँ दू नयन-कमल कोना बहरा रहल अछि। कामसेना खुशीसँ तिरपित भऽ गेलीह। मुदा हिनका संदेह सेहो भेलनि जे जँ ई कवि महाशय राज दरबार चलि गेलाह तऽ सबटा धन आ सम्मान पाबि लेताह, कामसेनाकेँ किछु नहि भेटतनि। ओ कालिदासक भोजनमे माहुर फेंटि देलखिन आ कालिदासक हत्याक बाद हिनक लहाशकेँ तरहारा खुनिकऽ गाड़ि देलखिन। मुदा जखन हो राजदरबार गेलीह तऽ बाले! शब्दसँ कुमारदास गमि लेलखिन जे ई संदर्भ तऽ हमर मित्र कालिदास दैत छलाह। जखन डराओल-धमकाओल गेल तऽ कामसेना अपन अपराध स्वीकार कऽ लेलखिन। कालिदासक लहाशकेँ तरहरासँ निकालि कऽ राजकीय सम्मान दैत दाह संस्कारक इंतजाम भेल। अपराधबोधसँ ग्रसित कुमारदास सेहो अपन जीवन लीला समाप्तिक घोषणा करैत कालिदासक चितामे प्रवेश कऽ गेलाह। हिनका संगे कुमारदासक पाँचू पत्नी सेहो ओहि चितामे प्रवेश कऽ सती भऽ गेलीह।

डॉ. रंगनाथ दिवाकरक विशेषता छनि जे ओ कोनो ऐतिहासिकताक वर्णन करबासँ पूर्व विशद अध्ययन करैत छथि, विषयपर प्रकाशित शोधग्रंथक गंभीर अध्ययन करैत छथि, प्रकाशित समस्त पोथीक मनन सेहो करैत छथि। एहिसँ ओ विषयक सब दृष्टिकोणक विश्लेषणक लेल स्वयंके तैयार कऽ लैत छथि, तखन लिखैत छथि। लिखबा काल ओ सचेत रहैत छथि जे इतिहासलेखन संग अत्युक्तिक कोनो समावेश नहि हो। एतबहि नहि, डॉ. दिवाकरजी मिथिलाक पहिल शोधज्ञ छथि जे ओ वर्णित स्थलपर स्वयं जाइत छथि, उपलब्ध साक्ष्य आ प्रमाणक सहयोग लैत छथि, तखन कोनो निष्कर्षपर पहुँचैत छथि। एहन शोधज्ञ आ एहन मेहनती लेखक भेटब मिथिला आ मैथिलीक भाग्य मानबाक चाही आ आन लेखककेँ सेहो एहि मार्गक अनुसरण करबाक चाही।

महाकविक महाप्रयाणमे डॉ. दिवाकरजी जाहि भौगोलिक परिक्षेत्रक परिचय कराओल से कोनहु पाठककेँ श्रीलंका आ माटरा जेबाक लेल प्रेरित करैत अछि। पोथी पढ़ैत काल चलचित्रक आभास होइत अछि। माटरासँ गोदावया 79 किलोमीटर, देवीनुवारा 8.2 किलोमीटर, भगवान बुद्धक 25 मीटरक ऊँच मंदिर, अगबोधि महाविहार, पारावीदुवा मंदिर, पोलहेना सहित माटरा आ मेदावत्त समुद्र

तट, स्टार फोर्ट, माटरा फोर्ट, 160 फीट ऊँच डोन्ड्रा, प्रकाश स्तम्भ, वृत्तबोधिवृक्ष, भगवानक बुद्ध मूर्त्ति आदि अछि। एहि तरहेँ माटरा एकटा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल बनि गेल अछि। महाकविक महाप्रयाणक शेष विन्दुपर जिनका नमन करबाक हो, हुनका लेल कालिदास मार्ग पकड़ि कऽ कालिदास कुमारदास समाधिस्थल तक पहुँचब आसान अछि। माटराक भौगोलिक परिक्षेत्रक वर्णन करैत दिवाकरजी लिखैत छथि जे रोहुणा क्षेत्र श्रीलंकाक दक्षिणी प्रान्त, इवा प्रान्त आ सावरगमुवा एवं पूर्वी प्रान्तक किछु-किछु भाग मिलाकेँ बनल अछि। माटराक प्राचीन नाम महातीर्थ, मपातुना, महाथोटा, महातारा, नीलवालातीर्थ, नीलवाली गंगा नदी माटरा शहरक बीचो-बीच बहैत अछि आ एहि नदीसँ माटरा मात्र दू किलोमीटर दूर अछि। मोलहेना समुद्र तटमे कौआ द्वीप हिन्द महासागरमे उतरबाक मार्ग अछि। गैले, माटरा आ हम्बनटोटा जिला रोहुणा क्षेत्रक भाग अछि। माटरासँ अनुराधापुर 160 किलोमीटर अछि।

डॉ. दिवाकरजी महाकविक महाप्रयाण प्रकरणकेँ नाटकक मुख्य विन्दु बनौलनि। आन कोनो पोथीमे महाप्रयाणक एतेक स्पष्ट आ सुंदर वर्णन भेटब कठिन अछि। अध्ययन आ पर्यटनक दृष्टिकोणसँ मिथिला आ श्रीलंकाक संबंध माता सीताक हरणसँ जुड़ैत छल, आब महाकविक महाप्रयाण स्थल माटरासँ सेहो जुड़ि गेल। एहि पोथीक माध्यमसँ दिवाकरजी मिथिला आ माटराक बीचक भौगोलिक दूरीकेँ पाछाँ छोड़ैत दुनूकेँ भावनात्मक डोरिमे बान्हबामे सफल भऽ गेलाह। आब सब मैथिल माटरा जाए चाहता आ महाकविक महाप्रयाण स्थलपर अपन माथ सटाब' चाहता।

भवनाथ झा

जन्मतिथि : 23 सितम्बर, 1968, पटना।

सम्पर्क : +91 94306 76240

संस्कृतमे स्नातकोत्तर भवनाथ झा प्राच्यविद् आ पाण्डुलिपि विशेषज्ञ छथि। हिनकर संस्कृत, मैथिली आ हिन्दीमे कतेको शोध कृति सभक प्रकाशन भेल अछि। पाण्डुलिपि सभक गहन मननसँ अनेक नुकाएल तथ्य सभक उद्‌घाटन केर श्रेय हिनका देल जाइत छनि। अपन उत्कृष्ट शैक्षणिक कृतिक लेल प्रशंसा पओने छथि जाहिमे अनुवाद आ पाण्डुलिपिसँ ग्रन्थक सम्पादन सेहो शामिल अछि। हिनक किछु प्रकाशित ग्रन्थ अछि— 'बुद्धचरितम्' (अश्वघोषक कृतिक खण्डित अंशक संस्कृतमे पद्यानुवाद), 'भ्रूण-पञ्चाशिका', 'घुरि आऊ कमला' (मैथिली कथा), 'कदमों के निशान' (मैथिलीसँ हिन्दी)। संपादित रचनासभ अछि- 'यक्षसमागम', 'अगस्त्य-संहिता', 'दुर्गासप्तशती', म.म. रुद्रधर कृत 'पुष्पमाला', 'नाह्निदत्तपंचविंशतिका'क रुचिपति व्याख्या, मदन उपाध्यायक 'मांसपीयूषलता', म.म. पक्षधरक 'व्यवहार-रत्नावली', म.म. पक्षधरक 'सुबोध', कुमुदनाथ मिश्रक 'जम्मूवर्णनम्', ललितेश्वर सिंहक 'मैथिलभक्तिप्रकाश', 'माँटी की सुगन्धि', महाराज रमेश्वर सिंहक 'मैथिल विवाह' (अंगरेजीसँ हिन्दी) आदि।"श्रेष्ठ शोध विद्वान् छथि। सम्प्रति महावीर मन्दिर, पटनाक शोधपत्रिका 'धर्मायण'क यशस्वी सम्पादक छथि।

इतिहासक ठोस भूमिपर कालिदासक स्थान आ कालक निर्णय

संस्कृत साहित्यक कविकुलगुरुक नामसँ प्रख्यात महाकवि कालिदास सम्पूर्ण भारतवर्षमे एतेक प्रख्यात भए गेल छथि जे हुनका अपन-अपन क्षेत्रक कवि सिद्ध करैत अपन क्षेत्रकेँ महिमामण्डित करबाक प्रयास कएल गेल अछि। एही क्रममे उज्जैन, हिमाचल, नेपाल, आसाम आदि क्षेत्रसँ विद्वान लोकनि अपन अपन सामर्थ्यक अनुसार कालिदासकेँ ओहि क्षेत्रक सिद्ध करबाक प्रयास कएने छथि। मेघदूतक पंक्ति 'वक्रः पन्थाः यदपि भवतः' इत्यादि तथा उज्जयिनीक लेल कविक विशेष अनुरागक वर्णनक आधारपर उज्जैन वला सभ कालिदासकेँ उज्जयिनीक सिद्ध करैत छथि तऽ अन्य हिमालयीय क्षेत्रक विद्वान् अलकापुरीक वर्णनकेँ आधार मानैत छथि।

वास्तविकता ई अछि जे कालिदाससँ सम्बन्धित कोनो ठोस पुरातात्त्विक साक्ष्य एखनि धरि नहि भेटल अछि। तखनि साहित्यिक स्रोत एकर विवेचन करबाक लेल एकमात्र सहायक अछि। एही आधारपर उज्जयिनी, आसाम, उत्तराखण्ड, काश्मीर, नेपाल ई सभ क्षेत्र अपन अपन स्थानीय लोककथा आ कालिदासक साहित्यमे स्थानीय संस्कृतिक वर्णनक आधारपर अपन क्षेत्रकेँ कालिदासक जन्मस्थान सिद्ध कए रहल छथि।

मिथिलाक विद्वान् सेहो कुमारसम्भव, अभिज्ञानशाकुन्तलम् आ ऋतुसंहारमे वर्णित प्रकृतिवर्णन आ कविक द्वारा अन्य सांस्कृतिक वर्णनक आधारपर कालिदासकेँ मैथिल सिद्ध करबाक प्रयास करैत रहलाह अछि। डॉ. जयमन्त मिश्र, पं. आद्याचरण झा, पं. दिगम्बर झा, डॉ. लक्ष्मण झा प्रभृति मनीषीलोकनि एहि कार्यमे मुखर रहलाह

अछि। एही क्रममे डॉ. रंगनाथ दिवाकरक कृति महाकविक महाप्रयाण एकटा ठोस निर्णयपर पहुँचबाक लेल लिखल गेल इतिहास थीक।

मैथिली भाषामे लिखल गेल ई विशुद्ध इतिहासक पोथी थीक जाहिमे इतिहास-लेखनक स्थापित कसौटीक उपयोग करैत अन्त:साक्ष्य आ बहि: साक्ष्यक आधारपर निर्णय लेल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे दूटा विषय निर्णीत भेल अछि— महाकविक जन्मस्थान आ हुनक काल। डॉ. दिवाकर सिद्ध करैत छथि जे कालिदास उत्तर गुप्तकालमे मिथिलाक भूमिपर जन्म लेने रहथि आ हुनक महाप्रयाण लंकाक माटरामे भेल। ओ कुमारदासकेँ कालिदासक परम मित्र मानैत छथि। एतेक तथ्यकेँ सिद्ध करबाक लेल ई सम्पूर्ण पोथी इतिहासक ठोस भूमिपर लिखल गेल अछि।

डॉ. दिवाकर अपन पोथीमे शिलालेख, समकालीन साहित्यिक स्रोत आ एहि दूनू स्रोतपर आधुनिक विद्वान लोकनिक द्वारा कएल गेल विवेचनकेँ आधार मानने छथि। ई आह्लादक विषय थीक जे कोनो किंवदन्ती एतए अपन एक सीमे धरि विवेचित भेल अछि ओकरा आधारपर केवल शोधक दिशाक अन्वेषण भेल अछि, कोनो निर्णयक नहि।

डॉ. दिवाकर रघुवंशक विवेचन करैत एहन तथ्य सभक अन्वेषण कएने छथि जे पढ़ि ओकर खण्डन करबाक कोनो आधार नै बनैत छैक। ओ संकेत करैत छथि जे रघुवंशमे रघुक दिग्विजयक क्रममे भारतक अनेक क्षेत्रक नाम आएल अछि। एतेक धरि जे मिथिलाक निकट पूर्व प्राग्ज्योतिषपुर लोहित क्षेत्र सेहो एहि सूचीमे अछि, मुदा मिथिला वा मगध नहि अछि। अपन भूमिक प्रति अनुराग हुनका युद्धमे पराजित क्षेत्रक रूपमे ओकर उल्लेख करबासँ रोकि देलकनि। ओ मत्स्यचिह्नित ध्वजक वर्णनकेँ सेहो एकटा आधार मानैत छथि। सीताक लेल रघुवंशमे मैथिली आ जनकक लेल मैथिल शब्दक प्रयोग कालिदासकेँ रुचैत छनि। डॉ. दिवाकर पृ. 54पर रघुवंशक ओ सभटा श्लोक संकलित कए दैत छथि।

यद्यपि कालिदासक प्रकृतिवर्णनकेँ सभ विद्वान् अपन-अपन क्षेत्रक घोषित करबाक लेल साक्ष्य मानने छथि मुदा डॉ. दिवाकर एहि तथ्यकेँ नव दृष्टि दैत छथि।

ओ रघुवंशसँ ओ प्रसंग ताकि लैत छथि जतय महाकवि शोण नद आ गंगाक संगम अर्थात् सोनपुरक हरिहर क्षेत्रक वर्णन कएने छथि—

भागीरथीं शोण इवोत्तरङ्गाम्॥ (रघुवंश, 5.36)

संगहि ओ सरयू आ गंगाक संगमक सेहो वर्णन कएने छथि, जे वर्तमानमे दर्दरीतीर्थ वा वाचस्पतिक तीर्थचिन्तामणिमे बेणीबाह्यतीर्थक रूपमे चर्चित अछि। ई दूनू उल्लेख महाकविक अपन जन्मभूमिक प्रति आ ओकर चारूकातक क्षेत्रक लेल समर्पण थीक। एहन-एहन ठोस साक्ष्य एहि विवेचनकेँ सुदृढ़ बनबैत अछि। लेखक महावराह क्षेत्रक विवेचन करैत छथि। ओना शूकरखेत लए तुलसीदासोक विषयमे बहुत मतभेद मुदा एहि बातकेँ नकारल नै जाए सकैत छैक जे महावराह क्षेत्र वर्तमान धरानसँ लगभग 25 कि. मी. उत्तर दिशामे अवस्थित सुंइसरी थीक। ओकर वर्णन कुमारसम्भवमे देखबैत लेखक ओकरा कालिदासक जन्मस्थानानुरागकेँ सत्यापित करैत छथि। एहन-एहन नव-नव प्रमाण एकत्र कए एहि ग्रन्थमे ठोस आधारपर कालिदासक जन्मस्थान मिथिला मानल गेल अछि।

भाषावैज्ञानिक आधार तऽ आर महत्त्वपूर्ण आ उपादेय छनि। कालिदासक पाँच भाषिक-विशेषता एतए देखाओल गेल अछि। विक्रमोर्वशीयम् मे प्रयुक्त शब्द आ ओकर गीतक विशेषता एखनहुँ मिथिला क्षेत्रमे प्रचलित अछि।

राजस्व अभिलेखमे कालिदासक डीहक विवरण सम्पूर्ण रूपसँ एतए देल गेल अछि। यद्यपि ई प्रमाण एहि सम्पूर्ण पुस्तकमे देल गेल प्रमाण सभमे सभसँ कमजोर अछि। कालिदास नामक अनेक व्यक्ति मिथिलामे भेल छथि। हमरहु पूर्वज कालिदास झा 1750-60क बीच छलाह। आरो पंजीमे अनेक कालिदास भैटेत छथि। कालिदासक डीहक नामपर तिब्बतक धर्मस्वामी बोधगयासँ दक्षिण सेहो एकटा डीहसँ परिचित कराओल गेल छथि। धर्मस्वामी 1234ई.सँ 1236ई. धरि सिमरौनगढ़, बोधगया, राजगीर, नालंदा आदिमे भ्रमण कएने रहथि। मगध क्षेत्रमे सेहो हुनका कालीक ओ गुफामन्दिर भेटल रहनि लोक हुनका कहने छलनि जे एतहिए कालिदास नामक व्यक्ति साधना कए देवीक वरदानक प्रभावसँ महाकवि भेलाह। धर्मस्वामी कालिदासक कथा कहैत छथि जे—

“Again, in Magadha there is a non-Buddhist stone image called Devi Kãli, or Lha-mo Nag-mo (in Tibetan). In front of the chapel there is a dried up well, and a gate built of loose stones, facing East. There exists a story that in ancient time this stone image made a fool talk, after which he became a learned Pandita. Though he had propitiated a non-Buddhist God, he was bestowed with the mastery of this World.”

ई कथा बादमे लामा तारानाथ द्वारा सेहो लिखल गेल अछि। एतए एहि दन्तकथाक आधारपर निर्णय सभसँ कमजोर पक्ष थीक। कालिदासक रचनाक जे अन्त:साक्ष्य अछि से निश्चित रूपसँ एहन दन्तकथासँ प्रबल अछि आ ओकर समुचित विवेचन डॉ. दिवाकर अपन ग्रन्थमे कएने छथि।

एतबा तऽ अवश्य अछि जे कालिदास मिथिला आ मगधक स्थानीय परम्परासँ जतेक परिचित छथि ओतेक आन ठामक परम्परासँ नहि। तँ लक्ष्मणक मातामहक नाम वाल्मीकि सेहो नहि लिखने छथि मुदा कालिदास रघुवंश, 9.17 मे ओहो नाम ताकि कए लिखि देने छथि जे सुमित्राक पिता आ लक्ष्मणक मातामहक नाम प्राप्तिज्ञ छल।

डॉ. दिवाकरक पोथीक सभसँ पैघ विशेषता अछि इतिहासक प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण। यूरोपीय विद्वान् द्वारा निर्धारित इतिहासक कसौटीकेँ मानैत छथि आ अन्त:साक्ष्य, बहि:साक्ष्य, समकालिकता, परस्पर अन्वय आदि करओलाक बादे कोनो तथ्य धरि पहुँचैत छथि। एहि पोथीमे अनेक शिलालेख आ पाण्डुलिपिक उल्लेख साक्ष्यक रूपमे भेल अछि। ओ अनुश्रुतिकेँ सेहो एकटा आधार मानैत लिखैत छथि— अनुश्रुतिर्न निर्मूला-मुदा ऐतिहासिक शिलालेख आदिसँ ओकर समर्थनक कराएब सेहो अपन कर्तव्य बुझैत छथि।

कालिदाक कालक सम्बन्धमे हिनकासँ पहिनहुँ बहुतो गोटे कुमारदासक समकालिकताक अन्वेषण कए चुकल छथि। सन् 634 ई.क ऐहोल शिलालेखसँ पहिने कतहु कालिदासक चर्चा नहि होएब एकर पोषक साक्ष्य थीक। तखनि लेखक

कुमारदासक काल आ श्रीलंकाक परम्परा देखैत रघुकार आ जानकीहरणकर्ताक बीच जाहि प्रकारक मैत्रीक प्रतिपादन कएने छथि से साक्ष्यपर आधारित अछि।

ई पोथी मैथिलीक एकटा बड़ पैघ रिक्तिकेँ सेहो भरैत अछि। मैथिलीमे साहित्येतर गद्य साहित्यिक गद्य आ पद्यक अपेक्षा बड़ थोड़ लिखाएल अछि। तखनि इतिहासक विषयपर मैथिलीमे एहन रचना भाषाक लेल सेहो गौरवक वस्तु थीक।

हम आशा करैत छी जे भविष्यमे डॉ. दिवाकर एहन साहित्येतर गद्य लीखि अपन मातृभाषाक एक रिक्तिकेँ पूर्ण करताह।

कपिल कुमार झा

जन्मतिथि : 20 अक्टूबर, 1977, *मधुबनी।*

सम्पर्क : +91 70048 12454

मिथिला-मैथिलीक लेल पत्रकारिताक माध्यमसँ लगातार पछिला बीस सालसँ सक्रिय छथि कपिलजी। हुनक लेखनक मूल स्वर मिथिला वा मैथिलीए अछि। एहि निमित्त खूब पढ़ैत छथि, गुनैत छथि। कोनो विषयपर गहन अध्ययन आ मनन कयलाक बादे ओहिपर लिखबाक अभ्यास करैत छथि। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे अनेक आलेख, कथा, समीक्षा आदि प्रकाशित भेल अछि। अपन लघु वृत्तचित्र कन्दर्पीघाटक बहन्ने मिथिलाक अप्रतिम शौर्यक गौरवगान कयने छथि। सदिखन मिथिलाक गौरव कोना बढ़य एहि लेल साकांक्ष आ चेष्टगर बनल रहैत छथि।

शोधक महार्णव थिक : 'महाकविक महाप्रयाण'

महाकवि अर्थात कालिदास, जिनका बारेमे लोकमे अनेको कथा कहानी प्रचलित अछि। एक दिस तऽ हिनक रचना ज्योति कलश बनि विश्व साहित्याकाशमे ध्रुववत पथ प्रदर्शक बनैत अछि, तऽ दोसर दिस स्वयं हिनकर जीवन ओतबय रहस्यमयी गुफागुल्म अछि, जेकर फैलाव तेरह सय वर्षसँ अधिक अछि। हिनक जीवनक रहस्य एक ऐहन संजाल थिक, जेकर एक सिरा सुलझैत अछि नहि आ दोसर उलझि जाइत अछि।

संभवत: विश्वक ई एकमात्र व्यक्ति होयताह, जिनक जन्मस्थान आ समयपर पिछला डेढ शतीसँ अधिक समयसँ विद्वतजनमे लगातार बहस चलि रहल अछि। मुदा अहिपर एखन तक, एक आ सर्वमान्य निर्णय नहि भऽ सकल अछि। कारण अपन कोनो ग्रंथमे अहि सभकेँ बारेमे कि अपन नाम तक कतहु उल्लेख नहि कयने छथि, हिनक जाहि ज्योतिर्विदाभरण ग्रंथमे पहिल बेर अहि सभकेँ बारेमे लोककेँ जानकारी भेटैत अछि, संयोग देखू जे ओ ग्रंथ कालिदासक अछि वा नहि एहि बातपर सेहो विद्वान सभमे विवाद अछि। कालिदास आ हुनक समयपर जहन चर्च होयत अछि तो ओ स्वयं अनेकानेक उलझनमे उलझि जाइत अछि। एकरा मात्र एहिसँ समझल जा सकैत अछि जे हिनक समय ईसापूर्व दोसर शतीसँ ईसाक ग्यारहम शती तक मानल जाइत अछि। संगहि जहन कालिदासक नाम अबैत अछि त', सभसँ पहिल सवाल उठैत अछि, कोन कालिदास ? किएक तऽ कमसँ कम तीन कालिदासक बारेमे विभिन्न विद्वान कहैत छथि, जेना कि राजशेखरक मान्यता अछि जे हिनका तीनूसँ कियो श्रृंगार आ लालित्यमे जीत नहि सकल। ठाकुर देशराजक अनुसार तीनमेसँ दोसर कालिदास यशोधर्मनकेँ राज्यसभा कवि छलाह जे मेघदूतम आ ज्योतिर्विदाभरण ग्रंथक रचना कयलनि। ओहिना हिनक जन्मस्थानपर सेहो विद्वतजनमे मतैक्य नहि अछि। ओ मैथिल छलाह या उज्जैनी। कश्मीरक छलाह वा गढ़वालक। विदर्भ, देवगिरि या रुद्रप्रयागमे कविल्ठाकेँ या ओ विन्ध्यक वासी छलाह। बंगाली तऽ हुनका यत्नपूर्वक बंगाली मानैत अछि। महाकवि श्रीलंकामे सेहो ओतबय प्रसिद्ध छथि, जतेक भारतक कोनो प्रान्त-प्रदेशमे।

एहि तरहे हुनकर समयकालकेँ लऽ कऽ सेहो अनेको अनूत्तरित प्रश्न ठाढ़ रहैत अछि। अहिसँ हुनक संबंध जाहि विक्रमादित्यसँ रहल ओ विक्रमादित्य के छलाह, की ओ ईसापूर्व प्रथमशतीक उज्जैनक अधिपति विक्रम छलाह, वा ईसाकेँ चारिम शताब्दीमे मगध नरेश समुद्रगुप्त वा हुनकर पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय, जे अपन उपाधि विक्रमादित्य रखने छलाह। केओ हुनका शुंग कालक मानैत छथि। ओहिना राजा भोजकेँ दिवाकरजी दशम शताब्दीकेँ मानैत छथि, संग अनेको कथा प्रसिद्ध अछि। महाकविकेँ वरदान देबयवाली देवी सरस्वती छलीह वा काली। हुनकर वास्तविक नाम कलिदास होयबाक चाही वा कालीदास। विद्वतजन डेढ़ सदीसँ अधिक समयसँ अहि सभपर अनुसंधान आ बहस करैत रहलाह अछि, मुदा अहिपर एक आ सर्वमान्य निर्णय नहि भऽ सकल अछि। सभकेँ अपन-अपन तर्क अछि आ अहि लेल हुनका लऽग अछि अनेको प्रमाण।

एहि कड़ीकेँ आगू बढबैत छथि, बिहार प्रशासनिक सेवाक पूर्व अधिकारी डॉ. रंगनाथ दिवाकर। ओ एक कुशल प्रशासक तऽ छलाहे, अपन मातृभूमि आ मातृभाषा लेल अथाह प्रेम आ अपार श्रद्धा रखैत छथि। जकरा ओ अपन लेखनीक माध्यमसँ समय-समयपर प्रकट करैत रहैत छथि। हालमे 'महाकविक महाप्रयाण'क रूपमे ई पुन: प्रकट भेल अछि। जे वास्तवमे शोधक महार्णव थिक, जाहिमे लेखक स्वयं हेलैत लगैत छथि, जाहिसँ ओ अंतमे महाकविक मैथिलत्वक नवनीत संग बाहर अबैत छथि। संगहि अपना संग पाठककेँ सेहो ओहि नवनीत केर दर्शन करबैत छथि। अनुप्रास प्रकाशन, मधुबनीसँ प्रकाशित ई पुस्तक शोधार्थी लेल अत्यन्त उपयोगी भऽ सकैत अछि। आम पाठकक लेल ई किछु शुरूमे कठिन पाठ्य अवश्य लगैत अछि मुदा बादमे ओ ततेक रमणीय होइत अछि जे पाठककेँ महाकविक मैथिलत्व केर अमृतसँ भावविभोर करैत अछि। एहिमे अनेक एहन बात अछि जे पाठककेँ रमणगर लगैत अछि। बहुत बात स्पष्ट भेल अछि। दिवाकरजी बहुत एहन बात सभक शोध समावेशनसँ फरिछा देने छथि जे पहिने ओकरा स्पष्ट नहि छल। किंतु परन्तुसँ परे पाठककेँ आश्वस्त करैत छथि आ पाठक मिथिलाकेँ महाकविक जन्मस्थान मानबाक निर्णय लैत छथि। हिनक पूर्व रचना सभकेँ देखैत ई उम्मीद छल जे महाकविक मैथिलत्वक विषयमे दिवाकरजी निर्णायक एवं सुस्पष्ट रुपसँ तथ्य राखि सकताह। हिनकामे एकर क्षमता अछि। एहि पोथीमे ओ एकर विशिष्ट उपयोग करैत उम्मीदपर सफल भेलाह। ओना इतिहासमे बहुत विवादास्पद प्रसंग अछि आ ई रहबे करत। ओ विक्रमादित्यकेँ ईसापूर्व प्रथम वा दोसर शतीमे मानएसँ इंकार करैत अपन निष्कर्ष दैत कहैत छथि जे एहन कोनो प्रमाण इतिहासमे नहि अछि जे ईसापूर्व प्रथम वा दोसर शताब्दीमे विक्रमादित्य नामक कोनो राजा छलाह। ओ भर्तृहरिकेँ भ्राता विक्रमकेँ शुंग काल प्रथम ईसापूर्वक बहुत बादमे मानैत छथि। गुप्त कालसँ पूर्व कोनो विक्रमादित्य

नामधारी राजाक उपस्थितिकेँ एकदम नकारि दैत छथि। संगहि ओ ठाकुर देशराजक उक्तिकेँ आधारपर मानैत छथि जे कालिदास गुप्त कालक बाद ईसाक 515सँ 543 ई. तक मालवाक दशपुर-उज्जैनक अधिपति यशोधर्मनक एक सभासद आ कवि छलाह जे मेघदूतम आ ज्योतिर्विदाभरण ग्रंथक रचना कयलनि। दिवाकरकेँ मोताबिक तऽ कालिदास यशोधर्मन केर समकालीन छलाह। मुदा विद्वतजन सर्वसम्मतिसँ यशोधर्मनकेँ विक्रमादित्य नहि मानैत छथि। दोसर दिवाकरजी ई स्पष्ट नहि कऽ सकलाह जे विद्योत्तमा, जे एक राजकुमारी रहथि, हुनकर पिताक की नाम रहय आ ओ कतयकेँ अधिपति छलाह। एतए दिवाकरजी एहि संबंधमे कोनो तरहक संकेत नहि करैत छथि, जे विद्योत्तमाक पिता के छलाह। ई बात एहि पुस्तकमे खटकैत अछि।

एक बात आर अछि जे ओ सिंहल देशक राजकुमार जे बादमे सिंहल देशक अधिपति बनैत छथि, ओहि कुमारदासकेँ कालिदाससँ मित्रता संबंधकेँ स्थापित करय लेल, हुनका ओहि विद्याश्रमसँ शिक्षा ग्रहण करबाक बात करैत छथि, जतय कालिदास शिक्षा ग्रहण कयलनि। ओकरा कण्व आश्रम कोटद्वारमे अवस्थित कहैत छथि। कालिदासकेँ उच्चैठ भगवतीसँ साक्षात्कार आ हुनकर कृपासँ विद्वान होएबाक कथा मानैत छथि मुदा रात्रि भरिमे प्रकांड विद्वान होएबाक दंतकथाकेँ एकटा तार्किक आधार दैत कालिदासकेँ कोटद्वारमे कण्व ऋषिक आश्रममे अध्ययन करैत देखबैत छथि जे उत्तराखंडक एहि कोटद्वार आश्रम विषयक मान्यतासँ मेल खाइत अछि। दिवाकरक अनुसार ओतहि श्रीलंकाक राजकुमार कुमारदास अध्ययन करैत छथि। नाटकमे सेहो पंडित सभ विद्योत्तमासँ हुनकर प्रथम परिचय कण्व आश्रमक स्नातक रुपमे करौने छलाह। ओ पंडित रहथि वररूचि मिश्र। दिवाकरजी कालिदास आ कुमारदासक मित्रता संबंधपर बहुत अधिक समय आ ऊर्जा व्यय कयने छथि। श्रीलंकाक इतिहास एवं प्रचलित दंतकथादि विषयक हुनक गहन अध्ययन बेजोड़ अछि। श्रीलंकाक इतिहास, साहित्य, ग्रंथ, परम्परा, शिलालेख एवं कालिदास-कुमारदास विषयक महाप्रयाणपर आधारित बाद केर सिंहल ग्रंथादिमे वर्णित प्रसंग सभक बलपर स्थापित करैत छथि जे महाकविक महाप्रयाण श्रीलंकाक माटरा नगरमे भेल छल। कुल मिलाकेँ ई कहल जा सकैत अछि जे सात दृश्य वला करीब 55 पृष्ठक 'महाकविक महाप्रयाण' वला नाटक केर संग लिखल गेल कुल 256 पृष्ठक ई पुस्तक शोधक महार्णव थिक। ई जतबे शोधार्थी लेल उपयोगी अछि ततबे आम पाठकक लेल मोनलग्गू सेहो। महाकवि कालिदास विषयक मैथिलीमे रचित ई अनुपम पोथी मिथिलाक गौरवग्रंथ प्रमाणित होयत। हँ, एहि पुस्तकक मूल्य 800 टाका अखरैत अछि।

डॉ. सुशान्त कुमार

जन्मतिथि : 02 दिसम्बर 1977, बेगूसराय।
सम्पर्क : +91 92349 65122

इतिहास विषयसँ स्नातकोत्तर आ एहि विषयमे पी-एच. डी. उपाधित डॉ. सुशान्त कुमार सतत अध्ययनशील रहैत छथि। शोधमे अभिरूचि छनि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीक ज्ञाता छथि। सम्प्रति उत्तर बिहारक पुरातत्त्व आ इतिहासपर स्वतन्त्र रूपसँ शोध कार्यमे मगन छथि। अनेक शोधपरक आलेख प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित भेल छनि। मूर्त्तिक संरचना आ विन्यास सभक विशेषज्ञ छथि। मैथिली आ हिंदी साहित्यमे पद्य आ गद्य लेखन सेहो करैत छथि। हिनक अखन धरि कुल तीन पोथी प्रकाशित अछि– 'दरभंगा प्रक्षेत्र की पाषाण प्रतिमाएं'। डॉ. सुशान्त द्वारा लिखित ई पोथी 2015मे कला प्रकाशन, वाराणसीसँ प्रकाशित भेल। 'गुरुदक्षिणानाटकम्' (मनीष प्रकाशन, वाराणसी, 2018) आ 'शिवस्तुति' (साहित्य भारती प्रकाशन, पटना/नयी दिल्ली, 2023) अन्य पोथी अछि।

कालिदासपर नवीन शोध : 'महाकविक महाप्रयाण'

जुलाइ 2023मे पटना उच्च न्यायालय, पटनाक किछु काजसँ पटना गेल रही। पटनामे दू-तीन दिन रुकल रही आ ओहि समयावधिमे तीन जुलाइक भोरमे डॉ. रंगनाथ चौधरी उर्फ डॉ. रंगनाथ दिवाकर जीक आवासपर गेल रही। दू-ढ़ाई बरख बाद नीक जेकाँ भेंट भेल छल, डेढ़-दू घंटा गप-शप भेल, इतिहासक संग साहित्यपर चर्च संग विदा होयबाक काल दिवाकरजी द्वारा सस्नेह 'महाकविक महाप्रयाण' पोथी भेटल। पटनासँ दरभंगा घुरैत काल ऐहि पोथीके आद्योपांत सरसरी तौरपर देखलहुँ, प्रथम दृष्टया नीक लागल आ घरमे आबिकेँ पोथीकेँ मैथिली पोथीक संगे राखि देलहुँ।

15 जनवरी, 2024केँ मधुबनीसँ अनुप्रास प्रकाशन समूहक प्रबन्ध निदेशक सूचित करैत अनुरोध कयलनि जे 'डॉ. रंगनाथ दिवाकर कृत 'महाकविक महाप्रयाण' अनुप्रास प्रकाशनसँ प्रकाशित अछि। ई पोथी बेस चर्चित आ प्रशंसित भेल अछि। एहि पोथीमे डॉ. दिवाकर महाकवि कालिदासकेँ वैदुष्यपूर्ण ढंगसँ विपुल प्रमाण सभक आधारपर मैथिल प्रमाणित करबामे सफल भेलाह अछि। अनुप्रास प्रकाशन एहि ग्रन्थपर एकगोट समीक्षा-संग्रह प्रकाशित करबाक नेयार कएलक अछि। एहि समीक्षा-संग्रहमे 'महाकविक महाप्रयाण' पोथीक समीक्षा, संक्षिप्त टिप्पणी, पाठकीय प्रतिक्रिया आ पोथी विषयक उद्गारादि प्रकाशित होएत। अपनेसँ अनुरोध जे एहि पोथी विषयक पाठकीय प्रतिक्रिया/संक्षिप्त टिप्पणी/उद्गार/विस्तृत समीक्षा फरवरीक अंत धरि पठएबाक कृपा कएल जाए।' ऐहि तरहक सादर अनुरोधकेँ स्वीकार करब इतिहास आ पुरातत्वके छात्र आ हिन्दी माध्यममे लेखन करबाक कारण मैथिलीमे लिखब मुश्किल छल आ मातृभाषा मैथिलीमे एहि अनुरोधकेँ अस्वीकार करब अपन भावना केर शोषण। मातृभाषा मूलत: मैथिली अछि, मुदा लेखनकेँ माध्यम हिन्दी, पिछला किछु बरखसँ मैथिलीमे लेखन शुरू

कयने छी, हठात् लिखयमे दिक्कत होइत अछि जे लिखैत-लिखैत समय सापेक्ष ठीक होयत। संस्कृत साहित्यकेँ मर्मज्ञ कालिदासकेँ जीवनपर आधारित महाकविक महाप्रयाण तऽ एक मूर्खकेँ विद्वान होयबाक कथा अछि।

पोथीक पाठकीय प्रतिक्रियापर किछु पोथी पूर्वहि प्रकाशित भेल अछि। किछु मास पहिने पाठकीय प्रतिक्रियापर लिखल पोथी 'इतिहास बाजि रहल अछि' (श्रीअमरजीक अतीत-मन्थन : पाठकीय स्पन्दन) पढ़ने रही, जाहिमे बीसटा आलेख, चारिटा लेखकक नाम पत्र संगे परिशिष्टमे एकटा समीक्षा आ मंगलकामना प्रकाशित अछि। स्मरण शक्तिक आधारपर श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' जीक लिखल पोथी 'अतीत-मन्थन'क बाद आब महाकवि कालिदासकेँ जीवनपर आधारित डॉ. रंगनाथ दिवाकर जीक पोथी 'महाकविक महाप्रयाण'पर लिखल प्रतिक्रिया देखयमे आयत, ताहि लेल अनुप्रास प्रकाशनकेँ शुभकामना।

पोथीके मुखपृष्ठ श्री मिथिलेश कुमार, भा. प्र. से. (सेवानिवृत) द्वारा बनाओल गेल अछि जे आकर्षक अछि। ई चित्र मूल रूपमे श्रीलंकाक माटरामे कालिदासक धधकैत चिता आ ओहि धधकैत चितामे हुनक मित्र कुमारदासकेँ मित्रधर्मकेँ निर्वहन हेतु प्रवेश करैत मार्मिक रूपमे उकेरल अछि। एहि चित्रमे कुमारदासक पाँचू रानीक भाव स्पष्ट रूपमे दृश्यांकित अछि। मुखपृष्ठक कवर-पृष्ठक भीतरी भागमे उच्चैठ भगवती आ उच्चैठ मंदिरक देल चित्र नयन-सुख दैत अछि, हमर सौभाग्य जे ई चित्र हमरा द्वारा शोध काज करबाक काल लेल गेल छल। पोथी थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित भेल अछि। पोथीके बैक कवर पृष्ठपर लेखकक परिचय देल गेल अछि आ बैक कवर पृष्ठक भीतरी भागमे तीनटा चित्र अछि, पहिल चित्र कालिदास डीह, उच्चैठ (बेनीपट्टी), दोसर चित्र महाकवि कालिदास पूजित गढ़कालिका भगवती मन्दिर, उज्जैन (मध्य प्रदेश) आ तेसर चित्र महाकवि कालिदास आ महाकवि कुमारदास (कुमार धातुसेना)क महाप्रयाणस्थली, माटरा बोधिय, माटरा, श्रीलंकासँ सम्बन्धित अछि। ई सब चित्रसँ पोथी विलक्षण बनओलनि अछि।

महाकविक महाप्रयाण मूलत: महाकवि कालिदासक मैथिलत्व आ महाकविक महाप्रयाण विषयक नाटकसँ सम्बन्धित अछि, जे लेखक रंगनाथ दिवाकर द्वारा अपन तीनू मातृशक्ति आ तीनू पितृपुञ्जकेँ समर्पित कयल गेल छैन्ह। पोथी स्मृतिशेष पू. माता कृष्णा देवी (महाप्रयाण 23 अक्टूबर 2015), स्मृतिशेष पू. अम्मा गीता देवी (महाप्रयाण 24 अक्टूबर 2014) आ स्मृतिशेष पू. चाची शची

देवी (महाप्रयाण 25 फरवरी 2022) एवं तीनू पितृपुञ्ज-स्मृतिशेष पू. बड़का बाबू जगन्नाथ चौधरी (महाप्रयाण 24 अप्रैल 2014), स्मृतिशेष पू. छोटका बाबू डॉ. गोविन्द नारायण चौधरी (महाप्रयाण 21 नवम्बर 2016) आ पूज्य ददा श्री वासुदेव नारायण चौधरी (जन्म 5 फरवरी 1927)केर श्रीचरणमे सादर समर्पित अछि। आब पारिवारिक माहौल आधुनिक परिस्थितिमे संयुक्त परिवारसँ एकल परिवार दिस तेजीसँ बदलि रहल अछि तेँ सभसँ पहिने महाकविक महाप्रयाणमे रंगनाथ दिवाकरजीक लिखल एहि तरहक समर्पणक तारीफ़ होयबाक चाही, ई समर्पण वाक्यसँ लेखकक मन: स्थिति संयुक्त परिवारक प्रति भावनाकेँ प्रकटीकरण छन्हि।

महाकविक महाप्रयाणक अगिला पड़ाव अछि, विषयानुक्रम। विषयानुक्रम निम्न रूपमे प्रकाशित अछि।

1. शुभकामनासन्देश : प्रो. शशिनाथ झा

2. भूमिका : महेन्द्र मलंगिया

3. किछु आखर

4. महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व

i) महाकविक समय आ जन्मस्थान

ii) रचनामे व्यक्त विचार सभक आधारपर महाकविक मैथिलत्व

iii) प्रकृति वर्णनमे महाकविक मैथिलत्व

iv) रीति-रिवाज व पावनि-तिहारक चर्चमे महाकविक मैथिलत्व

v) भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व

vi) राजस्व अभिलेखक आधारपर महाकविक मैथिलत्व

5. इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व

i) महाकवि कालिदास आ सीता चरित्र-चित्रण

ii) उच्चैठ, उज्जैन आ महाकवि कालिदास

iii) महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा

iv) कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका

v) महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनन्त पथ केर सहयात्री

vi) श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल

6. निष्कर्ष

7. महाकविक महाप्रयाण (नाटक)।

महाकविक महाप्रयाण नामक सम्पूर्ण पोथीमे दू अलग-अलग भागमे स्वतन्त्र रूपमे विभाजित कयल गेल अछि, पहिल भाग शोध आलेख रूपमे प्रकाशित अछि तऽ दोसर भाग नाटककेँ रूपमे प्रकाशित नाटिका सात दृश्यमे विभक्त अछि। ई लघु नाटिका 'महाकविक महाप्रयाण'केँ घटना, वार्तालाप, वाक्यांश, पात्रादि प्राचीन संस्कृत नाटकके स्मरण करबैत अछि।

किछु आखर लेखकीय अछि, जाहिमे लेखक डॉ. रंगनाथ दिवाकर लिखने थिकाह— 'महाकविक रचना रस केर पीयूष वर्षासँ आप्लावित भारतवर्षक बहुत क्षेत्र हुनक जन्मस्थानक दावी कयने अछि। मिथिलाक अपन दावी सेहो अछि। एकरे मूल्यांकन एहिमे भेल अछि। महाकविक जीवनयात्रा रोमांचकारी अछि। जन्मस्थल मिथिला, कर्मस्थल पाटलिपुत्र आ उज्जैन एवं महाप्रयाण स्थल श्रीलंकाक माटरा! एहि मध्य अनेकशः अनुश्रुति, जनश्रुति, दंतकथा, किंवदन्ती, प्रवाद, रहस्य आ किन्तु-परन्तु केर सागरमे भुतिआयल महाकविक जीवनवृत्तसँ तथ्य केर अमृत आनब अत्यन्त दुष्कर काज अछि। प्रत्येक क्षेत्रक प्रातिभ महाकविकेँ अपन प्रमाणित करबामे अपन प्रतिभा आ वैदुष्यक सर्वश्रेष्ठ उपयोग कयने छथि। एहन स्थितिमे हुनकर मान्यताक काट करबाक लेल ओहि डरीर सभसँ पैघ डरीर उकेरब आवश्यक। हम एहि विषयक विवादक क्षीरसागर मथि महाकविक मैथिलत्व केर नवनीत लऽ अपने सभक समक्ष उपस्थित भेल छी। एहि पोथीक प्रत्येक पाँतीक मूलस्वर महाकविक मैथिलत्वे अछि। ' महाकविके ओझरायल गपके दिवाकरजी एक दिस कतेको अनुश्रुति, जनश्रुति, दंतकथा, किंवदन्तीके सहारे सोझरेबाक कोशिश कयलनि तऽ दोसर दिस कृष्णमूर्ति, डॉ. भगवती लाल राजपुरोहित, राजेन्द्र मिश्रा, प्रो. लक्ष्मीश्वर कल्ला, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, वी.वी. मिरासी, पं. मोरेश्वर नीलकंठ शास्त्री, पं. दिगम्बर झा, कृष्णानन्दजी, डॉ. आदित्यनाथ झा, डॉ. देवनारायण झा, रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर, अनन्त शयनम् आयंगर, डॉ. भारती श्रीवास्तव, डॉ. रामचन्द्र ठाकुर आदि विभिन्न देशी आ विदेशी लेखक सभक विचार केर उल्लेख कयने छथि।

लेखकक पोथी केर चारिम आ पाँचम अध्याय बड़ महत्वपूर्ण अछि। चारिम अध्यायमे डॉ. रंगनाथ दिवाकर द्वारा महाकवि कालिदासक जन्मस्थानपर विदर्भ, कश्मीर, बंगाल, उज्जैन, मिथिला आदि क्षेत्रपर विस्तारसँ वैदुष्यपूर्ण विवरण प्रस्तुत कयल गेल अछि। डॉ. दिवाकर अपन अकाट्य तर्क आ प्रमाण दैत स्पष्ट करैत छथिन जे महाकवि कालिदास विदर्भ, देवगिरि, कविल्ठा, कश्मीर, बंगाल वा उज्जैनक मूलवासी नहि छथि। उज्जैनकेँ कर्म स्थली सिद्ध करैत मिथिलाकेँ जन्म स्थली सिद्ध करैत अपन तथ्य, शोध आ प्रमाणपूर्वक अपन मंतव्य देलनि अछि। महाकवि कालिदास मिथिलाक छथिन, हिनकर जन्म मिथिलेमे भेल छनि, तकर विद्वत्तापूर्ण ओ तथ्यात्मक शोधपूर्ण आलेख एवं नाटकक माध्यमे डॉ. दिवाकर प्रमाणित करैत छथि।

अपन शोधमे डॉ. दिवाकर कालिदासकेँ मैथिल प्रमाणित करबामे कालिदाससँ सम्बन्धित किछु लेखक आदरणीय पं. आद्याचरण झा, पं. जीवनाथ झा, पं. जयमन्त मिश्र, पं. बलदेव मिश्र, पं. लक्ष्मण झा, पं. दिगम्बर झा आदि मनीषी सबहक नाम लेने छथि। पूर्वकालिक लेखक कालिदासक श्रीलंका यात्रा सम्बन्धमे कोनो विशेष जानकारी नहि दैत छथिन, मुदा रंगनाथ दिवाकरजी महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रापर विशद् विचार कयलनि आ ओकर प्रमाण सभक गंभीर मीमांसा करैत कालिदासकेँ मैथिल प्रमाणित करबामे सफल भेलाह। महाकविक महाप्रयाणक अध्ययन कयलहुँ तऽ बुझलहुँ जे डॉ. दिवाकर निश्चित रूपमे साहित्य संग पुरातात्विक स्रोत (श्रीलंकाक शिलालेख) आ जनश्रुति सबहक अध्ययन आ परीक्षण करैत इतिहासक गहन मंथन, परम्परा सबहक अनुशीलन करैत महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर एकटा अनुपम काज कयलनि।

मिथिला आ श्रीलंकामे प्रचलित जनश्रुति सभक आधारपर विस्तृत जानकारी उपलब्ध करबाक कोशिश कयलनि, एक दिस कालिदास लेल मिथिलाक जनश्रुतिमे जाहि डारिपर बैसल ओकरे काटब, छलपूर्वक राजकुमारीसँ विवाह, तिरस्कार आ उच्चैठ भगवतीक कृपासँ विज्ञ बनबाक कथा प्रचलित अछि। दोसर दिस श्रीलंकाक जनश्रुतिमे राजा कुमारदास (अपर नाम कुमार धातुसेना, राजत्व काल 513-522ई.) आ कालिदासक संग-संग माटरामे भेल महाप्रयाण प्रचलित अछि। मिथिलाक जनश्रुतिक अभिलिखित प्रमाण तिब्बती बौद्ध धर्मयात्री धर्मस्वामिनक जीवनीमे उपलब्ध अछि। श्रीलंकाक जनश्रुति, श्रीलंकाक इतिहास आ साहित्यमे राजा कुमारदासक राजनर्तकी द्वारा समस्यापूर्तिक पारितोषिकमे माहुर

खुआ कालिदासक हत्या, भेद खुजलापर कालिदासक राजकीय चितामे द्रवित राजा कुमारदास आ हुनक पाँच रानीक प्रवेश प्राय: मान्य अछि। दुनू ठामक जनश्रुति, ऐतिहासिक, साहित्यिक आ पुरातात्विक स्रोतक आधारपर रंगनाथ दिवाकरजी श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थलमे लिखैत छथिन- 'महाकवि कालिदासक जीवन यात्रा भारतवर्षक बेनीपट्टीसँ शुरू भेल। मिथिला, पाटलिपुत्र, मालिनी नदी कात बसल कोटद्वार (कण्व ऋषिक आश्रम, उत्तराखंड), उज्जैन, मालवा, मन्दसौर आदि स्थान सभकेँ अपन अपूर्व आभासँ आलोकित करैत ई अप्रतिम जीवन ज्योति श्रीलंकाक वर्तमान माटरा शहरमे कुमारदासक संग अनन्त ज्योतिमे विलीन भऽ गेल। मिथिलाक बेनीपट्टीसँ श्रीलंकाक माटरा तक केर महाकवि कालिदासक ई अप्रतिम जीवन-यात्रा दुनू देशक अनुपम धरोहर थिक। '

पोथीक पहिल भाग शोध आलेख शोधपर आधारित नव अनुसन्धान अछि। महाकविक महाप्रयाण नामक सम्पूर्ण पोथीमे पहिल बेर एक ठाम बेनीपट्टीसँ श्रीलंकाक माटरा धरि महाकवि कालिदासक जीवन यात्रा पूर्णत: गहन अध्ययन आ शोधपर आधारित अछि। नहि केवल महाकविक समय आ जन्मस्थान नाम वला शीर्षकसँ सम्बन्धित अध्यायमे कालिदासक काल निर्धारणमे कतेको शोधपरक आलेख आ सन्दर्भ ग्रन्थक जगह-जगहपर सन्दर्भ लेल गेल अछि।

पोथीक दोसर भाग सात दृश्यमे विभक्त नाटक अछि, पोथीक भूमिका नाटककार महेन्द्र मलंगिया लिखने थिकाह। हुँनका विचारमे ई नाटक 'प्रस्तुत नाटककेँ प्रबुद्ध वर्ग हाथो-हाथ लेत से हमर दृढ़ विश्वास अछि। किएक तऽ सिंहलक युवराजसँ कालिदासक मैत्री सम्बन्ध, कामसेनासँ सम्पर्क, फेर हिनक मृत्यु आदिक बारेमे हमरा जनैत बहुत गोटे नहि जनैत होएताह जकरा ई नाटक प्रकाशमे अनलक अछि। एतबए नहि, जाहि ढंगसँ एकर घटनाक्रम चलैत अछि, ओ सहजहिं पाठक, दर्शक तथा प्रेक्षकक मोनमे उत्सुकता उत्पन्न कऽ दैत छैक। आओर एही उत्सुकताक चलते पाठक एकर मंचन देख' चाहत तथा दर्शक प्रेक्षक बनि जाएत ताहिमे हमरा सन्देह नहि अछि।' निश्चित रूपमे महाकविक महाप्रयाण नाटक 'महाकविक महाप्रयाण' पोथीक मूल भाव अछि, ताहि लेल हमर विचारसँ पोथीक नाम नाटकक नामपर राखल गेल अछि। ई लेखकक स्तुत्य प्रयास अछि। महाकविक महाप्रयाण नाटककेँ पात्र परिचय निम्न रूपेण अछि—

पुरुष पात्र

1. कालिदास : भारतवर्षक सुप्रसिद्ध महाकवि
2. कुमारदास : सिंहल देशक राजकुमार आ राजा
3. पण्डित 1 : सुप्रसिद्ध वररूचि
4. पण्डित 2 : पण्डित 1 केर शिष्य, विद्योत्तमासँ विवाहक आकांक्षी
5. अनुचर : पण्डित सभक चाकर
6. नट : नाटक केर सूत्रधार
7. राजा : विद्योत्तमाक पिता
8. चारण : सिंहल नरेशक सेवक
9. सभासद 1
10. सभासद 2
11. कित्तीसेना : कुमारदासक पुत्र, सिंहल देशक राजकुमार

स्त्री पात्र

1. विद्योत्तमा : सुप्रसिद्ध विदुषी आ राजकुमारी
2. प्रियंवदा : विद्योत्तमाक परिचारिका
3. कामसेना : सिंहल देशक राजनर्तकी
4. रानी : विद्योत्तमाक माता
5. नटी : नट केर प्रिया

परिचारिका : विद्योत्तमाक परिवारक दू परिचारिका (आवश्यकतानुसार अतिरिक्त किछु पुरुष पात्र राजाक सभामे आ सिंहल नरेश कुमारदासक सभामे बैसि सकैत छथि)

सात दृश्यमे विभक्त आ कालिदासक मिथिला आ कुमारदासक श्रीलंकाक माटराक परिदृश्यमे लिखल महाकविक महाप्रयाण नाटक भारतवर्षक सुप्रसिद्ध महाकवि कालिदास आ सिंहल देशक राजकुमार आ राजा कुमारदासक बीच आपसी प्रारम्भिक अवस्थाकेँ सम्बन्धसँ जीवनक अन्त समय धरि देखायल गेल अछि। कालिदास आ कुमारदाससँ सम्बन्धित विषयपर पूर्वमे सेहो किछु काज भेल

अछि जे एहि मार्मिक घटनाक सत्यताकेँ मानैत छथि। ई विषय सिंहल ग्रंथ निकाय संग्रह, सद्धर्म रत्नाकर, राज रत्नाकर, राजावलीय, पूजावली, पेरू कुम्बसिरित, कालिदास चरिताया, एफ कूरे, नागिरीकाण्डा शिलालेख सहित शताधिक शोध-प्रबंध समर्थित अछि। सेनार्थ पारानविताना, बी. गुणशेखर, एम. मेघनकर, गेगर, एच. विद्याभूषण, जी. आर. नादार्गीकर, विलियम नायटन, आर. डेविड्स, ए. एम. होकार्ट, गामिनी, पूंछीहेवा आदि कतेको विद्वान कालिदास आ कुमारदास विषयक एहि प्रसंगकेँ सत्य मानैत छथि।

एहि प्रसंगक आधारपर लिखित नाटकक पहिल दृश्य लेल रंगमंच तैयार अछि। मंचक बामा कात एक पर्दा लागल अछि। अखन मुख्य मंचसँ ओम्हर नहि गेल जा सकैछ। मंचक समानान्तर बामा कात एक लघुमंच अछि जाहिपर पर्दा खसल अछि। मुख्य मंचक पर्दा उठैत अछि। एक कातसँ नट आ दोसर कातसँ नटीक हाथ जोड़ने प्रवेश होइत अछि) एहि दृश्यमे नट आ नटीके माध्यमसँ कालिदासके जन्म मिथिलामे आ मृत्यु एतएसँ हजारो कोस दूर श्रीलंकाक शहर माटरामे होयबाक जिज्ञासाक संगे शास्त्रार्थ होयबाक चर्च आ कलुआकेँ खोज अछि।

दोसर दृश्य राजसभाक दृश्य अछि। विद्योत्तमाक विवाह लेल सोचमग्न राजा, मंत्रीगण आ शृंगार कएने प्रफुल्लित विद्योत्तमा बैसलि छथि। तीन आसन रिक्त। दुनू पंडित आ रेशमी परिधानमे सुशोभित कलुआक प्रवेश संगे कलुआकेँ मौन व्रत कथा, विद्योत्तमाके संगे पंडितके प्रश्नोत्तर आ विद्योत्तमाके विवाहोत्सव सम्बन्धी जानकारी अछि।

तेसर दृश्यमे राजमहल केर एक कक्षमे सोहाग सेज सजल अछि। विद्योत्तमा पटोर पहिरने प्रफुल्लित बैसलि छथि। सोझाँमे एकटा बिछान भूमिपर सजल अछि। नव वस्त्राभूषणमे सजल कलुआक प्रवेश आ किछु समय बाद विद्योत्तमा आ कलुआमे गप्प होइत अछि आ कलुआ शपथ खा निकलि जाइत छथि।

चारिम दृश्यमे ऋषि कण्वक आश्रम। यज्ञक हवनकुण्ड मिझा गेल अछि मुदा एहिसँ अल्प धूम्रप्रवाह जारी अछि जाहि कारणेँ वातावरणमे सरड़ आ गुग्गुल केर दिव्य सुगन्ध पसरि गेल अछि। ऐहि दृश्यमे कालिदास आ कुमारदास आपसमे वार्तालाप करैत छथि। ऋषि कण्वक आश्रममे कालिदास आ कुमारदासमे मित्रता भेलनि आ भविष्य संबंधी चर्च भेलनि।

कुमारदास : मित्र कालिदास! अहाँक कथा सुनि हम भावुक भऽ गेल छी। विदुषी विद्योत्तमाक प्रण, आचार्य आ विद्वान् सभक पराजय आ प्रतिशोध, संकेतमे

शास्त्रार्थ, विवाह, पत्नीक तिरस्कारसँ व्यथित कोहबर घरमे पत्नीक परित्याग, उच्चैठ गुरुकुलमे रसोइयाक चाकरी, वर्षा ऋतु केर विकराल रातिमे उफनैत नदी हेलिकँ पार कऽ भगवतीकँ दीप बारि पूजन आ निशानी देबाक लेल भगवतीक मुहपर दीप केर करिखा लगबैत काल भगवती द्वारा साक्षात् दर्शन दऽ हाथ पकड़ि विश्व-विश्रुत होयबाक आशीर्वाद...

कालिदास : सब माता उच्चैठ भगवतीक कृपा! स्वयंवरमे आचार्य हमर परिचय ऋषि कण्वक शिष्ये रूपमे देने छलाह। तैं हम अपन मातृभूमि मिथिलासँ एतेक दूर एतए आबि कण्व ऋषिक एहि आश्रममे अपन भविष्य देखलहुँ। हिमालय केर पूर्वी तराइ क्षेत्र मिथिलासँ हिमालय केर पश्चिमी तराइ गढ़वालमे मालिनी नदीक तटपर अवस्थित कोटद्वारक एहि आश्रम तक केर यात्रा अत्यन्त दुर्गम छल। तथापि विद्योत्तमाक तिरस्कारक शब्द आ भगवतीक आशीर्वाद हमर पाथेय बनल। एहि चौकीघाटाक लऽग किनकसोत कुञ्जकै कोना बिसरि सकैत छी मित्र! आइ वर्षक वर्ष व्यतीत भऽ गेल तथापि एको क्षणक लेल हम ने अपन मातृभूमि मिथिला आ ने उच्चैठ भगवतीकै बिसरलहुँ। एतेक वर्ष बाद एतए रहि आब हम एहि योग्य अवश्य भऽ गेल छी जे विद्योत्तमाक ज्ञान गवं कखनो खंडित कऽ सकैत छी मुदा आब ओम्हर ध्याने नहि जाइत अछि। तिरस्कारसँ भरल शब्दबाण सदिखन जेना हमर मर्मस्थलकै बेधैत रहैत हो। ओकर डोका सन-सन पैघ-पैघ आँखि जेना हमरा व्याकुल करैत हो। विद्योत्तमाक तिरस्कारक एक-एक शब्द ओहिना मोन अछि कापुरुष, महापापी, धूर्तशिरोमणि, ठकहारा, क्लीव, नपुंसक... ओह!... ऋषि कण्वक आश्रममे अध्ययनोपरांत कालिदास आ कुमारदास, दुनू एक दोसराकँ हाथ जोड़ैत विदा करैत छथि आ यवनिका पात होईत छै।

पाँचम दृश्यमे विद्योत्तमा अपन कक्षमे साधारण वस्त्रमे बिनु कोनो शृंगार वा आभूषणकै बैसलि कोनो ग्रंथ पढ़ि रहल छथि। भोरक समय अछि। नेपथ्यसँ द्वार खटखटएबाक स्वर अबैत अछि— ठक! ठक!! ठक!!! विद्योत्तमा चौंकैत एम्हर-ओम्हर ताकि किछु नहि देखि फेर ग्रंथमे डूबि जाइत छथि। ऐहि दृश्यमे विद्योत्तमा आ कालिदासकँ भेट होईत छै आ कालिदास अपन मित्र कुमारदासकँ सम्बन्धमे विद्योत्तमाके बुझबैत छथिन।

छठम दृश्यमे श्रीलंकाक एक नगर माटरामे राजनर्तकी कामसेनाक घरपर कालिदास पहुँच गेल थिकाह। कामसेनाक घरके देवालपर सिंह केर आकृति, समुद्र केर रम्य तट केर चित्र आ सुन्दर कलाकृति सब सुशोभित अछि। द्वारपर

सजल दीपक केर रोशनी घरक शोभा बढ़ा रहल अछि। द्वार खटखटएबाक स्वरपर कामसेना प्रकट होइत छथि। आकर्षक देहयष्टिपर सुन्दर परिधान आ स्वर्णाभूषण दमकैत अछि। सामने कालिदास राजसी परिधानमे ठाढ़ छथि। ऐहि दृश्यमे कालिदास आ कामसेनाक संवाद आ कोनो पैघ षड्यंत्रके आभास सम्बन्धी जानकारी अछि।

सातम दृश्यमे श्रीलंकाक राज दरबार सजल अछि। सिंह केर विशाल आकृति सभक चित्र सब देवाल सभपर सुशोभित अछि। यत्र-तत्र पितरिया, काँसा आ चानीक सिंह प्रतिमा राखल अछि। मध्यमे राजसिंहासन लऽग सिंह केर भव्य स्वर्ण प्रतिमा सुशोभित अछि। सभासद सब अपन-अपन आसनपर विराजमान छथि। चारणक उद्घोष होइत अछि आ राजसभाक कार्यवाही शुरू होइत अछि। कामसेना आ कुमारदासक बीच समस्यापूर्ति सम्बन्धी गपमे कुमारदास अपन मित्र कालिदासक सम्बन्धमे कामसेनासँ पुछैत छथिन।

कामसेना : सर्वथा सत्य कहब हम। मात्र जान बकसि देल जाय महाराज! काल्हि सन्ध्या काल एक गौरांग सुदर्शन व्यक्ति हमर द्वारपर दस्तक देलनि। ओ रातिमे आश्रय केर याचना कयलनि आ भोरमे दरबार अयबाक बात कहलनि। हम समस्यापूर्तिपर चिन्तन करबाक लेल समयाभावक कारणें आश्रय देबासँ मना कऽ देलहुँ तखन ओ हमरासँ समस्या पुछलनि। प्रथम पंक्ति-कमलः कमलोत्पत्ति श्रूयते न तु दृश्यते पढ़िते मात्र हठात् हुनकर मुहसँ निकसि गेल-बाले तव मुखाम्भोजे कथमिन्दीवरद्वयम्। हम आश्रय देलहुँ मुदा ई निश्चित छल जे जँ ई दरबारमे अबितथि तऽ पुरस्कार हिनके भेटैत तऽ पुरस्कारक लोभवश हम रातिमे भोजनोपरान्त दूधमे माहुर मिला हुनकर हत्या कऽ देलहुँ।

कुमारदास : ओह!

कामसेना : फेर भिनसरबामे अपने घरमे तरहरा खुनि हुनका गाड़ि देलहुँ। हमर एक-एक शब्द सत्य अछि महाराज! आब हमरा प्राणदान देल जाओ। क्षमा महाराज क्षमा!'... कुमारदास मंत्रोच्चार करैत चिताक परिक्रमा कऽ कालिदासकै मुखाग्नि दैत छथि। चिता धधकि उठैत अछि।

किछु काल विलाप करैत कुमारदास युवराजक हाथसँ मुकुट अपना हाथ लऽ युवराजकैं मुकुट पहिरा अपन माथक तिलकसँ युवराजकैं तिलक करैत कालिदासक धधकैत चितामे पैसि जाइत छथि। हाहाकार मचि जाइत अछि। फेर पाँच बेर विभिन्न स्त्री स्वरमे 'प्राणनाथ', 'स्वामी', 'लंकेश्वर', 'प्राणेश्वर' आ 'हृदयेश्वर' शब्द अभरैत अछि। वातावरणमे अनेक प्रकारक करुण क्रन्दन् केर

स्वर, हे महादेव, हे अवलोकितेश्वर केर आर्त्तनाद, चीत्कार, गूँज आ कोलाहल पसरि जाइत अछि।

नाटकमे यवनिकापात होइत छै आ नेपथ्यसँ अबैत नट केर स्वर— सती प्रथा उचित नहि तऽ कुमारदासक पाँच रानीकेँ धधकैत चितामे प्रवेश नहि दर्शाओल गेल अछि। श्रीलंकाक मुख्य शहर कोलम्बोसँ लगभग 160 किमी दक्षिण पूबमे अवस्थित माटरा शहरमे चितास्थलपर सातटा बोधि वृक्ष लगाओल गेल छल। एहिमे अनेक हतबोधिवृक्ष माटरा शहरक विभिन्न क्षेत्र— जेना माटरा पुलिस स्टेशन, गवादा विडिया, बेलि बेरिया, मुख्य गली आ कोतुवागोड़ा पुरान सड़कपर अखनो जीवित अछि।

एहि प्रकार पोथीके अन्तमे सात दृश्यमे विभक्त नाटक 'महाकविक महाप्रयाण' आ पोथीक आरम्भमे महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व सम्बन्धी आलेख निश्चित रूपमे कालिदासपर नवीन शोध अछि, जाहिसँ सिद्ध होइत अछि जे कालिदासक जन्म बेनीपट्टी आ मृत्यु श्रीलंकाक माटरामे भेल छल।

डॉ. संजीत कुमार झा

जन्मतिथि : *05 जुलाइ 1983, ठाढ़ी, मधुबनी।*

सम्पर्क : *+91 98994 96824*

वाचस्पतिक जन्मस्थान ठाढ़ीक प्रभविष्णु अध्येता डॉ. संजीत कुमार झा नेनपनेसँ 'होनहार विरबान के होत चिकने पात' केर उक्तिकेँ सार्थक करैत अयलाह। हिनक मेधाक विस्फोट अत्यन्त आह्लादकारी अछि। पहिने प्रखंड विकास पदाधिकारी रूपमे बेनीपुर (दरभंगा) आ पलासी (अररिया)मे सेवा कयलनि। एहि अक्षर पुरुषकेँ एहि सेवासँ संतोष नहि भेल तँ सरस्वतीक साधनामे आबि गेलाह। सम्प्रति सी एम कॉलेज, दरभंगामे संस्कृत विभागाध्यक्ष रूपमे सेवारत छथि। संस्कृत, मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीक नीक ज्ञाता छथि। धाराप्रवाह निधोख संस्कृत बजैत छथि। मैथिली, संस्कृत आ हिन्दीसँ सर्जनात्मक रूपसँ जुड़ल छथि। राष्ट्रीय स्तरपर अपन मेधाक धाक जमा कतेक स्वर्णपदक प्राप्त कयने छथि। स्वतंत्र पोथी नहि आएल अछि मुदा हिनक अनेक रचना प्रकाशित, प्रशंसित आ पुरस्कृत भेल अछि।

प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः

'प्रज्ञानं ब्रह्म' (ऐत. उप. 3.1.3) ई महावाक्य आर्ष भारतीय मनीषाक परिचय करबैक संगहि एकटा विशेष संदेश सेहो दैत अछि, जाहिसँ ज्ञात होइत अछि जे ज्ञानमीमांसा भारतीय चिन्तन परम्पराक आधारभूत तत्व अछि जकर आधारपर दर्शन, साहित्य, विज्ञान आदि क्षेत्रमे ज्ञानेक महत्व सबसँ बेसी देल गेल अछि। ई ज्ञानधारा जाहि-जाहि क्षेत्रमे प्रवाहित ओ क्षेत्र ज्ञानभूमिक रूपमे प्रतिष्ठित होइत समस्त संसारकेँ अपन ज्ञानप्रभासँ प्रभावित करैत रहल। याज्ञवल्क्य, गौतम, कणाद, मण्डन, कपिल, वाचस्पति आदि विशिष्ट विद्वानक वैदुष्य रूपी वारिसँ सिञ्चित एहने एकटा विशिष्ट भूमि अछि, जाहि भूमिक नाम थिक मिथिला। दर्शनशास्त्रक अद्वितीय प्रभासँ जाहि तरहेँ ई संस्कारकेँ प्रभासित केलक, तेहन अन्य कोनो क्षेत्र नहि। दार्शनिक रूचिकेँ हृदयमे धारण करितो साहित्य आदि क्षेत्रमे सेहो एतुक्का पाण्डित्य परम्परा अपन आदर्श स्थापित केलक जाहिसँ ई भूमि सदति ज्ञानपिपासुक आकर्षणक केन्द्र बनल रहल। ओहन उदाहरणमेसँ एकटा छथि कविकुलशिरोमणि मैथिलवंशावतंस महाकवि कालिदास।

महाकवि अपन जन्मसँ मिथिलेकेँ अलंकृत केलाह ई मैथिलक दृढ़ विश्वास छनि। यद्यपि कविताकामिनीकान्त कालिदास सदृश अलौकिकी प्रतिभासम्पन्न महाकवि लेल 'स्वदेशो भुवनत्रयम्' ई वाक्ये चरितार्थ होइत छैक। हुनका कोनो एक क्षेत्रमे बान्हब उचित नहि होइत छैक, तथापि भौगोलिक दृष्टसँ एवं क्षेत्रक गौरवक दृष्टिसँ विचार केलापर कालिदास हमरे सबहक क्षेत्रीय छलाह ई हमर सबहक सुदृढ़ मत अछि। ओहिमे की प्रमाण? ई अनेक प्रमाणक रहितो महाकविएक भाषामे जँ कहल जाय तँ—

सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।

(शकु.)

एहि पद्यांशक स्मरण करैत हमरा सभक अन्तःकरण परम प्रमाणकेँ रूपमे एकर गवाही दैत अछि। ओना महाकवि अपन कोनो ग्रंथमे अपन जन्मस्थान वा कर्मस्थानकेँ विषयमे नहि लिखलनि, मुदा हुनकर लिखल साहित्यक अनुशीलनसँ बहुतो विद्वान द्वारा महाकविक जन्मभूमि मिथिला तथा कर्मभूमि 'उज्जयिनी' इति स्थापित केलनि। ओहने विद्वत्परम्परामे सबसँ अर्वाचीन रूपमे जिनकर कार्य सोझा आयल अछि ओ थिकाह डॉ. रंगनाथ दिवाकर। वस्तुतः प्रशासनिक सेवासँ सेवानिवृत्त भेलाक बावजूदो हिनकर शोधप्रवृत्ति एवं ज्ञानपिपासाक अद्‌भुत उदाहरण एवं मानक रूपमे हमरा सबहक समक्ष आयल हिनकर नवीनतम ग्रन्थ 'महाकविक महाप्रयाण'। ई ग्रन्थ मैथिली भाषामे निबद्ध अछि तथा महाकविक विषयमे समस्त ग्रन्थिक उद्‌भेदन कय हुनक जन्मसँ महाप्रयाण धरिक समस्त वृत्तांत के शोधपूर्ण दृष्टिसँ सप्रमाण पाठकक सोझाँ उपस्थापित कऽ दैत अछि। एहि ग्रन्थक लेखनमे कतेक परिश्रम लेखक केने छथि ई तऽ सुधी पाठके लोकनि अनुभव कऽ सकैत छथि। ऐतिहासिक दृष्टिसँ महाकविक विषयमे सब पक्षक उद्‌भेदन कय जाहि तरहक तर्कपूर्ण समाधान एतय प्रस्तुत कएल गेल अछि, ताहिसँ ज्ञात होइत अछि जे लेखक इतिहासक विशेषज्ञ हेताह। साहित्यक दृष्टिसँ जाहि तरहे महाकविक समस्त साहित्यक अनुशीलन कय गम्भीर साहित्यिक विमर्श प्रस्तुत कयने छथि ताहिसँ प्रतीत होइत अछि जे लेखक स्नेहिल हृदय रसमर्मज्ञ साहित्यकार थिकाह। हिन्दी साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान रहितो संस्कृत साहित्यकेँ प्रति हिनकर सूक्ष्म दृष्टि अत्यन्त प्रशंसनीय छनि।

ग्रन्थकर्ता द्वारा अहि ग्रन्थक नाम 'महाकविक महाप्रयाण' राखल गेल अछि, मुदा ई एहि ग्रन्थक अल्पांश मात्र अछि। नाटक रूपमे अवस्थित 55 पृष्ठात्मक एहि अंशमे महाकविक महाप्रयाण विषयक कथा नाटकीय दृष्टिसँ उपस्थापित कैल गेल अछि। एहि अंश मात्रक नामसँ ग्रन्थक नामकरण कऽ देनाइ सेहो लेखकक एहि नाटकक प्रति अत्यन्त स्नेहक परिचायक अछि। हमरा जनैत एहि नाटकक अलावा जे 200 पृष्ठात्मक शोधभाग अछि, आओर अधिक प्रशंसनीय अछि।

'महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व' शीर्षककेँ अन्तर्गत महाकविक समय एवं जन्मस्थान, रचनाक आधारपर महाकविक मैथिलत्व, प्रकृति वर्णनक आधारपर महाकविक मैथिलत्व, आचार-विचार व्यवहारादिक वर्णनसँ महाकविक मैथिलत्व, भाषा वैज्ञानिक आधारपर महाकविक मैथिलत्व एवं अंग्रेज शासक द्वारा निर्धारित राजस्व अभिलेखक आधारपर महाकविक मैथिलत्व निर्धारण अत्यन्त शोधपूर्ण आ प्रमाणसहित वर्णित अछि।

'इतिहास आ साहित्यक अनुशीलनसँ महाकविक मैथिलत्व' एहि शीर्षकक अन्तर्गत महाकवि कालिदास आ सीता चरित्र-चित्रण; उच्चैठ, उज्जैन आ

महाकवि कालिदास; महाकवि कालिदासक श्रीलंका यात्रा; कालिदास, कुमारदास आ श्रीलंका; महाकवि कालिदास आ कुमारदास : अनन्त पथ केर सहयात्री एवं श्रीलंकाक महातीर्थ माटरा : दू महाकविक महाप्रयाण स्थल उपशीर्षक द्वारा समस्त विषयक ऐतिहासिक अनुशीलन एवं साहित्यिक अनुशीलनक माध्यमे तथ्य एवं प्रमाण सहित महाकविक मैथिलत्व स्थापित कैल गेल अछि।

एहि ग्रन्थमे महाकवि द्वारा धानक बियाक वर्णन, मगधनरेशक अधिमान प्रदर्शन द्वारा तत्कालीन मगध राज्य अवस्थित मिथिलाक राजाक प्रति सम्मानक दृष्टि, मिथिलाक प्रतीकस्वरूप मत्स्यध्वजाक वर्णन, रघुक विजय प्रसङ्गमे अपन क्षेत्र मिथिला छोड़ि विजय वर्णन, रघुवंशमे मिथिला आ मैथिलक विशिष्ट वर्णनसँ महाकविक मैथिलत्व विषयक पक्ष स्थापित होइत अछि। ताहूसँ बेसी श्रीरामक द्वारा त्याग केलाक बाद सीता द्वारा लक्ष्मणके प्रति कहल गेल ई उक्ति—

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्
मां लोकवादश्रवणादहासी: श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥

(रघु. 14/61)

जाहि गर्वसँ भरल रामक कुलकेँ प्रति प्रश्न उठबैत अछि, ई महाकविक हृदयमे निश्चित रूपसँ अपन बहिन, बेटी आदिक अनुचित परित्यागसँ आविर्भूत स्वाभाविक आवेशोक्ति अछि, जाहिसँ ज्ञात होइत अछि जे ओ अपन मातृभूमिक बेटीक परित्यागसँ अत्यंत आवेश विह्वल होइत ई श्लोक लिखने हेताह। इहो हुनकर मैथिलत्वक परिचायक अछि।

ग्रन्थकर्ता द्वारा महाकविक प्रकृतिवर्णन प्रसङ्गमे आयल कुमारसंभवक दरीमुखोत्थ समीरणेन (कु.सं. 1/8), ऋतुसंहारक चुड़ागुड़क वर्णन (ऋतु. 5/16), पाकल धानक खेत (ऋतु. 3/5), आमक गाछी (ऋतु. 6/38), बरखाक बादक सोन्हगर सुगंधियुक्त मालवा क्षेत्रक वर्णन (पू. मे. 16), जामुन आ जमुनटोकीक वर्णन (पू.मे. 21, 25), शेफालिकाक वर्णन (ऋतु. 3/14), सोन नदी आ सोनपुरक वर्णन आदिकेँ मिथिलाक प्रकृति वर्णन रूपमे देखल गेल अछि तथा ओहिसँ सेहो महाकविक मैथिलत्व प्रतिपादित कएल गेल अछि।

लेखक द्वारा इहो पक्ष प्रबलतासँ उपस्थापित कैल गेल अछि जे महाकवि उज्जयिनीक वर्णन अतीव शृङ्गारी रूपमे कैने छथि मुदा मिथिलाक वर्णन प्रसङ्गमे हुनक लेखनी अत्यंत आदरयुक्त भऽ जाइत अछि। कियो अपन मातृभूमिक

शृङ्गारिक वर्णन कय ओकरा लज्जास्पद नै बना सकैत अछि। महाकवि जाहि तरहेँ उज्जयिनीक वर्णन केने छथि ओ एकटा सम्भ्रांत आ साधल महाकवि द्वारा अपन मातृभूमिक माय बेटी आदिक लेल नहि कैल जा सकैत अछि। वएह जखन मिथिलाक वर्णन करैत छथि तऽ अत्यंत आदरपूर्ण ढंगसँ अपन बात रखैत छथि। तेँ महाकविक जन्मभूमि मिथिला सिद्ध होइत अछि।

लेखक कहैत छथि जे आचार, विचार एवं व्यवहारक दृष्टिसँ देखी तऽ महाकवि अपन ग्रन्थमे मैथिलक आचार, विचार एवं व्यवहारकेँ जाहि सूक्ष्म दृष्टिसँ वर्णन कैने छथि ताहूसँ ज्ञात होइत अछि जे महाकवि मैथिल छलाह। जेना मैथिलक विवाहमे प्रसिद्ध लाजाहोमक वर्णन, दुर्वाक्षत दान केर वर्णन, विवाहक अनन्तर चतुर्थी पर्यन्त भूमि शयनक वर्णन, वराह तीर्थक वर्णन, जमायके एक मास धरि सासुरमे रहबाक वर्णन, बियाहमे तीन बेर अग्नि प्रदक्षिणाक वर्णन आदि सब बात मैथिल परम्परेमे देखाइत अछि जकर सूक्ष्मज्ञान महाकविकेँ छलनि तेँ महाकविक मैथिलत्व सिद्ध होइत अछि।

एहि ग्रन्थमे आरो बहुत पक्ष तर्कपूर्ण आ सप्रमाण उपस्थापित कैल गेल अछि जकरा पढ़लासँ सभक हृदयमे ई बात सहजतासँ स्थापित भऽ जाइत अछि जे महाकवि मैथिल छलाह।

एहि ग्रन्थमे उच्चैठ ग्राम आ उच्चैठवासिनी भगवतीक वर्णन अत्यंत शोधपूर्ण ढंगसँ कैल गेल अछि। जाहि भगवतीक कृपासँ 'कलुआ' नामक एकटा महामूर्ख महाकवि कालिदासक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेलाह आ सम्पूर्ण विश्वकेँ अपन प्रतिभा प्रकाशसँ प्रकाशित कऽ रहलाह अछि। ओहि गाममे एखनहुँ महाकवि कालिदासक जन्मस्थानपर अवस्थित गुरुकुल, विद्यालय, महाविद्यालय हुनक समस्त कथा कहि रहल अछि। दूर-दूरसँ लोक सब आबि ओहि माँटिकेँ अपन माथमे रगड़ैत छथि। ग्रामवासीक तऽ परम्परे छनि जे ओहि स्थलक माँटिसँ अपन धिया-पुताक अक्षरारंभ करबैत छथि।

ग्रन्थक अंतिम भाग एकटा नाटक अछि। जाहिमे महाकवि कालिदासक महाप्रयाणक वर्णन अत्यंत नाटकीय ढंगसँ कैल गेल अछि। भारतीय परम्परामे महाकविक महाप्रयाण संबंधी कथा एतेक प्रसिद्ध नहि अछि, मुदा लेखक एहि अप्रसिद्धो कथाकेँ अपन शोधपूर्ण साहित्यिक दृष्टीसँ नाटकक रूपमे परिणत कय ओहिमे रोचकता आनि देलखिन। ओहि नाटकमे महाकवि कालिदास एवं कुमारदासक कण्व ऋषि आश्रममे भेल मित्रता, दुनूक एक दोसरक देशयात्रा करबाक वचनबद्धता, महाकविक श्रीलंकाक यात्रा, श्रीलंकामे राजनर्तकी द्वारा

माहुर दय महाकविक हत्या, ई समाचार सुनि कुमारदास द्वारा महाकविक चितामे प्रवेश कय प्राणत्याग आदि अत्यंत मार्मिक ढंगसँ वर्णित अछि।

लेखक द्वारा जाहि तरहक श्रम एतय कैल गेल अछि, ओ श्रम मैथिल साहित्यक संसारमे हुनक यश चिरकाल तक प्रसारित करत, एहिमे कोनो सन्देह नहि। भारतीय परम्परामे नाटकक सुखान्तता देखल जाइत अछि। एहि नाटकमे कुमारदासक चिताप्रवेशसँ उत्पन्न चीत्कारादि ध्वनिसँ वातावरण अत्यंत दुखान्वित भऽ गेल अछि, तँ एहि नाटककेँ दुखान्त नाटकक रूपमे देखल जा सकैत अछि, जे हमरा सनक पाठककेँ कने नीक नहि लगतनि। वस्तु, रस, संवादादि दृष्टिसँ देखल जाइ तऽ यद्यपि सिद्धहस्त नाटककारक अपेक्षा कनेक लाघव तऽ बुझाइत अछि, मुदा हुनक श्रम अत्यंत श्लाघनीय अछि। ग्रन्थमे जाहि तरहेँ संस्कृत उद्धरणक प्रयोग विपुलतासँ भेल अछि, ताहिसँ ज्ञात होइत अछि जे लेखक द्वारा महाकविक विपुल संस्कृत साहित्यक अध्ययन एवं अनुसंधान पुरस्सर एहि ग्रन्थकेँ लेखन कैल गेल होयत। मुदा उद्धरणमे बहुतो त्रुटि रहि गेल अछि, जकर संशोधन अग्रिम संस्करणमे भऽ जायत ई आशा रखैत अछि।

ग्रन्थक भूमिकामे प्रसिद्ध मैथिली नाटककार श्री महेन्द्र मलंगियाजी द्वारा 'कालिदास' एहि शब्दकेँ पाणिनि व्याकरणसँ सिद्ध नै हेबाक बात कहल गेल अछि। हमरा जनैत पाणिनि व्याकरणक 'ङ्यापो: सञ्ज्ञाछन्दसोर्बहुलम्' एहि सूत्रकेँ रहैत ई कहनाइ अत्यंत अनुचित होयत। तात्पर्य जे 'कालिदास' शब्द परिनिष्ठित संस्कृतक शब्द थिक आ पाणिनि व्याकरणसँ पूर्णत: सिद्ध होइत अछि।

निष्कर्षत: 'महाकविक महाप्रयाण' नामक ई ग्रन्थ मैथिली साहित्य संसारमे अपन एकटा विशिष्ट स्थान स्थापित करैत पाठक एवं शोधकर्ता सभक लेल अत्यंत उपादेय होयत ई हमर दृढ़ विश्वास अछि। एहि ग्रन्थक लेखनमे जाहि तरहक शोधदृष्टि अपनाओल गेल अछि, ओ भारतीय साहित्य संसार होइ या विश्व संसार होइ, पूर्वपक्ष या सिद्धान्तपक्षमे ओकर आदर हेबेटा करतैक। एहि महत्त्वपूर्ण विषयपर आगुओ शोधकार्य होइत रहक चाही, संगहि एहि ग्रन्थक हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजीमे सेहो अनुवाद हेबाक चाही, जाहिसँ अन्य भाषाक लोक सेहो एहि विश्वक महान कविक विषयमे भेल एहि शोधकार्यसँ अवगत भऽ सकैथ। समस्त साहित्यानुरागी पाठकगण एहि ग्रन्थकेँ पढ़थि एवं संरक्षित करथि तथा लेखकक एहि सत्प्रयासक वैश्विक परिचिति होइन एहि मंगलभावनाक संग हमर शुभाभिशंसा।

किछु मन्तव्य

कालिदास मैथिल छलाह, से बालपनेसँ सुनैत आयल रही। उच्चैठक कलिया डीह देखल अछि। कतेको बेर भगवतीक दर्शन करब संभव भेल अछि। शारदीय दुर्गापूजाक समय ओहि ठामक पूजा आराधना संग घनघोर बलिप्रदान देखल अछि। महाकविक प्रसंग कतेको किंवदन्ती बच्चेसँ सुनैत आयल छी। एहि प्रसंग छिटफुट आलेख सब साप्ताहिक मिथिला मिहिर समेत कतोक पत्रिकामे यदाकदा अभरल अछि, मुदा एहि विषयपर प्रामाणिक वस्तु सभक अद्यावधि सर्वथा अभाव छल। प्रसन्नता अछि जे एहि अभावक पूर्तिक दिशामे एक महत्वपूर्ण प्रयास भेल अछि। 'महाकविक महाप्रयाण' नामक अनुसंधानपरक एहि पुस्तकक लेखक छथि डॉ. रंगनाथ दिवाकर। गंभीर अध्येता छथि, नीक कथाकार छथि, कन्दर्पीघाटक उद्धारक एहि अधिकारीक प्रसादात बहुत रास काजक काज भेल अछि। ठाढ़ीक प्रसिद्ध पंडित सहदेव झापर हिनक अवदान छनि। अवदानी कथाकारकेँ मैथिल समाज, रहिका किरण पुरस्कारसँ सम्मानित करैत कृतार्थ भेल अछि। कालिदासपर हिनक ई रम्य नाटक आ बारहो निबन्ध कालिदासपर मिथिलाक अधिकारकेँ पुष्ट कयलक अछि। धन्यवादक पात्र छथि चौधरीजी।

हमरा सन संस्कृतक बाटक अनभुआर पथिककेँ पंडित शशिनाथ झाक एहि पोथीमे प्रकाशित अभिमतसँ बल भेटल अछि। महाकविक अमर कृति सभमे महाकविकेँ तकैत दिवाकरजी बड़ नीक लगैत छथि। हुनक मैथिलत्व आ सीता विषयक धारणापर पर्याप्त प्रकाश पड़ल अछि। ठीके कहैत छथि पंडितजी जे एतेक दृढ़ भऽ एहन प्रतिपादन प्रथमे बेर देखल गेल अछि। कालिदास आ कुमारदासक सख्यभावपर आधारित निबन्ध सब तथा हिनक युक्ति सब आवश्यक विचारणीय। बहुत रास प्रसंग अतिशयोक्तिपूर्ण एवं अविश्वसनीय लागि सकैत अछि मुदा से स्वाभाविक। विराट व्यक्तिक संग किंवदन्ती एहिना लगैत आयल अछि। रंगनाथ बाबू हिनका प्रसंग जनश्रुति, दंतकथा, किंवदन्तीसँ ठीके अमृत सत्य निकालि सकलाह अछि। नाटक सेहो बेश रोचक अछि, उत्सुकता हकारैत अछि। बड़ नीक संयोजन अछि घटना सभक, गीतक प्रयोग प्राचीन संस्कृत नाटकक स्मरण करबैत अछि।

एहि महत्वपूर्ण पोथीक हार्दिक स्वागत! नाटकक अधिकाधिक मंचन होयबाक चाही। एहि दिशामे विद्वान मंडलीक सक्रियता हकारैत अछि ई किताब। एकरा पढ़ल जयबाक चाही, शेष काज कएल जयबाक चाही। रंगनाथ जीक अभिनन्दन!

—उदयचंद्र झा विनोद

सुप्रसिद्ध कवि

प्रस्तुत पोथीमे कालिदासक सम्बन्धमे विविध पक्षपर आधारित बारह गोट निबन्ध आ कालिदासक महाप्रयाणपर आधारित नाटक विन्यस्त अछि, जाहिमे निबन्ध महाकवि कालिदास आ हुनक मैथिलत्व ओ सीताविषयक धारणा मिथिलाक उत्कर्षसँ सम्बद्ध अछि। एतेक दृढ़ भए एहन प्रतिपादन प्रथमे बेर देखल गेल अछि। शेष निबन्ध कालिदास ओ कुमारदासक सख्यभावपर आश्रित अछि, जकर परीक्षण आलोचकगण अवश्य करताह ओ एहि युक्ति सबहक सम्यक् समीक्षा कए लाभान्वित होएताह। एहि विषयक एतेक सामग्री एकठाम भेटब बड़ महत्त्वपूर्ण अछि।

—पं. शशिनाथ झा

पूर्व कुलपति

का. सिं. द. सं. वि. वि., दरभंगा

प्रस्तुत नाटककेँ प्रबुद्ध वर्ग हाथो-हाथ लेत से हमर दृढ़ विश्वास अछि। किएक तऽ सिंहलक युवराजसँ कालिदासक मैत्री सम्बन्ध, कामसेनासँ सम्पर्क, फेर हिनक मृत्यु आदिक बारेमे हमरा जनैत बहुत गोटे नहि जनैत होएताह जकरा ई नाटक प्रकाशमे अनलक अछि। एतबए नहि, जाहि ढंगसँ एकर घटनाक्रम चलैत अछि, ओ सहजहिं पाठक, दर्शक तथा प्रेक्षकक मोनमे उत्सुकता उत्पन्न कऽ दैत छैक। आओर एही उत्सुकताक चलते पाठक एकर मंचन देख' चाहत तथा दर्शक प्रेक्षक बनि जाएत ताहिमे हमरा सन्देह नहि अछि।

आब सभ किछुकेँ देखैत हम एतबए कहब जे ई एकटा पूर्ण सफल नाटक अछि।

—महेन्द्र मलंगिया

सुप्रसिद्ध नाटककार

श्री रंगनाथ चौधरी सन गहन अध्येता आ मैथिलीक उत्कृष्ट साहित्य केर रचयिता... बहुत कम लोक छथि।

कन्दर्पीघाटक युद्धक जनसरोकारकेँ अपन पोथी 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी'मे उठा जे जनभावनाकेँ स्थान देलनि ओ आह्लादित करैत अछि। एहिना संस्कृत साहित्यक अप्रतिम रचनाकार महाकवि कालिदासकेँ अपन ग्रंथ 'महाकविक महाप्रयाण'मे जाहि गूढ़तासँ मिथिलावासी सिद्ध करैत अप्पन विलक्षण शोधकार्यसँ कीर्तिमान स्थापित कयलनि अछि ओ अनुपम अछि। ई दुनू कृति विद्वत्तापूर्ण आ विद्वान लोकनिक बीच बहुप्रशंसित आ समादृत भेल अछि। मिथिला विश्वविद्यालयमे अपना समयक अद्वितीय छात्र, स्नातकोत्तर हिन्दी विभागक सब प्रतिमानकेँ खंडित करैत स्वर्णपदक पौलनि। अप्पन विद्वत्तापूर्ण शोधकार्य 'हिन्दी भाषा और साहित्यकेँ विकास में मिथिला का योगदान' सन गूढ आ गंभीर विषयक कार्यपर डाक्टरेट भेटलनि। झंझारपुरसँ मुजफ्फरपुर तक, एक कुशल प्रशासनिक अधिकारी रहलाह... से फराक बात।

झंझारपुरक समीपस्थ कन्दर्पीघाटपर, कन्दर्पी युद्धपर रचित पुस्तक 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी'क संग विराट मिथिला विजय स्तम्भ रूपमे कीर्तिस्तम्भक निर्माण करौलनि...जाहिपर सुमित सुमन लघुचित्र(डाक्यूमेंट्री फिल्म) सेहो बनौलनि।

'भखरैत नील रंग'क कथाकारक रुपमे लोकप्रिय भेलाह। महाकवि कालिदासक जीवनक अंतिम किछु दिनक लोकश्रुतिपर आधारित नाटक 'महाकविक महाप्रयाण'मे हिनक मौलिक लेखन प्रतिभा देखल जा सकैछ। हालहिमे गोलोकवासी श्री प्रवासी साहित्यालंकारक गीति रचनाकेँ संकलित आ सम्पादित कयने छलाह। मिथिलाक भट्ट समुदायपर हुनका सभ द्वारा रचित गीत-काव्य-संगीत सभकेँ संकलित कऽ प्रकाशित करौलनि। किंबहुना...

प्रतिवर्ष अप्पन संत पिता श्री जगन्नाथ चौधरीक नामपर विशिष्ट शोधकार्य केनिहार साहित्यिक रचनाकारकेँ सम्मानित करैत छथि आ तर्पण-अर्पण रुपमे अपन एक नव मौलिक कृति केर प्रकाशनसँ सहयोग करैत छथि।

एहन रचनाकारक व्यक्तित्व आ कृतित्व सभकेँ साहित्य आ समाजमे यथार्थ स्थान आ आदर्श सम्मान अवश्य भेटबाक चाही।

कहबाक तऽ आर बहुत किछु अछि... मुदा तावत एतबे कहब जे हम हिनकासँ निरन्तर जुड़ल रहलहुँ... आ चि. बड़का बौआकेँ छोटका भैया कहबामे गौरवान्वित होइत छी!

—श्यामानन्द चौधरी

अवकाश प्राप्त अतिरिक्त सचिव

अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
+91 94305 83847
anuprasprakashan@gmail.com

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन

अभिज्ञान महाप्रयाण
('महाकविक महाप्रयाण' ग्रंथक प्रकीर्ण समीक्षा-संकलन)

₹ 300

9 789391 371609
www.anuprasprakashan.com